ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' २४२ म अंक १५ जनवरी २०१८ (वर्ष ११ मास १२१ अंक २४२)

ऐ अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

जगदीश प्रसाद मण्डलक ३ टा लघुकथा संग्रह

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

संपादकीय

विदेह "नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य" विषयक विशेषांक निकालबाक नेयार केलक अछि जकर संयोजक श्री दिनेश यादव जी रहता।

अइ विशेषांकमे नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य केर मूल्यांकन रहत। अइ विशेषांक लेल सभ विधाक आलोचना-समीक्षा-समालोचना आदि प्रस्तावित अछि। समय-सीमा किछु नै जहिया पूरा आलेख आबि जेतै तहिये, मुदा प्रयास रहत जे एही साल मइ-जून धरि ई विशेषांक आबि जाए। उम्मेद अछि विदेहक ई प्रयास दूनू पायापर एकटा पूल जरूर बनाएत।

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा कएल जा रहल अछि। दोसर भागमे अइ बेर नीलमाधव चौधरी जीक रचना आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ नीलमाधवजीक रचना ओ रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल कैलाश कुमार मिश्रजीकेँ आमंत्रित कएल जा रहल छनि। दूनू गोटाकेँ औपचारिक सूचना जल्दिये पठाओल जाएत। रचनाकारक रचना ओ आलोचकक आलोचना जखने आबि जाएत ओकर अगिला अंकमे ई प्रकाशित कएल जाएत।

अइ शृंखलाक पहिल भाग कामिनीजीक रचनापर छल आ टिप्पणीकर्ता मधुकांत झाजी छलाह।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापडि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ 2018 मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा दी।

विदेह सम्मान

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान

१.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१०-११

२०१० श्री गोविन्द झा (समग्र योगदान लेल)

२०११ श्री रमानन्द रेणु (समग्र योगदान लेल)

२.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११-१२

२०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**गामक जिनगी**, कथा संग्रह)

२०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)

२०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (**कलह**, नाटक)

२०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (**पद्मानदीक माझी**, बांग्ला- मानिक बंद्योपाध्याय, उपन्यास बांग्लासँ मैथिली अनुवाद)

विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

1.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार 2012

2012 श्री राजनन्दन लाल दास (समग्र योगदान लेल)

2.विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१२ बाल साहित्य पुरस्कार - श्री जगदीश प्रसाद मण्डल केँ ''**तरेगन**'' बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह

२०१२ मूल पुरस्कार - श्री राजदेव मण्डलकेँ "**अम्बरा**" (कविता संग्रह) लेल।

2012 युवा पुरस्कार- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक ''**अर्चिस**'' (कविता संग्रह)

2013 अनुवाद पुरस्कार- श्री नरेश कुमार विकल "ययाति" (मराठी उपन्यास श्री विष्णु सखाराम खाण्डेकर)

विदेह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१३ बाल साहित्य पुरस्कार श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी- ''**देवीजी**'' (बाल निबन्ध संग्रह) लेल।

२०१३ मूल पुरस्कार - श्री बेचन ठाकुरकेँ "**बेटीक अपमान आ छीनरदेवी**" (नाटक संग्रह) लेल।

२०१३ युवा पुरस्कार- श्री उमेश मण्डलकेँ ''**निश्तुकी**'' (कविता संग्रह)लेल।

२०१४ अनुवाद पुरस्कार- श्री विनीत उत्पलकेँ ''**मोहनदास**'' (हिन्दी उपन्यास श्री उदय प्रकाश)क मैथिली अनुवाद लेल।

विदेह भाषा सम्मान २०१४-२०१५ (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)

२०१४ मूल पुरस्कार- श्री नन्द विलास राय (**सखारी पेटारी**- लघु कथा संग्रह)

२०१४ बाल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**नै धारैए**- बाल उपन्यास)

२०१४ युवा पुरस्कार - श्री आशीष अनचिन्हार (**अनचिन्हार आखर**- गजल संग्रह)

२०१५ अनुवाद पुरस्कार - श्री शम्भु कुमार सिंह (**पाखलो** - तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१२

अभिनय- मुख्य अभिनय ,

सुश्री शिल्पी कुमारी, उम्र- 17 पिता श्री लक्ष्मण झा

श्री शोभा कान्त महतो, उम्र- 15 पिता- श्री रामअवतार महतो,

हास्य-अभिनय

सुश्री प्रियंका कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री वैद्यनाथ साह

श्री दुर्गानंद ठाकुर, उम्र- 23, पिता- स्व. भरत ठाकुर

नृत्य

सुश्री सुलेखा कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री हरेराम यादव

श्री अमीत रंजन, उम्र- 18, पिता- नागेश्वर कामत

चित्रकला

श्री पनकलाल मण्डल, उमेर- ३५, पिता- स्व. सुन्दर मण्डल, गाम छजना

श्री रमेश कुमार भारती, उम्र- 23, पिता- श्री मोती मण्डल

संगीत (हारमोनियम)

श्री परमानन्द ठाकुर, उम्र- 30, पिता- श्री नथुनी ठाकुर

संगीत (ढोलक)

श्री बुलन राउत, उम्र- 45, पिता- स्व. चिल्टू राउत

संगीत (रसनचौकी)

श्री बहादुर राम, उम्र- 55, पिता- स्व. सरजुग राम

शिल्पी-वस्तुकला

श्री जगदीश मल्लिक,५० गाम- चनौरागंज

मूर्ति-मृत्तिका कला

श्री यदुनंदन पंडित, उम्र- 45, पिता- अशर्फी पंडित

काष्ठ-कला

श्री झमेली मुखिया,पिता स्व. मूंगालाल मुखिया, ५५, गाम- छजना

किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति

श्री लछमी दास, उमेर- ५०, पिता स्व. श्री फणी दास, गाम वेरमा

विदेह मैथिली पत्रकारिता सम्मान

-२०१२ श्री नवेन्दु कुमार झा

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१३

मुख्य अभिनय-

(1) सुश्री आशा कुमारी सुपुत्री श्री रामावतार यादव, उमेर- १८, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) मो. समसाद आलम सुपुत्र मो. ईशा आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(3) सुश्री अपर्णा कुमारी सुपुत्री श्री मनोज कुमार साहु, जन्म तिथि- १८-२-१९९८, पता- गाम- लक्षिमनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही,जिला- मधुबनी (बिहार)

हास्य अभिनय-

(1) **श्री ब्रह्मदवे पासवान उर्फ रामजानी पासवान** सुपुत्र- स्व. लक्ष्मी पासवान, पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) टॉसिफ आलम सुपुत्र मो. मुस्ताक आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (मांगनि खबास समग्र योगदान सम्मान)

शास्त्रीय संगीत सह तानपुरा :

श्री रामवृक्ष सिंह सुपुत्र श्री अनिरूद्ध सिंह, उमेर- ५६, गाम- फुलवरिया, पोस्ट- बाबूबरही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मांगनि खबास सम्मान: मिथिला लोक संस्कृति संरक्षण:

श्री राम लखन साहु पे. स्व. खुशीलाल साहु, उमेर- ६५, पता, गाम- पकड़िया, पोस्ट- रतनसारा, अनुमंडल- फुलपरास (मधुबनी)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (समग्र योगदान सम्मान):

नृत्य -

(1) श्री हरि नारायण मण्डल सुपुत्र- स्व. नन्दी मण्डल, उमेर- ५८, पता- गाम+पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **सुश्री संगीता कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव पासवान, उमेर- १६,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

चित्रकला-

(1) जय प्रकाश मण्डल सुपुत्र- श्री कुशेश्वर मण्डल, उमेर- ३५, पता- गाम- सनपतहा, पोस्ट बौरहा, भाया- सरायगढ़, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री चन्दन कुमार मण्डल सुपुत्र श्री भोला मण्डल, पता- गाम- खड़गपुर, पोस्ट- बेलही, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार) संप्रति, छात्र स्नातक अंतिम वर्ष, कला एवं शिल्प महाविद्यालय- पटना।

हरिमुनियाँ / हारमोनियम

(1) **श्री महादेव साह सुपुत्र रामदेव साह, उमेर- ५८,** गाम- बेलहा, वार्ड- नं. ०९, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री जागेश्वर प्रसाद राउत** सुपुत्र स्व. रामस्वरूप राउत, उमेर **६०,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

ढोलक/ ठेकैता/ ढोलकिया

(1) **श्री अनुप सदाय** सुपुत्र स्व. , पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री कल्लर राम** सुपुत्र स्व. खट्टर राम, उमेर- ५०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

रसनचौकी वादक-

(1) वासुदेव राम सुपुत्र स्व. अनुप राम, गाम+पोस्ट- निर्मली, वार्ड न. ०७ , जिला- सुपौल (बिहार)

शिल्पी-वस्तुकला-

(1) श्री बौकू मल्लिक सुपुत्र दरबारी मल्लिक, उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री राम विलास धरिकार सुपुत्र स्व. ठोढ़ाइ धरिकार, उमेर- ४०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

मूर्तिकला-मृर्तिकार कला-

(1) **घूरन पंडित सुपुत्र-** श्री मोलहू पंडित, पता- गाम+पोस्ट बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री प्रभु पंडित सुपुत्र स्व.** , पता- गाम+पोस्ट- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

काष्ठ-कला-

(1) **श्री जगदेव साहु** सुपुत्र शनीचर साहु, उमेर- ३६, गाम- निर्मली-पुरर्वास, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री योगेन्द्र ठाकुर सुपुत्र स्व. बुद्धू ठाकुर उमेर- ४५,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

किसानी- आत्मनिर्भर संस्कृति-

(1) श्री राम अवतार राउत सुपुत्र स्व. सुबध राउत, उमेर- ६६, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) श्री रौशन यादव सुपुत्र स्व. कपिलेश्वर यादव, उमेर- ३५, गाम+पोस्ट बनगामा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

अल्हा/महराइ-

(1) **मो. जीबछ** सुपुत्र मो. बिलट मरहूम, उमेर- ६५, पता- गाम- बसहा, पोस्ट- बड़हारा, भाया- अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०१

जोगिरा-

श्री बच्चन मण्डल सुपुत्र स्व. सीताराम मण्डल, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री रामदेव ठाकुर सुपुत्र स्व. जागेश्वर ठाकुर, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार आ खजरी/ खौजरी वादक-

(1) श्री सुकदेव साफी

सुपुत्र श्री ,

पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार - (अगहनसँ माघ-फागुन तक गाओल जाइत)

(1) **सुकदेव साफी** सुपुत्र स्व. बाबूनाथ साफी, उमेर- ७५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **लेल्हु दास** सुपुत्र स्व. सनक मण्डल पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

झरनी-

(1) **मो. गुल हसन** सुपुत्र अब्दुल रसीद मरहूम, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **मो. रहमान साहब** सुपुत्र...., उमेर- ५८, गाम- नरहिया, भाया- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाल वादक-

(1) **श्री जगत नारायण मण्डल** सुपुत्र स्व. खुशीलाल मण्डल, उमेर- ४०, गाम+पोस्ट- ककरडोभ, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री देव नारायण यादव सुपुत्र श्री कुशुमलाल यादव, पता- गाम- बनरझुला, पोस्ट- अमही, थाना- घोघड़डीहा, जिला- मधुबनी (बिहार)

गीतहारि/ लोक गीत-

(1) **श्रीमती फुदनी देवी** पत्नी श्री रामफल मण्डल, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **सुश्री सुविता कुमारी** सुपुत्री श्री गंगाराम मण्डल, उमेर- १८, पता- गाम- मछधी, पोस्ट- बलियारि, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

खुरदक वादक-

(1) **श्री सीताराम राम** सुपुत्र स्व. जंगल राम, उमेर- ६२, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री लक्ष्मी राम सुपुत्र स्व. पंचू मोची, उमेर- ७०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

कौँरनेट-

(1) **श्री चन्दर राम** सुपुत्र- स्व. जीतन राम, उमेर- ५०, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **मो. सुभान**, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

बेन्जू वादक-

(1) श्री राज कुमार महतो सुपुत्र स्व. लक्ष्मी महतो, उमेर- ४५, गाम- निर्मली वार्ड नं. ०४, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री घुरन राम, उमेर- ४३, गाम+पोस्ट- बनगामा, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

भगैत गवैया-

(1) **श्री जीबछ यादव** सुपुत्र स्व. रूपालाल यादव, उमेर- ८०, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री शम्भु मण्डल** सुपुत्र स्व. लखन मण्डल, पता- गाम- बढियाघाट-रसुआर, पोस्ट मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

खिस्सकर- (खिस्सा कहैबला)-

(1) श्री छुतहरू यादव उर्फ राजकुमार, सुपुत्र श्री राम खेलावन यादव, गाम- घोघरडिहा, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल, पिन- ८४७४५२

(2) बैजनाथ मुखिया उर्फ टहल मुखिया-

(2)सुपुत्र स्व. ढोंगाइ मुखिया,

पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मिथिला चित्रकला-

(1) सुश्री मिथिलेश कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्रीमती वीणा देवी पत्नी श्री दिलिप झा, उमेर- ३५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

खजरी/ खौजरी वादक-

(2) श्री किशोरी दास सुपुत्र स्व. नेबैत मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

तबला-

श्री उपेन्द्र चौधरी सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री देवनाथ यादव सुपुत्र स्व. सर्वजीत यादव, उमेर- ५०, गाम- झाँझपट्टी, पोस्ट- पीपराही, भाया- लदनियाँ, जिला- मधुबनी (बिहार)

सारंगी- (घुना-मुना)

(1) श्री पंची ठाकुर, गाम- पिपराही।

झालि- (झलिबाह)

(1) **श्री कुन्दन कुमार कर्ण** सुपुत्र श्री इन्द्र कुमार कर्ण पता- गाम- रेबाड़ी, पोस्ट- चौरामहरैल, थाना- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०४

(2) **श्री राम खेलावन राउत** सुपुत्र स्व. कैलू राउत, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

बौसरी (बौसरी वादक)

श्री रामचन्द्र प्रसाद मण्डल सुपुत्र श्री झोटन मण्डल, उमेर- ३०, बौसरी/बौसली/बासुरी बजबै छथि।

पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री विभूति झा सुपुत्र स्व. कनटीर झा, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- कछुबी, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

लोक गाथा गायक

श्री रविन्द्र यादव सुपुत्र सीताराम यादव, पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री पिचकुन सदाय सुपुत्र स्व. मेथर सदाय, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

मजिरा वादक (छोकटा झालि...)

श्री रामपति मण्डल सुपुत्र स्व. अर्जुन मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

मृदंग वादक-

(1) **श्री कपिलेश्वर दास सुपुत्र स्व. सुन्नर दास,** उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)
(2) **श्री खखर सदाय** सुपुत्र स्व. बंठा सदाय, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

तान्पुरा सह भाव संगीत

(1) **श्री रामविलास यादव** सुपुत्र स्व. दुखरन यादव, उमेर- ४८, गाम- सिमरा, पोस्ट- सांगि, भाया- घोघड़डीहा, थाना- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

तरसा/ तासा-

श्री जोगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री राजेन्द्र राम सुपुत्र कालेश्वर राम, उमेर- ५८, गाम- मझौरा, पास्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक-

श्री सैनी राम सुपुत्र स्व. ललित राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री जनक मण्डल सुपुत्र स्व. उचित मण्डल, उमेर- ६०, रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक, १९७५ ई.सँ रमझालि बजबै छथि। पता- गाम- बढ़ियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

गुमगुमियाँ/ ग्रुम बाजा

श्री परमेश्वर मण्डल सुपुत्र स्व. बिहारी मण्डल उमेर- ४१, १९८० ई.सँ गुमगुमियाँ बजबै छथि।
श्री जुगाय साफी सुपुत्र स्व. श्री श्रीचन्द्र साफी, उमेर- ७५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

डंका/ ढोल वादक

श्री बदरी राम, उमेर- ५५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)
श्री योगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

डंफा (होलीमे बजाओल जाइत...)

श्री जग्रनाथ चौधरी उर्फ धियानी दास सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर),जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री महेन्द्र पोद्दार, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

नडेरा/ डिगरी-

श्री राम प्रसाद राम सुपुत्र स्व. सरयुग मोची, उमेर- ५२, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८
Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf
२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८
Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf
३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०
Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67
४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०
Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70
५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०
Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72
६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११
Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77
७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२
Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111
८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३
Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126
९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३
Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142
१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५
Videha_01_01_2015
११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५
Videha_01_11_2015
१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५
Videha_01_12_2015
१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६
Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)
विदेह:सदेह:3 (मैथिली पद्य २००९-१०)
विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]
विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]

The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor

Maithili Books can be downloaded from:
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/
Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह

मैथिली साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA
सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-सम्पादक: उमेश मंडल। सहायक सम्पादक: राम विलास साहु, नन्द विलास राय, सन्दीप कुमार साफी आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)। सम्पादक- नाटक-रंगमंच-चलचित्र- बेचन ठाकुर। सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पूनम मंडल। सम्पादक- अनुवाद विभाग- विनीत उत्पल।

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहलअछि।
एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि, मात्र एकर प्रथम प्रकाशनक/ प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार ऐ ई-पत्रिकाकेँ छै, आ से हानि-लाभ रहित आधारपर छै आ तैँ ऐ लेल कोनो रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै। तेँ रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक इच्छुक विदेहसँ नै जुड़थि, से आग्रह। ऐ ई पत्रिकाकेँ श्रीमति लक्ष्मीठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

५ जुलाई २००४ केँhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा "विदेह"- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका" धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ"जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटर रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

सिद्धिरस्तु



बाल गोपाल

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण

कथा बौद्ध सिद्ध मेहथपा- सगर राति दीप जरय'क
बाल साहित्य केन्द्रित गोष्ठी-
मेंहथ (झंझारपुर) कैं
समरपित

ISBN : 978-93-87675-09-4

दाम : ₹ 251/-

पहिल संस्करण : 2014
चारिम संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

BAL GOPAL
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

कथाक सत्तैर

रिजल्ट

पहिल जनवरीकेँ रबि दिन रहने दोसर दिन स्कूलो खुजत आ बड़ा दिनक छुट्टीसँ पहिने भेल परीक्षाक रिजल्टो निकलत। ओना शिक्षक अभिभावक आ विद्यार्थीक बीच नव बर्खक उपहारक समय रहने खुशीक वातावरण पसरले अछि। केना नै पसरौ! दुर्गापूजा अबैसँ पहिने जे खुशी मनमे उमकैत ओ तँ सप्तमी पूजा धरि रहबे करैत। ठाँउ करब, फूल-पातसँ पूजा करब, काँच माटिक दियारीसँ साँझ देब, स्तुति करब इत्यादि.., मुदा डिम्हा पड़ला पछाइत जे उत्सवक मेला शुरू होइए तेकर पछाइते ने खगल-भरल हाथक वोध होइए।

गामेक हाइ स्कूलक नअम कक्षामे गोबर गणेश सेहो पढ़ैत। ओकरो रिजल्ट निकलत। जहिना आन-आन विद्यार्थीकेँ खुशी तहिना ओकरो। एक तँ परीक्षा देला पछाइत बड़ा दिनक छुट्टीक उछाही तैपर आगू बढ़ैक अवसरो, किए ने रहतै। ओना छुट्टीक उछाही सभ छुट्टीमे होइ छै मुदा से बड़ा दिनक छुट्टीमे नहियेँ रहै, मुदा किछुओ तँ जरूर रहइ। सालमे केतेको छुट्टी विद्यालयमे होइए, जइमे किछु स्थाइयो आ अस्थाइयो होइ छइ। ओना बाबन-तिरपनटा रबि अपन अठबारे हिस्सा लइये लेने अछि, मुदा तँए कि आन-आनक कोनो सीमा-सरहद नै छै? छइहे। किछु पाबैन-तिहारक नामे अछि, किछु मौसमक नामे अछि तँ किछु समैक नामे। खाएर जे हौउ, मुदा जहिना घटनकेँ बढ़न

कहल जाइ छै तहिना छोट दिनकेँ पैघ दिन अर्थात् बड़ादिन कहि आराम करैक अवसरो देले जाइ छै!

केतबो धड़फड़ केलक गोबर गणेश तैयो साढ़े दस बाजिये गेलइ। एक तँ स्कूलो जेबामे किछु बिलम भाइए गेलै, तैपर रिजल्टक खुशीक हकार ने बँटबे रहए, तँए विद्यालय जाइसँ पहिने हकार सेहो बँटैक छइहे...।

विदा होइसँ पहिने बाबा लग जा बाजल-

"बाबा, आइ रिजल्ट निकलत।"

पोताक खुशीक हकार पाबि श्यामचरणक मनमे सेहो खुशी उपकलैन मुदा बजला किछु ने। केना खुशनामाक असीरवाद पहिनहि देथिन, बरहबट्टु थोड़े छैथ जे दीक्षा पहिने आ शिक्षा पछाइत देथिन...।

गोबर गणेशोकेँ विद्यालयक फलक आशा तँए बाबाक असीरवादक प्रतिक्षा छोड़ि विदा भऽ गेल।

माथक सुरूज पच्छिम-भर लटकए लगला, अखन धरि गोबर गणेश किए ने आएल? पढ़ौनी दिन थोड़े छिऐ जे बेसी समय लगतै, रिजल्टक दिन छी। जे पास करत हँसैत घूमत आ जे फेल करत ओ अपनो कानत आ परिवारोकेँ कनौत। समटल मन बाबाक आरो समटा गेलैन। जेबेकाल पोता कहि गेल 'रिजल्ट निकलत।'

चौकीपर सँ उठि रस्तापर जा श्यामचरण विद्यालय दिस हिया कऽ तकलैन। जेते दूर नजैर गेलैन तैबीच केतौ पोताकेँ अबैत नै देखलैन। घुमि कऽ दरबज्जापर आबि विचारए लगला। केना फल पौल पोताक अगवानी छोड़ि अपने दोसर काजमे लागब। औझुके अगवानी ने वागवानी बनौत। अपना आँखिये पोताकेँ देखब आ अपना काने ओकर फलोकेँ सुनब छोड़ि कऽ जाएब नीक नहि। बैसते

मनमे नीकक आशा नाचए लगलैन। जहिना गाम-घरक बीच नव-नव अविष्कार सुनि लोकक मन नचबो करैए आ गीतो गबैए जे आब की जनक जीक तीन-बितिया हरक काज हएत, बड़का-बड़का हरजोता सभ आबि रहल अछि। एके दिनमे साठि बर्खक जिनगीकेँ तीस बर्ख बना देत। दू दिन तँ सौंसे जिनगीक भेल...।

गोबर गणेशपर सँ नजैर हटिते बाबाक मनमे जेना शुभे-शुभक सपना उठए लगलैन। बिसैर गेला चारि सालसँ फेल होइत आएल गोबर गणेशकेँ। मुदा बिसरैक पाछू काजक फलो होइ छइ। कियो काजक फल गनि फल बुझैए आ कियो फलेकेँ फल बुझैए। श्यामचरणक मनकेँ गोबर गणेशक काज अधला विचारक बाटपर ठाढ़ भऽ आगू अबै ने दन्हि, जइसँ बाबाक मनमे सौनक हरियरीए बुझि पड़ैन। ओना पैछला सालक हरियरी बाढ़िमे तेना भऽ कऽ धुआएल जे लोक सौन-भादो बिसैर जुलाई-अगस्त बुझए लागल, सेहो मनमे रहबे करैन। मुदा लगले मन बिनबिनेलैन। बिनबिनाइते चौकीपर सँ उठि रस्तापर पहुँच स्कूलक बाट हिया कऽ हियेला...।

पोताकेँ केतौ नै देख मन ठमैक गेलैन। मुदा लगले उठलैन जे किछु दूर आगू बढ़ि देखिऐ, जँ कहीं संगी-साथी संग रिजल्टक खुशीमे वौड़ा गेल हुअए। मनो गवाही देलकैन। सएह भेल, भरिसक केतौ वौड़ा गेल अछि। जँ से नै रहितै तँ कोन बेटा-बेटी लाखो बेर सप्पत खा कऽ नै बाजल हएत जे माए-बापक सेवा हमर धर्मे नै कर्तव्यो छी। एकटा झूठ बजने लोक कोट-कचहरीक खूनी केससँ बँचि जाइए आ जैठाम हजारो-लाखोक बात छइ। मुदा बेसीकाल मन ऐठाम नै अँटकलैन। आगू बढ़िते मन पड़लैन- जखन गोबरधन गिरिधारी गोबरधन पहाड़ उठा इन्द्रक धारकेँ रोकि देलक तखन हमर गोबर गणेश ने किए करत। मनमे उठिते जेना सौनक कजरारिक छटा छट-

छटा गेलैन। डेगे-डेग किछु डेग जखन आगू बढ़ि नजैर उठौलैन तखन बुझि पड़लैन जे पोता आबि रहल अछि...।

गोबर गणेशपर नजैर पड़िते बाबा हाँइ-हाँइ पाछू घुमि, आपसी घर दिस विदा भेला। अपन सिंगदुआरिमे पोताक अगवानी करबक खुशी मनकेँ भरि देलकैन। मुदा जहिना प्रतिक्षाक घड़ी असथिरसँ नै चलि उकड़ू चालिये चलए लगैए, श्यामचरणोक मनमे तहिना उठलैन। चारि बर्खसँ गोबर गणेश फेल करैत आएल अछि मुदा अपन मन कहै छै जेना जिनगीमे एकोबेर ने फेल केलौं हेन। जँ से रहितै तँ कोढ़िया बरद जकाँ पालो देखते कान झाँकि दइत। सेहो तँ नहियेँ बुझि पड़ैए। मुदा से भेल केना अछि ई तँ ओकरेसँ भाँज लगत। कियो रचनाकार मरि कऽ नै मृत्युक चर्च करै छैथ, 'मृतपड़ाय' जिनगी देख मृत्युक चरचा करै छैथ...।

बाबा फेर कनगुरिया आँगुरपर हिसाब जोड़ए लगला। टटका पढ़लाहा ने टटका प्रश्नक उत्तर टटके लिखि देत मुदा से तँ गोबर गणेशमे नै अछि। रिआएल-खिआएल पाइ थोड़े कारोबारमे औत। जँ कनियोँ-कनियोँ बिसरैत गेल हएत तैयो एक सालक पढ़ाइ तीन सालमे बिसैरे गेल हएत। जँ बेसियाएल रहितै तँ चारि गुणा बेसिया जाइत किने। तखन तँ दोसरे सालमे बेसी पबिते पास केने रहितए, सेहो तँ नहियेँ केलक...।

श्यामचरणक मन घोर-मट्ठा हुअ लगलैन। गोबर गणेश अबिते बाबाकेँ गोड़ लागि बाजल-

"बाबा, रिजल्ट निकलल।"

गोबर गणेशक बात सुनि श्यामचरणक मनमे उठलैन, की निकलल? 'पास केलक आकि फेल' से कहाँ बुझि पेलिऐ? नजैर उठा हिया कऽ गोबर गणेशक मुँहपर देलैन। मुँहक रूखि मलिन नहि। मुदा

केना कऽ पुछबै जे बौआ पास केलेँ आकि फेल। 'पास-फेल' तँ लोक जिनगीक क्रियामे करैए। जे बच्चेसँ प्रवाहित हुअ लगै छै आ हंसवाहिनी मतियो चलए लगै छै...।

आँखिपर आँखि चढ़ल देख गोबर गणेश बुझि गेल जे बाबाक मनमे किछु प्रश्न छैन। हलसैत बाजल-

"अहूबेर नमेमे रहब।"

पोताक बात सुनि श्यामचरणक मनमे उठलैन, चारि सालसँ फेल करैत आएल अछि मुदा मनमे मिसियो भरि गम नै छै! सियाहीक कोनो रेख नै देख पबै छी! असमंजसमे बाबाकेँ पड़ल देख गोबर गणेश बुझि गेल जे भरिसक बाबा बिसैर गेला। सएह मन पाड़ैले कहि रहला अछि। किछु ठेकना कऽ मन पाड़ि बाजल-

"पहिले साल जे फेल केने रही से बिसैर गेलिऐ जे किए केने रही?"

पोताक प्रश्न सुनि श्यामचरण असमंजसमे पड़ि गेला जे केना 'हँ' कहबै आ केना 'नै' कहबै। हँ जँ कहबै तखन जँ कहीं आगूक बात पुछि दिअए आ जँ नै कहबै तँ बुझलो बात नै बुझब कहि झुट्ठा भऽ जाएब। चुपे रहला। परिवार की कोनो कोट-कचहरी छिऐ जे बाता-बाती हएत, परिवार तँ परिवार छिऐ। जहिना बाबाकेँ बिनु पुछनौं किछु कहैक अधिकार पोतापर होइत तहिना ने पोतोकेँ बाबापर। अपने फुरने गोबर गणेश बाजल-

"पहिल साल जे शिक्षक पढ़ौने रहैथ, हुनकर बदलियो भऽ गेलैन आ विषैयो बदैल गेल।"

'पढ़ौनी' आ 'पढ़ौनिहार' सुनि किछु पुछैक मन श्यामचरणकेँ भेलैन, मुदा अपने फुरने गोबर गणेश फेर बाजल-

"पहिल साल जे शिक्षक विषय पढ़ौलैन ओ जेना तर पड़ि गेल।"

गोबर गणेशक बात सुनि श्यामचरण ओझरा गेला। डोराक पोला जकाँ ओर-छोर नै बुझि पाबि जेना बिच्चेमे ओझरी लगि गेलैन। ओझरी लगिते एकटा ओर देखैथ तँ दोसर हेरा जाइन आ बीहयबैत जखन दोसर भेटैन तँ भेटलाहा हेरा जाइन। टीकमे लगल चिड़चिड़ी जकाँ भऽ गेलैन। एक तँ आँखिक पछुऐतमे टीक रहने सोझहा-सोझही अपनो नै देख पबैथ दोसर दुनू हाथक आँगुर सेहो ओझड़ाइए जाइन...।

पछाइत मनमे उठलैन, गोबर गणेश कियो आन छी जे कोनो बात पुछैमे सङ्कोच हएत। पुछलखिन-

"बौआ, नै बुझि पेलौं जे केना पढ़ौनियोँ आ पढ़ौनिहारो बदैल गेलह। जँ पहिल साल बदलिये गेलह तैयो दोसर-तेसर-चारिम साल तँ बँचलह किने?"

बाबाक प्रश्न सुनि, साँपक बीख झाड़निहार मनतरिया जकाँ गोबर गणेश धुरझाड़ बाजल-

"जहिना पहिल साल बदलल तहिना दोसरो साल बदलल।"

'दोसर साल' सुनिते श्यामचरण बिच्चेमे टोकि देलखिन-

"एना नै बाजह जे जहिना पहिल बदलल तहिना दोसरो-तेसरो-चारिमो साल बदलल। फुटा-फुटा कहऽ जे पहिल साल की बदललह आ दोसर-तेसर-चारिम साल की?"

बाबाक प्रश्न सुनि, जहिना कियो इन्टरभ्यूमे रस्ताक पढ़ल-बुझल बात सुनि प्रश्नक पुछरी पकैड़ धड़-धड़ा कऽ उत्तर दिअ लगैत तहिना गोबर गणेश बाजल-

"पहिलुक साल पढ़लौं जे केना कियो गाछपर चढ़ि आम तोड़ैए

आ केना माटिक पहियाक गाड़ी बना माटि उघैए।"

ओना श्यामचरणकेँ पोताक उत्तर सुनल बुझि पड़लैन, मुदा किछु बेसी दिनक सुनल बुझि बेसी बिसराइए गेल रहैन। किछु अपनो मनपर भार दथि आ किछु खोधि-खाधि गोबरो गणेशक मुहसँ सुनए चाहैथ...। गोबर गणेश बुझि गेल जे बाबाकेँ रस भेट रहल छैन। मनमे उठलै जे परिवारमे बुढ़-बच्चाक बीच सम्बन्ध बनत तँ बीचला अनेरे सोझराएल रहत।

एक दिस टीकासनक बाबा तँ दोसर दिस गंगा पार करैक नाह पोता। मुस्की दैत गोबर गणेश कहलकैन-

"दलानक खुट्टीपर जे ललका कपड़ामे रामायण बान्हि कऽ रखने छी ओ पुरना गेल। पहिल बर्खक कोर्समे रहए।"

गोबर गणेशक अजगुत जवाब सुनि श्यामचरणक मनमे भेलैन जे बुधिये ने तँ घुसैक गेलइ। मुदा लगले फेर भेलैन जे केमहर घूसकल से केना बुझब। एहेन प्रश्न पुछबो केना करबै। जँ कहीं आगू-मुहेँ घुसैक गेल हेतै तखन अगियाएल बात बाजत। तेतबे नहि, जँ कहीं अगवानीक चालि धेलक तँ अनेरे अनसोहाँतो लागत। से नै तँ चुचकारी दऽ अपने मुहसँ बजाएब नीक हएत...।

पुछलखिन-

"बौआ, तूँ झब-झब बाजि जाइ छह, कनी असथिरसँ बाजह। आब कि अपन ओ आँखि-कान रहल जे श्रवणकुमारक पानिक अवाज सुनि तीर चलाएब।"

बाबाक प्रश्न सुनि गोबर गणेशक मन मघैया खेतक खेसारी, सेरसो जकाँ गद-गदा गेल। बाजल-

"बाबा, रस्ता-पेरा एहेन सवाल-जवाबक जगह नै छी। कखनो

कुत्ता-बिलाइ धियान तोड़त तँ कखनो बान्हपर खेलाइत धिया-पुता। ओकरा मनाहियोँ तँ नै करबै। जेकरा तीनियेँ बीतक घर-घराड़ी छै ओकर धिया-पुता रस्ता-बाटपर नै खेलतै तँ खेलत केतए। से नै तँ चलू दरबज्जापर, असथिरसँ कहब।"

पोताक बात सुनि श्यामचरण बजला-

"जेतए बसी वएह सुन्दर देश भेल। जे पैतपाल करए वएह राजा भेल। ईहो जगह कि अधला अछि, दुआरे-दरबज्जाक ने मुहथैर छी। अपन घर-दुआर छी, अकासमे चिड़ै-चुनमुनी उड़बे करत, कुत्ता-बिलाइ, माल-जाल चलबे-एबे-जेबे करत तइसँ कि गप-सप्पमे बाधा पड़त।"

बाबाक विचार गोबर गणेशकेँ नीक लगलै। मनमे एलै गाए-गोरूक मिलान ठेहुनो पानि दुहान...।

बाजल-

"बाबा, रखलाहा पोथीमे कथी राखल अछि से बिसैर गेलिऐ।"

पोताक बात सुनि श्यामचरण कनी पाछू घुसकैत बजला-

"सोलहन्नी केना बिसैर जाएब, मुदा किछु झल जकाँ तँ भइए गेल अछि।"

'झल' सुनि झलझलाइत गोबर गणेश बाजल-

"चारू जुगक चर्चा अछि।"

'चारू जुग' सुनि श्यामचरणक मन सकपकेलैन। सकपकाइते बजला-

"बौआ, चारि जुगक चर्चा ने पोथी-पुराणमे अछि, जुग तँ केतेको आएल-गेल आ अबैत-जाइत रहत। जुगोक कि ठेकान अछि, जखन दूटा चिन्हारकेँ भेँट होइ छै तखनो कहै छै जुगो पछाइत भेँट

भेलौं। आब तोहीं कहऽ जे एक जुगकेँ के कहए जे केते भऽ जाइए..!"

बाबाक विचार गोबर गणेशकेँ जँचल। बाजल किछु ने मुदा डोरीमे बान्हल कोनो वस्तु जकाँ मुड़ी डोलबए लगल।

बाबा बुझि गेला जे भरिसक आरो बात सुनए चाहैए। कहलखिन-

"जहिना चिन्हारक बात कहलियह तहिना बारह बर्खकेँ सेहो जुग कहल जाइ छइ।"

बाबाक विचारकेँ उड़ैत देख गोबर गणेश बाजल-

"बाबा, कोन जुग-जमानाक बात उठा देलिऐ। आब ने ओ जुग रहल आ ने जमाना। अखन जे जुग अछि तहीसँ ने अपना सबहक जिनगी चलत। अनेरे मगजमारी केने मनो छिड़ियाएत।"

जे बुझि गोबर गणेश बाजल हुअए मुदा श्यामचरणकेँ भेलैन जे भरिसक जे कहलिऐ ओ हृदैकेँ बेधलकै हेन। नीक हएत जे आरो किछु कहि विचारक रस्ता बदलब...।

बजला-

"बौआ, जखन एते बाजिये गेलौं तखन कनियेँ आरो रहल अछि, ओकरो सठाइए लेब नीक हएत। चारि जुग जे भेल सतयुग, त्रेता, द्वापर आ कलयुग से कि कोनो एक्के रंग भेल। जेकरा जेते फबलै से तेते दफाइन लेलक।"

गोबर गणेश दफानैक माने नै बुझलक। बाजल-

"की दफाइन लेलक?"

पोताक जिज्ञासा सुनि श्यामचरण बजला-

"देखहक जँ चारू जुगमे समैक बँटबारा भेल तँ एक रंगक ने होइत, से कहाँ अछि। चारू चारि रंग अछि। खाएर जे हौउ मुदा

एकटा आरो बात कहि दइ छिअ। सतयुगक हरिश्चन्द्र बड़ दानी छला। राजा छला, मुदा दान देबाकाल बिसैर गेला जे हम राजा छी, राजक भार ऊपरमे अछि, अपना फुरने जँ एक्के गोरेकेँ सभटा दऽ देबै तँ करोड़क-करोड़ लोक-ले कथी रहतै।”

दिन भरिक जुड़ाएल मन गोबर गणेशक, पेटक बात उफैन-उफैन बहराए चाहै, मुदा बाबाक विरामक पाछुए ने किछु बाजत। रोकलो तँ नै जा सकैए। मनमे उठलै, जहिना कोनो फुलक गाछ आकि कोनो लत्ती गिरहे-गिरह मुड़ियो-फुलो आ बतियो दइए तहिना जखने बजता आकि बिच्चेमे टोकि मुड़ियारी देबैन। अनेरे अक्छा कऽ चुप भऽ जेता...। बाजल-

“बाबा, अहाँ चारि जुगक चर्चा करै छिऐ, मास्टर साहैब कहलैन जे पाँचम जुग छी। एकटा केतए हेरा गेल?”

‘हेराएल’ सुनि श्यामचरण ठमकला। ठमैकते गोबर गणेश बुझि गेल जे भरिसक बजैले किछु कहै छैथ। सुनैक प्रतिक्षु जकाँ मुँह लगै छैन...। बाजल-

“बाबा, जहिना अदौमे आमक फड़ खाइ छल तहिना अखनो खाइ छी। नीक भोज्य पदार्थ छिऐहे। मुदा प्रश्न तँ एकटा उठबे करत किने जे नमहर गाछक फल छी, जँ अपने टुटि कऽ खसैक बात सोचबै तँ छोटका भलेँ खसलोपर दरहे रहैए मुदा नमहर, कोमल केना रहत। तखन ओकरा केना उपयोग कएल जाएत?”

गोबर गणेशक बात श्यामचरणकेँ जँचलैन। बजला-

“एकर उपए तँ यएह ने हएत जे जँ छोट गाछ रहत तँ निच्चोसँ ठाढ़ भऽ हाथसँ तोड़ि लेब, मुदा नमहरमे तँ लग्गी-बत्तीसँ तोड़ल जाएत या गोला-ढेपासँ तोड़ल जाएत। मुदा ई तँ तर्क भेल। आजुक समैमे भलेँ गमलोमे आम फड़ए, मुदा नमहर गाछक फल छी, एकरो तँ

नकारल नहियेँ जा सकैए। जल्दी-जल्दी अपन बात कहऽ। चाहो पीबैक मन होइए।”

चाहक नाओं सुनिते जेना गोबर गणेशक पशे बदैल गेल। बाजल-

“बाबा, गप-सप्प केतौ पड़ाएल जाइ छै, ओ तँ सदिकाल उड़िते रहैए आ उड़िते रहत। मुदा ओकरा जखन विचार बना विचारि कऽ नै विचरण करबै तखन धारक मुँह केना बनतै। अखन एतबे रहए दियौ। रिजल्टक दिन छी, अहाँ अँटका लेलौं। दादी-माए सभ अँगनामे टाटक भुरकी दने तकैए। भने चाहो बनबा लेब आ कुशलो-छेम सुना देबइ।”

गोबर गणेशक विचार श्यामचरणकेँ जँचलैन। मनमे उठलैन जे भरिसक हमहूँ सभ[1] अतिक्रमण करै छी। से नै तँ दुनू गोरेक[2] दिशा दू किए भऽ जाइए? परिवारक भीतर जँ वैचारिक समरूपता रहत तँ मतभेद किए हएत। सभ तँ बालो-बच्चा आ परिवारोकेँ नीक्के चाहै छिऐ।

आँगन पहुँच दादीकेँ गोड़ लागि गोबर गणेश पाशा बदलैत बाजल-

“दादी, पास केलिऐ। तेते ने बैटरीबला पंखा, बत्ती, छोटका बड़का कम्प्यूटर, आरो कि कहाँ आबि गेल अछि जे घरे बैसल इंजीनियर-डाक्टर बनि जेबौ।”

पोताक विचार सुनि दादी एते अह्लादित भऽ गेली जे लाख सम्हारला पछाइतो मुहसँ खसिये पड़लैन-

“रौ गोबरा, सभ दिन तूँ गोबरे रहमेँ।”

[1] पुरुष पात्र

[2] पति-पत्नी

दादीक बात गोबर गणेश नै बुझि पौलक। अपनापर सुनैक शङ्का भेलइ। ‘सुनैक शङ्का’ ई जे गोबराएल कहलक आकि गोबर गणेश। सभ तँ गोबर गणेश कहैए? फेर भेलै- भऽ सकै छै बिनु दाँतक बुढ़ मुँह किछु बजाइए गेल होइ। केहेन-केहेन बीखधरक तँ बीख बिनु दाँते निकैलते ने छै, दादी तँ सहजे बुढ़ दादीए भेली। बाजल किछु ने खाली चाहक गिलास नेने बाबा लग पहुँच, हाथमे पकड़बैत कहलकैन-

“बाबा, अहाँ खुशी भेलौं किने?”

“बौआ, जँ तूँ खुशी तँ हमहूँ खुशी।”

OO

तिथि : 16 जनवरी 2014, शब्द संख्या : 2343

सुमति

तीन माससँ किछु बेसीए दिनपर हरिनाथ भाय भेटला। ओना उमेरमे भरिसक चारि-पाँच मास छोटे हेता मुदा तेहेन लछन-करम छैन जे छोटक कोन बात जे जेठोजन सभ ‘भाय’ कहै छैन, हमहूँ सएह कहै छिऐन। नै भेँट होइक कारण ई नै अछि जे परिवारक ओझरीमे हरिनाथ भाय ओझरा गेल छैथ आकि बेमरियाहे भऽ गेल छैथ। आन भैयारी जकाँ सेहो नहियेँ छैन जे बपौती हिस्सा-बखरा लेल कन्हामे झोरा लटका सरकारी दुआरि[3] धेने रहता।

भेल ई छैन जे परिवारक दाब[4] कम भेने नव-नव काजो आ विचारो तेना कऽ पकैड़ लेलकैन जे पैछला[5] सभ किछु तरिऐ लगलैन अछि, जइसँ घुमबो-फीड़ब कम भऽ गेलैन अछि। कम भेने भेँट-घाँट कमब सोभाविके अछि। दोसर ईहो जे जहिना नव-विचार विचरण-ले समय मगैए तहिना नव काजो तँ मांगिते अछि।

दोहरी मांग भेने रूटिंगो बदलबे करत। सएह भेलैन। भेटते मनमे उठल जे आने जकाँ तँ ओहो भैयारीक बीच छैथे, तँए रामा-कठोला हेबे करतैन। मुदा मुँहक सुरखी से नै कहै छैन। आशाक

[3] कोट-कचहरी

[4] भार

[5] जिनगीमे पहिलुका

ओसाएल ओसक बून जकाँ टप-टप करै छैन। ओना एहनो तँ होइते अछि जे अपन मनक बेथा-कथा अनका लग बजनहि की! तँए अनेरे मुहोँ लटकाएब नीक नहियेँ होइए। मुदा से हरिनाथ भायकेँ नै रहैन। जेना रसे-रसे बेसियाएले जाइत रहैन। एहेन स्थितिमे अगुरवार किछु बाजब उचित नै बुझि पुछलयैन-

"हरी भाय, बहुत दिनपर भेटलौं अछि। की माया-जालमे बेसी ओझरा गेल छी?"

जहिना हल्लुक फूलमे फल्लुक फड़ फड़ैए तहिना ओहो निर्विकार उत्तर देलैन-

"घर आँगनमे तेते नवका-नवका अतिथि-अभियागत सभ आबए लगला अछि जे एक्को-घड़ी छुट्टीए ने होइए जे केतौ टहलबो-बुलबो करब। तँए बेसी दिनपर देखलह।"

हरिनाथ भाइक चिक्कारी[6] बात नीक जकाँ नै बुझि पेलौं। मुदा दोहरा कऽ पुछबो केना करितिऐन। अखन तँ भेँटक ऊपरके सीढ़ीपर छी, चाहे ओ भूमिका होइ आकि कुशल-छेम। कोनो गम्भीर बात तँ राजसी ठाठ-बाठमे चलैए, आगू-पाछू सर-सिपाही रहै छइ। मुदा ईहो तँ मनकेँ हौंरबे करत जे जखन कुशले-छेम नै बुझि पेलौं तखन ऐगला केना बुझि पाएब। करहर सौरखीक गाछ होइ आकि मखानक गाछ बिनु पात पकड़ने केना ओकर गाछ पकैड़ सकै छी। जँ गाछे नै पकड़ाएत तँ पानिक निच्चाँ कीचक जड़ि केना पकड़ाएत, जँ जड़िये नै पकड़ाएत तखन बिच्ची उखाड़ि केना सकै छी। जँ बिच्चीए नै उखड़त तँ अनेरे ओइ दिस ताकिये कऽ की लाभ? पोखैर-डाबरमे तँ पड़ले छइ।

[6] अलङ्कारी

तीन-चारि मासक बीच हरिनाथ भाय भेटला, एते दिनमे सालक मौसमो बदैल जाइए। मुदा गप-सप्पमे तेहेन घुच्ची बनि गेल जे खसैकेँ के कहए जे पैरक कनगुरिया आँगुरक सिर तक छिटका देत...।

मन मोड़ि कहलयैन-

"भाय, बारह मासक सालमे तीनटा मौसम बदैल जाइए मुदा एते दिनक पछाइतो अहाँक मुँहक चुहचुही नै चिहकल?"

जेना निर्विकार हरिनाथ भाय रहैथ तहिना बजला-

"मुँहक चुहचुही किए बदलत, अपन जे दायित्व बुझै छी तइ पाछू लगल छी। जहाँ धरि सम्भव भऽ सकतै, हेतइ। तइले अनेरे चिन्तासँ चीत भऽ चितामे चलि जाइ सेहो केहेन हएत। जँ कोनो काज अछि तँ से केना हएत, ओकर चिन्तन-मनन करैत चिन्तक बनि परिवारमे ठाढ़ हएब, तखने ने चिन्तामुक्त परिवार बनत। से बिना केने थोड़े हएत।"

ओना हरिनाथ भाइक विचार सुनि केतेको बात मनमे उठल मुदा फेर भेल जे भैयारीक सम्बन्ध बुझैक अछि, अनेरे दोसर-तेसर बातमे वौआएब नीक नै...।

पुछलयैन-

"सपरिवार नीके छी किने?"

परिवारक नाओं सुनिते जेना हरिनाथ भाय चौंकला तहिना हलसैत कहलैन-

"भने परिवारक कुशल पुछलह, सुन्दरलाल सेहो आएल अछि, गामेपर चलह कलकतिया बिस्कुटो खुएबह, चाहो पीविहऽ आ गपो-सप्प हेतइ।"

हरिनाथ भाइक बात सुनि मनमे उठल भने कहबो केलैन आ

बहुत दिनसँ सुन्दरलालसँ भेँटो ने भेल, दुनू भऽ जाएत। मुदा नमहर नचनियाँक फीस तखने ने नमहर होइ छै जखन व्यस्तता बेसी देखबैए। तहिना हमहूँ बजलौं-

"भाय, एकटा काजे दछिनवारि टोल जाइ छी मुदा सुन्दरलाल बहरवैया भेल, परदेशक किछु समाचार सुनब बेसी महत रखैए। अपन काज तँ अपना हाथक छी, जखने समैक गर लागत तखने ससारि लेब।"

जहिना हरिनाथक घर दिस डेगो बढ़ैत रहए तहिना गपो-सप्प डेगे-डेग बढ़ए लगल...।

कहलयैन-

"जखन सुन्दरलाल महानगरक राजधानीमे रहैए तखन तँ बाल-बच्चा सभकेँ ओतै पढ़बैत हएब?"

ऐगला बात कहैले पछुआएले रहए आकि बिच्चेमे हरिनाथ भाय टपकला-

"संगतुरिया जकाँ तोरा बुझै छी, तखन किए एना अनाड़ी जकाँ बजै छह?"

हरिनाथ भाइक बात सुनि फेर मन ओझरा गेल। केहेन सुन्नर बात कहलयैन तखन किए तमसा गेला। तमसाइक कोनो अरथे ने लगल। फेर सोचलौं जे दरबज्जापर पहुँचैसँ पहिने खटपटाएब नीक नहि। खटपटही गाए जकाँ दुहैसँ पहिने लथारसँ डाबा फोड़ा लेब तखन दूहब कथीमे। मुस्की दैत जहिना शुभ-शुभ कियो केतौ पहुँच बजैए तहिना बजलौं-

"भाय, बिस्कुट तँ कलकतिया नीक हएत मुदा चाहमे पौडरबला दूध मनाही कऽ देबै, गैसक शिकाइत रहैए।"

जेना हरिनाथ भायकेँ ठोरेपर बरी पकैत होइन तहिना जवाब देलैन-

"घरवैयाकेँ जुड़त मरूआ रोटी तँ खीर केतए-सँ आनत।"

गर भेटल। कहलयैन-

"कहलौं तँ बेस मुदा ईहो केहेन हएत जे नै पचैए सएह खुआएब।"

जहिना बजलौं तहिना ओहो लोइक लेलैन-

"खुएबऽ विस्कुट, चाह तँ पीबैक वस्तु छी। खेला पछाइत ने पीअल जाइ छै पीला पछाइत खाएल थोड़े जाइ छइ।"

गपक रस पाबि बजलौं-

"खेनाइ-पीनाइ दुनू संगी छी। एकठाम बनि-ठनि भरि दिन केतए वौआइए तेकर खोज-खबैर रहौ आकि नै रहौ मुदा बनै-ठनै बेर तँ दुनू एकठाम होइते अछि।"

घर लग एने मनमे भेल जे रस्ताक गपकेँ विराम देब नीक हएत। तहूमे लङ्गोटिया संगीक बीचक बात छी, जँ कहीं परिवारक दोसराइत सुनि लेत तँ अनेरे अर्थक अनर्थ भऽ जाएत...।

बजलौं-

"सपरिवार सुन्दरलाल एला अछि आकि असगरे?"

हरिनाथ-

"ऐबेर तँ सपरिवार आएल अछि मुदा बेसीकाल असगरे अबैए।"

असगर सुनि पुछि देलिऐन-

"एना किए दू-रंगा गप कहै छी?"

'दू-रंगा' सुनि मनमे कचोट भेलैन। मुदा सोझे मुहेँ नै बाजि कनछियाइत बजला-

"नोकरियो कि एक रंगक होइए जे एक चालिये सभ चलत। रघुवीरकेँ देखै छी एजेंसीक नोकरी छै, किम्हरोसँ किम्हरो महिनामे चारि-पाँच खेप चलि अबैए। मुदा सभ कि रघुवीरे छी, सेहो बात नै अछि। एहनो तँ होइते अछि जे कियो सालक मास दिनक छुट्टी एकेबेर गाममे बितबैए, तँ कियो टुकड़ी काटि-काटि पान-सात बेर सालमे चलि आबैए। मुदा सुन्दरलालकेँ अपन ढाठी छइ। दस दिनक दुर्गा पूजाक छुट्टीमे सभतूर अबैए आ अनदिना असगरे अबैए। मुदा ऐबेर तइ सभसँ अलग भऽ सपरिवार आएल अछि।"

पेटमे जहिना भूखल बिलाइ बिलाइत रूपमे कुदैत तहिना पेटमे दू भैयारीक रामा-कठोला सुनैले सेहो कुदैत रहए। मुदा कण्ठसँ ऊपर हुअ नै दिअ चाहिऐ। अनेरे अनका चार परहक कुमहर गनब। गनबै कुमहर आ जँ कोनो बतिया सड़ि जेतै तँ नाओं लगौत जे फँल्लेँ आँगुर बतौने रहए...।

फेर मन हुअए जे जँ कहीं दुनू भाँइक बिच्चेमे सम्बन्धक प्रश्न रखि दिऐ तँ से बेसी नीक हएत। मुदा फेर हुअए जे सबहक कीदैन रूपैआ करए। जँ कहीं पाइ-कौड़ीक चर्च भेल आ विवाद फँसल तँ अनेरे दोखी हएब जे फँल्लेँ आबि कऽ दुनू भाँइमे मारि करा देलक। मारि करत अपना चालिये आ दोखी बनौत हमरा जे फँल्लमा घरे फोड़ि देलक..!

कोनो गरे ने अँटए जे अपन बातक जड़ि पकड़ब। जाबे जड़ि नै पकड़ाएत ताबे सत् केना औत, जाबे सत् नै औत ताबे चेतनकेँ चेतन केना कहबै, ताबे तक तँ ओ बाले-बोल रहत। बाल-बोलक आनन्दे की? क्षणिक! मन तेना मकड़जालमे ओझरा गेल जे हरिनाथ भाइक

रस्ताक बातो अदहे-छिदहे सुनि पेलौं। दरबज्जापर पहुँचते जहिना घोड़ाएल मक्खन आगिपर चढ़ि घी बनए लगैए तहिना भेल।

दरबज्जा ओसारक चरिजनियाँ अखड़े चौकीपर सुन्दरलाल सभटा धिया-पुताकेँ माने दुनू भाँइक बेटा-बेटीकेँ गोल-मोल बैसा अपनो बैसल रहए। रूमाल चोर जकाँ गोलका माला बनौने रहए आ सभसँ छोट भतीजीकेँ पुछैत रहइ-

"बुच्ची, तोहर नाओं की छियौ?"

आँखि उठा चारि बर्खक रानी मने-मन गर लगबए लगल। माए कहैए-

'रानी', पिता कहै छैथ- 'सड़लाही', बड़का भैया कहै छैथ- 'लछमी' आ काका अपने कहै छैथ- 'त्रिवेणी' आ चाची 'जमुनियाँ सरोसती।' जेतए लोकक नाओं तँ एकटा होइ छै तैठाम हमरा ढेरी अछि। तखन की कहबैन, यएह ने कहबैन त्रिवेणी। बाजल-

"त्रिवेणी।"

सुन्दरलालकेँ बच्चा सबहक बीच गप-सप्प करैत देख डेढ़ीए लग कनी डेग छोट कऽ लेलौं। ओना, संयोगो नीक रहए जे सुन्दरलालक पीठ दिससँ अबैत रही।

'त्रिवेणी' सुनि सुन्दरलाल जेठकी बहिनकेँ देखबैत पुछलक-

"ई के भेलखुन?"

"दीदी।"

"हम?"

"कलकतिया काका।"

सुन्दरलालकेँ बच्चा सबहक बीच देख मन घीवाह भऽ गेल। आगिपर चढ़ल घीबक सुगन्धसँ दरबज्जा सुगन्धित पाबि ठाढ़ भऽ

गेलौं। मुदा से हरि भाय भंग कऽ देलैन। सुन्दरलालकेँ टाँहि देलखिन-

"बौआ, पुरान संगी रस्तापर भेटला, बच्चा सभकेँ छोड़ह पहिने जलखै-चाहक ओरियान करह।"

धड़फड़ा कऽ सुन्दरलाल उठि बाँहि पकैड़ कुरसीपर बैसबैत भातीजकेँ कहलक-

"बौआ, पहिने जलखै नेने आबह, ताबे चाहो बनते।"

कहि दुनू भाँइ चौकीपर बैसला। सेरिया कऽ सभ बैसलो ने रही आकि तीन-चारि रंगक बिस्कुट आ दूटा लालमोहन सजल प्लेट हाथमे आबि गेल। तेज काजक रूप देख मनमे भेल जेना पहिनेसँ प्लेट सजल होइ। तीनू गोरेक हाथमे प्लेट आबि गेल मुदा हाथ तीनूक बाड़ल। ओ दुनू भाँइ बाड़ने जे पहिने, ओ मुँहमे लेता तखन ने हम सभ लेब। जेना भोजो काजमे पहिने बुढ़-बुढ़ानुस कौर उठबै छैथ तेकर पछाइते ने सभ उठबैए। भलेँ धिया-पुता पहिने किए ने खेनाइ शुरू कऽ लइए। अपन अगुआएब नीक बुझि एकटा बिस्कुट तोड़ि मुँहमे लेलौं। ओहो दुनू भाँइ खाए लगला। बेवहार देख भ्रमित मन सहैम गेल। अपनाकेँ छिपबैत सुन्दरलालकेँ पुछलिऐ-

"बौआ, केते दिनपर गाम एलह हेन?"

सुन्दरलाल कहलक-

"डेढ़ मासपर।"

'डेढ़ मास' सुनि मन आरो भरैम गेल। डेढ़ मासपर कलकत्तासँ आएल, तखन कमाएल कथी हएत! ओ कमाइ तँ गाड़ियेक भाड़ा-भुड़ीमे चलि गेल हेतइ। मुदा पुछबो केना करबै जे भाड़े-भुड़ीमे सभ पाइ चलि जाइत हेतह, तखन परिवार केना चलतह...।

विचारकेँ मोड़ैत बजलौं-

"डेढ़ मासपर किए एलह, कोनो विशेष काज की?"

'विशेष काज' सुनि सुन्दरलाल बाजल-

"विशेष केकरा कहबै आ साधारण केकरा कहबै?"

सुन्दरलालक प्रश्न जेना मनकेँ दाबि देलक, दाबि ई देलक जे विशेष आ साधारण तँ बेकता-बेकती होइए। ओना समाजिक सेहो होइते अछि, मुदा जहिना समाज अपन चालि बदैल कुचालिक बाट पकैड़ लेलक अछि तहिना ने बेक्तिक साधारण आ विशेष काजोक चालि बदैल गेल अछि। ओना बेकता-बेकती जिनगीक दशा-दिशानुसार सेहो बदलैत चलै छै...।

कोनो गरे ने फुरए जे सुन्दरलालकेँ सवुरगर[7] जवाब दऽ सकब। मन ठमकल। मुदा लगले भेल जे जखन पी.जी. किलासमे विषय धारा पकैड़ चलबे ने करैए, तखन गाम घरक तँ दलान दलाने भेल। जँ खेती-गिरहस्तीक क्रार्यक्रममे भगवतीक गीत बीचमे नै गाएब तँ की गाएब। ने खेतीकेँ अपन उपजाक ठेकान छै आ ने गिरहतकेँ गिरहस्तीक। तखन हमरे किए रहत। पाशा बदलैत बजलौं-

"बौआ, गाममे नीक लगै छह?"

प्रश्न तँ ऐ हिसाबसँ रखलौं जे जहिना बजरूआ लोक सिनेमा-कलाकारक सात पुश्त तक जनैए मुदा अपन वंशक तीनियोँ पुश्त नै जानि पबैए। मुदा से भेल नहि। जेना ठेकनाएले रहै तहिना सुन्दरलाल कहलक-

"भैया, जहिना अहाँ भाय साहैबक संगी छिऐन तहिना हमरो भेलौं। तँए अहाँ लग कोनो बात बुझैले रखि सकै छी। गाममे किए ने नीक लागल? बोन राखए सिंह आ सिंह राखए बोन।"

[7]सन्तोषप्रद

खोलि कऽ सुन्दरलाल किछु ने बाजल मुदा तेहेन गड़ूगर प्रश्न रखि देलक, जे किछु फुरबे ने कएल। मनमे उठल जे जखन धारो-धुरक कोनो ठेकान नै अछि जे जइ कोसी-कमलाक गीत लोक झालि-मिरदंगपर गबैए भलेँ ढोलक-झालिक जगहे किए ने बदैल गेल हौउ। मुदा जइसँ खुशी होइत ओहो कोसी-कमला गामक-गामकेँ उजाड़बो करैए आ माटिकेँ सेहो उजरबैए! तैठाम मनुख तँ मनुखे भेल। जे मनुखाहो बनैए आ मरखाहो...।

पाशा बदैल बजलौं-

“भाइयो साहैबक धिया-पुताकेँ ओतए लऽ जा नीक स्कूल कौलेजमे पढ़बै छहुन किने?”

ले बलैया! सुन्दरलाल चुपे रहल आ बिच्चेमे हरी भाय बमैक उठला-

“अहिना बुझै छहक। हम कि अपना बेटाकेँ कारखानाक लूरि सीखा कारखानाबलाक बेटा बना देब। जइ दिन अपना पूजी-पगहा हएत तइ दिन अपना मशीनपर लूरि सिखत।”

हरी भाइक बात सुनि किछु खास बात मनमे उठल संगे मनमे ईहो उठल जे अनेरे अनका दरबज्जापर मुँहचुरू होइ छी तइसँ नीक जे हरीए भायकेँ पुछि वक्ता बना अपन नाङैर समेट लेब नीक। बजलौं-

“केना अपन बेटा अनकर भऽ जाएत?”

हरी भाय बजला-

“केना भऽ जाएत, से तूँ नै बुझै छहक।”

अपना दिस प्रश्न अबैत देख फेर पाशा बदललौं-

“बौआ सुन्दरलाल, तोहर बात नै बुझि पेलौं जे केना बोन सिंह रखैए आ सिंह केना बोन?”

गम्भीर होइत सुन्दरलाल बाजल-

“भैया, किए हम परदेश गेलौं, अहीं कनी बुझा दिअ। स्कूलमे नीक विद्यार्थीक गिनतीमे हमहूँ छेलौं। एम.बी.ए. केलौं। अहाँक गाममे हमर कोन काज रहल। जँ पढ़ि-लिखि काज बदैल करितौं तँ अहीं बजितौं जे पढ़ै फारसी बेचै तेल, देखू भाय करमक खेल। तखन?”

सुन्दरलालक प्रश्न जेना मनकेँ आरो भरिया देलक। मुदा जइ दरबज्जापर बैस जलखै केलौं, चाह पीलौं तैठामसँ मुड़ी गौंति जाइ ओ नीक नहि। मुदा मुड़ी उठाएबो असान तँ नहियेँ अछि। मनमे एकटा गर उठल। गर ई उठल जे जइ प्रश्नपर हरी भाय बमकला तही प्रश्नकेँ किए ने सुन्दरलालकेँ दोहरा कऽ पुछि दिऐ। बजलौं-

“बौआ हरीभायकेँ कोन बातक कुवाथ भऽ गेल छैन जे एना कड़ुआएल छैथ?”

सुन्दरलाल हूसल। हूसल ई जे अपन पैछला बात दोहरबैत बाजल-

“मनमे उठल रहए जे जखन भैयारीमे, परिवारमे जाबे तक काजक सम्बन्ध नै बनत ताबे तक एक दबाइत रहत दोसर उठैत रहत। यहए सोचि भैयाकेँ कहलयैन जे भातीज-भतीजीकेँ कलकते जाए दियौ, ओतै नीक स्कूल-कौलेजमे पढ़ाएब। मुदा..?”

‘मुदा’क पछाइत सुन्दरलाल रूकि गेल। ओना जिनगीक घटित घटना रहै, भाइक सोझहामे पक्ष राखब नीक नै बुझलक, मुदा हरी भायकेँ जेना पैछलो बात ओहिना तजगरे छेलैन। तहूँमे बजैक क्रमो तँ अगियाऐ गेल रहैन। मुदा मनुख तँ भगवानोसँ बुधियार होइते अछि। आगि भलेँ पानि नै भऽ सकए आ ने पानि आगि भऽ सकए मुदा मनुख तँ भऽ सकैए। आगि पानिक बनल मनुख, कखनो आगिक लहास

जकाँ भऽ जाइए तँ कखनो कैलाशक बरफ जकाँ। हरियो भायकेँ सहए भेलैन...। सुन्दरलालक विचारपर पानि फेड़ैत टटका प्रश्न बनबैत बजला-

“तोरेसँ पुछै छिअ जे जे बच्चा बच्चेसँ माए-बाप लगसँ हटि जाइए ओ सकताइत-सकताइत पाकल बाँस जकाँ नै सकता जाएत, ओ माए-बापक देल कोन किरिया-करम मन पाड़ि अपन किरिया करमसँ जोड़ि करत?”

हरीभाइक प्रश्नक उत्तर उकड़ू छेलैन। उकड़ू काजकेँ सुकड़ू बनाएब धिया-पुताक खेल थोड़े छी। तहूमे केहेन उकड़ूकेँ केहेन सुकड़ू बनौल जाए। ईहो एक अलग समस्या भेल। एहेन तँ नै ने जे जइ बाँसक टोनसँ ढेंग उनटाबए जाएब आ वएह टुटि जाए, तखन तँ आरो उकड़ू हएत। तइसँ नीक जे दुनू भाँइक बीचक बात छी तँए किए ने ओही गरे उनटा दिऐ...।

बजलौं-

“हरी भाय, बातकेँ कनी फरिछा कऽ कहियौ। नै बुझि पेलौं जे अहाँ की कहै छिऐ।”

जेहने धियानसँ हमर बात हरी भाय सुनने रहैथ तेहने अपन जगह ठेकनबैत बजला-

“हमहीं दू भाँइ छी। दुनू भाँइक बीच केहेन मेल-मिलान अछि जे सभ देखैए, मुदा मिलान रहलो पछाइत हटल केते छी। जँ कलकत्तामे सुन्दरलाल बिमार पड़ए आकि गाममे हमहीं पड़ी, भैयारीक सेवा कथी हएत?”

हरीभाइक अकाट बात सुनि किछु फुरबे ने कएल, खिस्सा सुनिनिहार जँ हूँहकारी नै देत तँ खिस्सकर अपनाकेँ की बुझत। मुदा हूँहकारियो तँ हूँहकारी छी। केहेन हूँहकारी पड़त ईहो तँ अदना बात

नहियेँ अछि। ओना सुन्दरलाल डेढ़ मासपर आएल छल, मुदा बुझलो बातकेँ अनठबैत फेर पाशा बदैल बजलौं-

“बौआ, गामक आवाजाही केहेन रखने छह?”

अपन भार हटैत देख हरी भाय ओसारक देवालमे ओङैठ गेला। ओङठैत देख मन हल्लुक भेल। जइ नजरिये हरी भायकेँ देखै छिऐन तइ नजैर-जोकर सुन्दरलाल थोड़े अछि। आँखि उठा सुन्दरलालक आँखिमे गाड़लौं आकि सुन्दरलाल बाजल-

“भैया, नोकरीक शुरूआतमे दस बर्ख सोलहन्नी गाम छुटि गेल। छुटैक कारण नोकरी रहए। जहिना सभ जिनगीमे आगू बढ़ए चाहैए तहिना चाहलौं। जइसँ ड्यूटीकेँ मजगूतीसँ पकड़लौं। ने कहियो अनट-बिनट छुट्टी ली आ ने कोनो लापरवाही करी। मुदा बच्चाक पढ़ाइ-लिखाइ आ पत्नीक बर-बिमारी खुदरो-खुदरी एते भाइए जाए जे सालक बीस दिनक छुट्टी हेरा जाए। छुट्टियो ने हुअए जे गाम ऐबतौं। दस बर्खक पछाइत मनमे भेल जे आब बच्चो कनी चेष्टगर भेल आ पत्नियोँ कनी निधोख भेली, जइसँ दुनू काज असान भेल। असान कि भेल जे अपन काजे ने रहल। मुदा फेर दोसर बिहंगरा ठाढ़ भऽ गेल?”

‘बिहंगरा’ सुनि बजलौं-

“की बिहंगरा?”

मुँह बिजकबैत सुन्दरलाल बाजल-

“तेते ने हित-अपेछित भऽ गेल अछि जे नौते-हकार पुड़ैमे छुट्टी हेरा लगल। हेरेबे नै कएल जे केतेठामसँ उपरागो आबए लगल जे अहाँ नै एलौं।”

बाजि सुन्दरलाल चुप भऽ गेल। पुछलिऐ-

“चुप किए भेलह?”

जेना सुन्दरलालक आँखिमे चुमकी एलै! बाजल-

“सभ छोड़ि दुर्गापूजामे सपरिवार गाम आबए लगलौं। मुदा जे मनमे छल से अहूसँ नै भेल।”

जिज्ञासा जगल पुछलिऐ-

“की मनमे छेलह?”

सुन्दरलाल-

“मनमे आएल जे कम-सँ-कम मासे-मास गाम आबी। मुदा तहूमे बाधा आबए लगल। कहियो पत्नी नैहरक लाटमे नौत पूरए जेती तँ कहियो बच्चा-सबहक पढ़ाइ बाधित हुअए।”

“तखन?”

“तखन यएह केलौं शनि-रबिक उ पयोग केलौं, परिवारकेँ छोड़ि गाम आबए लगलौं।”

गाम अबैक लाट देख कहलिऐ-

“हरी भायकेँ गाम-गमाइत करैले एकटा गाड़ी कीनि दहुन? एक तँ उमेरगरो भेला आ अपन नामो-निशान रहतह?”

बजैकाल तँ बाजि गेलौं मुदा हरी भायकेँ नीक नै लगलैन। बमैक गेला-

“बड़ बुधियार भऽ गेलह, टिटही जकाँ हमरा टिकटिकिया कपारपर चढ़ल अछि जे अनेरे रोडमे हाथ-पएर तोड़ा काहि काटब। हाट-बजारक जे काज अछि ओ जखन गामेमे भेट जाइए तखन अनेरे किए वौआएल घुमब।”

सुर्जकेँ सिरचढ़ू होइत देख उठैक गर अँटबए लगलौं। बहुत बेसी कहा-कही दुनू भाँइक बीच भलेँ नै भेल होइ, मुदा विचारक दूरी तँ अछिए। तहूमे दरबज्जापर बैस चाह-पानि पीलौं, सामंजस करैत

कुरसीपर सँ उठैत बजलौं-

“समय तेहेन भऽ गेल अछि जे कँटहा बाँस जकाँ केतबो चिक्कन करबै तैयो उबड़-खाबड़ रहिये जाएत। कोनो कि गीरहेटा खोंचाह रहैए, पोरक बिच्चोमे तहिना रहैए।”

बाजल तँ ई सोचि रही जे दुनू भाँइकेँ नीक लगतैन मुदा से भेल नहि। सुन्दरलाल चुप रहल, बात मानलक आकि नै से तँ ओ जानए। मुदा चुप्पीसँ अपना बुझि पड़ल जे मानि लेलक। मुदा हरी भाय तड़ैंग बजला-

“अनेरे समैकेँ दोख लगा लोक अपन गलती छिपबैए। समैए केकरो ने किछु केलकै हेन आ ने करै छइ। लोक अपने केतौ भाग कहि समैक दोख लगबैए तँ केतौ दिनक दोख तहिना केतौ मौसमक तँ केतौ सालक।”

हरी भाइक बात सुनि मन चकरा गेल। चकरा ई गेल जे, जे बात सभ बजैए से झूठ केना भऽ जाएत। सभ कि झूठेक कारोबार करैए..?

बजलौं-

“हरी भाय, अहाँ जान नै छोड़ब। सोफ[8] जकाँ तेहेन बात लाधि देलिऐ जे बिना लाठी लगौने ठाढ़े ने हएत। अधडरेरेपर सँ लीब जाएत। कहैले तँ बिछानसँ नमहर होइए मुदा अपने भरे ठाढ़ो होइक जोर[9] नै होइ छइ। कनी फरिछा कऽ कहियौ जे समैक दोख किए ने होइए?”

हरी भाय बुझि गेला। कनियेँ रूकि बजला-

“देखहक, कोनो काज करैसँ पहिने लोक ओकर विचार करैए।

---

[8] बड़का बिछान

[9] दम

विचार केला पछाइत एक सीमापर अबिते बुझब मानैए। बुझबकेँ बुझाएब लूरि भेल, कला भेल।”

हरी भाइक विचार जेना मनमे गड़ल। काँट जकाँ नै गड़ल जे बिसबिसैतए, छेनाक पानि जकाँ कपड़ामे बान्हल मोटरीक पानिक ठोप जकाँ गड़ल...।

कहलयैन-

“हरी भाय, कनी पैछला बात समैक दोख जे कहलिऐ तेकरा चिक्कन कऽ दियौ।”

‘चिक्कन’ सुनि हरी भाइक ठोर जेना मधुएलैन। मुस्की दैत बजला- “जेकरा समय बुझै छहक ओ निरविकार अछि। हाथ-पएर नै रहितो ओ अपना गतिये चलिते अछि, चलिते रहत। मुदा विवेकी मनुख विवेकहीन बनि अपन काजकेँ दोसरपर लादि दइए। खाएर, आब नहाइयोक बेर भेल जाइए, तहूँ जेबह। तँए कहि दइ छिअ।”

हरी भाइक लछन-करमसँ बुझि पड़ल जे अपन अन्तिम बात कहए चाहै छैथ।

हूँहकारी भरलौं-

“समैएपर ने नहाएब-खाएब आ सुतब नीक होइए?”

सुनि जेना हरी भाइक मन फुला गेलैन। जेठ मासक रौदमे जखन कियो छाती भरि पानिमे पइस पतालसँ अकास धरिक बीच अपनाकेँ पबैए तहिना हरी भाय अपन बात बजला-

“जखन सुन्दरलाल आगू पढ़ैक विचार केलक, तखन सुन्दरलालो आ पितोजीक एक विचार रहैन। मुदा नै ऐ दुआरे बजलौं जे पिताक आगू किछु बाजब आ जँ कहीं सुन्दरलालक मनमे होइतै जे भैये बाधा छैथ, तखन किए बीचमे बाधक बनि कलङ्क लैतौं। तँए

किछु ने बजलौं मुदा ओतैसँ परिवार हूसल।

‘हूसल’ सुनि जिज्ञासा बढ़ल। पुछलयैन-

“उपए?”

बजला-

“जे हूसल से तँ हूसि गेल, मुदा आबो सुमति आबौ जे आगू दिन दनदनाइत चलत।”

ОО

तिथि : 30 जनवरी 2014, शब्द संख्या : 3072

फेर पुछबैन

राकेश आ मुकेश गामेक हाइ स्कूलक वर्ग दसममे पढ़ैत। एक तँ एकउमेरिया तैपर दुनूक मात्रिको एके गाम तँए सम्बन्ध आरो बेसी गाढ़। गाढ़ सम्बन्ध तँ वएह ने भेल जे झगड़ा-मिलान संगे एक रहैए। तेतबे किए तहूसँ बेसी होइए। तीत-मीठ दुनू संगे रहैए। तँए कि सना-बटा कऽ डलना तरकारी जकाँ मसल्ला सभकेँ एकबट कऽ दइ छै? नै! से नै होइ छइ। होइ छै ई जे समय आ जगह पाबि वएह तीत होइए आ समय-जगह पाबि वएह मीठ होइए।

दस घण्टी पढ़ाइक बीच नअम घण्टीक पढ़ाइ शुरू भेल। शिक्षक आबि जमीनक सर्वेक विषय पढ़बए लगला। जलियाएल विषय तँए आन शिक्षक जकाँ धुर-झाड़ तँ नै बाजि पबैथ मुदा मन पाड़ि-पाड़ि बजने विद्यार्थी सभकेँ अकछाइत देखलैन। मन मोड़ैले बजला-

“जोरू जमीन जोरकेँ नै तँ केकरो औरकेँ।”

लयवद्ध पाँति तँए विद्यार्थी एकाग्र भेल। मुदा अपन विषयक नाङैर पकैड़ पुन: शिक्षक सर्वेक विषय पकैड़ लेलैन।

छुट्टीक घण्टी बजल। सभ विदा भेल। विद्यालयक आँगनक झून्ड पतराइते राकेश-मुकेश एकठाम भेल। झून्डक हल्लो कमल।

गप-सप्प करैक मौसम पाबि राकेश बाजल-

“जोरू जमीन जोरकेँ, नै तँ केकरो औरकेँ।”

बजैक कारण राकेशक मनमे रहै जे मास्टर साहैबक पढ़ौल ओहिना मन अछि...।

उनटबैत मुकेश बाजल-

“छुच्छे पाँति बजने हेतौ! कह ते ओकर माने की भेल?”

मुकेशक चाइलेंजकेँ राकेश केना नै स्वीकारैत। बाजल-

“घरवाली आ खेत-पथार तागैतक छिऐ जे हर्ही-सुर्ही नै सम्हारि पौत।”

गपक क्रमक नाङैर पकैड़ मुकेश बाजल-

“जहिना सुरेबगरहा लेल सुरेबगरही घरवाली होइ छै तहिना नेङरा लेल नेङरियो होइ छै, तखन केना बुझलेँ?”

दुनूक बीच प्रश्नपर रगड़ नै होइत, नीक-बेजाएक सीमापर हरदा-हरदी कहि मानि लैत। राकेश मानैत बाजल-

“तूँ की बुझहै छीही, बाज?”

राकेशक बात सुनि मुकेशक मनमे खुशी उपकल। खुशियो केना नै उपैकते, केतौ बिनु पुछनौं ढाकीक-ढाकी बात छिड़ियाइत रहैए आ केतौ सुनिनिहार स्वयं जिज्ञासु होइए...।

बाजल-

“खेत-पथारक संग जेकर जोर भेल अछि ओकरे ने ओ भेल आकि दोसराक?”

ओना अखन धरि राकेश-मुकेश अपना मतभेदकेँ अपने विवेके फरिछा लइ छल मुदा से नै भऽ रक्का-टोकी शुरू भऽ गेलइ। रंग-

बिरंगक शब्दवाण चलए लगलै।

विद्यालयसँ घर लग दुनू पहुँच गेल मुदा फरिछौट नै भेल...।

अन्तमे, दुनू सहमत भेल जे काल्हि ओही मास्टर साहैबकेँ फेर पुछबैन।

OO

तिथि : 31 जनवरी 2014, शब्द संख्या : 339

भोँटक गहमी

पाँच बर्ख पहिलुका भोँटक बात किछु गोरेकेँ मनो रहल आ अधिक गोरे बिसरिये गेला। मनो रहैक कारण आ बिसरैयोक कारण अपन-अपन छेलइ। किए लोक बिसैर जाएत जे हमरे भोँटपर सरकार नै बनल। नै बनैत तँ करोड़क लाभ केना भेटल, मुदा अधिक लोक ओहने जेकरा भोँटक अधिकार तँ छै मुदा चीन-पहचीन नै छइ। दू देशक सीमान परहक पगलखन्ना जकाँ, केकरो नै दुनूक। भलेँ पगलपनी दुआरे दुनूमे सँ केकरो मोजरे किए ने नै दइत होइ।

रंग-रंगक मुखौटा, रंग-रंगक रूप बना एबे करत। मुखौटा ई जे कियो सम्प्रदायकेँ अगुऔत तँ कियो पछुऔत, मुदा रहत दुनू काते-कात। जँ से नै तँ पंथ निरपेक्ष जीवन शैली छिऐ आकि भाषण..? जँ जिनगी भाषण बनि जाए आ लोक नै भँसिअए तँ भाषणे की भेल। कियो जातिक ढोल पीटि सम्प्रदाय छिपबैए तँ कियो ओकरे उजागर करैए, मुदा रहैत दुनू अगले-बगले। खाएर जे हौउ, मुदा छी तँ ओहेन पाबैन निसचिते, जेकरा कियो निष्ठा बुझि करत आ कियो पावती[10] बुझि करत, तँ कियो खेल बुझि खेलाएत। खेल बुझब ई भेल जे देशक चक्की कोन दिस घुमए चाहैए। चाहैए। बामी आकि दहिनी...।

[10] पौनाइ

रंग-रंगक हवा-विहाड़िक बात सुनि मोहन, दसम कक्षाक विद्यार्थी, ठाढ़ भऽ किलासमे बाजल-

"सरजी, ओना पैछला भोँट नीक जकाँ मनो ने अछि, मुदा ऐबेर तँ बहुत गहमा-गहमी देखै छिऐ, से की?"

कुरसीपर बैसल शिक्षक-श्यामचरण मोहनक प्रश्न सुनि मने-मन विचार करए लगला। प्रश्नकेँ छोट मानल जाए आकि नमहर। प्रश्न तँ बिनु ओर-छोरक अछि। देशक सरकार बनत। जे जन-जनसँ दुनियाँ धरिक सम्बन्ध बनबैक कड़ी हएत, तैठाम दसमा किलासक अबोध बच्चाकेँ केना बुझौल जाए। मुदा जँ शिक्षकक आगू बच्चाक प्रश्नकेँ अनदेखी कएल जाए तँ एकरा के उचित कहत...।

लगले मन बदललैन, नीक हएत जे मोहनेटा सँ नहि, आनो-आन बच्चा सभसँ आरो-आरो प्रश्न उठबाएब। जँ अपने उत्तर देब शुरू करब आ प्रश्नकर्ताक नजैरमे की हएत तैपर भऽ सकैए जे नजैर नै जाए, तखन दुधमुहाँ बच्चाक मुँह घीमुहाँ केना बनत? आ जँ नै बनत तँ अनेरे शिक्षक बनि बाल-बोधकेँ ठकै किए छिऐ।

शिक्षक आँखि खिड़बए लगला। जेना आँखिक जोतसँ तीर छिटकैत होइन तहिना रंग-रंगक उलटा तीर हृदैकेँ बेधए लगलैन...।

सोहन उठि कऽ बाजल-

"सरजी, अपन देश जनतंत्र छिऐ, तखन किए प्रधानमन्त्री 'के' बनत से पहिने लोक गर्द करए लगैए?"

कुरसीपर बैसल श्यामचरण सोहनक प्रश्न नोट करैत बजला-

"बौआ, अखन सवाल अबैक समय अछि तँए तोहर सवाल कागतपर लिखि कऽ रखि लेलिअ। पछाइत बुझा देबह।"

सोहनक प्रश्नक दर्ज सुनि भागेसर उठि बाजल-

"सरजी, लोडस्पीकरपर प्रतिबन्ध लगि गेल अछि, मुदा गाड़ीक-गाड़ी बाजा बाजि रहल अछि। से एना किए अछि?"

मुस्की दैत श्यामचरण बजला-

"किए अछि, किए नै रहत, ई विचारणीय प्रश्न छी। हमर संसद तँ यएह भेल, तोहीं सभ ने काल्हि पटना-दिल्लीक संसदोमे बैसबह, कानूनो बनेबह आ कानून बना लागुओ करबह।"

श्यामचरणक विचार सुनि सौंसे किलासक विद्यार्थी थोपड़ी बजबए लगल। जेना देव मन्दिरमे बैसल भजनमे लीन भक्त थोपड़ी बजबैत बिसैर जाइए जे भजनक कड़ी कखन खतम भेल। किछु गोरे थोपड़ी बन्नो केलक आ किछु गोरे बजैबते रहल। थोपड़ीक स्वागत पाबि दुनू हाथसँ बच्चाक थोपड़ी बन्न करबैत श्यामचरण बजला-

"आइ भरि प्रश्न रखैक छह, काल्हि सबहक बीच वाद-विवाद करेबह, जँ समय बँचत तँ काल्हिये नै तँ परसू, छुटल-बढ़ल सभ सवालक रस्ता बुझा देबह। अखन एतबे बुझि लएह जे साम्राज्यवादी जालमे फँसल जा रहल छी।"

OO

तिथि : 24 मार्च 2014, शब्द संख्या : 515

सिरमा

बङ्गालक शान्ति निकेतनसँ तीन दिन पहिनहि आएल बारह बर्खक मुरारी बाबा-जगदम्बक संग तेना घुलि-मिलि गेल जेना बाँसक पोर मिलल रहै छइ। ओना गाममे बाबा छोड़ि दोसर कियो नहि, कारण रहै बङ्गालमे रहने जहिना घेरामे पड़ल गाछ ओतबे दूर कुदै-फनैए, तहिना मुरारीकेँ अनभुआर समाजक बीच गामे अनभुआर भऽ गेल रहइ। सात बर्खक पछाइत मुरारी माए-बापक संग गाम आएल। बाबा लेल देहक वस्त्रक संग ओछाइन-बिछाइन सेहो अनलक अछि। सिरमाक संग चद्दैर, जाजीमक मोटरी नेने मुरारी जगदम्ब लग पहुँच बाजल-

"बाबा, पुरनाकेँ बदैल दियौ, सभ किछु नवका अनलौं अछि।"

'पुरनाकेँ बदैल दियौ नवका अनलौं अछि।' सुनि जगदम्बक मन ठमकलैन। की नवका अनलौं? रूइयाक मोटका सूत बदैल मेही-चिक्कन सूतक वस्त्र आकि पेट्रोलियमक? मुदा एक तँ गामक अपरिचित बच्चा, दोसर दायित्वो तँ बनिते अछि जे जे नै बुझै छै ओ बुझा दिऐ। मुदा बुझबैयोक तँ दू रस्ता छै, एकटा छै जे मुँह-मुँह मुख बनबैत मुखधारा जकाँ बोहि जाइए, आ दोसर अपन इतिहास तँ सभ अपना पेटमे रखने अछि। तहूमे सिर तरक सिरमा...।

जगदम्ब बजला-

"बाउ मुरारि, अपना जनैत तँ नीके जानि अनने छह तँए बदलबे करब, मुदा..?"

कहि माथ तरक सिरमा उठा भुण्डी छिटका देलखिन...।

पाँच तह झोराक खोलमे एक-एकटा फाटल चद्दैर, धोती, लुङ्गी, गमछा। पुरान लुङ्गीक झोरा...।

शान्ति निकेतनक विद्यार्थी मुरारी। धोती, चद्दैर, लुङ्गीकेँ तँ परेख गेल मुदा गमछा बेर भोतिया गेल। भोतिया ई गेल जे बङ्गलिया ढाठी छी आकि छपरिया..?

तैबीच मुरारीक मनमे उठि गेलै जे कनी गलती भेल। पहिने पुछि नै लेलिऐन। खाएर जे भेल मुदा सिरमा बदैल सिरमा लितैथ आकि खोलि कऽ आगूमे पसारि देलैन। जखन पसारि देलैन तँ बाल-बोधकेँ बोधबो ने करता। तँए चुप। पाँचो तह लुङ्गीक खोल खोलैत जगदम्ब बजला-

"बौआ, जे लुङ्गी फटि जाइए ओकर सिरमो खोल बना लइ छी आ रूमालो बना लइ छी, तँए पाँच तह अछि। सालमे एकबेर जुड़शीतल दिन खीचि कऽ खोलो सुखा लइ छी आ पेटमे जे देने छी तेकरो रौद लगा लइ छी।"

कोनो नव जगहपर सभ एके रंग नव थोड़े रहैए, जे पहिनेसँ जड़ि खोदिया नेने रहल ओ 'गुलियाएल नव' भेल आ जे नै खोदने रहल ओ 'छेहा नव' भेल। तीन दिनमे मुरारी जगदम्बक बीच केतेको रंगक सवाल-जवाब भऽ गेल छल, सिरमा खोलकेँ एकठाम सैंत चद्दैर उठबैत जगदम्ब बजला-

"बौआ, जइ दिन ई चद्दैर कीनिलौं, ओही दिन एकटा केसमे

सजा भऽ गेल, दुनूक[11] बीच पहिल भेँट जहलेमे भेल। अखनो मन अछि जे निरदोस चद्दैर संगे जहल कटलक, केना बिसैर जेबइ!”

सिनेह भरल जगदम्बक ममत्व-प्रेम देख मुरारी चौंकन हुअ लगल। हुअ ऐ दुआरे लगल जे फाटल-पुरानक संग जखन एहेन प्रेम छैन, तँ किए ने पुछिये लिऐन।

बाजल-

“बाबा, प्रेम कहलिऐ?”

उत्साहित होइत बाबा कहलखिन-

“हँ-हँ, जे सालमे गाहीक गाही कपड़ा कीनत ओ केकरासँ प्रेम करत, प्रेम तँ ओ भेल जे जिनगी भरि प्रेमसँ संगे रहल। जीबैतमे जे रहल से तँ रहबे कएल जे मुइला पछाइतो सिरमेमे रखने छी।”

मुरारीक पिता विश्वभारतीमे चतुर्थ श्रेणीक पदपर काज करै छैथ जइसँ मुरारीकेँ शिक्षा भेट रहल छइ। आन ठाम जकाँ नै जे शिक्षकक बेटा आ किरानी-चपरासीक बेटाक संस्कारपर चोट पड़ैत, किछु छी तँ आखिर विश्वभारती छी। दोसमुक्त संस्कार मुरारीक। बाजल-

“बाबा, जखन चद्दैरक इतिहास-बात कहिए देलिऐ तखन बँकियोहोक कहिये दियौ?”

मुरारीक सिनेह भरल शब्द सुनि जगदम्बक मन मोम जकाँ पिघलए लगलैन। हाथसँ धोती उठा पहिने फाट सबहक सीऐन गनलैन। सीऐन गनि बजला-

“बौआ, जहियेसँ धोती पहिरैमे नीक लागए लगल तहियेसँ फाटब शुरू भेल। मुदा बात दोसर दिस बहैक जाएत।”

बात ‘बहकब’ सुनि मुरारी बिच्चेमे बाजल-

[11] अपनो आ चद्दैरोक

“ईहो कीनने छिऐ?”

‘कीनब’ सुनिते जगदम्बकेँ मन पड़लैन जहल, बजला-

“नहि, ई धोती जहलेमे देने रहए।”

‘जहलमे देने रहए’ सुनि मुरारीक मन भरैम गेल। भरैम ई गेल जे जहलोमे धोती दइ छै! बाजल किछु ने। मुदा जगदम्ब बुझि गेला जे भरिसक जहलक बातमे भोतिया गेल।

बजला-

“बौआ, जिला भरिक लोक कोसी नहैर आ पैनबिजली-डैमक संग मैथिली भाषाक मांग करैत जहल गेलौं। पनरह दिन रखलक। सोल्हम दिन एक-एकटा धोती दऽ विदा केलक, वएह धोती छी।”

जगदम्बक पछुलका इतिहास मुरारीक मनकेँ झिकझोड़ि रहल छल। शिष्टाचारक लगाम ऐ तरहेँ कसि रहल छेलै जे किछु बाजि नै पाबि रहल छल। मुदा बिनु मुँह खोलनौं तँ अपन मनक फल खाइयो केना सकै छी। तइले तँ विचारक बात बाजइ पड़त...।

ततमताइत मुरारी बाजल-

“बाबा, जखन चद्दैर-धोतीक बात कहिए देलिऐ तखन लुङ्गियोँ-गमछाक कहि दियौ।”

मुरारीक बात सुनि जगदम्बक मन आरो-पतालक पानि जकाँ शीतल-स्वच्छ-सुअदगर बनि गेलैन। लुङ्गी-गमछाकेँ संगे उठबैत बजला-

“बौआ, ईहो जहलेक छी। अपन कीनल लुङ्गीक सिरमाक खोल छी आ जहलक लुङ्गीकेँ पेटभर देने छिऐ।”

सिरमा खोलसँ लऽ कऽ पेटभर धरिक सिनेह सिक्त इतिहास सुनि मुरारी थकथकाइत बाजल-

“बाबा, नवका सिरमा नै लेबै?”

पोताक टुटल आस देख जगदम्ब बजला-

“हँ हउ, किए ने लेब! मुदा चारूक एक-एकटा कोण काटि नवकाक पेटमे भरि दहक, जाबे जीबैत रहब ताबे माथ टेकने रहब।”

OO

तिथि : 31 मार्च 2014, शब्द संख्या : 757

झकास

सिरूआ[12] पाबैनक तेसर दिन, पछिया हवा पच्छिमसँ मेघ-बादल अनलक। ओना अपना ऐठाम बङ्गालक खाड़ीसँ बादल बनि मौनसुनी बरखा होइए, कहियोकाल पच्छिमसँ बर्फीली हवा चलि सेहो बरखा अनिते अछि। सएह भेल, मुदा बुन्न छोड़ि बरखा नै भऽ अदहा घन्टासँ खाली झकैस रहल अछि। ने सौन-भादोक बुन्न आ ने पूस-माघक पाला जकाँ, बीच-बिचौआ...।

दुआरपर बैसल घुरना काका खेती-वाड़ीक हिसाब जोड़ि रहल छैथ। जोड़ि रहल छैथ जे जँ अखन निम्मन बरखा होइत तँ मौसमे बदैल जाइत, नवका सालक खेतीमे हाथ लगि जाइत; से तँ नै भऽ रहल अछि मुदा तँए कि अकाजक भऽ रहल अछि, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। अनका जे हौउ, अप्पन खेती तँ सुतरिये रहल अछि...।

घुरना कक्काक मन फुल-फुलेलैन। फुलाइते बकार फुटलैन-

“अमृत बरिस रहल अछि।”

एक बेर, दू बेर, बेर-बेर एके बात मुहसँ निकलैत रहलैन-

“अमृत बरिस रहल अछि!”

[12] जूरशीतल

हाइ स्कूलक दसम् किलासमे पढ़ैत रघुवीर दलानक ओसारक दोसर भागमे कुरसीपर बैसल पिताक बात बेर-बेर 'अमृत' सुनि बाजल-

"काका, देखै छी जे होइए झकास आ अहाँ कहै छिऐ अमृत बरिस रहल अछि, से की? तेहेन जरल माटि अछि, खेत-पथारक जे भीजबो ने करत।"

रघुवीरक बात सुनि घुरना काका चुपे रहला। किछु बजैसँ पहिने तारतम्य करए लगला जे रघुवीर कोनो अनुचित तँ नहियेँ कहैए, मुदा अपन जे खेती अछि, सजमैनक खेती, तइले तँ अमृत बरसिये रहल अछि। काल्हि दमकलसँ पटेलौं, निच्चे-निच्चे पानि चलल जइसँ जड़ियो, माटि सटल लत्तियो आ पातो तँ पटबे कएल, मुदा माटिसँ ऊपर मुड़ियो आ ठाढ़ भेल पातो तँ ओहिना, बिनु पानिक रहि गेल जे ऐ झकाससँ भीजि रहल अछि। अनका जे हौउ, मुदा अपना-ले तँ अमृते बरिस रहल अछि...।

बजला-

"बौआ रघुवीर, खेतो आ खेतियो की सबहक एके रंग अछि जे एके रंग नीक-बेजए हएत। रंग-रंगक खेतियो छै आ रंग-रंगक लाभो-हानि।"

पिताक बात रघुवीर नीक जकाँ नै बुझि सकल, तेकर कारण भेल जे ओ खेतकेँ खेते आ फसिलकेँ फसिले बुझैए। ई नै बुझि पबैए जे फसिल-फसिलकेँ पानिक खगतो कम-बेसी होइ छइ। कोनो एहेन होइ छै जे डाँर लग तक पानिमे ओफा करैए तँ कोनो एहेन होइ छै जे जड़ि-पनियामे ओफा करैए आ कोनो एहनो होइ छै जे ऊपरेसँ छिच्चा पाबि ओफा करैए आ तहिना कोनो एहनो होइ छै जे जड़िये-जड़ि पटौलासँ ओफा करै छै...।

फेर दोहरबैत रघुवीर बाजल-

"काका, खेती तँ खेती भेल, तखन मौसमक असैर तँ एके रंग ने सभकेँ हएत।"

रघुवीरक प्रश्नक ओझरीकेँ सोझरबैत घुरना काका बजला-

"बौआ, अनकर बात छोड़ह। अपन देखहक। काल्हि सजमैनक खेत पटौने छेलौं किने, माटि तँ गिलगर भाइए गेल अछि, मुदा ऊपरका पात आ मुड़ी भीजबे ने कएल। अछैते नमीए ओ पियासल रहि गेल। ओना लत्तीक माध्यमसँ हाल पीबे करत मुदा अपना मुहेँ पीलासँ जे पानिक तृष्णा मेटाइ छै से थोड़े हएत। जे झकास झकैस रहल अछि ओ मुँहमे अमृत दऽ रहल अछि। जेते वाढ़ि[13] आठ दिनमे हएत तेते एके दिनमे हएत। पाँचे दिनमे देखियहक जे दोबरा-तेबरा जाएत। जखने लत्ती बढ़ियाएत तखने ओइमे गिरहे-गिरह कनोजैरो चलत, फुलो चलत आ फुलबतियो चलत। यएह ने भेल अमृत बरिसब।"

अपना जनैत घुरना काका रघुवीरकेँ बुझबैत कहलैन मुदा बाल-बोध रघुवीर नीक जकाँ तैयो ने बुझि पेलक। बाजल-

"काका, पानि तँ पानि भेल, अमृत केना भेल?"

रघुवीरक प्रश्न सुनि घुरना कक्काक मनमे तामस नै भेलैन। भेलैन ई जे अखन रघुवीर बाल-बोध अछि, पानिक तरी-घटी नीक जकाँ नै बुझि रहल अछि...।

बुझबैत कहलखिन-

"बौआ, देखबहक जे स्वाती नक्षत्रक बुन्न सितुआक मुँहमे पड़ने मोती, बाँसक मुँहमे पड़ने वंशलोचन, केरा मुँहपर पड़ने करपूर आ

[13] विरधी

साँपक मुँहमे पड़ने बीख बनि जाइए। रहैए एके चीज मुदा जगह-जगहपर बदैल जाइए।"

पिताक बात रघुवीर नीक जकाँ ने बुझबे कएल आ ने सोलहन्नी नहियेँ बुझलक। अधखिज्जू जकाँ अदहा-छिदहा बुझबो केलक आ अदहा-छिदहा नहियेँ बुझलक। बाजल-

"काका, एना किए होइए?"

रघुवीरक प्रश्न सुनि घुरना कक्काक मनमे भेलैन जे भरिसक रघुवीर ने नीक जकाँ बुझबे केलक आ ने नहियेँ बुझलक। बुझबो तँ असान नहियेँ अछि, ओझराएल तँ ऐछे...।

सोझरबैत बजला-

"बौआ, जहिना गाम-गामक पानि आ बोल किछु ने किछु बदलिये जाइए तहिना ने मासो-नक्षत्रक अछि।"

अखन धरि रघुवीर सालक पेटमे मास आ मासक पेटमे नक्षत्र बुझै छल, ई नै बुझै छल जे नक्षत्रक अपन हिसाब छै आ मासक अपन। तैसंग मलमास भेने सालोक सीमा-सरहद घुसैक-फुसैक जाइए...।

बाजल-

"एना किए होइए काका जे जखन एके पतालक पानि आ जमीनक वाणी होइए तखन बदैल किए जाइए?"

रघुवीरक प्रश्नकेँ गहींरतासँ लैत घुरना काका बजला-

"बौआ, एके सुरूज रहैत कहियो उत्तरायन तँ कहियो दछिनाइन भऽ जाइए। जइसँ मौसममे कहियो बदलाहट आबि जाइए। मौसम बदलने प्रकृतिक रूप-रंगमे सेहो बदलाउ आबिये जाइए।"

घुरना कक्काक उत्तर पाबि रघुवीर आरो ओझरा गेल। ओझरा ई

गेल जे एकटा पृथ्वी एकटा सुर्ज अछि तखन किए एना भऽ जाइए..!

बाजल-

"सुर्जक जगह बदलने, दुनियाँक रूपे-रंग बदैल जाइए?"

घुरना काका-

"हँ, बदैलते अछि। सुर्ज अपन सीमामे चलैए, धरती अपन सीमामे चलैए, तहिना आरो आरोक अछि। जइसँ सबहक आड़ि-धुरमे सेहो बदलाउ आबि जाइ छइ। तहूमे अपना ऐठाम तँ आरो बेठेकान अछि। सालक बीच मौसम चलैए, मौसमक बीच मास चलैए आ मासक बीच नक्षत्र आ दिन चलैए।"

पिताक बात सुनि रघुवीर, बिना किछु सोच-विचार केने पुछलकैन-

"तखन तँ सभ सालक एके रंग मौसम होइत हेतइ?"

रघुवीरक सोझ प्रश्न सुनि घुरना काका बजला-

"यएह छी दुनियाँक पेंच। जइसँ सभ किछु ठेकनाएलो रहैए आ बेठेकनाएलो भऽ जाइए।"

रघुवीर-

"की ठेकान आ की बेठेकान?"

घुरना काका-

"ठेकान ई जे जखन सुरूज दछिनाइन रहैए तखन ओइठामक मौसममे गरमाहट आबि जाइ छै आ दूर भेने उत्तराइनमे ठन्ढाहट आबि जाइ छइ। जइसँ विपरीत मौसम बनि जाइ छइ। विपरीत मौसम बनने विपरीत रूपो-रंग बनि जाइए। तहूमे अपना ऐठाम तँ मासोक सीमा-सरहद गजपटे अछि। सीमा गजपट भेने रीतुओ गजपटाइए जाइए।"

रघुवीर-

"से की?"

घुरना काका-

"देखहक, अपना ऐठाम तीस दिनक मास तिथिक अनुरूप सेहो चलैए, ओना तहूमे घटी-बढ़ी भाइए जाइ छइ। दोसर सकराँइतक हिसाबसँ सेहो चलैए। ओना सालमे बारहेटा अमावसियो, पुरनिमो आ सकराँइत सेहो होइए मुदा नक्षत्र सत्ताइसटा भऽ जाइए। जेकर बेठेकान हिसाब भऽ जाइ छइ। कोनो सोलह दिनक तँ कोनो तेरहे दिनक भऽ जाइए। तहिना पुरनिमो सकराँइतिक अछि आ रीतुक सेहो।"

पिताक बात रघुवीर कनी-मनी बुझबो केलक आ कनी-मनी नहियोँ बुझलक। बाजल-

"रीतु केना बेठेकान अछि?"

बेटाक जिज्ञासासँ घुरना कक्काक मन फुदकलैन। फुदैकते बजला-

"बौआ, सरोसती पूजा अमावसिआ-पुरनिमा मासक हिसाबसँ बीस माघ[14]कें होइए जइ दिनसँ वसन्तक आगमन मानल जाइ छइ। जखन कि सालमे छहटा रीतु भेने चैत-बैशाखकें वसन्त सेहो मानल जाइए। तोहीं कहऽ, जे दस दिन माघ भेल, तहूमे सकराँइतिक मास केमहर अछि तेकरा छोड़ि कऽ, मास दिन फागुन भेल, तेकर पछाइत चैत भेल आ चैतक पछाइत बैशाख, भेल?"

रघुवीर-

"हँ, से तँ भेल।"

[14] इजोरिया पञ्चमी दिन

मुस्की दैत काका बजला-

"सोझ हिसाबे तीन मास दस दिनक वसन्त रीतु भेल।"

जहिना कोनो गबैयाकें ध्वनि आ शब्द-लहैर केतौ अनायास भेटने मन मन्दिरमे बेर-बेर घूँघरूक चालि पकैड़ रमकए चाहैए, तहिना रघुवीरकें सेहो वसन्तक गीत मनमे उमकल। संगीतमय दुनियाँमे केतौ केकरो प्रेम रस भेटैत तँ केकरो बिरह भेटैत, केकरो शान्ति रस भेटैत तँ केकरो अशान्ति, ई तँ अपन-अपन नजैर आ नजैरक पानिक अनुकूल भेटै छै, जे जेना तहिना रघुवीरकें सेहो भेटल। जहिना गुलावक पहिल कलिक कलियाएल फूलक सौन्दर्य आ साल-सालक फुलाएल गाछक फूलक शोभामे होइत तहिना रघुवीरकें सेहो भेल। बाजल-

"काका, कनी उघारि कऽ वसन्त गीत कहियौ?"

रघुवीरक पिता घुरना काका। गामक अधिकांश लोक हुनका काका कहैन जइसँ अपनो बेटा-बेटी कक्के कहै छैन। ओना काका 'पित्तीकें' कहल जाइ छै, जे पितासँ छोटो आ पैघो होइ छैथ, मुदा घुरना कक्काक मनमे से नै रहैन। हुनका मनमे रहैन जे जँ घरसँ बाहर धरि एकबट्ट सभ कहैए तँ नीके भेल किने। मुदा तहूसँ बेसी नीक ई ने भेल जे जहिना अपन बेटा-बेटी तहिना टोलो-पड़ोस आ समाजोक। तखन तँ अपन कर्तव्य बनिते अछि जे सभकें एक्के नजरिये देखिऐ। रघुवीरक प्रश्न सुनि घुरना काका बजला-

"बौआ, जइ दिन वसन्तक आगमन होइए, तइ दिन सरोसती पूजा आ लछमी पूजा[15] सेहो होइए। मुदा पुजेगरी बदलने रंग-वेदरंग भऽ जाइए। खाएर जे हौउ, जखन वसन्तक बाट पुछलह तँ कहिये दइ छिअ।"

[15] धन रूपमे हर ठाढ़ होइत

रघुवीरकें प्रश्नक जड़ि बुझैक ललक मनमे जोर मारिते रहइ! बाजल-

"काका, अनेरे अहाँ केतए-सँ-केतए बोहिया जाइ छी। कनी सरि भऽ कऽ सेरिया दियौ।"

बेटाक मनक भूख जेना घुरना काका बुझि गेला। बाल-बोधक भूखकें जँ माए-बाप नै बुझै तँ दोसर आन के केकरा बुझत। बुझबो केना करत, सभकें तँ अपने-अपने छै...।

बजला-

"जइ दिन सरोसती पूजा होइए ओही दिन वसन्तक आगमन सेहो रंग-अबीर उड़बैत होइए। होइए आकि नै होइए?"

तालमे ताल मिलबैत रघुवीर कहलकैन-

"हँ से तँ होइते अछि।"

जहिना कथ्थकक हूँहकारी पाबि कथ्थकर कथनकें कथियबैए तहिना घुरना काका बजला-

"बौआ, बीस माघकें जइ दिन सरोसती-लछमीक आवाहन होइ छै तही दिन कड़कड़ाएल जुआनी जाड़क सेहो रहैए। ओस बदैल पाला, पले किए, बरफाएल पाला दिन-राति झहड़ैए, वएह ने कुहि फाड़ैत अदहा फागुनमे शिवरातिक रूप पकैड़ सिरूआ दिन भाँग-धुथुर ओढ़ि नचबो करैए आ चैतावरक संग वसन्त आ वसन्तक संग बरहमासासँ कदमक गाछक मचकीपर झूलैत गेबो करैए?"

रघुवीरक भक्क जेना दिशांस लगलकें होइ छै, तहिना वसन्तक बीस माघसँ तीस बैशाखक डोर पकड़ा गेल। बाजल किछु ने मुदा पिताक मुस्कीमे अपन मुस्की जोड़ि नजैर-मे-नजैर मिलबैत मुस्कियए लगल।

गामक मात्र सवा बीघा जमीनक हिस्सेदार घुरना काका, जेतबे अपना जमीन छैन तहीमे अपन परिवारकें समाजक बीच जीवित रखने छैथ। बाल-बच्चाकें अपन ओकाइत देखबैत कहै छथिन-

"बौआ, अपना ओते ओकाइत नै अछि जे बड़का-बड़का एजुकेशन इन्सिच्यूटमे पढ़ेबह, मुदा पढ़ैसँ रोकबो तँ नहियेँ करबह। तखन एते तँ कहबे करबह जे अदहा समय अपन उन्नैतक लेल आ अदहा परिवारक लेल उपयोग केने जिनगीक पाठ जरूर पढ़ि लेबह।"

'जिनगीक पाठ' सुनिते रघुवीरकें जेना मनपर भार पड़ल। बोझ तर दबाएलक बोल जहिना दबाइत स्वरमे फुटैए तहिना रघुवीरक दबाएल स्वर फूटल-

"जिनगीक की पाठ?"

हँसैत घुरना काका बजला-

"ऐ धरतीपर सभ कनैत आबि रंग-मञ्चपर ठाढ़ होइए, तइमे कियो कनैत जिनगी बितबैत कनैत उसरन करैए आ कियो मुस्कियाइत मुस्कान भरैत मुरली टेरैत विसरन करैए। यएह भेल जिनगी आ जिनगीक पाठ।"

पिताक बात सुनि रघुवीर आएल-गेल पाँतिकें पँतियबैत अपन सरूप देखए लगल। मुदा जननिहार आ बिनु जननिहारक बीच जहिना चुपा-चुपी होइ छै तहिना रघुवीरो आ घुरनो कक्काक बीच चुपा-चुपी पसैर गेल।

○○

तिथि : 26 अप्रैल 2014, शब्द संख्या : 1595

सजमैनियाँ आम

जेठ मास। हथिया-चितरा नै बरसने आन जेठसँ शक्तिगर रौद। तीन बजे करीब बेरुका पहरमे एक चिड़की मेघ उठल, ने बेसी पसरल आ ने बेसी चतरल, हवाक झोंकमे पानि-पाथर, ठनका सभ बरिस गेल। ओना विहाड़िसँ केते गोरेक घरो खसल आ टाटो-फरक उजरल, केतेकें गाछो-बेख खसल मुदा चरितर बाबाक तँ नाश भऽ गेलैन। नाश ई भेलैन जे एक तँ फूसि घर तैपर घरक पजरेमे तेहेन सजमैनियाँ आमक गाछ लगौने छैथ जे ऊपर ताकि ठनका खसल, खसल तँ गाछक मुड़ीपर मुदा किछु निच्चाँ होइत-होइत छिछैल कऽ घरपर चलि आएल, गाछक तँ मुड़ियेटा टुटबो केलैन आ जरबो केलैन, मुदा खढ़क घर तैपर झोंकगर हवा पाबि घरक सभ किछु जारि देलकैन। मनुखक जान बँचलैन तँए बेसी गमगीन नै भेला। हाथ-पएर रहत फेर बनि जाएत। मुदा से बात नहि, अपने चरितर बाबा वाड़ीमे दारीम गाछक जड़ि पटबैत रहैथ, प्रकाश स्कूलमे रहए। दुनू परानी जगरनाथ बिआहक नौत पूरए गेल रहए।

दस मिनट बीतैत-बीतैत सभ शान्त भऽ गेल! हवो-विहाड़ि पड़ा गेल, पानियोँ पड़ा गेल आ एकेटा ठनका जे खसिये पड़ल...।

चरितर बाबाक घर ठनकामे खसलैन आकि जरलैन, अखन धरि यएह घोंघौज लोकक बीच चलैत रहए। मुदा मनुखक नोकसान नै

भेल तँए सभ खुशी। घर-दुआर आकि धन-सम्पैत मनुख नै ने छिऐ, तखन अनेरे कानियेँ-खीज कऽ की हएत, तँए चरितर बाबाक ठनका खसल घरपर गाममे कियो नोर बहौनिहार नहि। ठनकाक चर्च गाम-घरमे पसरल, प्रकाशो स्कूलसँ आएल। कुमरमक दिन रहने बेटा-पुतोहु सासुरे-नैहरमे रहल। केना नै रहैत, तीन जेठक मिलानक विधो-विधान ने दोसर होइ छै, जे धी-जमाए छोड़ि दोसर कइए के सकैए। तँए जगरनाथ दुनू परानीकेँ अपन घर-दुआरक सुधिये ने रहलै। पहिल साँझ। सूर्यास्त भऽ गेल मुदा दिन जकाँ। प्रकाशकेँ स्कूलसँ अबैमे बिलम भेल। बिलमो केना ने होइत एक तँ गरम समय दोसर झाँट-विहाड़िक सम्भावना। स्कूल तँ स्कूले छी, जहिना नियमित जिनगीक सूत्रधार डाक्टर अपने अनियमित जिनगी जीब बाहवाही करै छैथ तहिना ने विद्यालयोक विद्याध्ययन अछि। कोन समय केते गरमी पड़ै छै तइले थर्मामीटरक खगता होइते छइ। आँगनमे बाबा आ पोता अपन बेथा-कथाक चर्च शुरू केलैन...। प्रकाश कहलकैन-

“बाबा, ई केना भेल जे थोड़बे दूर गाममे पानि भेल, विहाड़िसँ घर-दुआर आनो गाममे उजरल मुदा ठनका अपने घरपर किए खसि पड़ल?”

पोताक प्रश्न सुनि चरितर बाबा मिसियो भरि विचलित नै भेला, मनसँ तेना हटि गेल रहैन जेना किछु भेबे ने कएल। जेठ मास छिऐ, लोक गाछो-बिरीछक तरमे आ दुबियोपर दिवस गुदस काइए लइए, तइले अनेरे मनकेँ रोगाएब नीक नै...। चरितर बाबा बजला-

“बौआ, ओना मेघ केते रंगक अछि मुदा अखन से नै दुइए रंगक मेघक बात बूझह, एकटा होइ छै सघन, जे दूर-दूर तक पसरल रहल। दोसर होइ छै कोदारि कट्टा, जे रूइयाक फाहा जकाँ टुकड़ी-टुकड़ी बनैए। ओहू एक-एक टुकड़ीमे एहेन शक्ति छै जे जँ ओकरो अनुकूल

समय भेट जाए तँ सभ किछु कऽ सकैए। सएह भेल। एक चिड़की मेघ उठल। देखलिऐ। मुदा बिसवास नै भेल जे बरिसत। जेठुआ समय, रंग-रंगक तँ हवा-विहाड़ि चलबे करत। जँ बिसवास होइत तँ पटैबतौं किए। मुदा जेते दूरक गड़े उठल तइमे अपने सजमैनियाँ गाछ नमहर छल, ओकरे ठनका लपैक लेलकै। ओ तँ आगि छीहे, सभ किछु जरि गेल।”

प्रकाश- “एहेन गाछ घर लग किए रखने छी?”

परिवारक प्रति जिज्ञासा देख चरितर बाबा बजला-

“नमहर गाछपर ठनका खसब उचिते भेल, जे दैवी भेल। मुदा समय-साल केहेन भऽ गेल अछि जे देखते छहक कियो एक्कोटा खाए देतह? दुइयो-अढ़ाइ साए जँ फड़ि जाइए तँ कहुना आमक मास आम खा काटि लइ छी।”

जेना ओझा-गुनी गुनगुनाइत गोसाँइ खेलए लगैए तहिना दुनू गोरे अपन-अपन मन-मनतर पढ़ए लगला...। हाइ स्कूलक विद्यार्थी प्रकाश, नव फूल तकैक जिज्ञासा। आइक युगमे ठनका रोकैक ओरियान लोक घरमे लगा लइए, मुदा गाछकेँ तँ खाली ठनके नै हवा-विहाड़िमे खसैक सम्भावना सेहो अछि..! चरितर बाबा मने-मन गद-गद होइत रहैथ, गदगदाइक कारण ई रहैन जे कोढ़िया बरद जकाँ हरे देख डेराएब तँ बड़का-बड़का इञ्जन के चलौत..?

पहाड़क दिन तँ वएह ने नीक जकाँ बुझि सकैए जे पर्वतिया हएत।

OO

तिथि : 04 मई 2014, शब्द संख्या : 611

गरदैन कट्टा बेटा

आमक गाछीसँ घुमि आबि लाल भौजी ओछाइनपर पड़ल बेटाकेँ कहलखिन-

“गरदैन कट्टा कहीं-के, सबेर उठि गाछी-कलम जेता से नै तँ दुखताह जकाँ ओछाइनपर पड़ल छैथ!”

माइक बात सुनि ललबबुआक तँ नीन टुटि गेल, मुदा मन भकुआएले रहइ...।

भकुआएले मोने बाजल-

“कथी ‘गरदैन कटलियौ’ जे भोरे-भोर बजै छँह?”

ओना ललबबुआ गाढ़ नीनमे सुतल जहिना कियो माया विहीन आत्मा-परमात्मासँ साक्षात्कार करैत मगन होइए, तहिना छल।

लाल भौजीकेँ अन्दाज भेलैन जे जेठ मासक पुर्बाक लहकीमे दिन-दुनियाँ बिसैर ‘पड़ल’ अछि...।

मुदा से नहि, ललबबुआ ‘पड़ल’ नै छल गाढ़ नीनमे ‘सुतल’ छल। जे माइक कर्कश अवाज सुनि उठल।

लाल भौजीक तुरुछल मन आरो बेटाक बात सुनि मुरैछ गेल! मुरछैक कारण भेल जे गाछीक जे आम खसल से सभटा आन बीछिनिहार सभ बीछि लेलक। गोटि-पंगरा गुलाबखासमे तोड़ियो नेने

छेलइ। ओना अपना मनमे ईहो उठैत रहैन जे जेना भोरगरे नीन टुटल तेना जँ गाछीए गेल रहितौं तँ एना नै होइत, मुदा मनक जवाब मनेमे उठलैन, सुति उठला पछाइत लोक अपन आ अँगना-घरक काज सम्हारि गाछी-बिरछी, बाध-बोन दिस जाइए आकि पहिने घरक देवता छोड़ि बाहरे पूजए जाएत...।

बेटाक जवाब सुनि लाल भौजी बजली-

“हमर की गरदैन कटलैं, कटै छें अपनो आ दुनियोकेँ!”

माइक पहिल प्रश्न ‘गरदैन कट्टा’ सुनि ललबबुआकेँ जेते तामस ओछाइनपर पड़ल-पड़ल भेल तइसँ बेसी दोसर प्रश्नसँ उठलै। उठबो उचिते छेलै, ‘गरदैन कट्टा’ तँ लोक अछिए। कियो धानक गरदैन छोपि अनैए तँ कियो घासक, तइले कियो दुखे किए करत। मुदा ‘हमरो-अपनो आ दुनियोँक कटै छीही’ सुनि ललबबुआ ओछाइनेपर उठि बैसैत बाजल-

“सबहक नाओं जे कहै छँह, से सबहक गरदैन हमरे हाथमे अछि जे कटै छिऐ?” -बजैत आँखि मीड़ैत उठि कऽ ठाढ़ भेल।

बारह बर्खक ललबबुआ, जुआन तँ नै भेल, ओ तँ चौदह बर्ख पुरला पछाइते हएत, मुदा ढेरबा तँ भाइए गेल अछि। ओना, पोखैरमे रंग-बिरंगक माछ रहितो जहिना घाटपर डेढ़बा माछ आबए लगैए, से तँ भाइए गेल अछि।

पैछला साल पतिक मुइला पछाइत लाल भौजीक मन टुटैत परिवार आ घटैत दिन देख किछु कड़कड़ा तँ गेबे कएल छैन, जइसँ ‘नीक-बेजए’ विचारैमे किछु आगू-पाछू भऽ जाइ छैथ, पति तुल्य बेटाक धुआ-काया देख मन भ्रमित भाइए जाइ छैन। तहूमे दस सालक गुलाबखास आमक गाछमे निचला आम टुटि गेल छेलैन। घरक काज सम्हारैमे देरी भेने अपने जाइमे पछुएली जइसँ आन

बीछिनिहार तोड़ि नेने छेलैन। जाबे पति जीबै छेलैन, ललबबुआ बेटाकेँ कोनो धनि-फिकिर रहबे ने कएल। सबेरे उठि अपने गाछी दिस चलि जाइ छला।

ढेरबा ललबबुआकेँ ठाढ़ देह देख जेना लाल भौजीक मन पसीज गेलैन। बजली-

“बौआ, आब घरक पुरुख तँ तोहीं ने भेलह। तोरे ने सबेर उठि बाग-बगीचा, बाध-बोन देखए पड़तह?”

माइक बात सुनि ललबबुओक मन सहमल। मुदा, मनक प्रश्न-‘गरदैन कट्टा’ मनमे हूमैरते रहल। सुति कऽ उठिते जँ मन ओझरा गेल तँ भरि दिनक काज केहेन हएत! मुदा दोहरा कऽ किछु बाजल नहि।

लाल भौजीकेँ मन पड़लैन जे बेटाक प्रश्नकेँ जँ सेरिया कऽ बुझा नै देब तँ अखुनका उमेरक ठेकाने कोन। केमहर वौआ जाएत तेकर कोन ठीक अछि। कहलखिन-

“बौआ, जाबे बाबू छेलखुन ताबे ओ घरक-बाहरक काज सम्हारै छेलखुन आ हम अँगना-घरक सम्हारै छेलौं। मुदा आब कि कोनो ओ छैथ, जिनका भरोसे जीबह। आब जँ अपने नै करबह तँ काज गिरैत जेतह।”

‘काज गिरैक’ अर्थ ललबबुआ नै बुझि पेलक। बाजल-

“की घरक काज गिरत?”

लाल भौजी बजली-

“बच्चा, जइ घरक काज जेते आगू हएत ओ ओते आगू मुहेँ ससरत आ जइ घरक काज जेते पछुआएत ओ ओते पाछू मुहेँ ठसकत। ऐ विचारकेँ नै बुझबह तँ जिनगीक पार लगतह। दुनियोँक आ मनुखोक जड़ि एतै अछि। जँ नीक करबह तँ अपनो, परिवारो,

समाजो आ दुनियोँक नीक हएत, जँ नै करबह आ अधला करबह तँ घरसँ बाहर धरि सबहक गरदैन कटत।”

OO

तिथि : 10 मई 2014, शब्द संख्या : 571

पल भरि

तिरसैठम बर्ख गमौला पछाइत शिवजी बाबूक मन गरानिसँ गड़ि रहल छैन। जिनगीक संग दुनियोँ अन्हार जकाँ लगि रहल छैन। केकरा कहथिन आ कहलो पछाइत के बिसवास करतैन जे उवाह-उवाहमे जिनगीक तिरसैठ बर्ख बोहि गेलैन। समाजक केते लोक ऐ बातकेँ बुझि रहल छैथ जे जइ आशामे अखन धरि आस लगौने छेलौं ओ सोलहन्नी निआस बनि निकैल गेल! ओना बेसी लोक तँ यएह ने बुझि रहल छैथ जे कौलेजक प्रोफेसर छैथ, नीक दरमाहाक नोकरी करै छैथ, आ नोकरी छूटलो पछाइत तेते पेंशन भेटतैन जे जिनगीमे कहियो कोनो अभाव नै हेतैन, मुदा भेल की..?

असकरे अपन कोठरीमे बैस पोथीक अलमारीपर आँखि गड़ौने शिवजी बाबू मने-मन अपन हूसल जिनगीपर नजैर दौगा रहल छैथ। जेते नजैर दौग रहल छैन तेते मन विषादसँ बिसबिसा रहल छैन। बिसबिसेबो केना ने करतैन, ‘नीक नोकरी’ ‘नीक दरमाहा’ केतए गेल?

सौनक घट जकाँ दुनू आँखि नोरसँ बोझिल भऽ जिनगीक बीतल दिन देख रहल छैन। अनायास बकार फुटलैन-

“धारक पानि जहिना धारे-धार बहैत समुद्रमे समा जाइए, तहिना ने अपनो जिनगीक धारक भेल!”

असगर कोठरीमे रहने कियो दोसर तँ नै सुनि पौलक मुदा अपन मनक 'सोग' जे मुँह होइत निकलल, ओ दुनू कान तँ सुनबे केलक...। फेर मन घुमलैन। भने कियो आन नै सुनलक। जँ सुनबो करैत तँ लाभे कथी होइतै। यएह ने जे जहिना अपन जिनगी फुर्र-फाँइमे गेल तहिना ओकरो जइतै...।

तैंतालिस बर्ख पहिनहि शिवजी सी.एम. कौलेजसँ एम.ए. पास केलैन। औनर्सोमे नीक अङ्क आ एम.ए.मे सेहो नीक अङ्क भेटल छेलैन। शुरूहेसँ माने हाइए स्कूलसँ मनमे बैस गेल रहैन जे एम.ए. केला पछाइत प्रोफेसर बनब। परिवारक स्तर- शिक्षा संग अर्थ- कैं उठाएब। मुदा भेल की?

गामक सम्पन्न परिवारमे शिवजीक जन्म भेल। पिता नीक खेतिहर, पनरह बीघा खेतो छेलैन। राधा गोविन्द पढ़ल-लिखल तँ बेसी नहियेँ छला मुदा खेतीक सभ लूरिसँ सम्पन्न छलाहे। समटल परिवार तँए बेटाक विचारक विपरीत विचार कहियो बेटाक सोझ नै रखलैन। मनक धरणो छेलैन जे बच्चाकेँ माने बेटा-बेटीकेँ जेते स्वतंत्र रूपे जिनगी ठाढ़ करैक समय देल जाएत, ओते नीक बनत। तहूमे कहियो बेटाकेँ ने स्कूल-कौलेजमे फेल होइत देखलैन आ ने कहियो ताड़ी-दारू पीबैत देखलैन आकि सुनलैन। जइसँ मनमे आरो बेसी बिसवास बनले रहलैन।

एम.ए. केलाक साले भरिक पछाइत गामक बगलेक गाम- सोनपुरमे कौलेज खुजल। कौलेज बनौलैन सोनपुरेक एकटा सुभ्यस्त परिवारक विष्णुदेव। तीन भाँइक भैयारीमे विष्णुदेव सभसँ जेठ। अस्सी बीघा जमीन। दोसर भाए छेलखिन, जे नि:सन्ताने मरि गेला। तेसर भाए कृष्णदेव छैन। मुदा दोसर भाएक पत्नी नि:सन्तान 'विधवा' सेहो जीविते छथिन। हुनके मन बुझबैले रामदेवक नाओंसँ कौलेज

बनौलैन।

कौलेजक शुरूक समैमे, बिनु दरमेहेक बाहरक प्रोफेसर केना रहि सकितैथ तँए अगल-बगलक संग सोनपुरक शिक्षक सबहक बहाली भेल। ऐगला आशापर सभ- चपरासी, किरानीक संग प्रोफेसर- ऑफिसक काजसँ पढ़ै-लिखै धरिक काज सम्हारए लगला। ओना गाम-घरमे कम पढ़ैबला, तँए विद्यार्थीक संख्या ओते नै जइसँ कौलेजक काज नीक जकाँ चलैत। नीक जकाँक अर्थ ई जे प्राइवेटो कौलेज नीक विद्यार्थी[16] रहने नीक जकाँ चलिते अछि, मुदा से ऐ कौलेजमे नै भेल। कम विद्यार्थी रहने, आमदनी कम, जइसँ दरमाहामे कटौती भेल, मुदा ऑफिसक काज चलैत रहल।

बीस बर्खक पछाइत कौलेजक भाग जगल। भाग ई जगल जे विद्यार्थीक संख्या बढ़ने आ नीक रिजल्ट भेने सरकारी हेबाक सम्भावना बढ़ल। जइसँ चपरासी, किरानीक संग शिक्षकोक बीच सुखद भविसक आशा जगल। मुदा तइ बिच्चेमे पहिने तिकरम शुरू भऽ गेल। सचीवक परिवार आ जाति-कुटुमक तँ कौलेजमे रहल मुदा शिवजीक संग तीन गोरेकेँ हटा देल गेलैन।

कौलेजसँ हटला पछाइत शिवजी अनुभवी शिक्षकक रूपमे रहितो नोकरीसँ विमुक्त रहला। मुदा साले भरिक पछाइत दोसर कौलेज शिवजीक घरसँ पाँच कोस हटि खुजल, ओ खुजल जन-सहयोगसँ। मुदा कौलेजक अदीनता रहल जे सञ्चालन समितिक सदस्यक बीच वैचारिक भेद, मन-भेद सभ दिन चलिते रहल, जइसँ कौलेजक बेवस्था आगू नै ससैर पाछूए हड़कैत रहल। मुदा तैयो ठाढ़ तँ रहबे कएल। ओ

ही कौलेजमे समय बितबैत शिवजीक तिरसैठम बर्ख बीति

[16] संख्याक हिसाबसँ

गेलैन...।

सोनपुर कौलेजमे जखन तीन साल शिवजीकेँ भेलैन तखन पिता मरि गेलखिन। परिवारमे दोसर करताइत नहि, मुदा तैयो शिवजी जन-बोनिहारक हाथे खेती सम्हरैत रहला। ओना पिता असगर जेते काज सम्हारै छेलैन, ओते काज सम्हरैमे तीनटा जन लगै छैन। मतलब ई जे तीन जनक काज असकरे राधा गोविन्द करै छला। राधा गोविन्दकेँ मुइने परिवारक काजो घटल, मुदा तैयो परिवार तँ चलिते रहल।

शिवजीकेँ तीन सन्तान, दूटा बेटा एकटा बेटी, तीनू छँटगर। जेठ बेटा- कुशेसर- खेलौड़िया बेसी, तँए हाइ स्कूलक पढ़ाइसँ आगू नै बढ़ि सकल। नै बढ़ैक पाछू पितोक ओते तनदेही नै रहलैन जेतेसँ बेटा-बेटी सुधरैए। सोलह बर्खक अवस्थामे कुशेसर दिल्ली चलि गेल। गरो नीक बैसलै, एकटा फैक्ट्रीक ऑफिसमे नोकरी भेट गेलइ। दरमाहासँ बेसी बाइली हुअ लगलै। जे अपन खर्च चलबैत बैंकमे नियमित रखबो करए आ पाँच हजार रूपैआ पितोकेँ मासे-मास पठबैत रहल। बहिनक बिआह सेहो नीक जकाँ केलक। छोटका भाएकेँ बंगलोर पठा डाक्टरी पढ़बैए...।

समय आगू बढ़ल। शिवजी जिनगीक अन्तिम अवस्थामे पहुँच गेला। परिवारक संग कुशेसर परसू गाम आएल। चारू धिया-पुता प्राइवेट कोचिंगमे पढ़ै छइ। कोठरीमे दुनू परानी शिवजी बैसल अपनो जिनगीकेँ आ बेटो- कुशेसरो-क जिनगीकेँ भजारि रहल छैथ।

अपन पढ़ल-लिखल जिनगी देख शिवजी बजला-

"ओना ईश्वरक दयासँ परिवारक पैछलो आ ऐगलो गति नीक अछि मुदा..?"

'मुदा'पर शिवजीकेँ रूकिते पत्नी टोकि देलखिन-

"मुदा की?"

ओना अखन धरि पत्नियोँ नीक जकाँ शिवजीक जिनगीकेँ नै जनैत, मुदा शिवजी तँ स्वयं कर्ता-धर्ता छैथे। संयोग नीक रहल जे पत्नीकेँ उत्तर दइसँ पहिनहि पोता- कुशेसरक जेठ बेटा- जे हाइ स्कूलमे पढ़ैए, कोठरी पहुँच गेल।

पोताक रूप-रंग देख शिवजी सहैम गेला। सहमला जे अपना आगू कुशेसर केते पढ़ने अछि। मुदा कमेबाक आ जिनगी जीबाक जे लूरि ओकरा छै ओ अपना कहाँ भेल! खाली-खाली जिनगी खलियाइत सोलहन्नी खलिआ गेल! कोन मुहेँ केतौ बाजब जे जिनगीक ई लीला अपन छी!

कोठरी अबिते नन्दन पुछलकैन-

"दादाजी, अपन जिनगीक अनुभवक किछु बात हमरो सुना दिअ।"

पोताक प्रश्न सुनि शिवजी ठकुआ गेला। ठकुआ ई गेला जे सत्-सत् कहि देबै तँ हो-ने-हो ओकरो मन पढ़ै दिससँ हटैक जाइ, ओना कोन रूपे दिल्लीमे रहैए, हमरा बातक केते असैर हेतै, ई परिखब तँ कठिन अछि। झाँपि-तोपि अपन कहि देने तँ उत्तर भाइए जेतइ। मुदा अधखिजू कहने थोड़े नीक नहाँति बुझि पौत। सभ रोग-वियाधि, सोग-सन्तापकेँ मनमे तहियबैत शिवजी कहलखिन-

"बाउ, समय सभसँ बलवान होइ छै, श्रमवाने ओकरा पकैड़ संगे चलि सकैए, तँए..?"

'तँए' सुनि नन्दन बिच्चेमे पुछलकैन-

"की बलवान?"

पोताक दोहरबैत प्रश्न सुनि कहलखिन-

"बाउ, जे मनुख पल-पल जिनगीक महत बुझि पग-पग बढ़ैए

ओकर जिनगी आ पल-पलकेँ पलपलाएल रस पीब बढ़ैए तेकर जिनगीमे अकास-पतालक अन्तर होइ छइ। किएक तँ नीको आ अधलोमे पलपली होइते छइ।"

नन्दन-

"अकास-पतालक ई अन्तर मेटाएत केना?"

शिवजी-

"प्रकृतिकेँ अनेको रूप छै मुदा अखन दुइए रूप देखहक। धरती-अकास तँ देखै छहक, पताल नुकाएल अछि। मुदा मनुखोक प्रकृति होइ छै, जे मनराजमे बास करै छइ। वएह रूपान्तरण एक रूपता आनि एकबट करैत बाट पकड़ैए।"

बाबाक विचार सुनि नन्दनो आ नन्दनक दादियो उठि कऽ ठाढ़ भेली। दुनूकेँ ठाढ़ होइत देख नमहर साँस छोड़ैत शिवजी अपन मनकेँ बुझबैत घुनघुनेला-

"दिनक हेराएल जँ साँझमे घुमि आबए तँ ओ हराएब नै भेल। मुदा जे हेराएल से हेराएल, जे बाँकी अछि ओकरा पलो भरि हाथसँ छोड़ब जिनगीकेँ धोखाड़ब हएत।"

OO

तिथि : 24 मई 2014, शब्द संख्या : 1101

चोरक चोरबती

आने दिन जकाँ आत्मानन्द बाबा दिन लहैसते अपन काज उसारि, दिशा-मैदानसँ आबि दरबज्जाक आँगनमे सोंफ बीछा बैसते रहैथ आकि सुगिया दादी चाह नेने आगूमे ठाढ़ भेली। गर लगा कऽ बैसते[17] हाथमे चाहक गिलास धड़बैत दादी ई सोचि ठाढ़ भऽ गेली जे किछु खगता हेतैन तँ बजबे करता। मुदा सभ काजक गर देख बाबा चुपे रहला। बतलग्गू रोग तँ धेने नै छैन जे अनका जकाँ अनेरो किछुसँ किछु बजैत रहता।

किछु समय अँटकला पछाइत दादी बुझि गेली। आँगन दिस घुमि गेली। तेतबेमे टोलक स्कुलिया धिया-पुता एकाएकी आबए लगल। बाबाकेँ चाह पीबैत देख आगूमे, बाबा दिस घुमि-घुमि बैसैत गेल। अँगनाक डेढ़ियापर अबिते सुगिया दादी पाछू उनैट तकली तँ चारि-पाँचटा बच्चाकेँ देख मन मुस्कियेलैन। मुस्कियेलैन अपन नियमित काजपर। जँ कनियोँ बिलम होइतए तँ ऐगला काजमे बाधा होइतैन किने। जेकर भागी के बनैत..? सुगिया दादीकेँ अपन पतिव्रत निअम मनमे जगलैन। जगिते ठोर पटपटेलैन-

[17] गरक माने ई भेल आत्मानन्द बाबा बिछानक एक छोरपर बैस आगू दिस तकैत ऐगला छोर बच्चा सभले छोड़ि देलखिन

"पतिव्रत काजक रूपमे नहि, मात्र लोक शब्दक रूपमे बुझैए।"

मुदा लगले जेना कियो ठोंठ पकैड़ कऽ दाबि देलकैन, तहिना ठोरक पटपटी बन्न भऽ भेलैन। आँगनक ओसारपर बैस चाह पीबए लगली।

चाह पीबिते बाबाक मन खनहन भेलैन। खनहन मन खनखनेलैन-

"सञ्च-मञ्च भऽ पहिने बैसै जाह आ जेकरा जे बुझैक छह से बेराबेरी बाजह।"

कहिते आत्मानन्द बाबाक मनमे उठलैन जे अखन बाल-बोधक बीच छी, अखुनके रोपल आकि सीखल बात ने जिनगीक बेसी समय पकड़त। माने ई जे दुनियाँमे हजारो-लाखो किताब पढ़निहारकेँ आदि अक्षर 'अ-आ' होइ छै, जे जहियासँ जन्म लइए तहियासँ मरै बेर तक, मरैए बेर किए कहबै तेकर पछाइतो तँ रहिते अछि। तँए जेहेन बात अखन कहबै तेहने हेतइ। जेकर फला-फलक भागी भेने नीक-अधला सुनए पड़त...।

जहिना जगरनाथ बाबा आ बैजनाथ बाबाक डोरी लगिते मन छटपटए लगैए जे कखन जा कऽ दर्शन करी, तहिना बच्चा सबहक मनमे उठल। अगुआ कऽ दस बर्खक गोविन्दा बाजल-

"बाबा, चोरक चोरबती केहेन होइ छै?"

गोविन्दाक प्रश्न सुनि बाबाक मनमे उठलैन, 'चन्दा जुनि उगु आजुक राति।' इजोतेसँ भकइजोतो आ अन्हारो जनमैए। गोविन्दक जेहेन प्रश्न अछि ओकर उत्तर ओ सम्हारि सकत? मन सकपकेलैन। सकपकेलैन ई जे अपनो तँ व्रतक माने मनक सङ्कल्पक प्रश्न अछि। अपनो तँ अखन तक ई नै निर्णय कऽ पेलौं जे बच्चाक केहेन प्रश्नक उत्तर तत्काल देल जाए आ केहेन प्रश्नकेँ अखन खेत जकाँ जोति-कोड़ि

बीआ छीटि छोड़ि दिऐ। अपनो तँ अखन तक यएह ने करैत एलौं जे कोनो प्रश्नक उत्तर केकरो कहए लगलिऐ। चूक भेल, ई बात सत् जे दस बर्खक बच्चा होइ आकि बारह बर्खक, ओकर नमहर प्रश्नक उत्तर दसे-बारह बर्ख धरि देब नीक कि अधला...।

मन घोर-घोर हुअ लगलैन। मुदा जेना कियो धक्का मारलकैन तहिना चकोना होइत चौंकैत देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे अखन तँ बच्चा सबहक बीच छी। ओकरे मुँहक मुंगकेँ ने मुंगबा बना परसब। अपन जँ बँचल रहत तँ ओ पछाइत बाँटब। दही-चीनी भोजक पछाइते बाँटब नीक होइ छइ। जँ से नै होइ छै तँ अनेरे लोक किए पचताइए जे 'बेरक मारल बगूर तर...।' दुनू कँटाह। मुदा समय बलवान होइ छै, माछ-मौस छोड़ि बबाजी भेलौं जे बिलाइ जकाँ गोरस चाटब से ले बलैया! ओहो लोहे महींसक भऽ गेल। मुदा कि करबै भाय, अपन हारल कनियाँक मारल जँ कियो बजबे करत तँ ओकरा नीक के कहत...।

'कनियाँक मारब' तक अबैत-अबैत आत्मानन्द बाबाक मन पोखैरक पानि जकाँ प्रज्ञ भेलैन।

बजला-

"बाउ गोविन्द, तोहर प्रश्न बड़ हल्लुक आ बड़ झुझुआन बुझि पड़ैए मुदा उत्तर भारी अछि, से...।"

बाबाक बात सुनि सभ बच्चाक कान ठाढ़ भेल। साँझू पहरमे जहिना सभ नढ़िया-पण्डित मिलि एक्के बेर अन्हारक हल्ला करैए तहिना सभ बच्चाक मनमे। मन पड़लैन- जहिना केराक गाछक खोंइचा माने डपोरक डोरी बनैए, जइसँ कोनो वस्तु बान्हल जाइ छै तहिना ने बिनु बुझल बातक डोरी बना बालो-बोधोकेँ बन्हैक जरूरत अछि। विचारमे एकरूपता एलैन। लगले मन घुमि डपोरक डोरी बनै

केना छै तइ दिस गेलैन। ऊपर जेते सुखल अछि ओतैसँ चीरि कऽ जीतहा चीरैत ने जड़िमे तोड़लो जाइए आ छोड़ौलो जाइए...।

मुस्की दैत बाबा बजला-

“बौआ सभ। आमक गाछीमे एकटा बगवार बती लऽ कऽ मचानपर सुतल रहै, अन्हार रातिमे चोर सभ आबि पहिने ओकर बतीए चोरा लेलक आ पछाइत ओकरे बतीकेँ हड़ैप आमो बीछि लेलक आ बतियोकेँ हड़ैप चोर बतीक मूड़न बिआह कऽ लेलक। तही दिनसँ चोरक चोरबती गृहवासू भऽ गेल।”

बाबाक खिस्सा सुनि बच्चा सबहक बीच रंग-रंगक खेल पसैर गेल। कियो चोरक बुधियारीक हिसाब जोड़ए लगल जे केना भेल, तँ कियो जोड़ैत जे गुण भेल जे चोरबतीए चोरौलक। ओहेन सुतलकेँ तँ जाने छोड़ि देलक से गुण रहल। कियो बाबाक नजैर-पर-नजैर रखने जे बाबा असली जगरनाथ बाबाक दर्शन करौलैन आकि ऊपरमे राखल झपनाक..?

जेना-जेना बाबाक नजैर आगू दिस खिड़ैन तेना-तेना मनमे धिक्कार उठैन जे आगू तकक बात कहि देने अपन विचारो आ रस्तो बनौत। मुदा बाबाक मनक चटपटी देख गोविन्द बुझि गेल जे बाबा किछु बजऽ चाहै छैथ, तइ बिच्चेमे अपन बात किए ने रखि दिऐन। बाजल-

“बाबा, नीक जकाँ नै बुझि पेलौं जे अपने की कहलिऐ?”

गोविन्दक जिज्ञासा बाबा अँकलैन। आँकि कऽ गुलेतीक गोली जकाँ ठिकिआ कऽ बजला-

“बौआ गोविन्द, जेते दूर तक सुजोत चलैए, तेते दूर तक कुजोतो चलैए, केतौ-केतौ बेसियो चलैए आ केतौ-केतौ कमो चलैए, मुदा से नहि। वएह सुजोत कुजोतक बती चोरबती बनि गृहवासू भऽ

गेल।”

बाबाक बात सुनि अपन जिद्दपन धेने गोविन्द बाजल-

“बाबा, अखन सुनलाहा भेल, आँगन जा जखन ओकरा उचारब-विचारब, तखन हँ-निहँस काल्हि कहब।”

गोविन्दक जिज्ञासा देख आत्मानन्द बाबाक मनमे हौहैट-कलकैलक कुरूऐनी जकाँ सुआस पड़लैन...।

बजला-

“बाउ गोविन्द, काल्हि तँ काल्हि हएत, आइ ठीक छह किने?”

हँसैत गोविन्द बाजल-

“हँ बाबा।”

OO

तिथि : 6 अगस्त 2014, शब्द संख्या : 884

सनेस

तुलसी बाबा जहिना हलैस कऽ रामायण गढ़ि तूल देलैन जे “हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता” तहिना ने “मनु अनन्त मनुआँ अनन्ता” सेहो होइ छइ। एहने अनन्तमे पण्डित कक्काक जिनगी सेहो वौआ गेलैन।

जेकर ओरे-छोर ने रहत तइमे लोक नै हेराएत तँ हेराएत कइमे। तहूमे जे हेराइबला रहैए ओ तँ हेराइते अछि। घरोमे लोक हेरा जाइए। मुदा बिनु ओर-छोरक जे अछि तइमे लोक हेरेबो केना करत। हेराइते बेर ने हरण होइ छइ। जँ सीते नै हेरैतैथ तँ हरण किए होइतैन। ओ जँ केतौ वौआइत रहत तँ ओही अनन्तमे किने। तखन ओ हेराएब केना भेल। हेराइ तँ लोक ओतए अछि जेतए एकसँ दोसरमे चलि गेल, रामक संग छोड़ि सीता जेना रावणक संग गेली। मुदा एक छोड़ि दोसर जेतए ऐछे नै तेतए लोक जाएत केतए। ओहीमे ने जहिना सभ अछि तहिना ओहो अछि।

पण्डित काकाकेँ सेहो तहिना भेलैन। बच्चेसँ चन्सगर रहैथ, पढ़ै-लिखै दिस मन झूकलैन। पढ़ै-लिखैक एकछाहा भाषो आ विषयो, तँए पण्डित काका संस्कृते विद्यालयमे नाओं लिखौलैन। ओना पनरह-अनासँ बेसीए लोक पढ़ै-लिखैसँ दूर हटल अछि। धरतीसँ अँकुरि भाषा-साहित्यक गाछ बनल अछि। जइमे गमैआ वैद जकाँ, जे अमेरिका-इंगलैंडक दवाइसँ उपचार नै करि, बोन-झार, खेत-पथारक

जड़ी-बुटी चुनि औषध बना रोगक उपचार करै छैथ, जे एक धारा बनि धरतीकेँ सींचैए तहिना संस्कृतो भाषा धारा छी। तेतबे नै अदौक धार छी, जे अखनो बहैए। मुदा कोनो धारा ताबे तक अपन समुचित गतिये प्रवाहित होइत रहैए जाबे तक ओकरा अनुकूलता भेटैत रहै छइ।

जेना इतिहासक मध्य किछु राजो शासनक अछि। तँए ओइ कालखण्डमे भाषो-साहित्य फुलाएल फड़ल। मुदा धरतीपर बहैत धारक धारा आ विचारक दुनियाँमे बहैत धाराक बीच दूरी तँ किछु भाइए जाइ छै, मुदा ओ दूरी पाटत के? पटाएत केना? जइसँ सिञ्चित भऽ रूप-सौन्दर्य पसारत...।

‘लघु सिद्धान्त कौमदी’केँ पण्डित काका तेना कऽ धुथुरक पीसल बीआ मिला चटलैन जे पढ़ैक निशाँ लगि गेलैन। आन काज की भेल आ की नै भेल तैपर ओते धियान नै दऽ पढ़ैपर नजैर गड़ल रहै छेलैन। तहूमे गीताकेँ तँ चाटिये गेल छला...।

पण्डित काका आ अपना बीच एतबे सम्बन्ध अछि जे जखन काजसँ निचेन रहै छी तखन लगमे आबि बैसै छिऐन तँ रामायण, गीता, महाभारतक गप-सप्प कहै छैथ। सुनैकाल सुनै छी। मुदा जिनगीक उद्यम तँ अपने जुतिये ने करै छी आ अपना जुतिये कि करै छी काजक जुतिये करै छी। काजेक जुतिकेँ कन्हेठ अपन जुति लगबै छी। काजोक तँ अपन जुति होइ छइ। मुदा समाजक लोक पण्डित काकाकेँ निशाँएल थोड़े बुझै छैन, बुझै तँ छैन भूतलगुए। निशाँएल तँ ओतए ने भेल जेतए सार-असारमे बदैल शारीलक स्वरूप धरैए।

मुदा ओ तँ जिद्दक आड़ियेपर बैसल छैथ। मानि नेने छैथ जे जहिना ओ सभ[18] नै सुनत तहिना की अपन मुँह सीब लेब। जेकर जे काज रहतै, रस्तो चलैत रहब आ बजितो रहब, सुनि कऽ बुझलक तँ

[18] समाजक

बड़बेस नै तँ हमहूँ बजलौं ओहो सुनलक...।

ओना, सुनै आ बुझैमे भेद छइ। भेद ई छै जे किछु करैक उदवेग बुझला पछाइत अबैए, मुदा सुनब तँ खाली सुनब भेल जेकरा सुनियोँ सकै छी आ अनसुनियोँ कऽ सकै छी।

ओना पण्डित कक्काक जन्म पाँच बीघाबला किसान परिवारमे भेल छैन। बच्चेसँ पण्डित काका माता-पिताकेँ जन्मदते नै जिनगीक जन्मदाता-गुरु सेहो मानै छथिन। जन्मदते ने जन्म दैक बाट पकड़ा जन्मदाता बनबै छैथ, तँए गिरहस्तीक सभ लूरि पितासँ सीखि पण्डित काका अपन जीवन-जापन करै छैथ। गीताक तेते अध्ययन केलैन जे उगना महादेव जकाँ किछु लिखैक विचार उगलैन। पचपन बर्खक अवस्थामे किताब लिखि छपबौलैन। गुण रहलैन जे दुइए साए छपौलैन नै तँ पाँच कट्ठाक बदला बीघा चलि जैतैन। ने कियो किताब कीनलकैन आ ने अपने केतौ बेचए गेला...।

जहिना कोनो बेमारी परिवारमे भेने परिवारबलाक नजैर ओइ दिस बढ़ै छै, बाढ़ि एलापर बाढ़िक दुश्मन दिस बढ़ै छै, रौदी भेलापर रौदीबाबाक सराध-विटाइर केना हेतैन तइ दिस बढ़ै छै, इत्यादि-इत्यादि, तहिना किताबक छति पण्डित कक्काक मनकेँ पण्डितौपन दिस रेड़लकैन। रेड़ पड़िते मन फुरफुरेलैन जे किताबमे जे समय लगाएब आ ओ समय बेकार चलि जाए तँ जरूर केतौ रस्तामे आँकर-पाथर ढेरियाएल अछि...।

प्रश्न उठिते जहिना अस्पतालमे रोगीक पहिल जाँच करैत डाक्टर विभागीय वार्ड दिस पहुँचा दैत तहिना पण्डित काकाकेँ सेहो भेलैन। मुदा लगले ऊपर-झपकी भेलैन जे एहेन प्रश्नसँ एतेटा जिनगीमे भेँट कहाँ कहियो भेल छल..?

फेर भेलैन जे एहेन काजे दोसर कोन केने छेलौं जे भेँट होइत।

तँ की काजे बुधि जन्मबैए आकि काजकेँ बुधि जन्मबै छै...।

जेते पण्डित कक्काक पण्डिताउ बढ़ल जाइन तेते पसेना देहसँ निकलए लगलैन। पसिने ने दुनियाँक पसन्द भेल। जेते पसेना छूटत तेते सुख भेटत...।

मुदा लगले मन अपना दिस पाछू उनटलैन। उनटलैन ई जे पचपन बर्खक मेहनैतक फल उपयोगी नै भेल। जँ फले खट्टा भऽ गेल तँ जिनगी केना मीठ भेल! जँ जिनगी मीठ नै भेल तँ अनेरे किए एते समैकेँ शरबत बना पीबलौं? मुदा शरबतो तँ परखए पड़त जे सोझे मधुरस छी आकि भँगरस..?

पण्डित काकाकेँ अपनापर तेहेन ग्लानि जगलैन जे अपनेमे अपने गड़ए लगला। पिताक देल जत्था-जमीन बोहा पोथी लिखलौं से आन बुझह आकि नै बुझह मुदा अपने तँ बुझिते छी जे सैयो टीका-संग गीता पढ़लौं। तेकरे ने नेबो जकाँ निचोरि-निचोरि पोथीक सृजन केने छेलौं। तखन? पोथी मौलिक भेल की टीका। जँ टीका भेल तँ सृजन केना भेल? जँ सृजन नै केलौं तँ सिरजलौं की जे लोक पूछत..?

फेर जेना ग्लानि गरए लगलैन। ग्लानिसँ गड़ैत दुनियाँमे प्रवेश केलैन। जेते लिखिनिहार तेते रंगक विचार! एना किए भेल? जे व्यासजी गीता लिखि खुट्टा गाड़ि देलैन जे सर्वोत्तम जिनगी जीबाक सूत्र लिखि सुतिआ लेलैन, मुदा एते विचारक की कारण?

प्रश्न मनकेँ रोकि कहलकैन-

"अनेरे जहिना पचपन बर्ख वौएलौं तहिना छपनमो बर्ख वौआइते ढहनाएब। हूबा करू। फेर पढ़ू फेर लिखू। मुदा हूबटुटु बनि जिनगी नै जीबू।"

गीताक समीक्षा लिखि विषयकेँ अन्त करैत लिखलैन-

"जँ पूजी जगदम्ब तँ आनक पुजन व्यर्थ। नै पूजी जगदम्ब तँ आनक पुजन व्यर्थ। सभ जिनगीक खेल छी, जेहेन जिनगी तेहेन विचार, तखन अनेरे लोक किए मीठहा छोड़ि खटहा फल खा खटही बनत?"

मन मानि गेलैन जे दुसैएबला काज तँ करबे केलौं, किए ने कियो दुसत जे किताब छपैक प्रेस जखन एते सस्ता भऽ गेल तखन दुइए साए किताब छपबैमे एते किए खर्च भेल..?

मुदा मनमे उठलैन- जेते मोट-मोट किताब पढ़ि नेने छेलौं तइसँ पातर केना लिखितौं। गीता पढ़ि गीते आकारक पोथी लीखि पाँच कट्ठाक दाम सबा लाख गमेने छेलौं, मुदा तहिना जँ अहाँ अपन गतातिक प्रेसक खर्च आ साए पृष्ठक किताब बुझैत होइऐ, ई दीगर भेल। मुदा से नै हमर तीन हजार पृष्ठक पोथी छल जेकरा रेक्सिनक गत्तासँ गतानि छपबौने छेलौं, अपन बोइन-बुत्ता छोड़ि पनरह साए मुल्यो रखने छेलौं। मुदा सभटा पड़ले रहि गेल। ओना अखनो बड़ दुख नहियेँ अछि, किएक तँ कोनो कि हमरेटा पड़ल रहल आकि आनो-आनकेँ अहिना पड़ल छैन। जखन आनो-आनकेँ भेल तखन तँ यएह ने नीक भेल जे जे भेल से सभ मिलि एकेबेर छातीमे मुक्का मारि, कनैक लैये बदैल ली...।

जहिना पहाड़ी रस्ता टपला पछाइत समतल जमीनक रस्ता आ गाछक छाहैर भेटलापर जे मन हरखित होइ छै तहिना पण्डितो काकाकेँ भेलैन। हरखित मन होइते गर गड़ेलैन। गर गड़ाइते मन हनहनेलैन जे जहिना गमैआ वैद गामेक खेत-पथार, वाड़ी-झाड़ी, बोन-झार, गाछी-कलम आ बँसबाड़िसँ जड़ी उखाड़ि ओकरा जड़िया-औषध बना रोगक उपचार करै छैथ तहिना हमहूँ करब। ठीके पिताजी कहै छला जे मौसमक अनुकूल सभकेँ चलक चाहिऐ। जेहेन समय

तेहेन काज, जेहेन काज तेहेन भोजन, तेहेन रहन-सहन बनेनहि ने मौसमक संग चलि पएब। बरहमसिया खेतीक तँए प्रयोजन पड़ै छै...।

सोचिते-विचारिते पण्डित कक्काक मन मानि गेलैन जे नव सिरासँ[19] आब किताब लिखब...।

मुदा लगले मनमे उठलैन जे पहिलुक पोथी तीन हजार पृष्ठक छल, तँए काज तँ ओइसँ बेसी लिखने बढ़ियाँ हएत। जँ तीन हजार पृष्ठसँ आगू चारि हजार पृष्ठक लिखब तखन ने तरका दबाएत। जँ से नै हएत तँ ऐगला ओहिना अलगले रहत किने..?

झोंकाएल मन पण्डित कक्काक झोंकमे रहबे करैन, पुर्बा झोंकमे पच्छिम आ पछिया झोंकमे पूब दिस जहिना गाछो-बिरीछ झूकि जाइए तहिना झूकए लगलैन। मन पड़लैन अपन ओ दिन जइ दिन गीता–महाभारत अंश गीता–केँ जिनगीक मुँहक गीत गबैत सुनने रहैथ। कानक सुनल आकि कोनो मुँहक बाजल, झूठ केना हएत? मन ठमकलैन, आगू बढ़ैसँ जाँघ थरथरेलैन...।

थरथरेलैन ई जे एक तँ जिनगी भरिक पढ़लाहा हेरा रहल अछि जे आब दोसर सिरा पकैड़ लिखैक अछि, तखन तँ पचपन बर्खक उमेरक कोनो मोजरे ने भेल! आ जँ कहीं अगिलो सएह भऽ जाए, तखन तँ ओहन आमक गाछ आकि कोनो आन फलक गाछ जकाँ ने भऽ जाएब जे छाँह तर पड़ि कहियो फुलेबे ने करैए..!

जखन मोजरे ने तखन फल केहेन फड़त?

आगू-पाछू देखैत पण्डित काका विचारए लगला- आब की उपए..? काजो तँ असान नहियेँ अछि...।

नव शिरासँ नव बात बिना बुझने-गमने केना आगू बढ़त? ई तँ

[19] नव शीर्षकक नाओंसँ

नै जे सभ पञ्च लबरे भऽ जाए। जँ आगू नै बढ़त, तँ कलमक धार केना फुटत? जँ कलमेक धार नै फुटत तँ सादा कागतपर चारि हजार पृष्ठ उतरत केना? केकरोसँ पुछबो केना करब, सभ तँ अपने बेथे बेथाएल अछि। दिन-राति जे बेटा, बेटी, पत्नी-ले दौड़ रहल अछि ओकरा एते पलखैत कहाँ छै जे अपना परिवारमे बैस परिवारक तानी-भरनी ठीकसँ चलौत। जाबे सुतकेँ तानी-भरनीक बीच तानि कऽ नै तनियाएल जाएत ताबे ओ अम्बर केना बनत? प्रश्न ई नै जे पुछबो केना करबै। प्रश्न ई जे केकरासँ पुछबै। की गीताक टीकाकारसँ आकि व्यास रचनाकारसँ? से नै तँ चारि हजार पृष्ठक किताब लिखैमे अदहा विचार गीताक लेब आ अदहा समाजक। जँ से नै करब तँ गीताक गुण तरेतर हृदैकेँ तेना सिहरा कऽ सड़ैन करए लगत जे देहे-हाथ कठुआ जाएत! काजे ने कएल हएत..!

दू साल बीत गेल। सौन मासक हरिअर चास गाममे लहलहाइत रहए। निच्चे-ऊपरे खेती भऽ गेल। जे खेत जेना रोपल गेल से खेत तेना हरियरियो बेसी पकड़ैत गेल, मुदा लगक रोपल, माने काल्हि-परसूक, कोनो पतसुखू तँ कोनो धड़सुखू तँ अछिए। चैत-बैशाखक सुखाएल-अध-सुखाएल धारो-धुर आ डाबरो-पोखैर फुला गेल। पतझड़ गाछ-बिरीछ सौनक सोहनगर समीर आ शीतल सलिल पाबि अपना वस्त्रे झूकि गेल...।

काल्हि साँझमे पण्डित कक्काक पाँच हजार किताब गाड़ीसँ उतरलैन। पहिल साँझ दीप नै बरल तँए झलअन्हारमे बण्डल खोलब नीक नै बुझि सोझे थकिआ कऽ कोठरीमे रखि लेलैन।

खेला-पीला पछाइत जखन ओछाइनपर पण्डित काका पड़ला आकि पैछला किताब मन पड़लैन। मन पड़िते कबुल लेलैन जे पिताक सम्पैत नष्ट केलिऐन। मुदा कननौं तँ नहियेँ हएत? जिनगी सदैत हार-

जीतक बीच चलिते अछि, कियो अफसर निचलाक ऊपर रोब झाड़ैए तँ ऊपरकाक रोब सहबो करैए। आब किताबकेँ खाली बेपारक सौदा नइ बना जिनगीक सौदा बनाएब जइसँ जिनगीक बीच रखि परिचयौ-पात देब नीक हएत। जँ से नहि, खाली परिचए-पात देबै तखन एहनो तँ भाइए सकैए जे ओइ दिस पढ़निहारक नजरिये ने जाए...।

किताबक परिचयो आ बिकरियो, दुनूकेँ नजैरमे रखि पण्डित काका निर्णय केलैन जे किताब लऽ कऽ दोसराक दरबज्जापर परिचए करा कऽ ढौआ लेब। मुदा दोसराइत के? अदहासँ बेसी लोक किताब पढ़ैबला नै छैथ! तखन? जँ पढ़निहार परिवार ऐछो आ कोनो रूपक सम्बन्ध ओकरासँ नै रहल अछि तैठाम केना जाएब..? आन कोनो दरबज्जापर जेबाक रस्ता होइ छै, जइ रस्ते लोक जाइए। मुदा लगले, जहिना भकमोड़क रस्ता केकरो देखल रहै छै तहिना भक्क टुटलैन। भक्क ई टुटलैन जे जे साहित्य प्रेमी जे पाठक छैथ, ओ तँ अङ्गीते भेला किने आ समाजिक अङ्गीतो तँ छैथे तैसंग परिवारिक अङ्गीत सभ सेहो छैथे..! दस रंगक पोथी पाँच हजारक अछि, पँच-पँच साए भेल, जखन कि लेबाल तँ पाँचो हजारसँ ऊपर छैथ! तखन काज असाध केना भेल..?

लगले पण्डित कक्काक मन किताबक छपाइ-कढ़ाइ दिस बढ़लैन। हाथक लिखल लोहाक मशीनमे गेल आ लोहासँ निकैल हाथमे औत, अनेरे दुनूक बीच तीन बेर चढ़ा-ऊतरी भेल। छूट-छाट, भूल-चूक भेले हएत। तैबीच जँ दोहरा कऽ किताब पढ़ए लगब से सम्भव नहि, किताबक थाक तौलाक भात थोड़े छी जे एकटा चाउर टोबने बुझि जेबइ। एका-एकी छपाइ भेल तँए एकक भूल-चूक दोसरोमे हएत आकि दोसरो भूल-चूक अछि से बुझब कठिन अछि। तँए नीक ई जे सभकेँ एके निवेदित जे भूल-चूक भेल हुअए, से चेतौनी

देब जइसँ आगू चेतल जेतइ।

पड़ले-पड़ल पण्डित कक्काक मन ऐठाम आबि गेलैन जे किताब लऽ घरसँ निकलब। मुदा घरसँ निकलैसँ पहिने यात्राक दिशा तँ देखए पड़त। जँ से नै देखब तँ अनेर कुयात्रा हएत, जखने कुयात्रा भेल तखने गाड़ी जकाँ काजो दब-उनार भऽ जाएत। जखने दब-उनार भेल तखने गाड़ी उनटैक सम्भावना आबि जाइए। जखने सम्भावना औत तखने अथाह दिस बढ़ब भेल...।

फेर मोड़पर अबिते मन घुमलैन। अथाह तँ समुद्र होइए, पोखैर-झाँखैर तँ थाहल होइए, तेकरो नपैले तँ लोक फैदम बनाइए नेने अछि तखन सम्भावित केना भेल? हँ, ई बात अछि जे मौसमक[20] गति-विधि–रौद-हवा इत्यादि–सेहो रस्ताक बाधक बनैए तँए विपरीत दिशामे बढ़ने चलैमे सुभिता होइए, मुदा जँ काज धारक सिरा जकाँ हुअए तखन छोड़ब नीक हएत आकि बढ़ि कऽ करब नीक हएत? दिन-बेरागनक विचार काजक हिसाबे नीक होइ छै...।

निर्णयक लग पहुँचैसँ पहिनहि मनमे एलैन जे दुनियाँमे कियो दोसराइत हुअए आकि नै मुदा संगीक संगिनी तँ लगेमे छैथ, किए ने पहिल विचार हुनकेसँ लऽ ली। आखिर ओहो तँ ओहिना ने सङ्कल्प केने छैथ जे जिनगी भरि घरसँ बाहर धरि विचारक संग रहब जे जिन्दा दिल, दिल खोलि सङ्कल्प जिनगी भरिक लइ छैथ...।

पोखैरक पानि जकाँ पण्डित कक्काक मन थीर भेलैन। बजला-

"सुतल छी?"

'सुतल छी' सुनि रेशमा सगबगेबो ने केली। एक तँ ओहुना गमैआ चौकीदारकेँ तीन हाक देबाक अधिकार छै, तँए पहिल हाकक

[20] समैयक

जवाब देब जरूरियो तँ नहियेँ अछि। फेर मनमे नाचि उठलैन, हो-न-हो जँ कहीं एहेन विचार मनमे आएल होइन जे एक बेरसँ दोसर बेर साँपक मंत्र जकाँ ने डाकैन देल जाइ छै, तखन नै किछु बाजब उचित नै हएत। मुदा उत्तरक समैकेँ हुसैत देख रेशमा विचारलैन जे बोलसँ नहि, खोंखी करि जगैक सूचना देबैन। अपनो मन कहतैन जे भरिसक भकुआएलमे नै सुनलैन। मुदा लगले भेलैन जे, लोक जगलो ओछाइनपर पड़ल रहैए, मन जागल रहै छै आ देह पड़ल छै, ओकरो तँ सुतबे ने कहल जाइ छइ। केना ओ बुझलैन जे सुतले हेती। अखने छनेक पहिने ओ खा कऽ ओछाइनपर एला, तेकर पछाइत अपने खेलौं, बासन-कुसन, थारी-लोटा अखारि, कुत्ता-बिलाइ दुआरे सहिआरि कऽ रखि अखने ओछाइनपर एलौं आ जखन ओ पहिने एला तखन जगले छैथ आ पछाइत हम एलौं तँ नीन पड़ि गेलौं! जरूर केतौ सोचमे शङ्का भऽ रहल छैन। हमहूँ तँ संगियेँ छिऐन किने, किए ने कनी आगरे करि थारीमे परैस दिऐन...।

मधुवनक मधुआएल मौधमाछी जकाँ भनभनाइत स्वरे रेशमा बजली-

"सुतलोमे वौऐनी नै छुटल जे निसभेर रातिमे बपहारि कटै छी?"

पत्नीक बातसँ पण्डित काकाकेँ मनमे दुख नै भेलैन, खुशीए भेलैन। खुशी ई भेलैन जे भरिसक कोंचा-कोंची अखन धरि बन्हनहि छैथ, तँए एहेन टाँस बोल भेलैन...।

मधुरस पीनिहारकेँ जहिना मौधमाछीक डङ्कक दर्द मनसँ मेटा गेल रहै छै तहिना पण्डितो काकाकेँ मेटा गेलैन। बजला-

"एकटा बेगरता भऽ गेल?"

'बेगरता' सुनि पण्डिताइन काकी अकचकेली। अकचकेली ई जे अरामोक अवस्थामे जिनका कोनो बेगरता होइ छैन, तँ जरूर ओइ

बेगरता-वस्तुक काजमे मन लगल छैन। बजली-

"केहेन बेगरता अछि?"

जहिना कियो केकरो बेगरता सम्हारि दुखकेँ सुखमे बदैल दइ छै तहिना पण्डितो काकाकेँ भेलैन। बजला-

"किताब लऽ कऽ निकलब, से कोन दिन नीक हएत?"

पण्डिताइन काकी बजली-

"देखू, पुरुखक जतराकेँ ठेकान नै छै, मुदा काजक बेगरताक हिसाबे महिला अपन दिन-बेरागन बना नेने छैथ। जँ से नै बनेने छैथ तँ किए लगनक भदबा माफ अछि।"

जहिना कोनो जन्तु दोसरकेँ धरऽ दौड़ैए तहिना पण्डित काकाकेँ पत्नीक बोल धेलकैन। मनमे ठानि लेलैन जे काल्हि किताब लऽ कऽ घरसँ निकैल जाएब। मुदा जाएब केतए? मात्रिक अङ्गीतक जाल छी निच्चाँ-ऊपर तेना ओझराएल अछि जे जँ कियो सुनिनिहार ऐछो तँ कियो नहियोँ सुनिनिहार[21] तँ छैथे, तहिना सासुरो भेल। नीक हएत जे जैठाम कम सम्बन्ध अछि ओतए जाएब...।

टोहियबैत पण्डित काका सढ़ूआरए चुनलैन। सारिक घर छी, कहिया केतए सँ गपो-सप्प बाँकी अछि। बेटो हाइ स्कूलमे पढ़िते छैन, साढ़ू अपने ने नै पढ़ल छैथ।

दोसर दिन पचासटा किताबक मोटरी बान्हि कन्हिया पण्डित काका सढ़ूआरए पहुँचला। दरबज्जापर पहुँचते साढ़ू आगूसँ मोटरी उतारि चौकीपर रखि गोड़ लगलकैन। गोड़ लागि आँगनसँ लोटामे पानि आनि पएर धुआ, पुछलखिन-

"बड़ भारी मोटरी अछि?"

---

[21] जे उम्रक वा सम्बन्धक

कहलखिन-

"किताब छी।"

'किताब' सुनि सिंहेश्वर बेटाकेँ सोर पाड़ि बजला-

"बौआ, जाबे साढ़ू दरबज्जापर रहैथ ताबे अहाँक भार भेल। किताबक मोटरी छिऐन से देखैत-सुनैत रहब।"

बिच्चेमे सारि आबि एक चुटकी अबीर पण्डित कक्काक आगूमे उड़िया गेली। शान्त जगह देख पण्डित काका साढ़ूक बेटाकेँ पुछलखिन-

"बौआ, की नाओं छी?"

"श्याम सुन्दर।"

"कोन किलासमे पढ़ै छी?"

"दसमामे।"

'दसमा' सुनि पण्डित काका बजला-

"बौआ, जिनगी भरिक काजक मोटरी छी। अहीं सन लोकक खगता अछि, काजो-एहेन अछि जे अहूँकेँ नीक आ हमरो नीक हएत।"

दुनूक नीक सुनि चकोना होइत श्याम सुन्दर बाजल-

"से की?"

'से की' सुनि पण्डित कक्काक हृदैमे हिलकोर उठि गेलैन। बजला-

"बौआ, जँ बच्चा बच्चेसँ काजक लूरिकेँ कन्हियबैत चलए तँ ओ माए-बापक भारक मोटा कम करैत अपना ऊपर ठाढ़ भऽ जाइए। श्रवण कुमारक कथा सुननहि हएब। केना सीक-पटैपर माए-बापकेँ

कन्हेठ, चारू-धाम करए विदा भेला। तँए अहूँ किताबो बेचू आ पढ़बो करू। काजसँ लजाउ नहि, जखने काजसँ लजाएब तखने लजबिजी जकाँ लाज-बीज रहितो अकाजक दुनियाँक खाधिमे खसब। जेकरा काँटक दुआरे ने माल-जाल खाइए आ ने हाड़-गोड़ दुआरे लोके पुछै छइ।"

पण्डित कक्काक विचार सुनि श्याम सुन्दरक हृदए सिहैर गेल। सिससिराइत बाजल-

"मौसा, अहाँक विचारसँ जेना देहक खून फनफना रहल अछि, अपनोसँ भेँट-घाँट करैत करब। अखन अपनेक विचार शिरोधार अछि।"

OO

तिथि : 16 अगस्त 2014, शब्द संख्या : 2685

पुरस्कार

भिनसर सात बजे समाजक बुढ़-बुढ़ानुससँ लऽ कऽ बेदरा धरि सभ कियो बच्चाकेँ पुरस्कारक असिरवादो दइले आ बोन बीच विचरण करैबला वियाधो[22] चिन्हैले एकत्रित भेला।

जेना गामे हलचलाएल अछि। हलचलेबो केना ने करैत, कोन-परिवारक कोन माता-पिताक मन बच्चाकेँ पढ़बै दिस नै छैन। के नै बुझै छैथ जे साए भरि सोनासँ नीक रती भरि बुधि होइ छइ। मनक झोंकमे, पुरस्कारक उत्सवक कारणे, बारह-अना लोक बिसैर गेला जिनकर बच्चा स्कूलक आँखि नै देखने।

रातिये सुतैबेर मे बहुलांश पुरुख अपन-अपन पत्नीकेँ कहि देलखिन जे तीन बजे भोरेमे उठि, घर-अँगनाक काज सम्हारि, चुल्हि-चौका अमैनियाँ बना जलखै तैयार कऽ लेब। कहुना भेल तँ सरस्वतीक दरबारक सभा भेल किने, तँए सभ किछु चिक्कन बना नै जाएब से केहेन हएत..?

जिनका सभकेँ दुनू परानीक बीच खटपटो छेलैन सेहो सभ पतिक बातकेँ कन्हेठ तीन बजे भोरे उठि पतिकेँ सात बजेसँ पहिनहि खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ ओढ़ै-पहिरै तकक ओहेन तैयारी कऽ लेलैन जे

---

[22] शिकारियो

सचमुच सरस्वतीक मन्दिर पूजा करए जेता। ऊपरसँ दोसर कारण ईहो भेल जे पत्नीक जेते क्रिया-कलाप पुरुख सभकेँ नै मोहने छेलैन, तइसँ बेसी पत्नीक मन-मक्खन मोह मोहलकैन। से कोनो एक्के-दुइएकेँ नहि, जेना समाजेक भऽ गेलैन।

सात बजैत-बजैत विद्यावादिनी सरस्वतीक सभा जकाँ स्कूलक आँगनक परतीक दुभियेपर सभा सजल। जुगक अनुकूल तँ विचारो बदैलते अछि, जे स्कूलक आँगन बच्चाक लगौल फुलवारीसँ सजल रहै छल, विद्यालयक चारूकात एबा-जेबाक रस्ता बनल रहै छल, आइ ओ दुभि लगौल परती, दुभियो लगौल परती किए कहै छिऐ, बेउदाम जगह बनि गेल अछि। एहेन उठौन लोकमे उठल केना..?

गामक एक बेटा जगरनाथ मध्यम परिवारमे जन्म लेलो पछाइत अपन बुधिबलसँ एम.ए.क नीक डिग्री पाबि शान्ति-निकेतन- विश्व भारतीमे शिक्षक बनला। मुदा जिनगी भरि रहि गेला ओहेन विद्यार्थी जकाँ जे ट्यूशन पढ़बैत उपैत करै छैथ। इंजीनियर, डाक्टर, प्रोफेसर, ओकील इत्यादि बनि धरतीपर ठाढ़ होइ छैथ, पेशा बदलला पछाइत जिनगियोमे बदलाउ अबिते छै मुदा से जगरनाथमे नै एलैन। संस्कृत विद्यालयक विद्यार्थी जकाँ तेहेन पोथीक चटनमा बनि गेला जे अपनाकेँ कहियो विद्यार्थीसँ ऊपर नै बुझलैन। जहिना चिड़ै-चुनमुनी चहरा चुनि घोघमे बच्चा-ले आनि मुँहमे दइ छै तहिना जगरनाथोक जिनगीक क्रिया-कलाप रहलैन। बिसैर गेला नोकरी आ बिसैर गेला नोकरीक साल-बर्ख...।

तीन मास पूर्ब जखन सेवा निवृत्तिक चिट्ठी जगरनाथक हाथमे एलैन तखन भक्क खुजलैन। भक्क खुजिते आँखिक आगू अन्हार पसैर गेलैन। ओइ अन्हारमे टापर-टोइया दइते भादो-अन्हारक जन्म-

अष्टमी, फागुनक अमावसियाक शिवराति आ कातिकक अमावसियाक कालीक दर्शनक पढ़ल-गुणन विचार मन पड़लैन...।

मन पड़िते हूबा जगलैन। हूबा उगिते मनसूबा जगलैन। पाछू उनैट तकला तँ देख पड़लैन जे आब विश्व भारतीसँ चलि जाएब। केतए जाएब? गाम जाएब। केना रवि बाबू गाममे विश्व भारती जनमौलैन? केना अखनो बड़का-बड़का सिरीसक गाछ ओहिना फुलाइत रहल आ ओ केना आगूओ फुलाइत रहत...। तीन मासक पछाइत गाम जाएब तखन रहब केतए? जुआनीसँ अखन धरिक जे गाछक छाहैरक स्वच्छ हवा पीलौं, की ओइसँ हटि जीब पाएब..?

मन सिहरए लगलैन। मुदा लगले मनमे उपकलैन जे लाल रवि बाबूक रूपमे ओहिना, जहिना रविन्द्र नाथक रूपमे, तहिना 'टैगोर' आ 'गुरुदेवोक' रूपमे दुनियाँक ऐनामे चमैक रहल छैथ, ओइठामसँ गाम जाएब? जँ गुरुदेव केकरो किछु देलखिन तँ हमरो देलैन।

थोड़ेकालक पछाइत विश्व भारतियेक रूपमे गामोमे बनेबाक विचार जगलैन। विचार जगिते मन तरंगलैन। तरंग ई एलैन जे जँ कोनो जनोपयोगी संस्था समाजमे ठाढ़ होइ छै तँ जरूर ओकर असैर समाजमे पसैरते छै जइसँ अपन भविसक बाट-घाट बनै छइ। जेहेन बाट-घाट बनत तेहने ने गामक भविसक दिशा-दर्शन हएत। ई दीगर बात भेल जे जे रूप बदैल-बदैल शिक्षण संस्थान समाजिक जिनगीकेँ, काँकोड़ जकाँ कँकोरि खेबो केलक आ खाइतो अछि। जेकरा कहियो अछन थोड़े होइबला छै...।

सेवा-निवृत्तिक सूचना पाबि जगरनाथ गाम दिस कनछियेला। सोलहन्नी तँ सेवा-निवृत्तिक पछाइत होइ छइ। तेसर मासक तीस तारीखकेँ ऐठामसँ काज करैक अधिकार समाप्त हएत। किए ने अपन पेंशनक काज अगुआ ली। कर्तव्य-कर्ममे सेहो किछु ढील-ढाल एबे

करत। जइ विद्यार्थीकेँ गतिशील जिनगीक बात कहै छेलिऐ, आब तँ ओ सहजे चल-चलौए ने बुझत। नीके भेल। काजो तेदिसिया भऽ गेल अछि। एक दिस पेंशनक कागतक तैयारी, दोसर दिस विद्यालयक उपस्थिति, तेसर दिस ओ समाज जइमे जा बास करब। तँए ओकरो बसै जोकर ने बास बनबए पड़त। मन ठमकलैन। ठमैकते ठनकलैन। ठनकलैन ई जे समैए ने अपना गतिये चलि रहल अछि, तँए जँ अपनो जिनगीमे चलन्त गति नै आनब तँ जिनगीक सार्थकते केते। जइ प्राणमे जेते चलन्तता अबैत ओ ओतबे सजीव होइत। ओकर हँसब-विहुँसब, ओकर क्रिया-कर्म, ओकर आकर्षण-सम्मोहन ओतबे ज्वलन्त-जीवन्त हएत। तँए अखनेसँ ने गामक बास बसबैक खगता अछि। सूचीबद्ध काज सुतिआ कऽ जँ नै करब तँ मनक मुराद पूर कऽ हएत? जैठाम जगरनाथ तैठाम पुरी तँ बनबए पड़त। गाम पहुँच सभसँ पहिने पढ़ै-लिखैबला बच्चाकेँ मान-सम्मान देब नीक हएत। जाबे समाजमे बच्चाक आदर नै हएत ताबे ओ आगू मुहेँ मुखरत केना। मुदा निर्दोष बच्चाकेँ लोक किए बीरान बुझैए। मन मानि गेलैन जे पहिल काजमे हाथ लगा देब नीक हएत...।

मोबालिक युग, एक दोसरसँ मोबाइल नम्बर लऽ गामक सभकेँ जगरनाथ कहि देलखिन- 'परदेश रहि जे अर्जन केलौं ओ समाजक भेल। अहीक पहिल कड़ी बच्चाकेँ गुरुदेवक नाओंसँ पुरस्कृत करब भेल।'

जहिना कोनो घटना, कोनो विचार मनकेँ दलमलबैत तहिना जगरनाथकेँ सेवा-निवृत्तिक सूचनाक पत्र भेटते भेलैन। आकि विश्व भारतीक अन-पानिक असैर भेलैन, आकि गुरुदेवक देल वस्तु पेलासँ भेलैन, से ओ जानैथ। मुदा जहिना पोखैरक पानिक हिलकोर, जे कोनो गोला फेकलासँ आकि हवाक वेगसँ चलि आस्ते-आस्ते असथिर

होइत तहिना जगरनाथकेँ सेहो भेलैन। विचार ठमकलैन। ठमैकते ठनकलैन जे तीस तारीककेँ चारि बजे विद्यालयसँ विदा हएब। ओना ओइ दिन विद्यालय नहियोँ जाएब तँ केकरो पुछैक अधिकारे नै रहतै, ओहुना औझुका शिकाइत काल्हि ने हएत, काल्हि तँ ओकरा अधीनेमे नै रहबै, तखन ओ पुछि केना सकैए। बड़ करत तँ दरमाहा काटि लेत, काटि लेत तँ काटि लेत, परसूसँ अधिया जाएब से बरदाश करबे करब आ एक दिन पैछला तँ पछुआइए गेल तेकर केते चिन्ता करब। औझुका चिन्ता करैक छुट्टीए ने अछि आ कल्हुका दिस किए ताकब...।

मुदा लगले मन बदैल पुछलकैन,

'कोनो यज्ञक अन्तिम समैक की महत अछि?

मनमे प्रश्न उठिते दोसर मन दबैत कहलकैन,

'जहिना सभ दिन, सभ दिन किए जिनगी भरि, चारि बजे विद्यालय छोड़ैत आएल छी, तहिना चारि बजे ओहू दिन छोड़ब। जखन चारि बजे विद्यालयसँ डेरा आएब, तखन परिवारकेँ सम्हार करैमे सेहो समय लागत। राता-राती रस्ता नै चलब। लगक रस्तो नै अछि। तखन तँ भेल जे एक तारीककेँ ऐठामसँ विदा हौउ, गाड़ी-सवारीक बात अछि, कखन गाम पहुँचब कखन नहि। गाम पहुँच परिवारक सभ बेवस्था केले पछाइत ने दोसर काज दिस बढ़ब। दुनू तँ काजे भेल। गाम गेला पछाइत समाजक दरबज्जापर नै जाएब सेहो केहेन हएत। किए लोक बुझत जे जगरनाथ के अछि। तीत अछि आकि मीठ अछि, से तँ बाग-बगीचा लगला पछाइते ने कियो बुझता जे फल्लाँ मीठ आकि खट्टा आकि तीत। जैठाम बाग-बगीचा लगबे ने कएल अछि प्रश्न तँ तैठामक छी...।

जहिना बच्चाकेँ जन्मक पछाइत माथक केश कटौल जाइ छै

तहिना जगरनाथकेँ माथ साफ बुझि पड़लैन जे अखन चानिपर जहिना पतरखली उगत तहिना ने कोयलो। भलेँ एकटा हंसक रंग आ दोसर कोइलियेक रंग हुअए। दुनू मीठे अछि। जखने गमैआ फलक वाड़ीमे बहरबैया फलक गाछ रोपल जाइ छै तखने ओइपर अपनो नजैर आ आनोक नजैर पड़िते छै...।

दू तारीकक समय धड़फड़ीमे बनि गेल। समाजक बीच पहिल काज छी तखन जँ गोभे सुखा जाए तँ आशा कथी कएल जाएत। मन झनझनेलैन। जहिना झालिक झनझनी वीणाक झनझनीसँ मिलि सूर भरैत तहिना जगरनाथक सूर चढ़लैन। मनमे उठलैन जे जहिना कोनो कार्यक्रमकेँ कोनो कारणे आगू बढ़ौल जाइए तहिना दस दिन पहिने कार्यक्रमकेँ आगू बढ़ा देब। मनमे सबुर भेलैन। मुदा लगले चनैक गेलैन। चनैक ई गेलैन जे समारोहक समय सभकेँ कहि देलयैन ओइ सोचबमे धड़फड़ी भेल। जखन सात दिन छुट्टी बाँकी अछि, तखन किए ने एक बेर गामसँ टहैल आबी। टहैलो लेब आ सभसँ भेँटो-घाँट करैत अपन सभ बात बुझबैत हुनके सभसँ, समैक अँटावेश करैत कार्यक्रमक समय बना लेब।

जगरनाथक मन फुलेलैन। फुलाइते उठलैन जे केकरो भोज-भात, जात-बरियात आकि आरो कोनो कारणे दरबज्जापर जेबा-एबामे बाधा होइ छै, हमरा कोन अछि। जखन समाजक भोजो-भात नहियेँ खेलयैन तखन अनेरे मुँह फुलाएब हएत। समाजक काज छी तँए समाजक भागीदारी आवश्यक अछि। ओ तँ दस गोरेसँ विचार केले पछाइत सम्भव अछि, तँए नीक हएत जे सेवा-निवृत्तिक बीच्चेमे गाम जा अपन रहैक बेवस्थाक जोगाड़ सेहो कऽ लेब आ कार्यक्रमक भार सेहो समाजेकेँ दऽ देबैन...।

मन थीर भेलैन। दौड़ला पछाइत जहिना साँस तेज गतिये चलए

लगैए तहिना फेर जगरनाथक मनमे उठलैन- 'सम्मानक नाओं' की रहत? मुदा लगले मनमे विचार उठलैन,

'जइ महापुरुषक नाओंसँ सम्मान दिअ चाहै छी, ओ शब्दजालसँ ऊपर छैथ, तँए सभ नाओं बराबरे।'

जहिना राम, कृष्ण, महादेव इत्यादिकेँ हजारो नाओं देव स्वरूप जेबर बनि चमैक रहल छैन तहिना ने रवियो बाबूकेँ चमैक रहल छैन। 'टैगोर' नाओंसँ सम्मान देब उचित हएत। गामक इतिहासक धाराक यएह ने कड़ी छी जे गाम-समाजमे जन्म लऽ विश्वपुरुष लग अपन समाजकेँ पहुँचा नवेद स्वरूप ओइ नाओंसँ शिक्षण संस्था आकि बाल-बोधकेँ उत्सुकता बढ़बैले पुरस्कृत किए ने कएल जाए..?

जगरनाथक मन तनि गेलैन। तनैक कारण भेलैन जे जिनगी विश्व भारतीक बीच सेवारत् रहल, की ओइ समाजक नै भेल? जखन सेवा भेल तखन सेवक बनि सम्बन्ध जीवित बना नै राखी ई केते धरि उचित भेल? गाम सुतल अछि, ओकरा के जगौत..?

मनमे अबिते जगरनाथ बाँकी सातो दिनक छुट्टीक आवेदन लिखि प्राते-भने देबाक निर्णय केलैन।

जहिना कोनो देवस्थान, बजार, समुद्र, झील, पहाड़, विश्व विद्यालय, राज भवन इत्यादि देखैक जिज्ञासुकेँ मनमे रंग-रंगक प्रश्न उपकलो रहैत आ सोझ पड़ला पछाइत उपकबो करैत तहिना जगरनाथकेँ गाम एला पछाइत उपकलैन। गामक सीमामे प्रवेश करिते जे पहिल घर भेटलैन तेतए रुकि गेला। घरवारी थैर खड़ैत रहए, रस्तापर ठाढ़ जगरनाथकेँ टोकैत बाजल-

"बटोही, केतए जाएब?"

घरवारीक प्रश्न सुनि जगरनाथक मनमे अनेको प्रश्न जोर मारलकैन। जोर मारलकैन जे गामेमे 'बटोही' बनि गेलौं? ओहो

हमरासँ कम उमेरक नै छैथ, तखन किए ने चिन्हलैन?

मुदा लगले मन रोकि देलकैन जे हमहीं किए ने 'फल्लाँ काका', आकि 'फल्लाँ भैया', आकि 'फल्लाँ भाय', आकि 'फल्लाँ बौआ' कहि पुछलयैन? मुदा लगले तेसर विचार मनकेँ रोकैत शिष्टाचारक बात उठा देलकैन। अखन हमरा की करक चाही, यएह ने भेल शिष्टाचार...।

बजला-

"भाय, हम परदेशी छी, अहीं गाममे पूर्वजक बास छल, हमहूँ घर-घराड़ी, खेत-पथार बेचि कऽ नै लऽ गेल छी, जिनगी भरि परदेश खटलौं, आब चाहै छी अपने सर-समाजक बीच रहि शेष जिनगीक बिसरजन करी।"

'गौआँ' सुनि बुधन चौंकल। अपन पूर्वजक बास कहै छैथ, तखन किए ने खरिआरि कऽ पुछयैन...।

बाजल-

"आउ, आउ, पहिने पएर धोइ दरबज्जापर बैसू, बाट-घाटक चलल बटोही छी, थाकल-ठेहियाएल हएब। पहिने पानि पीबू चाह पीबू, पछाइत निचेनसँ आरो गप हेतइ। कोनो कि रहैक घर नै अछि जे रातिमे केतए जाएब तेकर चिन्ता हएत।"

बुधनक विचार सुनि जगरनाथकेँ सबुर भेलैन। सबुर ई भेलैन जे गामक समाजमे अखनो आगत-भागत जीवित अछि! मुदा प्रश्नक जवाबकेँ अँटकाएब उचित नै बुझि जगरनाथ चौकीपर बैस बजला-

"बड़बढ़ियाँ, अहाँ अपन काज सहेज लिअ तखन निचेनसँ गप-सप्प हेतइ।"

बुधन अपन काज दिस बढ़ल। जगरनाथक मनमे उठलैन-

'की अखनो वएह गाम अछि जेहने देख कऽ गेल रही? मुदा तेहेन कहाँ अछि। खाली रस्ता-पेरा एकरत्ती चिक्कन भेल बुझि पड़ैए। पजेबा घर सेहो बेसियाएल, तहिना मरल इनारक बदला चापाकल बुझि पड़ैए, मुदा गाम आ समाज तँ दू छिऐ। गाम भेल घर-दुआर, पोखैर-इनार, कलम-गाछी, खेत-पथार इत्यादि आ समाज भेला ओइठामक बशिन्दा। बशिन्दा केहेन बास कऽ रहला अछि ओ भेल समाजिक जिनगीक स्तर। जेकरा विकासक तुलापर तौलल जाइ छइ।'

जहिना काजपर काज एलासँ करबारीक देहक पानि पनपैए तहिना बुधनकेँ देहक पानि पनपलैन। मने-मन विचारि लेलक जे जाबे आँगनमे चाह बनत ताबे थैरक काज सेरिया घूर लगा पजारि हाथ-पएर धो तैयार भऽ जाएब...।

जगरनाथकेँ आग्रह करैत पुछलकैन-

"चाह-पानि एकेबेर पीब आकि पहिने पानि पीबि लेब?"

बुधनक आग्रह सुनि जगरनाथक मनमे एलैन जे परदेशी छी भने नीक हएत जे गरम-ठण्ढ़ा एकबेर हएत...। बजला-

"अनेरे किए बेर-बेर हरान हएब।"

पानि-चाह पीऐबते, बुधन पुछलकैन-

"अपनेक पिताक नाओं?"

'पिताक नाओं' सुनि जगरनाथक मनमे उठलैन, बहुत दूर समाजसँ हटि गेल छी...।

बजला-

"चेतनाथ।"

'चेतनाथ' सुनिते जगरनाथकेँ लपैक कऽ छातीसँ जोड़ि बुधन

बाजल-

“जगरनाथ भैया!”

‘भैया’ सुनि जगरनाथ बजला-

“हँ बौआ।”

“अपने घर बुझू। जखन गाममे रहैले एलौं तँ समाज थोड़े भगौता। पहिनौं अहाँकेँ की समाज भगौलैन, अपने ने गेलौं। तहूमे अहाँ सन रत्नक खगता तँ समाजकेँ छइहे।”

सात दिनक छुट्टीमे जगरनाथकेँ दू दिन रस्ते कटलैन, शेष पाँच दिन गाम-समाजकेँ देखलैन-परखलैन। सभ टोलक सभ परिवारक बीच पहुँच सम्बन्ध बनबैक परियास केलैन। गामक रूप-रेखा जहिना किछु नीक तहिना किछु अधलो बुझि पड़लैन। नीक बुझि पड़लैन जे बान्ह-सड़क सुधरल, गाड़ी-सवारी बढ़ल, बाँस-खढ़क घरक संख्या कमल, सिमटी-पजेबाक घर बढ़ल, इनार-पोखैर कमल, चापाकल बढ़ल। अदौक फलो-फलहरी आ गाछो-बिरीछ घटल, बहरबैया बढ़ल, स्कूलक पढ़ाइ घटल, मकान बढ़ल। मुदा जे मूल उत्पादित पूजी छल ओ ठमैक गेल! खेतीकेँ अगुएबाक जे दिशा छै, तइमे कतरनी लगल, जइसँ अर्थ कतरा गेल...। एहेन गाम जगरनाथकेँ बुझि पड़लैन। समाजक खेनाइ-पीनाइ, लत्ता-कपड़ाक संग घरो-दुआर नीक बुझि पड़लैन। मुदा बेवहारिक चालि-ढालि तेते नव पीढ़ीमे कहाँ अछि। जे गाममे फगुआ-जुड़शीतलमे सार्वजनिक रूपमे नाचो-गान आ खएनो-पीन होइ छल तैठाम कम्प्यूटर, टी.बी.क नाच-गान आ अपने भरि खाएबो-पीब बनि गेल अछि। ने कियो केकरो लग बैस अपन बेथा-कथा कहैत आ ने सुनैत अछि। जइ पद्धैतक शिक्षा-दीक्षा छल ओ बदैल गेल। विकासक नाओंपर लोकक मनमे एहेन आगि लगि गेल अछि जे शान्त-चित्तसँ ने कोनो काज बुझाए चाहैए आ ने

बात-विचार। मूल प्रश्न अछि, मनुखक जिनगी आ जिनगीक उदेस? मनुखकेँ की चाही? शिक्षा पद्धैत एहेन पाठ पढ़ा रहल अछि जे समाजकेँ खाधि दिस धकेलने जा रहल अछि...।

छठम दिनक साँझमे जगरनाथ बुधनकेँ कहलखिन-

“दू तारीककेँ पुरस्कार समारोह समाज सूहकारि आयोजनक भार लऽ लेलैन। निश्चित पहुँचबे करब। काल्हि भोरुका गाड़ीसँ चलि जाएब। अहाँकेँ सभ जोगाड़ कऽ देब। घरमे हाथ सेहो लगा देबइ।”

जगरनाथक बात सुनि बुधन कहलकैन-

“अहाँक सेवा निवृत्तिसँ पहिने रहैबला घर जरूर बनि जाएत। समय-समयपर खरचा पठबैत रहब।”

सात बजे समारोहक समय निर्धारित छल, मुदा छबे बजेसँ लोकक जुटान हुअ लगल। पोने सात बजैत-बजैत जगरनाथो आ समाजोक सभ पहुँच गेला। पढ़ै-लिखैबला बच्चो सभ पहुँचल। किछु देखैक खियालसँ किछु प्रतियोगितामे भाग लइक खियालसँ...।

रामकिसुन, राधेश्याम आ गौरीकान्त तीनू गोरे प्रतियोगी भेल...।

प्रतियोगीकेँ केहेन प्रश्न पुछल जाए? समारोहक बीच प्रश्न उठल। एहेन तँ नै जे सफल होइबला प्रतियोगीकेँ एकक जगह एक हजार प्रश्न पुछी, तँए बिनु उत्तर देल प्रश्न पुछल जाए। जँ सभ उत्तर देत तँ पहिल उत्तर देनिहार आगू भेल, जँ कियो ने उत्तर देत तँ दोसर प्रश्न पुछल जाएत...।

मुदा प्रश्नकर्ता के हेता? तैपर समाजक सभ पढ़ल, बिनु पढ़ल, एक स्वरमे बजला-

“जगरनाथ बाबूक आराधल काज छिऐन तँए हुनके प्रश्न

रहतैन।”

प्रश्नकर्ता सुनि जगरनाथ घबड़ेला नहि। ओना पहिने मन डोललैन। डोललैन ई जे गामक विद्यार्थीकेँ जँ गामक प्रश्न नै पुछल जाएत तँ ओकरा संग अन्याय हेतइ। मुदा अपने तँ गाममे कहियो रहलौं नै तखन प्रश्न केतए-सँ आनब! मुदा मन पड़लैन अपन बालपन। बालपन मन पड़िते राधोपुरक बरियाती मन पड़लैन। सरियाती-बरियातीक बीच जखन बौद्धिक परिचए हुअ लगल छल तखन सरियातीक प्रश्न रहैन- ‘मरूआ केते गिरहपर फड़ैए?’ मुदा जहिना सरियातीक प्रश्न खसलैन तहिना गोबरधन काका लोकैत बाजल छला- ‘पाँच गिरहपर मरूआ फड़ैए।’ माँजल किसान गोबरधन काका, एके सुरे मरूआक संग-संग आनो-आन जजातिक वृतान्त सुना देने रहथिन। समाजक जीत भेल रहए। आन समाजसँ जीत कऽ आएल रही...। वएह प्रश्न जगरनाथ प्रतियोगीक बीच रखला। जेकर जवाब रामकिसुन देलक। जे पुरस्कारक भागी बनल।

पछाइत तीनू प्रतियोगीकेँ एकठाम बैसा जिनगीक समीक्षा भेल। तीनूक तीन जिनगी। ओना कहैले तीनू किसाने परिवारक मुदा तीनूक परिवारिक क्रिया-कलाप भिन्न-भिन्न।

पुरस्कारक घोषणा करैत जगरनाथ अपनो घोषणा केलैन-

“पुरस्कार नाओं ‘टैगोर’ भेल आ जेते कमा कऽ अनने छी तइमे अपन घरो बनाएब आ ‘रविन्द्र पुस्तकालय’क नाओंसँ पुस्तकालैयो बनाएब।”

OO

तिथि : 24 अगस्त 2014, शब्द संख्या : 2423

गावीस मोइस

बड़का छिड़ियेलहा छिट्टामे छाँछी-मटकुरी नेने दौरीवाली कुम्हैन अँगने-अँगने चौरचनक छाँछी-मटकुरी दैत हमरो अँगना एली। हमहींटा नै हमर टोले हुनके सीमामे पड़ैए।

जहिना जमीन्दारक अपन जमीन्दारीक सीमा होइए तहिना पसारी-उसारीक सेहो होइते अछि।

परिवारमे भिनौज भेने जमीन्दारोक जमीन्दारी बँटाइए आ पसारियो-उसारीक तँ बँटाइते अछि। मुदा से नहि, एक पुरखियाह परिवार रहने तीन पुश्तसँ एके कुमहार परिवारक गाम रहल अछि। ओना पहिने एक परिवार रहने डोमो-चमारक रहलैन, मुदा बेटाक बाढ़ि एने दुनूक गाम टोल-टोल बँटा गेल। टोलो-टोल कि एक रंग बँटाएल, चारि बेटा भेने डोम चारि टुकड़ीमे गाम बाँटि लेलक, मुदा तीन बेटाक परिवार भेने चमार तीनियेँ टुकड़ीमे बँटने अछि।

पैछले शुक्र दिन दुआइत फुटि गेल। सिलौट सोझे, खोलियापर मोसिक दुआइत रखै छी आ बगलेक खुटीमे पाटी लटका कऽ रखै छी। स्कूल जाइबेर दुआइत उतारए लगलौं आकि हाथसँ छुटि सिलौटपर खसि पड़ल, फुटि गेल। सौंसे सिलौट गावीस मोइस पसैर गेल, आ मोसिदानी जे देने रहऐ ओ दुआतिक पेनीए धेने रहल। तही दिनसँ स्कूल कामे भऽ गेल...।

ओना माए शनिये दिन दौरीवालीसँ दुआइत मंगलखिन मुदा सठि गेल रहै, तँए वेचारी चौरचनक आबाक नाओं कहलकैन। माइयो मानि गेली।

मानियोँ केना ने जैतैथ, पहिने माटिकेँ काँच दुआइत बनत, तखन रौदमे सुखौल जाएत, पछाइत आबामे पकि ने काजक हएत, से थोड़े मुहसँ निकलने पुरि जाएत। ओना सुरुजो भगवान ऐबेर कुमहारपर खुशी छथिन, आबासँ पनरह दिन पहिनैसँ जे रौद रहल, ओ अनका-ले जे हौउ मुदा कुमहारक तँ भागे भेल।

भादोक रौद कुमहारे हिस्सामे अछि। भेल रहै तेसराँ, तेहेन सतैहिया चौरचनसँ पहिने लधलक जे आबामे पकैकेँ के कहए जे सेरिया कऽ एकोटा छाँछी-मटकुरी सुखबो ने कएल।

बिनु पकौल छाँछी-मटकुरीमे दही केना पौरल जाएत। मुदा तँए कि लोक पाबैन छोड़ि देत, अरबा चाउरक पीठर घोरि-घोरि पाबैन तँ पुरेबे करत। चौरचनमे हाथ उठेबे करत। सगुन-अपसगुन तँ अपन-अपन सीमामे अछि, कियो खीर-पुड़ीसँ हाथ उठबैए तँ कियो अढ़मे रहि चानकेँ मुँह दुसैए।

जहिना हमर कान खड़ल रहए तहिना माइयो आ कुम्हैनोक रहैन। छिट्टा रखिते दौरीवाली मटकुरीक दोगसँ दुआइत निकालि बजली-

“काकी, पहिने तीनियेँटा भूरबला दुआइत बनबै छेलौं, जइमे कनियोँ धक्का लगने उनैट जाइ छेलै, तँए चारिटा लटकबैबला अछि, आब उनटै-पुनटैक डर कम रहत।”

दुआइत देख मन चपचपा गेल। केना ने चपचपाइत, आठ दिनमे आठटा खाँत सीखने रहितौं, से तँ पछुएबे केलौं। मुदा काल्हिसँ से थोड़े हएत...।

दुआइतकेँ माए निङ्हारि-निङ्हारि देखए लगली जे पाक नीक छै की नहि। किएक तँ भरि जिनगी थाले-पानिमे रहत किने। जँ कनियोँ कँचकुह रहत तँ भसकिये जाएत। माइयक परेखबकेँ दौरीवाली अपन तराजूपर तौल बुझलैन जे भरिसक काकी पाक देखै छैथ। जहिना वेचारी अपन सौदाकेँ गारन्टी दिअबैए जे एते दिन एक्के उपे चलत तहिना दौरीवाली बजली-

“काकी, एना किए निहारि-निहारि देखै छथिन, जहिना विधाता अपन चाकक गढ़लकेँ देखै छथिन तहिना हमहूँ ने अपन गढ़लकेँ देखै छिऐ। जँ से नै देखबै तँ बाल-बोधक काज रोकैक दोखी के बनत।”

वस्त्र उतरल बरकेँ जहिना दाइ-माइ आगू-पाछू चला नाक पकैड़ परीक्षा लइत तहिना माए आङुरसँ ठोकि-ठोकि दुआइतिक परीक्षा लऽ नेने छेली। जे बात कुम्हैनो बुझि गेली। तैबीच हमरो मन पाछू घुसैक गेल। घुसैक ई गेल जे दुआइत भाइए गेल, गावीस चाही। बजलौं-

“मोइस कथीकेँ बनाएब। गावीसो तँ नहियेँ अछि।”

ओना केते दिन गावीस नै रहने चिकनि माटि सेहो घोड़ने छी। दुआइतमे, जे से भट्ठा तँ सोल्हो-अना चिकनियेँ माटिक बनबै छेलौं। गावीस मुलाइम माटि होइ छइ। तहूमे परतदार सेहो होइ छइ। मुदा चिकनि माटि सक्कतो होइ छै आ रंगगरो तँ होइते छै...।

गावीस सुनिते जेना कुम्हैनकेँ बिसरल बात मन पड़ि पानि चढ़ा देलकैन तहिना हाँइ-हाँइ कऽ लत्तामे बान्हल गावीस छिट्टाक पेनी लग देखैत बजली-

“बौआ, अबैकाल ओरिया कऽ ते रखने छेलौं, मुदा तर पड़ि गेल अछि, अखन जे हाथ गोड़ियेबै तँ बरतन ढनमना जाएत। तहूमे चौरचनक छी, टोनाह होइत अछि।”

माए कहलखिन-

“ओरिया कऽ ऊपरसँ उतारि-उतारि आँगनमे रखि लिअ, गावीस निकालि फेर सेरिया लेब।”

माइयक बात सुनि दौरीवाली कहलकैन-

“जाबे बरतन सेरियाएब ताबे चारि-पाँच अँगनामे बाँटि सधाइए लेब। घुमैकाल देने जेबैन।”

नव दुआइत देख मन खुशी रहबे करए बजलौं-

“जाबे अहाँ चारि पाँच अँगनासँ घूमब ताबे हमहूँ दुआइतकेँ धोइ, लत्ता भीजा लइ छी।”

घुमैकाल गावीसक मोटरी दौरीवाली माइयक हाथमे दैत कहलखिन-

“काकी, अपने एकरा चोरा कऽ रखि लथु, जहिया-जहिया बौआकेँ मोइस सधतै तहिया-तहिया दिहथिन, सोहनगर होइ छै, माटि ने खए लगैन।”

एकटा ढेकरी दुआइतमे दैत कड़चीसँ घोड़ैत कुम्हैनकेँ कहलिऐ-

“यएह गावीस तँ सालोसँ बेसी चलत।”

OO

तिथि : 29 अगस्त 2014, शब्द संख्या : 687

गलती अपने भेल

‘गलती अपने भेल’ ई बुझैमे आएल कखन, जखन असमसानमे रही तखन। बारह बजे रातिक पछाइत जखने एकादशी चढ़ल आकि सुतलीए रातिमे बाबाक प्राण छुटि गेलैन, अनुमान भेल तखन, जखन खोलियापर जरैत डिबिया बुता गेल तखन। जहिना बारह बजे सुतली रातिमे दिन-तिथि-मिति अपने बदैल जाइए तहिना भरिसक बबो अपने चोला-चोली बदैल लेलैन।

बीस दिनसँ बाबा बिमार तँए ओगरवाहिक भार अपने रहए। ओगरवाहि ई जे कखन की खगता हेतैन, आकि देहक कड़े बदलैक हेतैन। जखन जिनगी जीबै-मरैक बीच संघर्षरत् छैन्हे तखन कोन गरे ऊँट बैसत, कहबो कठिन अछि। से कि कोनो हुनकेटा छैन से तँ नहियेँ। सबहक सएह छइ। चुल्हिपर चढ़ल ताबाक पानि जकाँ छनाक भऽ सकै छैथ आ स्वस्थ होइत जीबियो सकै छैथ।

मुदा जहिना बारह बजे राति अपन दिनुका औरुदा पुरबैत, तहिना दोसर दीनक अन्हार घटैत इजोत बढ़ैत डुमल सुरूजकेँ पकैड़ अकाससँ धरती देखैत अपन कर्मकेँ भूमिपर उतारि डेग आगू बढ़बैए, मुदा से होइ कहाँ छै? बारह बजेक अन्हार आरो सघन होइत करियाइते जाइए...।

डिबिया बुताइते बिनु विचार केने मन मानि लेलक जे भरिसक

बाबा मरि गेला। मुखौटी केता दिन सुनने छेलौं जे मृत्युक समय डिबिया मिझा जाइ छइ। कहियो देखै-परखैक अवसैर नै भेटल तँए कनी-मनी ऐपर बिसवासो हुअए आ कनी-मनी नहियोँ हुअए। मुदा ओइकाल से नै भेल, सोलहन्नी मन कबूल लेलक जे सत्ते एहेन होइ छइ। देहक मालिक मने ने छी, जेहेन मन तेहने ने देहो हएत। अपाहिजो भऽ सकैए आ दिव्यो भऽ सकैए। ओछाइनपर सँ उठिते विचार झगैड़ गेल। झगैड़ ई गेल जे पहिने डिबिया नेस इजोत बना लेब नीक हएत आकि पहिने बबेकेँ नाकक साँस देखब नीक हएत..?

दुनू प्रश्न ऊपरा-ऊपरी, डिबिया नेसला पछाइत इजोतमे देखब बेसी नीक हएत। फेर हुअए जे एक बोलिया सिपाहीक ड्यूटीमे छी तँए बाबाकेँ देखब-सुनब पहिल काज भेल।

फेर मनमे भेल जे पहिने डिबिये नेस लेब नीक हएत, नीक ई हएत जे देखए-परखए पड़त किने, तँए एते करैले प्रकाशक प्रमुखता अछिए। एक तँ अहुना डिबियाक इजोतपर कीड़ियो फतींगी खसने मिझाइए। एकटा सलाइयक कटकी खड़ैर डिबिया नेसैमे केते समैए लगत। सलाइ खड़ैर डिबियाक मुँहपर भिरा देलिऐ, बड़बो कएल मुदा लगले फकफका कऽ मिझहए लगल। जहिना प्रेमलहीन ज्योति फड़फड़ाइए तहिना। देखते रही आकि फकफकाइत-फकफकाइत मिझाइए गेल। मुहठी खोलि टेमी घुसकेलौं अन्हारमे तेल[23] केना देखब..?

मुदा लगले मनमे उठल जे मुँह गरे डिबियाकेँ उनटौलासँ सेहो तेल परखले जाइए किने। सएह केलौं, सिनेह विहीन प्रकाश हेबे केना करत? जँ हुऔ चाहत तँ टेमीए जरौत। मन अकछए लगल। मनक सभ विचार छोड़ि डिबिया-सलाइ रखि बाबा लग जा नाकक साँसपर

[23] सिनेह

दहिना हाथक दोसर आङुर दइते बुझि पड़ल जे साँस बन्न भऽ गेल छैन!

पहिल खेप नाकपर आङुर देला पछाइत, साँस बन्न भेनौं, अपनेपर शंका भेल, तँए दोहरा कऽ फेर आङुर देलयैन। मुदा साँस ठीके बन्न भऽ गेल रहैन। अनायास स्कूलक बात धक-दे मनमे उठल। उठल जे ई नै बुझि पेलौं जे मरैकाल नाकक दहिना पुड़ाक साँस चलै छेलैन आकि बामा पुड़ाक। जिनगीक यएह ने शुभ-अशुभ भेल। अहीठाम ने नीक-बेजए तौलैक तराजू अछि। तराजूपर तौलेसँ पहिने चानिमे चौन्ह उपैक गेल जइसँ दुनियेँ चोन्हिया गेल। चोन्हियाइते सगतैर अन्हार भऽ गेल। आब की करब? मुँहक बोलकेँ मन धकेल-धकेल कहए लगल-

"जोरसँ बाज, जोरसँ हल्ला कर।"

मुदा मुँह तत्-मत् मे पड़ि गेल जे एती रातिमे की हल्ला करब? की जोरसँ बाजब। अधरतियामे लोक चोर-डकैतक हल्ला करैए से तँ भेबे नै कएल अछि। बाबाक प्राण छुटलैन अछि। जिनगीमे लोक केते नीक-नीक प्रण करैए, छुटै छै, केते छोड़बो करैए।

ओना अगिलग्गीमे सेहो लोक हल्ला करैए, मुदा जेते हल्ला करैए तेते ठनका खसैक समय जहिना बिजलोका लोककेँ सूचित करै छै, तहिना ने अगिलग्गियोमे आगिक इजोतो हल्ला करै छइ। मुदा सेहो तँ नहियेँ भेल अछि, तखन हल्ला की करब। हँ एकटा आरो अछि बाढ़ि आ अन्हर, मुदा बिजलोके जकाँ ने अन्हरोक ऐगला सिहकी सूचित करैए, सेहो नै भेल। बाढ़िक पानि तँ अपना गतिये धरतीपर चलैए जे लोक पहिने बुझि जाइए, तखन हल्ला करब नीक नहि। ओना, एहेन हल्ला सदिखन होइए जे अमुक तारीककेँ प्रलय हएत, तँ कखनो ईहो हल्ला होइए जे उनटन हएत, तँ कखनो एहनो

हल्ला तँ होइते अछि जे एते ग्रह एकठाम भेने दुरग्रह हेबे करत। खाएर-जे-से...।

माएकेँ सोर पाड़ि जगेलिऐन। बगलेक कोठरीमे माए सुतल। परिवारमे अनेको एहेन कारण अछि जइमे परिवारक लोककेँ जगौल जाइए, तइसँ आन परिवारकेँ किए मतहानि हेतैन। जिनका हेतैन तिनको तँ होइते छैन। दैनंदिनक किरिया-कलापमे हेबे करत...।

केबाड़ खोलि माए बजली-

"बौआ सिरिस, किए सोर पाड़लह?"

माइक अवाज सुनि बुकौर लगि गेल। बुकौर ई लगल जे हमर ने बाबा छला, मुदा माइयोक तँ अर्द्ध-पिते छेलखिन, दुनियाँ छोड़ि चलि गेलखिन मुदा बुझबो ने केलैन। परिवार हौउ आकि समाज, सम्बन्धो तँ दोहरी होइए, बेक्तिगत आ परिवारक-समाजिक...।

अपन दोख बँचबैत बजलौं-

"माए, डिबियामे तेल सठि गेने मिझा गेल तँए दोसर डिबिया नेस कऽ नेने आ।"

माइयो सएह केलैन। अपने कोठलीसँ डिबिया नेसने एली। खोलियापर डिबिया रखि बजली-

"एकबेर बाबुओकेँ जगा कऽ पुछि लहुन जे पाइनियोँ-ताइनियोँक तिरखा छैन।"

माइक बात सुनि मनमे बुमकल्ला जकाँ उठए लगल। अपन मन कबूल नेने छल जे बाबाक साँस छुटि गेलैन, जखन कि माए अखनो बुझि रहली अछि जे जीविते छैथ। जखन जीबै छैथ तखन किछु ने किछुक खगता हेबे करतैन। जे सोभाविको अछि। जहिना अन्नसँ पेट भरलो पछाइत पानिक खगता रहबे करैए तहिना अन-पानि भरलो

पछाइत नीनक तँ खालिये रहैए किने। तँए जाबे खाली रहत ताबे खगता रहत। माइक बात सुनि चुपे रहलौं...। माए अपन दायित्व बुझि, दायित्व ई जे जखन हम छी तखन सिरिस तँ पछुआ बच्चा भेल, बाबा लग जा बजली-

"बाबू, बाबू।"

बाबू जीवित रहितैथ तखन ने, बजैक कोन बात जे सगबगेबो ने केला! देहपर हाथ दए डोललैन, तैयो नै किछु बुझि पड़लैन। छातीक गतिपर हाथ देलखिन, हाथ दइते छाती थीर बुझि पड़लैन। थीर छातीक अनुभव होइते माएकेँ मनमे जोरसँ धक्का लगलैन। धक्का लगिते चिचिया उठली-

"बौआ सिरिस, बाबू नै रहलखुन!!"

जहिना घाट परहक यात्री पछुआएल यात्रीकेँ देखते नाहपर चढ़ैए तहिना माइयक अवाजमे अपनो मिलबैत बजलौं-

"बाबाकेँ सासोँ बन्न भऽ गेल छैन।"

कहि चुप भऽ गेलौं, मुदा माए झौहैर करैत झड़-झड़ा देलखिन। झड़-झड़ाइते एके-दुइए टोल-पड़ोसक लोक आबि-आबि, देख-देख कानए लगला। सभ कननिहारे तँए केकर कानबकेँ के सुनत। झमटगर झौहैर भऽ गेल। मुदा झौहैरसँ, जहिना आगि पड़ल धान जना लाबा होइते आगिसँ कूदि धरतीपर खसैए, ओना आगियोमे खसिते अछि, तहिना झौहैरसँ निकलए लगल-

"टोलमे सभसँ बुढ़ बबे छला, जे समाजक बेटीकेँ बिनु दहेजक बिआह सभसँ बेसी करौलैन। अनका जे से हमरा बेटीक तँ वएह अपन खेत भरना लगा करौलैन। हम गाए नै खाएब, जहिना जीवितमे बाबाकेँ जनै छेलिऐन, तहिना जाबे जीब ताबे जनैत रहबैन। जनबे नै करबैन जँ धरमराजो लग गवाहीक काज पड़त तँ कहब।"

"दिन-वेरागन आब के कहत!"

"मतरनमी पितरपछमे अरबा चाउर, राहड़िक दालि केतए-सँ आनब। गामक लोक तेहेन अदत सभ भऽ गेल अछि जे अनके ठकि-फुसिया कऽ खाएत मुदा अपन नै देत। केना कऽ पइत बँचत।"

"छइहे केकरा जे बेर-बेगरता सम्हारत। जइसँ बेर-बेगरता समहारल

जाइए से छइहे केकरा।"

झौहैरक बीच मरदा-मरदीक विचार भेल जे एते रातिमे असमसान जाएब गरूगर अछि। गरूगर ई अछि जे बिना नव वस्त्रे आँगनसँ निकालल केना जेतैन, तहिना चारिजन लैयो जाइबला चाही। केना अखन बाँस काटल जाएत आ ओकर अचरी-चचरी बनत। नव बरतनो कुम्हरटोलीसँ आनए पड़त। दिनुका बात रहैत तँ सभ असानीसँ होइत, मुदा रातिमे रस्ता चलब गरूगर अछि। अनेको रंगक विषैला जीव-जन्तु रस्ता पकड़ने रहैए...।

अन्तमे विचार भेल जे घरक ओछाइनकेँ अँगनाक तुलसी-चौरा लग दिऔन। सएह भेल। मुदा चौरा लग ओछाइन होइते नव लोक आ पुरान लोकक बीच कहाकही शुरू भेल। पुरान लोक सभ जगरनाथ बाबाकेँ अगुआ अपन विचार रखैले कहलकैन। सभ दिनक बुझल-गमल जगरनाथ बाबाकेँ रहबे करैन, धाँइ-दे बजला-

"तुलसी चौरा दिस सिरहौना करैत उत्तर मुहेँ पाड़ि दिऔन।"

गाम-घरमे होइतो तहिना छइ। अखन धरिक चलि अबैत बेवहारपर जगरनाथ बाबाकेँ बिसवास छैन्हे। तँए बोलीमे किछु तीखपन छेलैन्हे। मुदा जगरनाथ बाबाक विचारकेँ नवतुरिया सभ मानैले तैयारे ने भेल। ओ सभ पशुपति भायकेँ अगुअबैत अपन विचार रखैले कहलक। बहरबैया पशुपति भाय, दुनियाँक रंग-रंगक हवा

लगले रहैन, लगबो केना ने करितैन। पनरह बर्खक नोकरीमे सभ तरहक पन्थाइकेँ देख नेने छला किने। संगे औझुका विज्ञानो बुझै छला। बुझै ई छला जे दुनियाँ गोल छइ। गोलमे पूब-पच्छिम उत्तर-दच्छिन बेराएब कठिन अछि...।

अपन विचार रखैत पशुपति भाय बाजल-

"कोन पुरना बेवहार धेने छी, जेम्हर मुहेँ बाबाकेँ सुगम गर धरैन तेम्हर मुहेँ पाड़ि दिऔन।"

पशुपति भाइक बात सुनि जगरनाथ बाबा पीनैक गेला। पीनकबो केना ने करितैथ, बाप-बेटामे जुति-भाँति-ले तँ झगड़ो होइए आ केसो-फौदारी होइए, ई तँ सहजे समाजक छी, गामक छी। बजला-

"ऐठाम जे ठाढ़ हेबहक तँ चारूकात, पूब-पच्छिम, उत्तर-दच्छिन देखबहक किने?"

पशुपतियो भायकेँ जेना जीहेपर रहैन, धाँइ-दे उत्तर बजला-

"ऐठामसँ उत्तर जे गाम अछि ओहो तँ केकरो दछिने अछि, तहिना दोसरोक अछिए।"

पशुपति भाइक बात सुनि जगरनाथ बाबा ठमकला, मुदा जनिजाति सभ बिच्चेमे तेते घोल करए लगली जे पशुपति भाय तहीमे जेना धकला गेला। मुदा धकलाइतो बजला-

"आइ, दुनियाँ परिवार जकाँ भऽ गेल तँए उत्तर-दच्छिन, पूब-पच्छिम सभ मेटा गेला। अहुना जँ उत्तर मुहेँ विदा हएब आ चलिते रहब तँ उत्तरे-उत्तरे दच्छिन होइत एतइ चलि आएब, तहिना दछिनो मुहेँ आ पूबो-पच्छिम मुहेँ चललासँ होइ छइ।"

बजैत-बजैत पशुपति भाय बाजि गेला मुदा जनानाक हल्लासँ

पछाड़ खा गेला। अपन विचारकेँ रोकि विचार केलैन जे समाजक जे कर्तव्य-धर्म अछि ओइमे संग पूरब नीक हएत...।

हो-हल्ला होइत भोर भऽ गेल। किरिणक लाली पूब दिस झलकए लगल। भाय, जखन मृत्युक लहाश देखलौं तखन बिना पार-घाट लगौने घरमुहोँ हएब उचित नहि। बेड-टी-तेड-टी कोन वस्तु भेल जे तइले प्राण छुटि जाएत। मुदा जनानो सभ तँ देखबे-छुबे केलैन, ओ तँ अँगने जेती।

काजो तँ काज छी। चाहे ओ जीवित हुअए आकि मृत्यु सिरपर सवार हेबे करत। जखने सिरपर सवार हएत तखने देहमे फनफनी आनि फुनफुनेबे करत। तहूमे जैठाम लोकक जमघट नै रहल तैठाम, मुदा जैठाम से रहत तैठामक रूतबा तँ आरो दोसरे भऽ जाइ छइ। जेते मुँह तेते जुति। बुढ़-पुरान सभ बैस विचार केलैन जे जगरनाथ बाबाक देख-रेखमे ऐगला काज हएत बाँकी सभ काज केनिहार भेलौं। जे जे जइ जोकर छी से तेहने काजक भार उठाउ...।

काजक बाँट सुनिते पशुपति भाय बजला-

"हमरा तेज सवारी अछि, बजारक काज करए हम जाएब।"

पशुपति भायकेँ काजमे अगुआइते धाँइ-धाँइ कियो बाँस कटैक तँ कियो साबेक जौड़ बँटैक तँ कियो कुम्हार ऐठामक काज करैक भार उठा चारू दिस विदा भेला...।

समाजो तँ समाज छी जँ अनठौला तँ सुइयो-साँङ्गिपर उठाएब कठिन आ जँ सुढ़िएला तँ केहेन-केहेन बहैत धारक मुँह बान्हि, पानिकेँ रोकि अपन खेत पनिया लइ छैथ।

मोटर साइकिलपर चढ़िते पशुपति भाइक मनमे बाबाक मृत्यु नाचि उठलैन। नाचि ई उठलैन जे परिवारक बीच मृत्यु भेलासँ केते सुगमतासँ सभ काज भऽ रहल अछि। मुदा लगले मन मुड़ि गेलैन।

मुड़ि ई गेलैन जे अनेरे नव वस्त्रेक कोन काज छै, अखनो तँ ओहन लोकक कमी नहियेँ अछि जेकरा जीता-जिनगी नव वस्त्रसँ भेँट नै होइ छइ। जखन बाबा मरि गेला तखन जे अपन ओढ़न-पहिरन वस्त्र छैन तहूसँ काज चलि सकैए। तहूमे फेकलोहो वस्त्र जखन पहिरनिहार अछि तखन अनेरे जराएब केहेन हएत। गाम-घरक लोक कोनो बेजए कहै छै-

"जीतामे गुहाँ-भाता आ मुइलामे दुधा-भाता।"

समाज तँ समाजे छी तइसँ कि कम सरकारो अछि। दस टुकड़ी भेल ट्रेनक लोहाक पहियासँ कटल लहाशकेँ पोस्टमार्टममे लऽ जा बीस टुकड़ी कऽ आरो दुइर करिते अछि।

जाबे बजारसँ कपड़ा आएल ताबे तीनटा बाँस काटि सुतै जोग रंथी बनि तैयार भऽ गेल छल। आगि-कोहाक ओरियान सेहो भइए गेल छल। कपड़ा अबिते बाबाकेँ ओढ़ा चचरीपर चढ़ा जौड़सँ बान्हि देलकैन, आब चारि गोरे कन्हापर उठा गाछी लऽ जेतैन।

अखन धरि कोनो काज सिरपर नै आएल छल तँए बाबे लग बैस देखै छेलौं। अपन भागीदारी चाहै छेलौं मुदा केतौ गर नै लागल। आगूक काज नजैरपर पड़ल। पड़ल ई जे चारि गोरे कान्हपर उठा लऽ जेतैन तइमे संग भऽ जाएब। नमगर-छरगर छीहे। जखन उठबै बेर रंथीक भेल आकि पढ़ुआ काका हमर बाँहि पकैड़ लेलैन। बाँहि पकड़ैक कोनो अरथे ने लगल जे बाँहि किए पकैड़ लेलैन। अखन तँ गाछी जाइक बेर अछि। कहलयैन-

"काका, अखन तक कोनो काज बाबा नीविते नै केलौं हेन, तँए कान्हपर हमहूँ उठाएब।"

जहिना हम कहलयैन तहिना ओ बुझबैत बजला-

"बौआ, अखन तूँ दसमे किलासमे पढ़ै छह, ब्रहमचर्य आश्रमक

भेलह, अखन जे काज उपस्थित अछि ओ गिरहताश्रमक काज छी तँए तोरा अधिकार नै बनै छह?”

कक्काक विचार सुनि गुम भऽ गेलौं। जानल-मानल काका छैथ। कहुना भेलौं तँ अखन माध्यमिके स्कूलक विद्यार्थी भेलौं। मुदा मनकें तेना बाबा पकैड़ नेने रहैथ जे मनसँ हटबे ने करैथ...।

बजलौं-

“काका, अधिकार जेतए छै, तेतए छै, मुदा ऐठाम तँ बाबा-पोताक सम्बन्ध अछि।”

अनका जकाँ काका तमसेला नहि। असथिरसँ बुझबैत बजला-

“बौआ, तोहर अधिकार अपवादमे रहत। ऐठाम समाजक संग छह,

समाज संग छथुन। तोहर परिवार पीड़ित परिवार भेल, ऐ पीड़ाकें निमाहैक समाजक काज बनि गेल अछि। तँए ई काज समाजक छिऐन। बिना हुनका विचारे नै करक चाही।”

अपवादक कोनो अरथे ने लगल। पुछलयैन-

“काका, अपवाद की कहलिऐ?”

“अपवाद ई भेल जे एहनो समाज अछि जे रत्ती-बत्ती भऽ टुटि-फाटि गेल अछि। एते तक कि जे एहनो लोक भऽ गेल अछि जे माए-बाप परिवार दिस तकबो ने करैए, सेवा कहाँसँ करत। ओहन परिस्थिति बनब अपवाद भेल। शिष्ट समाज आ अशिष्ट समाजमे दुरी बनि जाइ छै, जइसँ कोनो रीति-नीति विघटित भऽ जाइ छइ।”

पढ़ुआ कक्काक संग गप-सप्प चलिते छल आकि बिच्चेमे छीतन भाय बजला-

“बाउ सिरिस, कोनो काज पहिआ कऽ करब बेसी नीक होइ छै,

एना धड़फड़ाइ किए छह, बाबाक पाछू जे छैथ हुनकर काज ने हेतैन। स्कूलो-कौलेजमे नै देखै छहक जे प्रधानाचार्य नै रहने सहायक प्रधानाचार्यक ऊपर भार आबि जाइए। जे उचितो अछि।”

उचित सुनि टोकि देलयैन-

“केना उचित भेल?”

छीतन भाय बजला-

“क्रमिक काज ई भेल जे बाबाक नीचाँ जे छैथ हुनकर अधिकार उचित भेल। तूँ ते तेसर सीढ़ीमे भेलह, बीचला दोसर सीढ़ीक काज जखन शुरू हएत तखन क्रमश: तोरो भाँज औतह। ओ भाँज निमाहब तोहर उचित भेल।”

छीतन भायसँ गप-सप्प करिते रही, आगि-कुश-कोहा लऽ आगू-अगूआ चलैक प्रश्न उठल। मुदा जेना पिताजीकें बुझले रहैन तहिना हाथमे लऽ आगू विदा भेला। पाछूसँ चारि गोरे बाबाकें कान्हपर उठा विदा भेला। ‘राम-नाम सत् है’क अवाज धरतीसँ अकास धरि गनगना गेल।

असमसान पहुँचते बाबाकें निच्चाँ उतारि, काजक जुति-भाँतिमे सभ लगि गेला। जगरनाथ बाबाकें जेना सभ काज अखिहासले छेलैन तहिना बजला-

“लहाशक बगलमे अछिआ खुनू, दोहरा कऽ लहाश नै उठत।”

सएह भेल। मनमे भेल जे जुआन-जहान छी, कोदरवाहीक काज ऐछे आगू बढ़ि एकटा कोदारि पकड़लौं। मुदा लगले जगरनाथ बाबा मनाही करैत बजला-

“बाउ सिरिस, तोरा बुते नै हेतह?”

पुछलयैन-

“किए?”

कहलैन-

“बेसी कारीगीरीक काज अछिआ खुनब छी, तूँ ने बुझहै छहक जे कोदारिसँ खाली माटि खुनब भेल मुदा से बात नै छै, केते गहींर, केते नमगर-चौड़गर हएत ओ बिना नाप-जोखसँ थोड़े होइ छइ। लहाश समापनक सभ प्रक्रियाक ठौर बनबए पड़ै छइ। तँए तोहूँ एते करह जे सभ कुछ आँखिसँ देखहक। एक तँ काजक प्रक्रिया छी, दोसर मनेक ने बात छी, जँ कहीं घुसुक-फुसुक गेल तँ काज गड़बड़ो भऽ सकैए। यएह सोझ-साझ करब भेल सनातनी पद्धैत।”

जगरनाथ बाबाक मुँहक बात ‘सनातनी पद्धैत’ सुनि जेना मनमे विद्रोह-

क विचार पनपल। पनपल ई जे मनुख अपन परिवारक काज अपने सम्हारि लेत तँ की ओ समाज छिड़ियाएले रहत? सभ परिवारकें अपन इतिहास छै, जेकरा भीतर जीवनक ऐना छइ। ओइ ऐनामे देख ओकर विचार हेबा चाही। जैठाम जे गड़बड़ छै ओकरा बुझा-सुझा ने काज सम्हारब नीक भेल...। मन कनी उफनिये गेल रहए। कुरहैरक काज करए आगू बढ़ि एकटा कुरहैर पकड़लौं। जहाँ कुरहैर पकड़लौं आकि जगरनाथ बाबा रोकैत बजला-

“बौआ, सिरहौना-पतौना नापियों-जोखि कऽ आ गरो अँटकारि कऽ बनबए पड़ै छइ। तोरा बुते नै हेतह।”

जँ सोझे मुहें कहने रहितैथ जे तोरा बुते नै हेतह, तखन किनौं नै बात मानितिऐन मुदा पाछूमे जे हनुमानी-पुछड़ी लगल अछि- ‘नापि-जोखि आ गर अँटकारि।’

नाप-जोख तँ हाथे-बाँहिक काज भेल, हाथ संगेमे अछि, मुदा गरक अँटकार केना करब, ई तँ नजैरक काज भेल। से कहाँ अछि..?

मन हरैद गेल। हारियो मानब ऐ स्थितिमे उचित नहि। खिसिया कऽ जगरनाथ बाबाकें कहलयैन-

“बाबा, हमरो कोनो काज देखा दिअ बैसलमे बाबा धिकारता जे जे बैस कऽ समय बितौत ओ बैसले रहि जाएत आ जे सुति कऽ समय बिताएत ओ सुतले रहि जाएत। तँए जे रातियोकें सुति कऽ नै जागि कऽ दिन जकाँ बना काज करत जिनगी ओकरे छिऐ।”

अपन बाबाक बात जखन जगरनाथ बाबा सुनलैन तखन जेना कियो समुद्रक ढोहिपर सँ नहा कऽ आएल होथि तहिना बजला-

“बौआ, तूँ बाबाक लहाशे लग बैस कऽ ओगरवाहि करह। जएह कौआ, गीध, जागलमे काते रहतह वएह आँखि मुनिते पहिने आँखियेपर लोल मारि फौड़ए चाहतह। तँए सचेत भऽ रहब जरूरी छह।”

जगरनाथ बाबाक विचार जेना मनकें सिर-सिरा देलक। बिनु किछु बजने-भुकने बाबाक पँजरा लग आबि बैस गेलौं।

ओना जरबैले कठियारी बहुत लोक गेल रहैथ केतबो काज रहै तैयो किछु गोरे बिनु काजेक रहैथ। चारूकात छिड़िया कऽ बैसलो रहैथ। अजमा कऽ देखलौं तँ बुझि पड़ल जे एते-लोकक बीच कौआ-गीधकें केना हिम्मत हेतै जे एतए आबि बाबाक आँखि फोड़ि देतैन? मुदा लगले मनमे उठल जे मेला-ठेला आकि हाट-बजारमे तँ लोकेक भीड़ रहै छै, तैबीच केना एते-चोरी, पॉकेटमारी होइए? मन ठमैक गेल। चुपचाप बैस ओगरवाहि करए लगलौं।

बाबा लग बैसलाक कनीकालक पछाइत जेना दुनियाँ अन्हार जकाँ बुझि पड़ल। ओना आँखि तकिते रही मुदा आँखिक रोशनी विलीन भऽ गेल। जहिना कोनो देवालयक सुरता एने डोर लगि जाइत, जे जल्दी-सँ-जल्दी ओइठाम पहुँच दर्शन करी, तहिना मन भेल। होइते

ओ बाबा नजैरक सोझ आबि गेला जे दरबज्जापर किछु-किछु पढ़ैओ-लिखैक बात कहै छला आ कोनो-कोनो काजो अढ़ा करबै छला। ओना जिनगीक अन्तिमो समय धरि बाबाकेँ कहियो बिनु काजे बैसल नै देखै छेलिऐन। काजो तँ सभ रंग होइते अछि, किछु काज जहिना रौद-वसातमे होइए तहिना किछु काज एहनो ऐछे जे घरो-अँगनामे होइए। जखन जेहेन समय तखन तेहेन काज। जँ से नै हएत तँ वएह भेल प्रतिकूलता। प्रतिकुलता ई जे जँ जेठ मासक कड़कड़ाएल रौदमे कियो कोदारि पाड़ए आकि पाथरक टुकड़ा उचैक काज करए तँ ओ प्रतिकूलता भेल। ओना सभ किसिमक काजक खगता सभकेँ ऐछे, तँए काजकेँ समयानुसार सुतिया कऽ पकड़ब सुतिहारक काज भेल। जँ से नै भेल तँ ओहीठाम लोक भुतिया जाइए। जखने भुतियाएल तखने केम्हर कोन मुहेँ केतए चलि जाएत तेकर ठेकान नै रहि पबैए। मन पड़ल बाबाक ओ बात जे केता दिन कहने छला-

“बौआ सिरिस, अखन तूँ बच्चा छह, पढ़ै-लिखै छह। पढ़ला-लिख-

ला पछाइत माने विद्यार्थी जीवनक पछाइत परिवारिक जिनगी शुरू होइए जे जीवनक एकटा मोड़ छी।”

मने-मन पूजाक मंत्र जकाँ ओ मोड़ दोहरा-तेहरा उठल लगल। मुदा की मोड़ छी आ केना ऐ मोड़मे मुड़ी पैसाएब, से बुझिए ने पाबि रहल छी। मुड़ोक तँ केते रूप अछि, केतो राजमुकुटकेँ सुशोभित करैए तँ केतो लुल्हो-नाङरक माथक शोभा बढ़बैए। केतौ जंगलमे नाच करैए तँ केतौ लोके मोर-मोरनी बनि चौकी-तोर नाच करैए...।

मुदा ऐगला बात, जिनगीक मोड़क नै बुझि पेलौं। जे बाबा धरतीपर सँ अधडरेड़ गाछपर चढ़ैक बात कहलैन ओ अधडरेड़सँ फुनगियो धरिक कहि सकै छला, मुदा छुटि केतए गेल। की बाबा

छोड़लैन आकि अपने छोड़लौं..? मनमे अबिते नजैर घूमल। घूमल ई जे अखन बाबा मृत्युसज्जापर सुतल छैथ, ओगरवाहक रूपमे बैसल छी, दुनू गोरेक बीचक बात, तेहल्लाक जरूरत नै अछि। अपन पनचैती अपने करैक अछि। जेना गाम-घरमे होइ छै जे मुहदुबरा बौहु सबहक भौजाइए भऽ जाइ छै, तेना जँ खनदानक पीढ़ीक बीच करब, ई अन्याय हएत। मन पाड़ए लगलौं जे कहियो बाबाकेँ पुछबो केलिऐन जे बाबा दू जिनगीक मोड़े ने संक्रमण छी जेना एक मौसम दोसरमे गर धऽ-धऽ बदलैए तहिना ने जिनगियोक मोड़ एक जिनगीसँ दोसर जिनगीमे बदलैए..?

मुदा लगले मन ठमैक गेल। ठमैक ई गेल जे मौसम बदलैक पाछू पैछला मौसमकेँ केते अनुकूलता भेटलै आ केते प्रतिकूलता यएह ने ओकर कारक भेल। जेना कोनो पहाड़ी बोनमे कियो भुतिया जाइए, जैठाम एक दिस बड़का-बड़का पहाड़ ठाढ़ रहै छै, तैबीच बाघ-सिंहक बोन होइ, चारूकात पहाड़पर सँ पानि झहरैत होइ, तहिना भेल। मन पड़ल बाबाक ओ बात-

“बौआ, अखन तोहर मुख काज पढ़ब भेल। पढ़बक माने ई नै भेल जे सोझे किताब पढ़ै छी। पढ़बक माने भेल जे चतरल बर-पीपरक गाछ जकाँ जिनगियो चतरैत चलए।”

मन पड़िते सौनक मेघ जकाँ आँखि ढबैक गेल। जहिना कोनो चीज लिखैकाल पेनक बोकारसँ कागजपर ढबकि जाइत, जे हल्लुक बोकरानमे तँ नै मुदा नमहर बोकरानमे तँ सभ लिखलाहा दुइरे कऽ दइत...। तहिना भेल।

मन पाड़ए लगलौं जे एहेन प्रश्नक उत्तर छुटि केना गेल? नबे बर्खक जिनगीक भोगल-परखल अनुभवी बाबा छला। अनेको रंगक प्राकृतिक प्रकेप- बाढ़ि, रौदी, अन्हर-बिहाड़ि, भुमकमसँ मुकाबला

केने छला। पैछला भुमकममे घर कमजोर रहैन, खसि पड़लैन, हालक भुमकममे घर मजगूत छेलैन तँए नै खसलैन। भुमकम तँ ओतबे टा छल। यएह भेल प्रकृतिक बीच जिनगीक खेल...। ओह! अनेरे मन वौआ गेल, बाबाकेँ आब नहबै-सोनबैक बेर भऽ गेल। मुदा अन्तिम क्षण जँ अपन सम्बन्ध-सम्बन्धीक पनचैती सोझमे नै कऽ लेब तखन तँ परोछक भोज जेहने होइए तेहने परोछक पनचैती हएत किने? मन पड़ल बाबाक ओ बात जे कहने रहैथ-

“बौआ सिरिस, जहिना स्कूलमे पढ़ै छह तहिना घरोपर पढ़ह।”

‘घरोपर पढ़ह’ स्मरण होइते मन दरैक गेल। दरैक ई गेल जे जहिना स्कूलक शिक्षक पढ़ल-लिखल छैथ तहिना तँ बाबो छला, मुदा घर-पर नै पढ़ने छुटि गेला। यएह ने अपन गलती भेल। हाथ जोड़ि बाबाकेँ कहि माफी मंगलयैन। मुदा केहेन माफी ओ देलैन से तँ जीवित रहितैथ तँ मुहसँ कहितैथ, मुदा...।

मनक बातक विसरजन भेबो ने कएल छल आकि जगरनाथ बाबा आबि बजला-

“बौआ सिरिस, नहाएब-धोब, अंग वस्त्र चढ़ाएब परिवारक काज भेल। जारैन तैयार भऽ गेल, अछिओ सजि रहल अछि, अपन अपन काजमे मुस्तैदीसँ लगि जाउ।”

देखते-देखते बाबा अछिआपर सजि गेला। संस्कार पड़ि गेल। देखते-देखते बाबा पञ्चतत्वमे विलीन भऽ गेला..!

○○

तिथि : 06 अगस्त 2014, शब्द संख्या : 3375

परिचय



नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** ‘विदेह सम्मान’, ‘विदेह भाषा सम्मान’, ‘टैगोर लिटिरेचर एवार्ड’, ‘वैदेह सम्मान’, ‘यात्री सम्मान’, ‘विदेह बाल साहित्य पुरस्कार’ तथा ‘कौशिकी साहित्य सम्मान’सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○○○

पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-93-87675-09-4



गामक शकल-सूरत

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

समर्पण भाव

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ

बालुक ढेरपर बैसल फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ

सादर समर्पित...

ISBN : 978-93-87675-14-8

दाम : ₹ 251/-

चारिम संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

GAMAK SHAKAL-SURAT
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

कथाक सत्तैर

ठकुआएल भुसवा

छठि-परमेशरीक घाटपर सुर्जक आगमन भऽ गेल। घाटपर छिड़ियाएल बाल-बोधसँ लऽ कऽ सियान-चेतन तकक मनमे पाबैनक पाबन परसाद पेबाक आशा जगल। जगबो केना ने करैत, एक तँ सरदीक सुर्जक अर्घ्य दोसर कुश-उपारसँ लऽ कऽ जल-अर्पण मतर-पीतर भोजन दानक संग नवमी-दशमी, कोजगरा-दियारी, भरदुतियाक पतियानीक सजल छठि-परमेशरीक सतमीक सुर्जक दर्शन ने छी। एते दिन कुश अर्पणक प्रक्रिया छल मुदा आब कुशियारक ने चलत।

पोखैरक चारू भीरक गाछ-बिरीछ, तलावक जलक जाइठक संग जलकर ऊपर चमचमाइत सुर्जक चमकी पसैर गेल। पसैर गेल घाटपर सजल छठिक डालीक ऊपर। एकसँ एकैस सूप, डगरा, डगरी, कोनियाँ, सुपती सजल घाटपर ठकुआएल भुसवा मने-मन छगुन्तामे पड़ल अछि। कनकनाइत मन पटपटेलै-

“कहू, एहेन हेबा चाही?”

अपने फुरने भुसवा बड़बड़ाइत, मुदा कियो डालमे सुननिहार नहि। ओना रंग-रंगक वस्तुसँ सजल डाल। जहिना बरखा-जाड़क बीच संगमक चान-सुरूज शीतसँ शीताएल तहिना घाटपर पसरल सूप, डगरा आ कोनियाँ-सुपती सेहो।

भिनसुरका अर्घ्यक सुर्ज जकाँ उगैत आदी, हरदी, अरूआ,

खमहरूआ, सुथनी माटिक तरक आ माटिक ऊपरक पसरल खीरा, सजमैन, नारिकेल, केरा इत्यादि, तहिना धरतीसँ अकास धरिक सजल आगन्तु कुशियारक संग भुसवा-ठकुआ पँचमुखी दीपक आगू। मुदा छठिक सौँझुका अर्घ्य जकाँ ठकुआक गहुमक संग तेलक सेरसोकेँ तँ जेबाक सेहो छइहे। तेतबे किए औंकरैत औंकरी सेहो ऊपरेसँ अपन बलिदान करैले तनफनाइते अछि। कुशियारो कौल्हमे पेराइले तैयारे अछि। जँ से नै रहत तँ मिसरी केना बनत। असगरे भुसवा बुदबुदाएल मुदा कियो ने कान देलक आ ने बेथा बुझलक। फेर ठोर पटपटबैत भुसवाक मुहसँ निकलल-

"कहू! जे आगूक जनमल ठकुआ छी, तखन केहेन कडुआएल बात बजैए जे जहिना सभ दिन गुड़कैत रहलेँ तहिना गुड़कैत रहमेँ। हमरा जकाँ तोरा आसन-बासन हेतौ।"

बुदबुदाइक वेगमे भुसवा बुदबुदा तँ गेल मुदा लगले मन घुमलै। घुमिते उठलै, मनोक तँ यएह ने चालि छै, जखन खुशी रहैए तखन नचबो करैए, गेबो करैए। नाचियो-नाचि आ गाबियो-गाबि दुनियोँकेँ देखबैए आ दुनियोँकेँ देखैए। मुदा वएह मन जखन कोनो बाएबे दुबराए लगै छै तखन अपनो दुबराइत रहैए आ दोसरोकेँ दुबरैबते छइ। भरिसक तहिना ठकुआकेँ भऽ गेलइ। आकि धन-बुबकी पकैड़ लेलकै। मुदा जहिना बिनु गाड़लो बाँसक खुट्टाकेँ जँ दुनू भाग[1] डोर पकैड़ खींचल जाइ छै तखन असथिरसँ ठाढ़ भऽ जाइ छै...।

असथिर होइत भुसवा अपन पुरखा दिस तकलक तँ बुझि पड़लै जे हुनकर सिरजनमे केतौ भेद-कुभेद नै भेल छैन। पृथ्वी जकाँ गोल-मोल बना गुड़काउ बनौने छैथ किए केकरो ऊपर अपन पसरल भार

[1] नीक-बेजाए

देब, तँए कि ओकरा[2]सँ कम भारी छी। नै दौड़ कऽ चलल हएत मुदा नहियोँ तँ नहियेँ चलल हएत। नै डेगे-डेग मुदा गुड़कुनियाँ कटैत नै चलल हएत से केकरो कहने थोड़े हेतै, एते तँ अपनो अपन परिचए अछिए। जखन बिनु पएरे ठाढ़ होइते छी, गुड़कैत चैलते छी तखन किए केकरो आँखि गुरेड़ब आँखि दबि दाबि लेब।

मनक उष्मा जगलै। आगू तकलक तँ केतौ किछु ने नजैर पड़लै। जखन कि फूल-पात, तीमन-तरकारीसँ लऽ कऽ फल-फलहरी धरिसँ सजल डाली अछि। होइतो अहिना छै जे हजारो-लाखोक भीड़मे जहिना प्रेमी अपन प्रेमिका छोड़ि किछु ने देखैए तहिना भुसवाकेँ ठकुआ छोड़ि किछु ने नजैरपर एलइ। खसल आँखि जहिना उठि कऽ आगू देखए चाहैए तहिना भुसवोक नजैर उठल। उठिते हिया कऽ ठकुआ दिस तकलक।

तकिते देखलक जे जहिना नजैर दाबि ठकुआ बाजल छल तहिना किछु अगों बाजए चाहैए। जखन अगों बजैले मन लुसफुसाइते छै तखन किए ने कनीकाल बिलैम देखे लिऐ जे की बजैए। जेहेन मुँह तेहेन बोल, आकि जेहेन मुँह तेहेन थापर, दुनूक बीच तँ समगम अछिए। जिज्ञासु नजैर भुसवा ठकुआ दिस नजरेलक।

अपना ताले बेहाल ठकुआ, जे बाल-बोध रही आकि चेतन जखने डालीक उत्सर्ग हएत तखने पहिल हाथ हमरे दिस ने बढ़त। ई प्रतिष्ठा केकरा छइ। कियो बाँटि लेत। तँए कियो हमर मुँहक बात छीन लेत। केहेन गबदी मारि भुसवा बजै छल, जेना बुझि पड़लै जे कियो सुनबे ने केलक। जेकर असार-पसार एते छै तेकर कान हाथी जकाँ नै तँ बिज्जी जकाँ हेतइ।

जेना-जेना ठकुआक मनमे भुसवा गुड़कैत रहै तेना-तेना

[2] ठकुआ

ठकुआक रीश बढ़ल जाइ। रीशसँ रीशिया ठकुआ बाजल-

"केतबो बानर जकाँ नाँगैर पटैक कऽ रहि गेलेँ कहाँ एको धूर जमीन-जत्था अपनो पएर रोपैले भेलौं, जहिना बाप-दादा गुड़कैत एलौ तहिना गुड़कैत रहमेँ।"

ठकुआक बात सुनि भुसवा मने-मन कोशाएल, बाजल किछु ने। मनमे उठलै, क्रोधमे किछु बाजब आकि करब, दुनू अनुचित हएत। मुदा लगले फेर भेलै जे एकर माने ई नै ने जे ने किछु बाजी आ ने किछु करी। फेर भेलै जे अखन तामसमे छी अखन ने किछु बाजब आ ने करब। जखन मन असथिर हएत तखन ठकुआक विदाइक विचार करब। लगले मनमे उठलै, कहू जे केहेन हरामी अछि जे जेते गुरुत्व हमरा अछि तेकर अदहो हेतै कि नै हेतइ। मुदा हाथीक सिकड़ी डोलैबते अछि। आब कि कोनो ओ जुग-जमाना रहल जे पौआही भुसवा आ पौआही ठकुआ लोक बनौत। आब तँ ग्रामक हिसाबसँ लोक बनबैए। मुदा ई बुझबे ने करैए जे रोट रोटी कहि देने रोट रोटी भऽ जाइ छै, रोटक अपन सभ किछु छै ओहिना नै ने घड़ी पाबैनक परसाद छी। तेतबे किए, सबा सेर चिक्कसक ओहन भोज्य भक्ष बनौल जाइए जे पाबैनक पाबन छी।

फेर मन बदललै। बदैलते उठलै, जहिना पृथ्वी गोल तहिना सूर्य-चान गोल, तही देख कऽ ने विधाता हमरो गढ़ि गुड़का धरती दिस धकेल देलैन। अनेरे ठकुआक बातकेँ बतंगर बना मनकेँ ओझरौने छी। मुदा जहिना ठकुआ हमरा आँखि देखबैए तहिना तँ अनको देखौतै, एका-एकी आकि एकेबेर देखा तँ सभकेँ सकैए। मुदा से देखेबो केना करत, जेते जगह ठकुआ पकड़ने अछि तइसँ बेसी माइटो तरक छी तैयो अरूआ तँ पकड़नहि अछि। तहिना सजमैनो आकि नारिकेलो

कम छेकने अछि। मुदा अपनो दादा[3] तँ धरतीसँ अकास धरि पकड़नहि अछि, तँए अपन बेथा अपने घर किए ने राखब जे अनेरे चौगामा बान्हब। चाउरक संगी विधाता गुड़केँ मिला पठौलखिन तहिना ने ठकुओकेँ गहुमक चिक्कसक संग गुड़ो आ चिकनइकेँ सेहो मिला देलखिन। ऐमे ठकुआक अपन गलती नै विधाताक चाकक दोख भेल। तइले अनेरे किए मन मर्दन करब। मुदा चुपचाप सहियो लेब नीक हएत? सहबो तँ लोक ओइ पाबैनमे करैए जइमे फल-फलहरी पबैए। तखन?

तखन यएह नीक जे डालीक सभकेँ अनेरे किए बुझारतमे बरदेबै, अपन वंशक कुशियार भेला, किए ने ओहए ठकुओकेँ आ हमरो बुझा-सुझा कऽ मेल-मिलान करा देता। कोनो एक दिनक नै ने छी, जे झगड़ा करि कऽ चाहे तँ गामे छोड़ि देब आकि गामे छोड़ा देबइ। तइसँ तँ पाबैनेक नोकसान हएत। साले-साल संग मिलि रहैक अछि, जखन केकरो कमाएल कियो ने खाइए तखन किए केकरो कियो आँखि बरदास करत। किए ने अपना आँखिये अपन रस्ता देखैत डेग उठौत। नीक सएह हएत, कुशियारो दादा की कम बुझनुक छैथ, हुनका कि नै बुझल छैन जे केना नेना-भुटकाक स्कूलमे, आ तिला संक्रान्तिमे चाउरक संग बँटेला। जखन पिसाएलो ने छेलौं, तहियेसँ संगी छैथ। आब तँ सहजे तेना मिलि गेल छैथ जे विलगाएबो कठिन अछि। फेर ललका चीनी बनैत, गुड़क सुआद कम करैत उजरा चीनी बनि, रंग-रंगक मिठाइ बनैत मिसरी गोला बनि देवालय पहुँच गेला, आब तँ सहजे जुग बदलल, जमाना बदलल, जइसँ वेचारा मिसरियो गोलासँ टुटि मोटका चीनी-दाना जकाँ सुपारी-टुक भऽ पान-फूल भऽ गेला। मुदा तँए कि छठि-परमेशरीक घाटपर ओधिक सिर सहित

[3] कुशियार

फुनगीक गोभ धरि धाट नै धड़ै छैथ? धड़िते छैथ। अखनो गंगा-घाटमे साइयो बोझ कुशियार तँ छठिक घाट छेकते अछि। ई दीगर भेल जे गुड़ बनि जखन ठकुआक संग रहए लगला तखन फेँट-फाँट शुरू भऽ गेल। कियो गुड़ घाउ दुआरे गुड़ छोड़लैन तँ कियो डोमीन कहि-कहि छोड़ि उजरा चीनीसँ चिनराबए लगला। मुदा तँए कि मिसरीक उसरन भऽ गेल? भलेँ कतरा सुपारी जकाँ किए ने बनि गेल होथु।

छठि पाबैनक प्रेमी मनमोहन कौलेजक छुट्टी पेब गाम आएल। ओना गाम ई अजमा कऽ आएल जे नीक जकाँ छठिक सौंझुका-भोरूका अर्घ्य दानक दर्शन करब। धड़फड़ीमे एक दिन पहिने आबि खरना दिनक रबाइस-फटाकाक अवाज सुनि मन बहैम गेलइ। मुदा दिल्लीक लड्डू जकाँ ने छोड़ने बनत आ ने खेने बनत। जेते पोखैर-झाँखैर चिक्कन करै छी तइसँ बेसी हवामे भोक्कन सेहो करिते छी।

छठिक अर्घ्य उठैसँ घन्टा भरि पहिने मनमोहन घाटपर उपस्थिति दर्ज करबैले तैयार भऽ दरबज्जापर बैसल। रबाइस-फटाकाक अवाजसँ मन दलमलित भऽ गेलै, आँखि बन्न कऽ साहोर-साहोर करए लगल।

लोको तँ लोके छी एकटा बीत भरिक ठण्का डरे तँ गाम-गाम लोक साहोर-साहोर करैए आ जैठाम ठण्केक बाढ़ि आबि रहल छै तैठाम जँ ओछाइन धएल बुढ़-बुढ़ानुस पाबैन बिगाड़िये देता तँ तइमे हुनकर कोन दोख। मुदा तैयो गारि-फज्झैत तँ सुनबे करता जे ढंश कऽ देलक। ओही अवाजमे मनमोहन अकानए लगल जे अखन तक कोनो घाटक ढोलक ई कहाँ कहै छै जे 'ठकर-ठकर ठकुआ द दे।' ओ तँ अर्घ्य दानसँ पहर भरि पहिने अवाज दिअ लगै छल। ओह! भरिसक अखन देरी अछि।

मने-मन विचारिते रहए कि अंग्रेजी बाजाक अवाज एकटा घाट

दिससँ उठल। ओना जेबीए-जेबी मोबाइलोक उठिते छल। ढोलियाक केतौ दरस नै पाबि मन आगू बढ़लै, बढ़िते उठलै छठि-सतमीक सुर्जक अर्घ्य।

आइ डुमैत सुर्जक अर्घ्य दान हएत आ काल्हि उगैत सुर्जक। मुदा की सतमीए सुर्जक अर्घ्य छठिक साँझमे पड़ल आकि एक दिन पहिलुका?

छठि-सतमीक बीचक बोनमे मनमोहनक मन उमड़ए-घुमड़ए लगल। उमड़ैत-घुमड़ैत एकटा गाछ तर पहुँचते देखलक जे अदौसँ मिथिलाक चलैन रहल जे दरबज्जापर आएल पाहुनकेँ अबितो आ जाइतो मधुर मुस्कानसँ काजक महिमाक संग नमस्कार-पाती होइत आबि रहल अछि। जनमो सोहर मरनो सोहर। मुदा पहिने एबाकाल अबैक सोहर होइ छै पछाइत जेबाकालक। तैसंग ईहो तँ ऐछे जे छैठैक सतमी होइ छइ। भूते-वीर्तमान आ वर्तमाने भविस।

विचारमे डुमल मनमोहनक भक्क तखन खुजल जखन घाटसँ घुमल डाली आँगन पहुँच गेल। सेहो कि ओहिना खुजलै? नै! जखन अँगनाक धिया-पुता ठकुआ-केरा-ले काँइ-किच्चैर करए लगल। भक्क टुटिते हेरेलहा लोक जकाँ मनमोहन उठि कऽ लगले आँगन दिस जाए तँ लगले दरबज्जापर आबए, बाजए किछु ने। अपन हारल के बजैए जे मनमोहन बाजत। मुदा मनमे कचोट तँ उठिते रहै जे केतए एलौं तँ केतौ ने। मुइला पछाइत जहिना लोक बुझैए। से जहियेसँ ज्ञान-परान भेल तहियेसँ मनमे छल जे छठि-परमेशरीक घाटक अर्घ्यक दर्शन करब।

फेर मनमे भेलै जे दुनू साँझक अर्घ्यक अपन-अपन महत आ महिमा छइ। कूर चढ़ल चौमुखी, पँचमुखी दीपक रोशनीक रोसनाइ जेहेन छठिक घाटक हएत तेहेन सतमी-घाटक थोड़े हएत। कियो भरि

दिन हेराएल साँझमे पहुँच गृह विश्राम करैए तँ कियो भरि राति हेरा भोरमे पहुँच गृह विश्राम करैए। भेल तँ एके स्वर, एकटा भेल भरि राति आ एकटा भेल भरि दिन। तैसंग पहुँचबो एके भेल, मुदा भेल संधि-स्थलपर। हारि-जीतक बीच संधियो तँ दोहरी ऐछे, एकटा अछि भिनसुरका आ दोसर अछि सौंझुका।

ओना भलेँ किछु काज भिनसुरकामे वरजित अछि तँ किछु सौंझुकोमे तँ अछिए। तँए एकनाम संधिभूमि रहितो दुनू एक्के रंग घटकेँ घटवार बना घाट थोड़े पार करत। एकटा असीम इजोत तँ दोसर असीम अन्हार...।

अन्हार-इजोतक बीच अबिते मनमोहनक मन हटैक गेल। ने आगू डेग उठै आने पाछू। एक दिस अकास ठेकल पहाड़ तँ दोसर दिस पताल टुटल समुद्रमे वौआए लगल।

मुदा मनुखो तँ मनुखे छी जेहने ओकरा-ले पहाड़ तेहने पहाड़ो आ पहाड़क किनछैक बोनो। तहिना समतल भूइमो आ डोहो-डावरक संग पोखैरो-झील, सरोवर, नाला, नाली, मुइल-जीत धार-धुरक संग पताल टुटल समुद्रो!

मनमोहनक मन ठमैक गेल। ठमैकते मन ठनकलै। ठनकलै ई जे औझुका नीक-बेजए केलहा काजो तँ भुताइए जाएत, मुदा जाइके तँ अछि काल्हि दिस। फेर मन भोथियेलै। भोथियेलै ई जे हमहींटा एहेन भोथियेनिहार छी कि आरो लोक अछि? ओना केकरो अपन दिन-रातिक काज-भार थोपल छै मुदा भोथियेलहोक बोन तँ छोट-छीन नहियेँ अछि। भोथियाएबो कि एक्के रंगक अछि। एक रंगक रहैत तँ मौसमक अनुकूल ओ उपैटो सकै छल माने ई जे अपना ऐठामक मालदह आम साइवेरियामे थोड़े हएत, मुदा एकर माने ई नै ने जे साइवेरियाबलाकेँ आम सन फल नै भेटैत होइ।

मनमोहनक मन फेर भटकल। भटकलेपर ने कियो हेराइतो आ भोथियाइतो अछि। फेर भेलै जे अनेरे दुनियाँ दिस तकै छी। अपन घर इजोते ने, आनक इजोत करब। ई बात जरूर जे बोनमे हमरा सन बहुत भोथियाएल हेराएल अछि, जखने डेग उठाएब आकि भोथियेलहा भेटए लगत। अनेरे तँ दुनू गोरे संगी हएब। जखने संगी हएब तखने दू-दूटा हाथ-पएर, आँखि, कान, नाक भेटत। मुँह ने एकेटा भेटत, तइले की हेतै, बेरा-बेरी दुनू गोरे बाजब। बेरा-बेरीक माने ई थोड़े हएत जे ओ किछु बाजत आ अपने किछु बाजब। कोनो चीजकेँ ओकरो आँखि देखतै, कान सुनतै आ अपनो तँ देखबे-सुनबे करब। ओकरे जड़ि पकैड़ दुनू गोरे गप-सप्प करब। जखने दुनू गोरे अपन-अपन विचार व्यक्त करब तखने ने दुनू गोरेमे मेदहा भऽ जाएत।

मनमोहनक मन फेर ठमकलै। ठमकलै ई जे एक गोरे ओहेन होइए जे काजक भीरे ने जाइए, मुदा अपना तँ से नै भेल। कौलेजमे अही[4] निविते छुट्टी भेल, हमरेटा-ले नइ, सभले भेल। मुदा भेटलै तँ ओकरेटा जे छठि-परमेशरीक सौंझुका अर्घ्यक दर्शन केलक। मुदा हम तँ निआरिते रहि गेलौं, देख नै पेलौं। आखिर एना भेल किए? उपासककेँ अपन उपासक संग संकल्पो करए पड़ै छइ। संकल्पे व्रती बनबै छै, जइसँ व्रत उपास करैए। हम तँ ओहन हेरेनिहार भऽ गेलौं जे जखन हाथमे घड़ी, मोबाइलमे घड़ी, रेडियोमे घड़ी, टाबरक ऊपर घड़ी छल मुदा तखनो समए ससैर गेल आ बुझि नै पेलौं! किछु हएत तँ दीयाक ज्योति जे सौंझुका घाटकेँ ज्योतिर्मय करत ओ भिनसुरका थोड़े करत! करबो केना करत? कोनो वस्तुक आनन्द ओकरा बेसी भेटै छै जेकरा अभाव छइ। मुदा हूसल-बीतल कालपर बेसी अपसोचो करब

[4] छठि पाबैन

आकि कानबो-खिजबो करब सेहो तँ बेसी नीक नहियेँ हएत, मुदा घड़ी-पहर देख कऽ घाटपर पहुँचब अछि, जँ आनक आशा-बाट देखए लगब तँ अपनो आशक-बाट भटैक जाएत।

हारि-थाकि मनमोहन अन्तिम विचार कऽ लेलक जे नियत समैपर घाटपर पहुँचब अछि, ओना जे पहिने गेनिहार रहत ओ तँ रहबे करत, पछुएलहा ने पाछू जाएत मुदा अपने उजगुजेलहा जकाँ पहिने नै पहुँचल रहब तँ तइसँ की हेतै, समैपर पहुँचला जकाँ सभ कथुक दर्शन तँ हेबे करत।

सुतैबेर रातिमे जखन मनमोहन सिरमापर मुड़ी रखलक आकि भुक दऽ भोरका काज मनमे उचड़लै। उचैड़ते ठेकनबए लगल जे तीन बजे भोरमे घाटपर पहुँचब अछि। जाबे पहुँचब नै ताबे कौलेजसँ एलहाक फल की भेटत। मुदा तीन बजेमे नीन टुटत? ओ तँ असली सुतै बेर छी! ओहीकालमे ने वसन्ती राग चलै छै, विराग चलै छै, अनुराग चलै छै, चिराग चलै छै, नै जानि आरो की सभ चलै छइ।

फेर मन ठमकलै। ठमकलै ई जे अनेरे अखन मन-मर्दन करब तँ मने उजगुजा जाएत जइसँ नीने ने औत, जँ कनी-मनी भको लगत तँ चहाएल मन चहा-चहा उठत। जखने से भेल तखने आँखि कड़ुआ जाएत, भोरमे जे घाटपर पहुँचबो करब तँ यएह ने हएत जे कड़ुआएल नजैर नजरा करिया सियाही पकड़ा देत। ओह! तइसँ नीक जे मन मारि अखन आँखि मूनि ली। अन्नक निशाँ चढ़बे करत, नीन एबे करत। मुदा अधनीनाकेँ कहि देबै जे भाय, तीन बजे घाटपर जाइक अछि, कनीकाल अङ्गोसो-मङ्गोसोमे लगत, तँए अढ़ाइ बजे तूँ हटि जइहह। जान छोड़ि दीहऽ। कौलेजसँ छुट्टी अही दुआरे भेल अछि।

ओना मनमोहन घड़ियोमे आ मोबाइलोमे एलार्म भरि देलक, मुदा अढ़ाइ बजेमे जखन घड़ियो आ मोबाइलोमे घड़ी-मिनट बाँकीए

रहै आकि नीनियाँ देवी अपने ससैर गेलखिन। ससैरते घड़ियो बाजल आ मोबाइलो बाजल। एक तँ मनक घड़ी-घण्ट दोसर घड़ीक घोल आ तेसर मोबाइलिक घोल। मनसँ मशीन तक अनघोल कऽ उठल। समए पेब मनमोहन फुरफुरा कऽ उठल। काजक रूटिंग दिस तकलक तँ बुझि पड़लै जे नीन हटला पछाइत पहिने लेटरीन जाइ छी, हाथमे ब्रश नेने जीह-दाँत मजैत चारि डेग टहैल अबै छी, तखन कुर्ड़ा-आचमन कऽ लोटा भरि पानि पीबै छी, चाह पीबै छी, पान खाइ छी, तखन ने कोनो काज दिस तकै छी। मुदा आइ तँ काज दिस ताकब नै, दर्शन करब अछि। तँए रूटिंग बदलब जरूरी अछि, दरसनियाँ घाटपर बिना मुँह धोने केना जाएब। लेटरीन समैमे चारि घन्टा देरियो अछिए। सहए केलक।

चारि मज्जन कऽ मुँह-हाथ धोइ कऽ असगरे घाट दिस मनमोहन विदा भेल।

दरबज्जासँ उतैरते कानमे ढोलक अवाज एलइ। ढोल छी आकि ढोलक? जँ ढोल हएत तँ छठिक घाटक हएत नै जँ ढोलकक हएत तँ केतौ नाच-तमाशाक हएत। ओना छैठोक घाटपर नाच-तमाशा होइते अछि। जे दरसनियाँ छल से देखनियाँ भऽ गेल। मुदा जेतए जे भेल से हौउ, अनेरे मनकेँ मरूअबै छी।

कानक पाछू हाथ रखि मनमोहन देव स्थानक अवाज अकानलक तँ बुझि पड़लै जे ढोलेक अवाज छी। एक लय एक सूर, अष्टयामक राम-धुन जकाँ अछि। 'ठकर-ठकर ठकुआ दे।' ठकुआ मगैए पुड़ी नहि। तहूमे पुड़ी तँ आरो गजपट भऽ गेल अछि, केतौ चीनियाँ पुड़ी, तँ केतौ गुड़िया पुड़ी, तँ केतौ दलिया संग नोनपुरिया बनि गेल अछि, मुदा ठकुआ अखनो अनोना रवि जकाँ नोनसँ परहेज केने अछि। ओ ठकुआ। वएह-वएह पौआही, जे झँप्पासँ नापल

रहैए।

मनमोहनक मन मानि गेलै जे घाटक ढोल बाजि रहल अछि। तखने बड़का रबासिक अवाज उठलै। एक-घाट, दू-घाट, पोखैरक चौबगली घाट परहक दूषित धुआँ गाम भरिमे अपन महक पसारि रहल छल। छठिक डाली पसरल परसादक सुगंध नै, बारूदक गंध। मनमोहनक मनमे रमल नहि। रमबो केना करैत, जखन एक रसक रसिक रसिया रास करत तँ ओ वृन्दावन छोड़ि जाएत केतए? जेतए वृन्दावनेश्वरी छोड़ि दोसरक बास नै होइ।

घाटपर पहुँचते मनमोहन महारसँ ससैर पानिक किनछैरमे डाला-डाली सजल देख सहैट गेल। चौमुखी-पँचमुखी दीया-कूरपर अनहरिया पखक तिरोदसीक चान सन मलिन होइत दीयाकेँ देख अपनो मलिन हुअ लगल। सुपती-कोनियाँ बदैल, पित्तैरबला कोनियाँ घाट पकैड़ रहल अछि, भलेँ अगहनक धानसँ भेँट हुअए कि नै मुदा सूप-कोनियाँ तँ नीक भाइए गेल अछि, जइसँ जिनगी भरि चलैक आशा तँ अछिए। हाथियो जेना हहैर गेल। ओ तँ राजा-रजबारकेँ हहरने भरिसक हहरल। मुदा केराक घौर आ कुशियारक मन, मुस्की मारिये रहल अछि। केना ने मुस्की मारत, जहियासँ छठि आएल तहियाक संगी दुनू अपन साम्राज्य सेहो भकराड़ बनौनहि अछि, तँए दुनूक मन खुशी। जे केरा एक-एक छीमी कऽ कुरबा-कोशियामे परसाएल रहै छल से अपन साम्राज्य बढ़ा छीमीक संग सौंसे घौरे पकैड़ लेलक।

तहिना कुशियारो अपन गृहवासू जकाँ टोनीक संग अपनो अकास पकड़ने ठाढ़ अछि। तैसंग गुड़ बनि भुसवा-ठकुआ पकैड़ चीनीक खाजा, लड्डू धरि पकड़नहि अछि तँए खुशी अछिए। भुसवापर नजैर पड़िते देखलक जे रूष्ट भेल भुसवा चुपचाप एकवाहि भेल गुड़कि

कऽ कतवाहि धेने अछि। मुदा मन तम-तमाइते छइ। ओना कुशियारकेँ पञ्च मानि ठकुआपर पनचैती बैसेबे करत।

एक टकसँ मनमोहन भुसवाकेँ देख औंकरी सभ दिस नजैर बढ़ौलक तँ बुझि पड़लै जे अपने मोने सभ मगन अछि, कियो केकरोसँ लागि-भागि नै रखने अछि, सभ शरणागैक अवस्थामे पवनियाँ-मनकमना पुरबै पाछू लगल अछि, केकरा एते छुट्टी छै जे गामे-गाम पनचैती केने घुरत। एक दिस बेटीकेँ बापक सम्पैतमे हिस्सेदारी छै, तँ दोसर दिस सासुरक दहेज बाधित छइ! केना ओझरी छूटत। कियो पिता अपना बेटीकेँ जेते अधिक पढ़बै पाछू समए आ पाइ खरच करै छैथ तेते ओ नै बुझै छथिन जे दहेजो ओते बेसी दिअ पड़त। जइ जमाएकेँ पढ़ल-लिखल कन्या भेटल, तैसंग ओकातिक हिसाबसँ दान-दहेज भेटल, शुरूसँ अन्तिम समए-बिआह धरि जेकर सेवा पाछू माता-पिता अपन शक्ति लगौलैन तइ बेटी-जमाए-सँ माता-पिताकेँ की भेटलैन?

लगले मनमोहनक मन हटकल। हटैकते भुसवापर नजैर गड़ौलक। वेचारा किए रूष्ट अछि?

सूपमे राखल सीम जकाँ नै, गोलका भाँटिन जकाँ भुसवा गुड़ैक कऽ सूप-कोनियाँमे कोणसँ कनखियाइत डालीमे रखल कुशियारक टोनीकेँ पकड़लक। पकैड़ते बाजल-

"भाय, तोरे खनदानक हमहूँ छी आ ठकुओ अछि...।"

बिच्चेमे कुशियारक टोनी समर्थन दैत बाजल-

"एकरा के काटत, सभकेँ बुझल छइ।"

कुशियारक सह पाबि भुसवाक मनमे जगल, नीक संगी भेटल। अपन नचारी सुनबैत भुसवा कुशियारक टोनीकेँ कहलक-

"भाय, अपनैती बात छी, बदना हाल बदनियाँ जानए आ

बदनियाँ हाल बदना जानए।”

फेर सह दैत कुशियार बाजल-

“तेहेन समए-साल भऽ गेल अछि जे अपनामे मीलि कऽ नै रहब तँ दोसर भगाइए देत।”

कुशियारक तोष-तुष्टि देख भुसवाक सम्बन्ध आरो बढ़ल। प्रेमी प्रेमिकाक पहिने जहिना मनक टोबनियाँ करैत, तहिना आसे-आसे मन घुसकबैत भुसवा बाजल-

“भाय की कहबह, अपन मारि खाएल केकरा कहबै, आ जँ नै कहबै तँ मनक रोग छी, मनरोग भेल। जँ कहीं मृत्यु भेल तँ नरक छोड़ि सरग जा हएत?”

भुसवाक बातक भाँज कुशियार बुझबे ने केलक। बिनु बुझल-गमल बातक उत्तर देब अनुचित छी। मुदा ईहो जँ खोलि कऽ बाजब जे भाय, तोहर बात नीक नहाँति नै बुझलियह, कनी नीक जकाँ बुझा दैह। मुदा एते सुनै आ बुझैक पलखैत अछि, कनीकालमे घाट उसरत। सबहक अपन-अपन दुनियाँ छै, अपन-अपन संगी छइ। पान-सात बर्खक धिया-पुता भुसवा-ठकुआ पकड़त आकि नमहर देख कुशियारक टोनी पकड़त। मुदा बेरादरीक बात छी, केना मुँह फोड़ि कहबै जे तूँ कष्टमे पड़ल रहऽ। बाजल-

“भुसवा भाय, अहाँ कनै किए छी, बड़का भैया[5] ठाढ़े छैथ, हुनका अखन कियो छुतैन, जखन डालीक सभ सधि जाएत तखन हुनकर भाँज औतैन। तँए हुनका बेसी पलखैतो छैन, चलू हुनकासँ भेँट करा हमहूँ अहाँ दिससँ समर्थन कऽ देब। ओ निवटा देता।”

भुसवाक मन दसअना-छअना हुअ लगलै। तेहेन समाजमे पड़ि

[5] कुशियारक छड़

गेल छी जे के केकर सुनत। सभ अपने बेथे बेथाएल अछि। मुदा तँए कि हमर हक-हिस्सा नै अछि। छठिमे ठकुआ भलेँ आँखि देखबए मुदा दुरगमनियाँ कनियाँक संग महिना-दू-महिना हमरा छोड़ि कऽ कियो थोड़े जीवि सकैए।

फेर मनमे भेलै जे अपनापर नै नितराइ। ई कि कोनो झूठ छिऐ जे आब दुरागमने ने अछि तँ तेकर साँठ-उसार कथी हएत। मनमे उठिते भुसवा ठकुआ गेल। ठकुआइते नजैर ठकुआपर पड़लै। मनमे खुशी भेलै, जे जेहने गति हमर भेल जाइए तेहने तँ ओकरो भेल जाइ छै, तखन रूआबे केते दिन चलतै। मुदा लगले मनमे उठलै, जहिना हम तहिना ठकुआ लोकक हाथक बनौल छी। विचार बदलतै, हाथ बदलतै, हाथक बौस बदलतै। मुदा हमरे सन गुणगर वेचारा शरीफा किए घाट छोड़ि देलक? छठिक घाटक डालीक तँ फल छी शरीफा?

भुसवाक मन शरीफाक दुर्दिनपर गेल। जँ छठिक घाटक फलक अधिकार केकरो छै तँ शरीफोकेँ छइ। जेठक तपल कलशक फूलक फल छी शरीफा। बच्चामे जे रौद तपल बरसातक झाँट-पानि सहल, शरद पबिते सरदिया अपन जुआनी निखारि रंग-रूप सुआद सभ किछुसँ भरि लेलक। ओ केतए चल गेल? की शरीफा सन फल धरोहर नै छी?

छठि-परमेशरीक कथा भेल। औंकरी छीटान भेल। बिसर्जनक छिट्टा सजल। सभ घरमुहाँ भेल।

❍

13 नवम्बर 2014, शब्द संख्या- 3335

चापाकलक पाइप

नअ बर्खपर ऐबेर गाम आएल छेलौं। रस्तेमे रही तखने मनमे भेल जे एगारहो दिनक छुट्टी सुति कऽ नै बिताएब, काजमे बिताएब। काज अबिते नाहक गुनी जकाँ मन गुनगुनाएल। मंत्र तँ भीतरे रहल मुदा ठोर पटपटाएल। पटपटाएल ई जे काजो तँ काज छी अधलो काज होइ आ नीको काज होइए। हल्लुको काज होइए आ भारियो होइए तैसंग हल्लुक-भारी सेहो होइए। तखन नीक आ अधलाकेँ बेराएब कठिन अछि। नीक-अधला, ओह! अनेरे ऐ भाँजमे पड़ि काजुल नै अकाजुल बनि जाएब। लिअ भाय, सबहक दुनियाँ छी, अपन जेकरा जेते हिस्सा हएत से लिअ। जानए जअ आ जानए जत्ता। अनेरे दोख केकरो आ बिसा केकरो जाइ छइ। केकर दोख केकरा बिसा जाइ छै तेकर कोनो ठेकान छइ। जँ से ठेकान रहिते तँ जइ साल बरखामे देरी भेल आकि नै भेल तेकर दोखी मानसून भेल आकि डबराक बेंग, जेकरा सिनूर-काजर लगा, जहिना अधला वृत्ति केला पछाइत समाजमे होइत तहिना गहिंरगर उक्खैरमे दऽ सातो बहिन सातो दिससँ समाठ पकैड़ गीत गाबि-गाबि कुटनी कुटैए! अनेरे कोन मगजमारीमे वौआइ छी, जहिना सबहक दुनियाँ छी तहिना हमरो छी। अपन दुख-दुनियाँक काजमे अपनाकेँ लगबैक अछि। मन बदलल, मनक रंग बदलल, मुदा जेते बदलल तेते ओझरियो लैग गेल। ओझरी

लगल जे एक-दोसर रंग मिलौलासँ तेसर रंग बनैए आ तेसर तरहक रंगो तँ होइते छइ। मुदा से नै भेल, अपने एगारहो दिनक विचार करए लगलौं। विचारो तँ दु-मुहाँ होइते अछि। चाहे तँ छीप दिससँ विचार करू आकि जड़ि दिससँ। छीप दिससँ विचार करब शुरू केलौं। डायरी निकालि तारीख पकड़लौं। घरपर पहुँच पहिने आराम करब, जखन टहलै-बुलै-जोकर भऽ जाएब तखन सभसँ पहिने सबुरिया बाबाक भेँट करबैन। बाबापर नजैर पड़िते डण्डी-तराजू जकाँ मनमे उगि गेल। उगि ई गेल जे जहिना पिताक बेटा बनि हम सेवा केलिऐन तहिना सबुरिया बाबा सेहो बेटाक सुख पौलैन?

खाएर जे पौलैन, हमर बाबू मुरूख रहैथ मुदा ओ तँ सहजे हाइ स्कूलक हेड मास्टर भऽ रिटायर भेल छैथ। मुदा जे छैथ, दियादीमे सभसँ उमेरगर छैथ, आरो समांग तँ खेत-पथारक काजो करै छथिन मुदा अपने सबुरिया बाबा पठने-पाठनमे जिनगी गुदस केलैन। सबुरिया बाबाक मनमे रहैन जे सेवा-निवृत्ति धरि अबैत-अबैत परिवारक भार बेटापर चैल गेल रहत जइसँ सभ दिन जहिना पठन-पाठनमे लगल एलौं तहिना जीवन विश्रास करब। मुदा से नोकरीक चारिमपन अबैत-अबैत बेटा-पुतोहु, बेटी-जमाएकेँ सात समुद्र पार देखए लगलैथ! खाएर जे देखलैथ, पितातुल्य गुरु, साठि बर्खक जिनगीक अनुभव, दियादीसँ लऽ कऽ समाज धरि लोक हुनके सात्विक शिक्षक बुझैत आबि रहल छैन।

घरपर पहुँचला पछाइत परिवारमे पसिते भाइक मन तुरुछल बुझि पड़ल, मुदा बकलेलो-ढहलेल भाए तँ भाइए छी, ओना पानि-ओछाइन, चाह-ताहक ओरियानमे दुनू परानियोँ आ जेठकी बेटियो भीर गेल। मने-मन विचारलौं- जेते दिन रहब तेते दिनक खर्चक रूपैआ निकालि ओकरा (छोट भाए) हाथमे थम्हा देबे नीक रहत। रूपैआ देखा बजलौं-

"बौआ, जे खर्चा हएत से हएत जे रहि जाएत ओ जाइकाल देने जेबह।"

मुदा रूपैआक असैर भेल। लगले बाल्टीन-लोटा आनि आगूमे रखि दुखन बाजल-

"पहिने नहा लिअ, नहेलासँ चालिक ठेही कमै छइ। पछाइत हब-गब हेबे करतै। पहिने किछु खा कऽ भरि पोख सुतू। पछाइत बुझल जेतइ।"

ओना डायरीमे एगारहो दिनक रूटिंग नै बनेने छेलौं, तेकर कारण भेल जे पहिल दिनक भेँट सबुरिया बाबाक नाओं लिखते रही आकि मनमे उठि गेल जे आन बेर जकाँ थोड़े अन्ना-गाहींस रहब, जइसँ किछु जरूरियो काज छुटि जाइ छेलए आ आलतू-फालतू काजमे ओझरा समए सेहो गमा लइ छेलौं। तँए नीक हएत जे पहिल काज लिखिये नेने छी, तैठामसँ काजकेँ शुरू करब आ एकक बाद दोसरक विचार करैत आगू बढ़ब।

जौं से नै करब तँ काजक प्रवाह भंग भऽ जाएत। बाल्टी-लोटा नेने भाए कलपर पहुँच पानि भरए लगल। बैगसँ साबुन, तौलिया, लूंगी निकालि कन्हापर लेलौं आ कल दिस विदा भेलौं।

कलपर रखि बाल्टीन लग पहुँचते दुखन बाल्टी भरि, पुछलक-

"कपड़ा महक साबुन नै अछि।"

कहलिऐ-

"हँ अछि।"

चोटे घुमि बैगसँ साबुन निकालि कलपर आबि बजलौं-

"काल्हि निचेनसँ सभ कपड़ा साफ करब।"

आगूक बात पछुआएले रहल आकि ओ बिच्चेमे बाजल-

"अहाँ नहा कऽ चैल जाउ। फेड़लाहा कपड़ाकेँ साबुन लगा खीच दइ छी।"

भाइक बात सुनि मन मौन भऽ गेल। छोट भाए छी, ओकरा अधिकार छै जे खीचए, मुदा अपनो सोझ तँ प्रश्न ऐछे जे जखन कोनो रोग-पीड़ासँ ग्रसित नै छी तखन अपन दैहीक काज किए दोसरकेँ दिऐ। मुदा, ओकरा ई बात बुझए कहाँ अबै छै जे सभकेँ अपना भरि श्रम करक चाहीए। ओ तँ सोलहन्नी लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्नकेँ रामक छोट भाए बुझि सेवाक अनुकरण केने अछि। कहनौं ओ मानत थोड़े! चुपेचाप नहा कऽ कपड़ा बदैल ओछाइनपर जाइते आँखिमे झूकनी चैल आएल। बुझि पड़ल जे खाइसँ पहिने सुतिये रही। मुदा भावो रोटी-तरकारी नेने बैसकीएपर थारी आनि आगूमे रखि देलैन। जहिना नीन तबाही मचौने रहए तहिना भूखो तँ रहबे करए, गरम-गरम भोजन भरि मन खेलौं। खाइते ओङ्हीसँ जेना बुझि पड़ल जे हाथ धोइले जँ बहराएब तँ रस्तेमे खसि पड़ब, बाल्टीनेमे हाथ धोइ ओंघरा गेलौं।

जे नीन अढ़ाइ-तीन, साढ़े-तीन, चारि घन्टा बीतैत-बीतैत चहा कऽ टुटि जाइ छेलए से एके बेर नअ घन्टापर टुटल। उठि कऽ नित्य कर्मसँ निवृत्त होइत खुट्टा गरे ओंगठि बैसलौं। मनमे भेल जे पहिने घरक भगवतीकेँ गोर लागब तखन ने बाहरक। दुखनकेँ सोर पाड़लौं। सोरक कम्पन्न समाप्तो ने भेल तइसँ पहिने दुखन लगमे आबि ठाढ़ भऽ गेल। यएह छी भैयारीक सम्बन्धक पानिक प्रतिष्ठा। मनमे खुशी भेल, हाथक इशारासँ बैसैले कहलिऐ, मुदा ओ नै बैसल पच्चीसो तरहक काज घरक देखा देलक। मन मानि गेल जे सरकारी नोकरी थोड़े करैए जे हाजरीए-टा पुड़ौत। ओ तँ मिथिलाक किसान परिवार छी जैठाम झूठ-फूस बजैक खगते ने छइ। काजक चिन्ता देख मनमे भेल जे जेतेकाल खटैए तेकर अधहो जँ ज्ञान-धियानमे लगबैत तँ घरक रूखिये बदलल रहैत। मुदा किछु छी तँ सहोदर भाए छी, अनकासँ लगक

सम्बन्ध अछि।

बजलौं-

"बौआ, हमरासँ तूँ सात कछे नीक छह, हमरो तीनटा बेटा-बेटी अछि, तोरो देखै छिअ। सभ अपन दुख-धन्धामे लगल रहै छह, हमरा एते दरमहे अछि तैयो महिनामे घैट जाइए।"

बुझि पड़ल जेना घरक देवी खुश भऽ गेली, आब देवता बनबे करती। मुदा तइ बिच्चेमे दुखन बाजल-

"केना-केना खर्च करै छिऐ जे खरचा घैट जाइए?"

हारे-जीतक तँ दुनियाँ छी। जँ भैयारीमे अपन हारि कबूल कऽ लेब तँ भाए थोड़े गलहत्था दऽ कऽ भगा देत। बजलौं-

"बौआ, की कहबह अपन हारल कियो केतौ बजैए, मुदा तूँ तँ भाए छिअ, जँ कोनो बात तोरासँ छिपाएब तँ अस्सी कोस नरकोमे बास हएत।"

जेना बात काटए लगलै तहिना छटपटाइत दुखन बाजल-

"एते सोखर सुनैक छुट्टी अछि, देखै नै छिऐ गाए-डिरियाइए। भरिसक ओकरा कोनो खगता छइ।"

भाएकेँ छटपटाइत देख बजलौं-

"बौआ, जेहने मोटा कऽ ढेंग तोहर भौजी भऽ गेल छथुन, तेहने धियो-पुतो भेल जाइए। एक दिस खेनाइक खर्च बढ़ल अछि दोसर दिस दवाइक। सबेरे सबुरिया बाबासँ भेँट करए जाएब, कनी सबेरगरे उठा दीहह।"

भिनसुरका आठ बजै छल। अपन जीवनक अन्तिम क्षणमे भिनसर पहुँच गेल छल। रौदमे तीखपन आबि गेल छेलइ। ओना ई भाँज लगले रहए जे सबुरिया बाबा असगरे दुनू परानी गाममे रहै छैथ।

दुनू बेटो आ बेटियो-जमाए सभ बाहरे रहै छैन। एहेन परिस्थितिमे अपन प्रश्न राखब उचित नै, हुनके बेथा-कथा सुनि, सहयोगी बनब उचित हएत। भेँट करए विदा भेलौं। दरबज्जापर पहुँचते देखलयैन जे चापाकलक समान सभ- पाइप, सौकेट, हेड, नट-बोल्ट, इत्यादि पुरजीसँ मिलबै छैथ। आगू बढ़ि पएर छूबि प्रणाम केलिऐन। प्रणाम करिते आँखि उठा कऽ बजला-

"घरपर समान उतारैत-उतारैत काल्हि दोसर साँझ भऽ गेल। तँए ओहिना उतारि अखन कागतसँ मिलबै छी।"

कहि उठि कऽ बैसकीपर आबि बैसबैत अपनो बैसला। बैसते बाजए लगला-

"परसू कल खराब भऽ गेल। मिस्त्रीकेँ अनलौं। ओ पुछलक जे केते दिनक कल छी। कहलिऐ तीस बर्खक। कहलक- एकरा छोड़ि दियौ, दोसर गड़ा लिअ। अपनो पेन्शन भेटते अछि, दबाइ-दारूक खर्च ऐछे नै, परिवारमे जखन दुइए बेकती भेलौं तखन तँ समस्यो ने छोट भेल। कहलिऐ, कोन कल नीक हएत। कहलक, अपना हिसाबसँ लऽ लिअ। नीकसँ नीक आ अधलासँ अधला समान बजारमे भेटै छै, जेहेन लेब तेहेन दोकानपर चैल जाएब।"

तही बीच रूक्मिणी दादी छिपलीमे दू कप चाह आ दू गिलास पानि नेने पहुँचली। चाह देख सबुरिया बाबा बजला-

"बौआ, तूँ सभ तँ हाइ लेभेलक चाह पीबैत हेबह, तँए नीक नहियेँ लगतह। एकरा फौरमेल्टीए बुझिहक।"

ओना बहुत हद तक बाबाक विचार सत् रहैन, मुदा भरथरीक चालि नै धड़ब तँ केकरा पुछबै आ के पूछत। भरथरीक चालिक माने, जोगी-भोगीक बीचक जिनगी। वैरागक जिनगी। बजलौं-

"बाबा, चाह पीबैक मन नै छेलए, लगले घरपर पीने छेलौं,

तखन अपनेक बात रखै छी।”

चाहक लटारम समाप्त भेल। पुछलयैन-

“बाबा, अपने तँ साठि बर्ख टपि गेलिऐ, हम तँ गाममे कहियो रहलौं नै, की सभ अनुभव गामक अखन तकक अछि?”

जेना बाबाकेँ मनमे झमार लगलैन। झमारक कारण भेलैन, घरसँ स्कूल जेबोकाल गाम-गामक खेती-पथारी, घर-घरहट, दाही-रौदी, अगिलग्गी, चोरी-डकैती इत्यादि, आ एबोकाल देखैत रहलौं। अपनो गाममे आ जैठाम रहै छेलौं तहूठाम सभ किछु देखितो कहियो केकरोसँ किछु पुछलिऐ नै आ ने ओ कहलक। तखन कथी गाम-समाजक अपन अनुभव कहबै।

हारल सन विचार सबुरिया बाबाक बुझि पड़ल। बजलौं-

“बाबा, कोनो नमहर रोग पकड़ैसँ पहिने छोट-छोट रोग बनि आक्रमण करैए आ पछाइत समत्व रूप पकैड़ अजोध बनि जाइए, तहिना अपनो जिनगीमे अनुभव केने हेबइ।”

बजला-

“ऐ प्रश्नक उत्तर ऐ दुआरे देबह जे देखल-भोगल अछि। नोकरीक शुरूक दिनमे विचारने रही जे अपन जिनगी पठन-पाठनक जिनगी बना अन्त करब। तीस सालक नोकरी तक मनमाफित काजो रहल। मुदा तेकर बाद चोट शुरू भेल। पहिल, बेटा परिवार लऽ कऽ घरसँ विदेश चैल गेल। कहबियो छै- ‘जे पूत हरवाहि गेल देव-पीतर सभसँ गेल।’ आशा धकियाएल। पछाइत एका-एकी बेटियो-जमाए निकैल विदेश चैल गेल। हम केतए जाँउ। जइ माटि-पानिपर सभ दिन रहलौं...। दोसर माटि-पानि अनुकूल हएत।”

पाशा बदलैत पुछलयैन-

“कलक समानमे ठकलक ने ते?”

मुस्की दैत सबुरिया बाबा बजला-

“बौआ, दोकानदार अपन पढ़ौल विद्यार्थी छी, देखते बाँहि पकैड़ गद्दीएपर बैसौलक। चाहो-पान करौलक। ताबे गहिंकियोक भीड़ छँटलै। कहलक, अहाँ गुरु छी, झूठ नै बाजब। झूठ बाजि ठकै-फुसियबैले बड़ीटा दुनियाँ अछि। औरिजनल आ डुपलीकेट दुनू वस्तु अछि, जे कहब से देब। कहलिऐ- आब हमरा तीस बर्ख जीबैक अछि तइमे नै गड़बड़ हुअए। कहलक- सरजी, औरिजनलोकेँ डुपलीकेट बना टैक्स दुआरे बेचै छिऐ। वएह पाइपो आ आरो समान दऽ दइ छी। सएह छी।”

बजलौं-

“गड़ेबै कहिया?”

बजला-

“आइए गड़ेबै। ई सभ जिनगीक मूल समस्या छी। अपनो भरिक परिवार बना नै रहब तँ अनका भरोसे जीब पाएब।”

उठैत कहलयैन-

“चारि बजे करीबमे आबि नवका कलक पाइन पीब।”

❍

7 अक्टुबर 2014, शब्द संख्या- 1616

कलम हानि कऽ

ओछाइनपर मरु अवस्थामे पड़ल देवानन्दक मुहसँ एतबे निकैल रहल छैन-

“सुचितलाल छुटि कऽ आएल? सुचित... ?”

गामोक आ कुटमो परिवारक जिज्ञासु लोकक आबाजाहीक ढवाहि लागल। कखनो दुआर-दरबज्जा खाली नहि। घर-बाहर सभतैर देवेनन्दक बातक चर्च। चर्च ई जे जेना देवानन्द सभ किछु बिसैर गेला आकि हेरा गेलैन तहिना भऽ गेल छैन। अही बीचक ओझरीमे घरसँ बाहर धरि सभ अपना-अपना बुधिये-विवेके ओझरी सोझड़बैए। मुदा करीनक पानि जकाँ पहिने छीप उठत तखन ने करीन पानि पकड़त आकि बिना छीप उठने करीन पानि पकैड़ लेत। जिनका हुनका घर दिससँ अबैत देखिऐन आ पुछिऐन जे की हालत देवानन्द बाबाक छैन? तँ सबहक एक्के उत्तर जे सुधि-बुधि हेरा गेलैन, एकेटा रट छैन जे ‘सुचितलाल छुटि कऽ आएल?’

सुनि-सुनि मुँह बन्न केने रही जे जँ ऐसँ बेसी किछु खोद-वेद करब तँ गपेक ओझरीमे तेना ओझरा जाएब जे अपन सभ काज चौपट भऽ जाएत। जेते मुँह तेते रंगक गरहैन, कियो नोन-मिरचाइ मिला सुअदगर बनबैत तँ कियो तेतैर मिला खट-मिट्ठी बनबैत, एहेन जालमे नहियेँ पड़ब नीक। मुदा समाजक बीचक प्रश्न छी जे छोड़ियो

कऽ भागब तँ काल्हिक समाज जे गरियौत तेकर भागी नै हेबै? मुँह चुप राखब कायरपनो हएत।

जिज्ञासा जगल, देवानन्द बाबा लग पहुँचलौं। पहुँचते गोड़ लागि पुछलयैन-

“बाबा, हमरा चिन्हलौं। हम फल्लाँ।”

समाधिमे लीन देवानन्द बाबा, हँ-हूँ किछु ने बजला। ओना हमर तुरिया ‘बाबा’ कहै छैन तइसँ ऐगला पीढ़ी ‘काका’ कहै छैन आ तहूसँ ऐगला ‘देवभाय’ कहै छैन। अपनो परिवारक सएह हिसाब-किताब छैन। बाबा तँ बनियेँ गेल छैथ। जहिना तपस्यामे लीन योगीक मुहसँ फुटैत-

“श्रीराम, श्रीकृष्ण, राधे-राधे, सीते-सीते, सीता-राम, राधे-कृष्ण।”

तहिना फुटैन-

“सुचितलाल छुटि कऽ आएल।”

चुपचाप सुनि कान ठाढ़ केलौं जे आरो किछु बजता। मुदा किछु ने। अचेत अवस्थामे। मुदा अचेतकेँ चेतक अवस्था देखे कऽ ने जगह छोड़ब, ओना तैबीच बेराबेरी केते गोरे एबो केला आ गेबो केला।

देवानन्दक मुहसँ ओ बात निकैलते रहैन-

“सुचितलाल छुटि कऽ आएल? सुचित..?”

उठि कऽ विदा हुअए चाहलौं। मन कहलक-

“केतए एलौं तँ केतौ ने।”

देवानन्द बाबाक ओछानिक आगू नमहर ओछाइन बिछाएल आ अपन समांगक चौकरी कनी हटि कऽ रहैन। सहैट कऽ आगू बढ़ि बैसलौं। ओत्तो बाबेक गप चलैत।

कान ठाढ़ केलौं तँ सुनलौं-

“चौबीसो घन्टा सीता-रामक रट लगेनौं बिना रामायण पढ़ने आ सुनने सीता-रामकेँ नै जनबैन, मुदा जखन जानि लेब तखन जे सीताराम मुहसँ निकलत ओ दोसर रूपमे निकलत। वएह असल रूप भेल। भरिसक तहिना देवानन्दो काका कोनो रचित रचनाक मंत्र पढ़ि रहला अछि।” -देवानन्द बाबाक भातीज व्याख्या करैत बजैत रहैथ।

झाँपल-तोपल पढ़ल-लिखलक भाखा, चुपचाप सुनि लेलौं। बजबो केना करितौं। हम कि कोनो धरमराज छी जे केकरो जीवन-मरणक हिसाब जोड़ब। फेर मन भेल जे खिस्सा-पीहानी सुनौनिहारकेँ जँ हूँहकारी नै पड़ल तँ बेरस जकाँ भऽ जाइए। मुदा लगले मनमे भेल जे हूँहकारियो बिनु बुझने केहेन भरब। पढ़ल-लिखल लोकक बीचमे छी जँ कहीं उनटा हूँहकारी पड़ि जेतैन तँ करेजमे दर्द हेतैन! एक दर्द देखए एलौं, दोसर देने जइऐन, ई नीक नहि।

मुदा बैसलो नीक नै लगल। जेतेकाल बैस कऽ जिज्ञासा करैक छल तेकर अदहो समए नै खटियाएल छल तखन चैलो केना अबितौं। मुदा मनमे भेल जे कहि दिऐन अखन कनी धड़फड़ीमे छी, निचेनसँ फेर आएब। फेर आएबो तँ ऐछे अखन जीवित-मृत्युक जिज्ञासा भेल, दू दिनमे मरबे करता तखन ने मुइल-जीवितक भाँज लागत।

ठाढ़ होइत बजलौं-

“कक्काजी, अखन कनी दोसर ठाम जाएब, ओमहरसँ एला पछाइत फेर आएब।”

विदा भेलौं, दस लग्गा आगू बढ़लौं आकि पाछूसँ सोने काका कहलैन-

“कनी रूकह। संगे चलब।”

“बड़बढ़ियाँ।” कहि रूकि गेलौं।

लगमे अबिते कहलैन-

“सभटा केलहा बिसाइ छैन।”

सोने कक्काक बातक कोनो अरथे ने लगल जे की कहलैन। तहूमे जँ कनेक कड़ैक कऽ कहितैथ तँ अनुमानो करितौं जे भरिसक कोनो कारणे रीशियाएल छैथ, तँए अहू अवस्थामे देवानन्द बाबापर अपन रीश झाड़ै छथिन। सेहो नै बुझि पड़ल। असथिरसँ मुँह दाबि तेना बजला जे दू गोरे छोड़ि तेसर कान तक नै पहुँचल...।

...गर भेटल। गर ई भेटल जे ताबे दस डेग आरो आगू बढ़ि गेल छेलौं। ओना मनमे उदासी छल तँए ने दोसर काज दिस नजैर उठए आ ने रस्ते चलैमे नीक लगए। आगूमे बामा भाग एकटा किसुनभोग आमक गाछ। सघन छाहैरो आ निच्चाँमे चिक्कनो। कहलयैन-

“काका, अहाँ ते तेहेन शिकारी जकाँ बजलौं जे बुइझे ने पेलौं जे खिखिरक बोली देलिऐ कि हरिणक आकि कोइलीक।”

हमर बात सोने काकाकेँ नीक लगलैन। नीक ई लगलैन जे जहिना शरीरक चमड़ाक घाओ, माँस सड़बैत हड्डी छूबि पीजुआ जाइए मुदा जखन ओकरा निकालल जाइ छै तखन पीज निकैलते सुआस पड़ए लगै छै तहिना सोने काकाकेँ नीक लगलैन। बजला-

“बौआ, जखन तोरा नीक जकाँ बुझैक मन छह, तखन ऐठाम[6] बैसह। खरिआरि कऽ कहै छिअ।”

अपनो मनमे रहए जे आएल छेलौं देव बाबाक जिज्ञासा करए बुझलौं किछु ने, तखन अगर किछु नीक आकि अधला रस्तो-पेरा भेट जाइए तँ ओहो शुभे भेल। दोसर ईहो भेल जे भने दुइए गोरे छीहो। तेहल्ला रहने ने बेसी हो-हल्ला होइए मुदा दू गोरेमे से तँ नै हएत। जँ

[6] गाछक नीचाँ

कोनो तीत-मीठ बात बजाइयो जाएत तँ अदहा-फूसि, अदहा सत्-क जगह तँ भेबे कएल। माने ई जे कोनो बात सोने काका बजता जे तेहल्लाक अभावमे सतो फूसि भऽ सकैए तँ फुइसो सत्। तहिना ने अपनो बाजब हएत। हुनको गवाहीक अभावमे सतो फूसि आ फुइसो सत् हेबे करतैन। नीक जगह पाबि बजलौं-

“काका, एक तँ अहाँ दुनू गोरे[7] एक जाति एक दियादीक छी, हम तेसर भेलौं, केना आन परिवारक कोनो अधला बात बाजब। नीक बजैक अधिकार तँ अछि, मुदा...।”

हमर बात सुनिते जेना सोने कक्काक मन सुगबुगेलैन। जहिना कोनो पनचैतीमे कियो एहनो पञ्च तँ होइते छैथ जे मुदै-मुदालहक बात बिनु सुननौं-बुझनौं उड़न्तीए सुनलपर अपन फैसला सुना दइ छथिन, तहिना सोने काका बजला-

“बौआ, कहने छेलियह जे सबटा केलहे बिसाइ छैन, से कोनो फूसि कहलियह।”

सोने कक्काक झाँपल-तोपल बात, फेर नै बुझलौं। मुदा सोने कक्काक मुँहक रूखिसँ बुझि पड़ल जे देवालयसँ घूमल पुजेगरी जकाँ अखन किछु बाँटि सकै छैथ। टोनलयैन-

“काका, कनी मुड़ी सुढ़िया कऽ बजियौ ने?”

सोने कक्काक छातीमे जेना हमर बात घोंसिया गेलैन। तहिना बजला-

“बौआ, तोहूँ कोनो आन थोड़े छह, समाजेक ने बेटा-भातीज छिअ। जेहने अपन बेटा-भातिज तेहने समाजक। बतीस दाँतक तरमे पड़ल छी तँए जी-जाँति कऽ रखने छी। मुड़ी सुढ़िया कऽ बजैमे उकड़ू

[7] देवोनन्द आ सोने काका

होइए। मुदा ऐठाम दुइए गोरे छह तँए जी खोलि बाजब।”

सोने कक्काक कोयला-पानिक बनल स्ट्रीम देख बुझि पड़ल जे ऐसँ नीक समए बोलीक गतिक नै होइ छइ।

पुछलयैन-

“की उकड़ू कहलिऐ, काका?”

बकर-बकर मुँह दिस ओहिना ताकए लगला जेना अपन तपल अग्नि परीक्षा दिअ चाहै छैथ। क्षण भरि गुम रहि बजला-

“बौआ, अपन जे पत्नी छैथ ओ देवेबाबूक साइर छथिन। दुनूमे सढ़ुआरे अछि। मुदा की कहबह...।”

‘की कहबह’ सुनि आरो जिज्ञासा बढ़ल। पुछलयैन-

“काका, एना किए ठेहुनपर ठाढ़ होइ छी। सोझ-साझ भऽ कऽ ने ठाढ़ हेबै।”

जहिना केकरो चानिपर उरकुसीक फूल झाड़ि देने सौंसे देह एकेबेर चुलचुलए लगै छै तहिना हमर बात सुनि सोने कक्काक मनमे भेलैन। बजला-

“कहैले पत्नी छैथ मुदा जेठ बहिनक चालि-ढालि पकैड़ ओहो टीके पकैड़ रखऽ चाहै छैथ। मुदा से केना हएत। भाय! जखन अहाँक जूट हम नै पकड़ै छी तखन अहाँ किए हमर टीक पकड़ब। अपन-अपन आड़ि-पाटिमे अहूँ रहू, हमहूँ रहब। जँ से नै तँ अपन टीकक रकछा अपने नै करब तँ आनक आशा थोड़बे करब।”

मुहसँ अपने निकैल गेल-

“अजीब बात!”

‘अजीब’ सुनिते अजनवी जकाँ दोहरबैत काका बजला-

“बौआ, घरेवालीक दोख की देब। बेटो सएह भऽ गेल।”

बेटाक नाओं सुनिते जेना आरो मन उड़ि गेल। जइ परिवारमे मिलानक जगह गरमिलाने बेसी रहत तँ ओइ परिवारक नीक केते हएत? झमाएल पजेबाक देवाल केहेन हएत?

कहलयैन-

“की बेटा?”

‘की बेटा’ सुनिते सोने काका झमान भऽ खसला। चोट खाएल साँपक मुहकेँ जहिना फण जोड़ैक शक्ति समाप्त भऽ जाइ छै तहिना कक्को भेलैन। मुँह दाबि बजला-

“बौआ, एकेटा बेटा अछि। देखते छहक जे अपन जथा-पथा केहेन अछि। मुदा माइयक किरदानीसँ ओहो घर छोड़ि किरानीक नोकरी करैए।”

सोने कक्काक बातक पाछू वौआ गेल छेलौं। जे बुझैक छल से छुटले छल। बातकेँ मोड़ैत बजलौं-

“काका, देवबाबा अपन साढ़ूए छैथ। तखन तँ गलती भेल जे अहाँकेँ काका कहै छी आ हुनका बाबा कहै छिअनि?”

बाबासँ काकाकेँ लगिच पाबि खिल-खिला कऽ हँसैत बजला-

“नै बौआ, हमरा तूँ कक्के कहह, हुनकर भागी हम नै हेबह।”

‘भागी’ सुनि किछु सुराक बुझि पड़ल। पुछलयैन-

“अपन साढ़ूओक भागी नै हेबै?”

दुनू हाथक पाँचो ओंगरी छिटका, तरहत्थी नचबैत बजला-

“ओहेन-ओहेन लोकक भागी बनने अपनो भाग नै ने बिगाड़ि लेब। सरकारक जे नोकरी अछि ओकर दरमाहा तँ ओइ स्तरकेँ मानि ने बनल छै, तखन एते झकझकौआ केतए-सँ आएल! जे अपनो जीवन-मरण नै बुझि सकल ओ अनकर की बूझत?”

पुछलयैन-

“से की?”

“नजैरपर नै चढ़ै छह। हमरासँ दुइए बर्ख जेठ छैथ, देखैमे ने बुझि पड़ै छथुन जे मोटाएल छैथ मुदा से नै सड़ि कऽ फूलल छैथ! दुनियाँमे जे बर-बेमारी अछि सबटा देहमे छैन!”

सोने कक्काक वाचा शक्ति चैढ़ गेल छेलैन। केतौसँ केतौ मुड़ी-नाँगैर पकैड़ नचबए लगला। पुछलयैन-

“काका, देवबाबा सुचितलालक की चर्च करै छथिन?”

‘सुचितलाल’ सुनिते सोने कक्काक आँखिक रंग सिनुरए लगलैन। मनमे जेना उफान उठए लगलैन। चेहराक रंग चढ़ए लगलैन...।

बजला-

“बौआ, अखन एतबे कहबह जे केते दिनसँ सुचितलाल जहलमे अछि, ओकरेसँ जा कऽ भेँट कऽ आबह, पछाइत तीनू मुँह-मिलानी दुनू गोरे कऽ लेब। किए तोरा मनमे हेतह जे सोने कक्काक चालि-चलैन नीक नै छैन आ अपनो मनमे किए खुट-खुटी रहत जे फल्लाँकेँ टिटकारी दऽ टिटकारि देलिऐ।”

सोने कक्काक दबल शक्तिक सरिता पाबि मन दहैल गेल। दहलाइत मन बाजल-

“काका, अखन तक अहाँकेँ नै चिन्है छेलौं, मुदा आइ बुझि पड़ैए जे अहाँक पेटमे गामक इतिहास अछि।”

‘गामक इतिहास’ सुनि डराएल हरिणक बच्चा जकाँ कानो ठाढ़ केलैन आ चारूकात चकोनो भेला। बुझि पड़ल सोने कक्काक पेटमे कोनो गहींरगर बात औंकड़ैले जोर मारि रहल छैन, मुदा डराएल मन ईहो कहै छैन जे अपने बात बजने लोक फाँसियोपर चैढ़ जाइए, गोबर

खत्तोमे खसैए आ इन्द्रासनो हिलबैए! मुदा से भेल नै, जहिना कोनो घाकेँ मुँह फोरि बहौल जाइ छै आ कोनो अपन मुँह अपने बना फुटि कऽ निकैल जाइए, तहिना सोने कक्काक घा अपने फुटि कऽ बहह लगलैन-

“बौआ, तूँ अखन बाल-बोध छह, नै चिन्हलह तइले दोखी हम थोड़बे कहबह। मुदा सभ तँ बाले-बोध नै अछि, ई बात सत् जे अपन-अपन रस्ता चलने सबहक बुइधो आ विचारोमे कनी दूरी बनियेँ जाइए। तेकर तँ एकेटा उपए अछि, जेते गोरेक बीचक काज रहल तइमे विचारि करक चाही।”

सोने कक्काक बात नीक जकाँ नै बुझि सकलौं। कहलयैन-

“काका, तेना ने बाजि देलिऐ जे बुझि ये ने पेलौं?”

हमर बात सुनिते जेना मन कोदारि भाँजए लगलैन। चारि छह पारिते मन नचलैन। नचिते बजला-

“बौआ, तोहूँ बुझै छह जे दुनू गोरे एक-उमेरियाक संग एक दियादीक सेहो छी। हुनका नोकरी करैक छेलैन तँए बेसी पढ़लैन आ हमरा अपने बाप-दादाक घराड़ी पुजैक छल तँए हम एके विहित पढ़लौं। एकर माने ई नै ने भेल जे अहाँ बड़ होशियार भऽ गेलौं आ हम ओहिना रहि गेलौं।”

काकाकेँ भँसियाइत देख बिच्चेमे रोकि देलिऐन-

“काका, बड़ बेर भऽ गेल आब छुट्टी दिअ।”

जहिना कोनो रचनाकार समयाभावमे हाँइ-हाँइ रचैत अपन रचनाक विसरजन करै छैथ तहिना अपन हूसैत विचारकेँ सम्हारैत काका बजला-

“बौआ, जखन एते लगीचक सम्बन्ध अछि, एके परिवारमे जेठ-

छोट बहिनसँ बिआह भेल। ओना दू-तीन साल उमेरोमे बेसी छैथ। तखन किए हमरा बेटाकेँ तीनू[8] गोरे मिलि बिना पुछने नोकरी लगा अपन नोकर बना लेलैन!”

सोने कक्काक बातक कोनो अरथे ने लगल जे किए सभकेँ एके सिरहौने सुतबै छथिन।

पुछलयैन-

“काका, नीक जकाँ नै बुझलौं?”

जहिना कियो अपन बेथा-कथा छाती खोलि दुनू बाँहिसँ जकैड़ छातीमे साटि बजैए तहिना सोने काका साटि बजला-

“बौआ, जँ ओ देवानन्द बड़ हितैसी छला तँ अपना ढंगक शिक्षा दिआ अपना स्तरक बना दुनियाँमे ठाढ़ करितैथ तखन ने भेल पुरुखपना, जँ ओते शक्ति नै छेलैन आ नोकरीकेँ नीक बुझि उपकार करए चाहलैन तँ एकबेर पुछैयोसँ गेलौं।”

सोने कक्काक मनक मनकी-फनकी नीक जकाँ नै बुझि पेलौं। कहलयैन-

“काका, दूबिक फूल जहिना अपने उड़ि अकासमे चैल जाइए, तहिना तेना कऽ बजै छी जे बुझबे ने करै छी। अबेरो भेल जाइए।”

‘अबेर’ सुनि अपन विचारक बिछानिकेँ हाँइ-हाँइ समैट, बजला-

“बौआ, बातक बात छी तँए तोरो मनमे किछु बात हेतह। आब तोहीं पुछह। मुदा टूटा बात हमर बाँकी अछि ओ सुनियेँ कऽ जइहह।”

सोने काकाकेँ सीमावद्ध होइत देख पुछलयैन-

“काका, अपन समांग सभ बजै छथिन जे जहिना तुलसीबाबा

[8] देवानन्द, देवानन्दक पत्नी आ सोनेलालक पत्नी

रामरूपकेँ राम बना ठाढ़ कऽ देलखिन तहिना हिनको[9] अपन किछु रचित रचना छैन जे प्रकाशित नै भऽ सकलैन, वएह मंत्र जप कऽ रहल छैथ।"

हमर बात सुनिते सोने कक्काक मन चकभौड़ लेलकैन। चिलहोरि जकाँ टाँहि देलैन-

"बौआ, अहिना लोक अपन पापकेँ दाबि-दाबि रखैए। बड़ भारी बात अछि बौआ!"

अदहा बात बाजि सोने काका आरो जिज्ञासा बढ़ा देलैन। 'बड़ भारी बात अछि', की भारी बात अछि? पुछलयैन-

"तेना ने बातकेँ महजाल जकाँ ओझरा दइ छिऐ जे नीक जकाँ बुझिये ने पबै छी। कनी ओझरी सोझरा कऽ बजियौ ने।"

एकटक भऽ सोने काका आँखिपर आँखि गाड़लैन। गाड़ले-गाड़ल मन खिल उठलैन। खिलते खिलखिलेला-

"बौआ, जिला न्यायालयमे नोकरी करै छला। सुचितलालक बाबाक संग देवानन्दक बाबाकेँ कोनो बाते झगड़ा भेल, तइसँ दुश्मनी ठाढ़ भऽ गेल। सुचितलालक परिवार मुर्ख, दोसर पीढ़ी अबैत-अबैत बिसैर गेल। मुदा देवानन्दक परिवार ओकरा मन रखलक...।"

जहिना कोनो कटल रस्ता देख राही आगू-पाछू तजबीज करए लगैए तहिना सोने काका चुप भऽ तजबीज करए लगला। मुदा मन जेना धिक्कारी दिअ लगलैन तहिना मुँहक सुरखी भेल जाइत रहैन। बिच्चेमे पुछि देलिऐन-

"काका, लोक कहै छै जे धोती जखन पहिरै-जोकर होइ छै तखन फाटिये जाइ छै, तहिना सुनैबला बात दाबिये लेलिऐ।"

---

[9] देवानन्दकेँ

बजला-

"बौआ, सुचितलाल नाँहक जेलमे अछि। नहरक पाइनिक झगड़ा गाममे भेल। पनरह गोरेपर केस भऽ गेल ओही केसक सुनबाइ देवानन्दकेँ हाथ लगलैन। बाबाक कनाड़ि असुलि लेलैन। तेना कऽ हानि कलम चलौलैन जे वेचारा जहलमे अछि। ओकरे परिवारक कनैत मनमा जी खींच डिरियबै छैन!"

जहिना काज करैत-करैत देह-हाथ दुखा जाइ छै तहिना सोने कक्काक बात सुनि मन दुखा गेल। आगूक किछु नीके ने लगए, कहलयैन-

"काका, दोसर दिन निचेनसँ आबि आरो सुनब। अखन छुट्टी दिअ।"

जेना ठोरेपर रहैन तहिना बजला-

"केकरो कियो बान्हि कऽ राखत तँ रहतै, कियो अपना विचारसँ केतौ रहैए। जा-जाह हमरो बड़ समए लैग गेल।"

❍

10 अक्टुबर 2014, शब्द संख्या- 2226

लतियाएल जिनगी

किरिण फुटिते श्याम दरबज्जाक पाछू सड़कपर एयर कंडीशन गाड़ी लगौलक।

गाड़ीक अवाज मनोहरो काका आ मोहनियोँ काकी सुनलैन, सड़क छिऐ, सबहक छिऐ, मुदा गाड़ी रूकल किए? ने मनोहर काकाकेँ आ ने मोहनीए काकीकेँ मनमे भेलैन जे श्यामक गाड़ी छिऐ।

सड़कपर ठाढ़ श्याम दरबज्जा दिस देखैत जे कियो बहराइ छैथ की नहि। अनठिया गाड़ी बुझि मनोहर काका सड़क दिस बढ़ला। मनमे किए कोनो मलाल हेतैन जे श्यामे हएत। जँ हेबे करत तँ की ओकर घर नै छिऐ। जहिना हमर घर छी तहिना ने ओकरो छिऐ, अपनो आँगन-घर अबै-जाइमे पूर्व सूचनाक जरूरत अछि। हँ बेसीसँ बेसी संकोची दुआरे खखास कएल जा सकैए। ओना श्यामो दस बर्ख पूर्बे जे देखने-सीखने छल ओ मनमे जीविते छइ। ऊहो बुझैए जे घरक लोक लेल राति-दिन घरक मुँह खुगले रहै छइ। मुदा नव तकनीकक लोक तँए अपन ई तकनीक लगा ठाढ़ भेल जे दू-चारि बेर हौरन देबै अपने घरवारी सभ निकलबे करता।

आँगन गेला पछाइत अग्नेय रूप भऽ जाइए मुदा घरसँ निकलला पछाइत बहरबैये रहै छै, तँए केहेन नजैरसँ देखै छैथ, ई तँ तखने हएत जखन घर-हँसी आ बाहर हँसीक रूप देखब। ताधैर

मनोहर काका श्यामसँ लग्गी भरि हटल लग अबै छला। बेटा-बापक सम्बन्ध केना अनका जकाँ पचास हाथ पहिने नमस्कार-पाती हएत। पएर छूबि गोड़ लगने बिनु मुँह केना खोलि सकैए, मुदा से श्याममे जीवैत तँए श्यामो किछु आगू बैढ़े रहल छल। पएर छूबि गोड़ लगैत श्याम बाजल-

"बाबू, समए ओते नै अछि तँए जेते जल्दी भऽ सकए तैयारीमे जुटि जाउ।"

श्यामक अमेरिकन भाषा मनोहर काका सुनि लेलैन। बजला किछु ने। बजबो उचित नहियेँ बुझलैन। परिवार छी परिवारमे भाए छैन, भावो छथिन आकि हमहींटा छी। मुदा लगले मन बदैल गेलैन। बदैल ई गेलैन जे ई जे कहलक जे समए नै अछि, जल्दी तैयार भऽ जाउ, ई की कहलक। समए जखन बेठेकान छै तखन केकर छिऐ जे ओकर रहतै आकि हमरे रहत। ओ तँ सोभाविके अछि। आ आगू कहलक जे तैयारीमे जुटि जाउ। की ओकरा बुझि पड़ै सुतले रहै छी। मन तमतमए लगलैन। मुदा तमतमीकेँ थाम्हि पत्नीकेँ कहलैन-

"अहींक खुऔल-पीऔल ने बेटा छी। खाइ-पीबैक ओरियान करू। पुतोहुओकेँ कहिअनु, झबदे पहिने चाह बनौती। हम नै पीब, लगले पीलौंहें। राधे केतए अछि।"

सोलहन्नी अपन भार उतारि मनोहर काका वाड़ी दिस विदा भेला। अँगनासँ निकैलते मनमे उठलैन। ई की बाजल श्याम जे समए नै अछि? कमसँ कम दस बर्खक पछाइते सोझामे पड़ल अछि, आ तैयो कहैए समए नै अछि? ओकरा नै समए छै तँ आने केकरा समए छइ। सभकेँ अपन जिनगीक संग चलैक रहै छइ। मनमे प्रश्न उठिते-बैसते रहैन आकि खेतक आड़िपर पहुँच गेला। खेतक कोनेपर सँ हिया कऽ देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे पहिल हलतलबी काज ओ भेल जे

लतियाएल लत्ती अछि, ओकरा जँ मुँहक संग सीरो नै छोड़ा देबै तँ काल्हि होइत-होइत सीरबेधू भऽ जाएत! तँए ओकर पहिने जुइत लगा, तरकारी तोड़ि-काटि आँगन ने जाएब। सभ दिन तँ अनके खेतक खाइत हएत आइयो तँ अपना खेतक खा लिअ।

मनमे अबिते खुशी भेलैन। खुशी होइते मनसँ हटि गेलैन जे श्याम बाजल छल- 'समए कम अछि।' समए कम रहौ आकि बेसी रहौ, सभकेँ अपन-अपन समैकेँ अपने विचारे लऽ जाए पड़ै छै...।

भिनसुरका समए छी जँ खेतक कोने-कानी घुमि सबहक[10] दर्शन नै कऽ लेब तँ शुभ्र प्रभात केना भेल। जँ प्रभाते नै शुभ भेल तँ दिन केहेन बीतत? पाँचो कट्ठा वाड़ीमे रंग-रंगक तरकारियो आ फलो-फलहरी। ओना बीघा-बीघे गाछ रहितो गाछी-कलम भेल मुदा से नै, जहिना सजमैन, कदीमा, रामझिमनी, झिमनी, करैला, पालक-ठरिया साग तहिना खीरा-बतिया सेहो। जे सीमानपर अछि, तरकारियो बनैए आ लत्तीदार फलो छी। तहिना केरो, अनरनेवा जे फलो छी आ तरकारियो छी।

मनोहर काका सुतिहार किसान शुरूहेसँ रहला। ओना परिवारक असगरे करताइतो रहैथ, मुदा आब से नै छैन। छोटका बेटा राधे सेहो पीठपोहू भऽ गेलैन। तँए अन-पानिक खेती आ माल-जालक ताक-हेर राधेकेँ सुमझा अपने पाँच कट्ठा वाड़ीमे अपन जिनगी समैट लेलैन। खेतक रकबा भलेँ कम हुअए मुदा मनोहर काका ओकरा कामधेनु बनौने छैथ।

पाँचो कट्ठाकेँ चारूकात अड़िया, पतियानी लगा नेबो-दारीम, लताम केरा अनरनेवा, अम्रपाली आम इत्यादि फल चारू दिस लगौने छैथ आ बीचमे मौसमक हिसाबसँ तरकारी करै छैथ। किसानकेँ

[10] फसिलक

जहिना तरकारी खेती तहिना पानक खेती सेहो कारखाने छी। मुदा अन्तर दुनूमे तँ अछिए। तरकारी पातसँ लऽ कऽ फूल-फल धरि दइए मुदा पान एकभग्गू अछि। ओना ई प्रतिष्ठा पानकेँ जरूर छइहे जे आन पातकेँ आगिपर चढ़ौला पछाइत खाएल जाइए जखन कि पान बिनु आगि चढ़ने पवित्र अछि। तेसर ईहो अछि जे पान साल-सालक खेती अछि जखन कि तरकारी मौसम-मौसमक, ओना पानि-पाथर, शीत-ओसक असैर दुनू दिस होइए। मात्रा भरि हितकर, कुमात्रा अहितकर होइते अछि। करैला, सजमैनकेँ लतियाएल देखलैन। देखते मन कहलकैन जँ एकरा आइ नै सोझरा लेब तँ काल्हि नमैर कऽ सीरा जाएत, तखन ओइ सीरक घुरछी छोड़बैमे मुड़ियो टुटि सकैए। जे अखन नै हएत। खेत पसि सबहक मुड़ी सोझ केलैन। फेर सजमैन, रामझिमनी, खीरा तोड़ि, एक मुट्ठी ललको ठरिया आ एक मुट्ठी भुल्लो काटि पालकक डम्हाएल पात आँगुरेसँ खोंटि गमछामे बन्हिते हियौलैन तँ बुझि पड़लैन जे एतबे तरकारीक तँ तेते ने विन्यास बनि सकैए जे जहिना भनसिया अकछा जाएत तहिना खेनिहरो।

मनमे खुशी भेलैन। बारहो मासक बाटिका, केरा आ अनरनेवा ओहन फलो आ तरकारियो छी जे बारहो मासक कामधेनु छी। तहिना मौसम अनुकूल नेबो, लताम, दारीम, धात्री, इत्यादि सेहो छी, जे सालो भरि गारा-जोरी करैत फलक धार बहबैए। फेर मन घुमलैन। घुमिते फुटलैन, जानैथ भोला बाबा। भोला बाबा मनमे अबिते जेना शिव-पार्वतीक ताण्डव नाच मनमे पहुँच गेलैन। बकार फुटलैन-

"हद छी यौ शिवदानी महादेव। एक-सँ पचास, एकसँ एक सए, एकसँ एक हजार जुटि-जुटि एके संग पान-परसाद पबै छी, जानी अहाँ।"

गमछामे सभ तरकारी बान्हि, हाथमे सजमैन लऽ आँगन दिस

विदा भेला।

आँगनमे श्याम मैयो, छोट भाएओ आ चुल्हितर बैसल भावोओकेँ सुना-सुना बजै छल। बजै छल अमेरिकाक जिनगी। जहिना नव वा पुरानो ओहन खिस्सा मनकेँ मोहिते छै जइ दिशामे मन रहै छइ। अपना ऐठामक स्वर्ग-नर्कक खिस्सा सभ बुझिते अछि। स्वर्गेक सुख निरमोही काकीकेँ बुझि पड़लैन। मनोहर काकाकेँ देखते हलसैत निरमोही काकी बजली-

"बौआ कहैए दुनू परानीकेँ अमेरिके चलैले?"

पत्नीक बात सुनि मनोहर काकाकेँ मन लहरए लगलैन। मनकेँ लहरैत देख बजला-

"एक गिलास टटका पानि पिआउ। बात केतौ पराएल जाइ छइ। पानि पीब चाह पीब तखन गप करब।"

पानि पीब चाह पीब पान खा मनोहर काका काकीकेँ पुछलखिन-

"ओइठाँ जे जेबै से बाजा-भुक्की केकरासँ करबै। बोआ दुनू परानी भरि दिन निपत्ता रहत सेहो कहलक?"

पिताक विचार सुनि श्याम ठमकल। मुदा रस्ता चालिक बोध नै रहने, धड़फड़ा कऽ बाजल-

"बाबू, दुनू धिया-पुता ओतुका नागरिक भऽ गेल।"

श्यमाक बात, मनोहर कक्काक विचारकेँ जेना झूका देलकैन। मुदा मन कहलकैन, केकरो झूकौने कियो झूकैए। ओ तँ अपन मनक उपज छिऐ। सभ तमतमीकेँ समैट मनोहर काका पत्नीकेँ इशारा करैत बजला-

"अँए, ओइठाँक अन्नो-तीमन पचत, ऐ उमेरमे जे मन

वौआइए।"

अन-तीमन नै पचत सुनि बेटा दिस मुखातीव होइत मोहनी काकी बजली-

"एहनो केतौ भेल जे अन-तीमन नै पचत।"

पत्नीक बात सुनि मनोहर काका बजला-

"श्याम, ई नै कहलह जे ओइठाँ की सभ खाइ छहक?"

जेना श्यामक मनमे कचोट भेल, पिता छोड़ि रहला अछि। बाजल-

"बाबूजी, किछु दिन रहि कऽ ओतै देखतिऐ, नै मन लगैत तँ चैल अबितौं।"

धाना खसबैत मनोहर काका बजला-

"बौआ, कियो केतौ रहह, मुदा रहत अही दुनियाँमे। जीब-मरब, अही दू शब्दमे दुनियाँ रचल-बसल अछि। तँए जेतए रही वएह सुन्दर देश भेल, आ जेकर अपना लूरिये-बूधिये जिनगी प्रवाहित होएत वएह नरेश भेला। बड़ बढ़ियाँ बड़ीटा दुनियाँ छै, जेतए मन फूड़ऽ तेतए रहह। धारक बीच जिनगी अछि तँए ओतए जा अपन धाराकेँ नै तोड़ब।"

❍

14 अक्टुबर 2014, शब्द संख्या- 1184

गामक शकल-सूरत

एक तँ ओहिना श्यामलाल बाबू पनरह मिनट बिलम भेने धड़फड़ाएल छला तैपर अपन उपस्थिति दर्ज करौने बिना किलासमे केना जइतैथ। ओना मनमे ईहो होइन जे अखन धरिक तँ यएह परम्परा अछि जे कोनो शिक्षक विद्यालय पहुँच उपस्थिति बोहीमे हस्ताक्षर कऽ अपन उपस्थिति दर्ज करबैत आबि रहल छैथ मुदा उपस्थिति केकर?

कार्यालयक मुँहपर ठाढ़ श्यामलाल बाबूक मनमे ईहो होइन जे किलासक पनरह मिनट कटिये गेल अदहा समए शेष अछि तँए पहिने किलासेक काज पुरा ली, पछाइत उपस्थिति पञ्जीमे नाओं चढ़ा लेब। तलब पढ़बैक लइ छिऐ। मुदा लगले मन उनैट ओतए चैल जानि जे एक तँ परम्परा मानि नेने छी दोसर जँ कियो ऊपरका पदाधिकारी आबि जेता तँ अनुपस्थितियो बुझता।

बेर-बेर घड़ीपर आँखि जानि। घड़ीक सुइया क्षण-पल-मिनट आगू ससरल जाइत। श्यामलाल बाबू ओइ ओझरीमे फँसि गेला जे पढ़बैक समए निर्धारित अछि। आगू दोसर घण्टीक पढ़ाइ बढ़त, काजमे कटौती भेने फलमे कटौती हएत, उत्पादनमे कटौती हएत। जइसँ नोकसान चाहे जेकर होइ मुदा नोकसान तँ हेबे करत। देव-मन्दिरक ऊपरक धुजा जेतए-सँ देख पड़ैत तेतए तक ओइ स्थानक

महत भेल, तैठाम अखन तँ सहजे विद्यामन्दिरक मुँहपर छी! मनमे अबिते बजा गेलैन-

“अपन पढ़बैक समैक भरपाइ भलेँ अतिरिक्त समैसँ व्यय करब मुदा हमहूँ तँ ओही वर्गक शिक्षक छिऐ। जहिना कोनो ऑफिसक जवाबदेह अफसर होथि आकि विद्यालयक प्रधानाध्यापक, तेकर पछाइते आन कियो कोनो-ने-कोनो किलासक वर्ग-शिक्षक हेबे करै छैथ। आबक महगीमे तँ एक-एक गोरे एके वर्गक किए सौंसे विद्यालैये-महाविद्यालयक किलासक भार कान्हपर लऽ चलै छैथ।”

ओना बजैकाल श्यामलाल बाबूकेँ बजा तँ गेलैन मुदा बिनु विचारल बात बजेलैन। बजाइते कान पकैड़ मन कहलकैन-

“अहूँ तँ अही विद्यालयक शिक्षक आ नवम् वर्गक वर्ग शिक्षक छिऐ। ई भेल जवाबवदेही, मुदा जवाबदेहीक पाछू जे बेवहारिक पक्ष बाधक अछि, ओकर साधक के बनत? जहिना सरकारक गृहमंत्री तहिना ने परिवारक बीच, परिवार चलौनिहारो।”

लगले मन अपन जवाब पात पकैड़ मखान वा भेँट-मलकोकाक पनिपत पकैड़, बीज लग पहुँचलैन। विद्यालयक सहायक शिक्षक तँ हमहूँ छीहे। जइ विद्यालयक बीच शिक्षककेँ रहैक बेवस्था नै छैन गाम-घरसँ अबै छैथ, परिवारिक-समाजिक लोक भेने बाट-घाटमे किछु विलम हेबे करतैन। तैबीच पहिने अपन उपस्थिति रजिष्टरमे दर्ज कराएब जरूरी भेल आकि नियत समैमे काजपर जाएब भेल?

श्यामलाल बाबू समस्याक जड़ि तँ पकैड़ लेलैन मुदा हौहैट-कलकैल जकाँ समस्या विचिया गेलैन। विचियाइते उरकुसी लगल जकाँ मन चुलचुलए लगलैन। एक दिस देखैथ जे काजक दुआरे हाथ खाली अछि आ दोसर दिस देखैथ जे हाथक दुआरे काज खाली अछि। कियो मासक दरमाहा एक दिन बैस मासो दिनक उपस्थिति

दर्ज कऽ मासो दिनक कमाइ पबिते अछि। तैठाम उपस्थितिक कोन महत रहल। खाएर ई जेकर भेल ओ तेकर भेल, अपन बुझह, अपन जानह। मुदा अपनो तँ किछु एहेन प्रश्न अछिए। आब कहू जे विद्यालय अबै छेलौं बाटमे मोहन भाय बजारक एकटा टटका घटना सुनबैत कहलैन-

“श्याम भाय, बिसैर जैतौं तँए अहाँकेँ कहब जरूरी अछि। अहाँ ठेकान करबै आ फेर साँझमे दरबज्जेपर बैस दुनू भाँइ बतिआ लेब।”

जेकर चलैत पनरह मिनट विलम भऽ गेल। फेर मन घुमि कारखाना दिस गेलैन जैठाम मिनट-घड़ी जोड़ि आवाजाहीक हाजिरी होइए। मुदा तँए कि ओहन नै अछि जे कोनोमे आइती आ कोनोमे जाइतीक हाजिरी नै होइए? सेहो तँ ऐछे! मुदा हम तँ विद्या मन्दिरक पुजेगरी छिऐ। विचार तँ करए पड़त। मुदा विचारो करब तँ असान नहियेँ अछि। हँ से तँ नै अछि मुदा अपनो भरि जँ नै करब तँ कोन मुहेँ धरमराज लग ठाढ़ भऽ स्वर्गक फाटक खोलबाएब। मुदा बाटो तँ तेहेन अछि जे भोथिआइए जाइ छी। तखन?

चोटे मन उनैट अपन पिताक चलौल परिवारपर गेलैन। घरसँ बाहर धरिक अपन समए बनौने छला जे भिनसुरका उखराहामे काजक जेते समए बाधित हएत ओकर भरपाइ बेरूका उखराहामे कऽ लेब। मुदा विद्यालय तँ से जगह नै छी दस बजेसँ चारि बजे धरिक छी।

जहिना बदाम-केराउक भूजा पथरा कऽ आरो बेसी सक्कत भऽ जाइए तहिना श्यामलाल बाबूक मन सेहो पथरा गेलैन। पथराइते मनमे फुरलैन, अपन मुँह तखने ऊपर उठत जखन नीक फल गाछक डारि पकैड़ उठाएब। जँ से नै उठाएब तँ काटल गाछ वा डारिक अशे केते। मन जेना थीर भेलैन। थीर होइते विचार ई भेलैन जे अखन

बच्चा सभकेँ पढ़बैक समए छी, जँ ओकर समए ओहिना जाइ छै तँ दोखी हएब। सोचै-विचारैक सेहो अपन-अपन समए होइ छइ। एकटा ओहन होइ छै जे आगूमे काज रहल ओकरा कोन जुतिये-भाँतिये करब आ दोसर होइ छै जे काज आगू औत आकि जे काज बेठेकनाएल रहत, तेकर विचार पहिने करब। ऐठाम दुनू अछि। मुदा एते तँ ऐछे जे एकटा नै केने नोकसान हएत दोसर किछु पछाइतो केने नोकसान नै हएत। मन मानि गेलैन जे पहिने पढ़बैले किलास जेबा चाही।

अपन उपस्थिति बोहीमे उपस्थिति दर्ज केने बिना विद्यार्थी सबहक उपस्थिति बोही ऑफिसक टेबुलपर सँ उठा श्यामलाल बाबू किलास विदा भेला। विदा होइते मनमे उठलैन अखन जँ कियो ऊपरका पदाधिकारी आबि जाथि तँ ओ बोही देख अनुपस्थिते ने बुझता? तखन हुनका लग केना अपन उपस्थिति दर्ज कराएब? समैयो सहए भेल अछि जे एक दिस पैघ-पैघ योजना नष्ट भेल जा रहल अछि आ दोसर दिस, हरसीकार-दिरघीकार छुटने लोक जुरमाना भरि रहल अछि। बिना पाइ-कौड़ीक कोनो काज नै ससैर रहल अछि। काज करै छी दरमाहा पबै छी, परिवार चलैए। मुदा जँ अखन सए-सैकड़ाक पेंचमे पड़ि जाएब तँ ओते परिवारेक बाल-बच्चापर ने पड़त? आन कियो कहैथ आकि नै कहैथ आ कहबे के करता, कोन गर्ज छैन। मुदा पत्नी थोड़े मानती। ओ तँ दुसैत कहबे करती जे तेहेन कोढ़ि छैथ जे जेतबो उचित कमाइ हेतैन सेहो दण्डे-जुरमानामे गमबै छैथ। ओना दण्ड-जुरमानाक जगहो बदैल गेल। तइसँ जे जेते जुर्माना भरनिहार से तेते लब्धप्रतिष्ठ भऽ गेल छैथ।

जेतबो ऑफिससँ बोही लऽ किलास विदा होइकाल श्यामलाल बाबूक मन खनहन छेलैन सेहो जेना खरहरा गेलैन। खरहराइते बकार फुटलैन-

"हाथक कंगना जँ ऐनासँ देखल जाए तँ ओ आँखिक देखब भेल आकि ऐनाक?"

कोठरीक मुँह लग पहुँचते छात्र सभ ठाढ़ भेल। टेबुल लग अबिते दुनू हाथ उठा सभकेँ बैसबैत श्यामलाल बाबू बजला-

"बाउ, रस्ता-बाटक घुच्चीमे घुचिया गेलौं तँए थोड़ समए घुचिया गेल। तइले तोँ सभ दुख नै करिहह। दू घण्टीक बीच जे समए बँचत तइमे तोरा सबहक हाजिरी बनेबऽ। आइ तँ सोम दिन छिऐ, पहिल घण्टी चित्रकले हेतह किने?"

एक स्वरमे छात्र दिससँ उठल-

"हँ।"

मुदा पैछला बेंचपर सँ अवाज आएल-

"नीके भेल नै तँ औझुका हाजिरी कटिये जइतए।"

कुरसीपर नीक जकाँ श्यामलाल बाबू बैसलो ने छला कि ऐगला बेंचक पहिल छात्र अपन ड्रॉईंग-कॉपी नेने पहुँचल। कमल फूलक चित्र बनेने छल। ओना श्यामलाल बाबूक मन चौचंग रहबे करैन। चौचंगक कारण रहैन जे एक दिस समए कम देखैथ, दोसर दिस छात्रक संख्या बेसी देखैथ, तैपर पैछला काज सेहो बेसियाएल देखैथ। मुदा मनमे एकटा युक्ति फुरलैन। फुरलैन ई जे सांगोपांग निरीक्षण-परीक्षण नै कऽ देख-देख कऽ खाली टीक लगा देबइ।

मुदा लगले भेलैन जे नीक-बेजए दुनूमे टीक लगाएब तँ आरो भयंकर गलती हएत। किछु करैत किछु नै बनैत देख विचारलैन जे नीक हएत ओहिना एक-एक नजैर देख आगूक सवक संगमे जोड़ि देब। तखन एतबे ने हएत जे काज दोबरा जाएत। मुदा उपैए की? ओहुना तँ लोक करिते अछि जे काज बेसी रहने देहमे पानि चढ़ा सम्हारैक कोशिश करिते अछि। जँ से नै सम्हरत तँ अगुएलहा काजकेँ

सम्हारैत पछुएलहाकेँ खण्ड काटि आगू दिस बढ़बैत जाएब, जइसँ एक दिनक बदला दू-तीन दिनमे काज पुड़िये जाएत। मनमे सबुर भेलैन। नीक जकाँ श्यामलाल बाबू असथिरो ने भेल छला तखने अभिराम अपन ड्रॉईंग-कॉपी आगू बढ़ौलक।

हाथमे कॉपी लैत श्यामलाल बाबू निहारए लगला। चित्रक बगलमे 'कमल फूल' लिखल। मुदा चित्र देख मन नाचि उठलैन। नाचि ई उठलैन जे कमलो फूल तँ रंग-रंगक होइए। एकटा ओहन होइए जइमे पंखुरी-दल कम होइए, दोसर एहनो तँ होइते अछि जे कोनो शत कमल तँ कोनो सहस्र कमल सेहो होइत अछि। तैसंग ईहो तँ होइते अछि जे कोनो शुभ्र कमल तँ कोनो लाल कमल तँ कोनो नीलो कमल तँ होइते अछि। तेतबे किए! कमला धारो तँ बहिते अछि। पानिक कमल एकरंगा होइए मुदा ऐठाम तँ से नै बेराएल अछि। सोझहे 'कमल फूल' लिखि देने अछि। ई तँ फुटौने नै अछि जे जलकमल छी आकि थलकमल छी? दुनू कमल रहितो चालि-प्रकृतिमे अन्तर छइहे। अन्तर ई छै जे जलकमल जँ एकरंगा होइए चाहे उज्जर, लाल नीले किए ने हुअए, मुदा थल कमल तँ तीनरंगो होइते अछि। ओना तीने रंग किए कहबै, बहुरंगो तँ कहले जेतइ। बहुरंगा ई जे जखन भोरमे थलकमल कलीसँ कलियए लगैए तखन उज्जर रंग धारण केने रहैए मुदा जेना-जेना सुर्जक किरिण आगू मुहेँ ससरैए तेना-तेना ओकर उज्जरपनोमे लाली आबए लगै छइ। बाल-किरिण जकाँ बाल-रंग अबैत गढ़ियए लगैए। हल्लुक लाल, गुलाब लाल अड़हुल लाल आ आल लाल होइत लाल कमल भाइए जाइए...।

एक तँ ओहुना कोनो ओझरीमे पड़ने मनक रस्ता ओझरा जाइ छै तैपर तँ आरो श्यामलाल बाबूक मन ओझराइते रहलैन। कॉपी देख किछु बजला नहि। बजैक पाछू दोसर-तेसर सबाल उठैक डर भेलैन। डरो केना ने होइतैन, कम समैमे अधिक काजक तँ सूत्रे बदैल जाइ

छइ।

अभिरामकेँ कॉपी बढ़बैत कहलखिन-

"बौआ, चित्रकारी तँ नीक केने छह, मुदा जइ ढंगे केने छह, ओकर बारीकी देखैक अखन समए नै अछि, तँए एकरा राखह। निचेनमे देखबह।"

कॉपी लैत अभिराम अपना जगहपर आबि बैसल। दोसर कॉपी शरबनक, हाथमे लैत श्यामलाल बाबू निहारए लगला। 'अपराजित फूल' बगलमे लिखल। फूल देखते मन नचलैन। नचलैन ई जे अपराजितो तँ केते तरहक होइए। एकमुखी, तीनमुखी, पँचमुखी। तैसंग उजरो होइए आ कारियो होइते छइ। जहिना अभिरामक कॉपी देख श्यामलाल बाबू बाजल छला तहिना शरबनोकेँ कहलखिन-

"बौआ, चित्रक तँ नीक चित्रण केने छह मुदा ओते परखैक अखन समए नै अछि, अखन राखह दोसर दिन देखबह।"

कॉपी लऽ शरबन अपन जगहपर बैसलो ने छल आकि तेसर-गिरधरक कॉपी श्यामलाल बाबूक हाथ पड़लैन। विचित्र रूप बनल चित्र। पँजरामे लिखल 'गामक शकल सूरत।'

शीर्षक पढ़ैथ आ देखैथ तँ कोनो ताले-मात्रा ने मिलैन। शीर्षककेँ नीक मानि लेलैन मुदा वेदरंग वेदचित्र देख मनमे उठलैन जे जहिना कोनो गरीब लोक[11] अपना बेटीक नाओं 'लछमी' आ बिनु पढ़ल-लिखल लोक अपन बेटीक नाओं 'सरस्वती' रखि लइए, तहिना अछि। घड़ी दिस नजैर देलैन तँ समए ससरल देखलैन। मुदा जाबे घण्टी नै बजल ताबे तक तँ समए अछिए। नजैर खिड़ा देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे केतौ ढिमका-ढिमकी अछि तँ केतौ चौरस, केतौ

[11] खगल लोक

खादि जकाँ अछि तँ केतौ डाँरि खींचल। खेतक आड़ि-धुर छी आकि कोनो धार-धुर? घुड़छीमे श्यामलाल बाबूक मन घुड़छिया गेलैन। फेर लगले मनमे भेलैन जे आन गोरे फूल, पात, फल इत्यादिक चित्र बनबैए आ ई किए एहेन गामेक शकल-सूरतक चित्र बनौलक! अपनो तँ कहियो एहेन बात बजलो ने छेलौं तखन किए बनौलक?

पुछलखिन-

"बौआ, एहेन चित्र बनाएब केना सीखलह?"

जेना गिरधरक ठोरेपर रहै तहिना बाजल-

"सरजी, परसू रातिमे बाबा कहलैन।"

बाबाक नाओं सुनि श्यामलाल बाबू तरतम्य करए लगला। तरतम्य ई करए लगला जे ने कोनो संगी-साथीक नाओं बाजल आ ने दोसर-तेसर शिक्षकक। बाबाक नाओं कहैए!

तैबीच घण्टी बजल। हाँइ-हाँइ कऽ रजिष्टर खोलि हाजिरी लिअ लगला।

साढ़े चारि बजे जखन विद्यालयसँ श्यामलाल बाबू घर दिस विदा भेला तखने मनमे गिरधरक बात एलैन। मनमे अबिते सोचलैन जे जँ पहिने अपना घरपर चैल जाएब तखन दोसरो-तेसरो एहेन काज उपस्थित भऽ जाएत जे फेर ई काज पछुआ जाएत। तइसँ नीक जे पहिने गिरधरेक घरपर पहुँच बुझि लेब नीक हएत। घरक रस्ता छोड़ि गिरधरेक संग विदा भेला।

गिरधरक बाबा- सुबल लाल- दरबज्जेपर रहथिन। श्यामलाल बाबूकेँ देखते गिरधरकेँ कहलखिन-

"बौआ, पहिने आँगन जा माएकेँ चाह बनबए कहुन आ अपने लोटा-गिलास अखारि कलक टटका पानि नेने आबह।"

अपन आगत-भागत देख श्यामलाल बाबूक मनमे उठलैन जे धड़फड़ा कऽ पहिने अपन प्रश्ने नै राखब। कुशल क्षेम हेबे करत, ताबे गिरधरो निचेन भेल रहत। ओकरे अगुआ किए ने प्रश्न उठाएब। दू गिलास पानि एक गिलास चाह पीला पछाइत श्यामलाल बाबू गिरधरकेँ कहलखिन-

"बौआ, कनी अपन ड्रॉइंग-कॉपी लाबह ते।"

अपन ड्रॉइंग-कॉपी गिरधर आनि आगूमे रखि देलकैन। ऊपरका पन्ना उल्टा, सुबल लालक आगूमे रखैत श्यामलाल बजला-

"बच्चा एहेन चित्र बनौने अछि जे नीक जकाँ अपनो ने बुझि पाबि रहल छी।"

पोताकेँ अपन कहल बात सुबल लालकेँ मन पड़लैन। कॉपी उठा देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे जहिना कहने छेलिऐ तहिना हू-बहू चित्र बनौने अछि! मन खिललैन। खिलते विहुँसलैन। विहुँसिते बजला-

"मास्सैव, केहेन बढ़ियाँ तँ चित्र सचित्र बनले अछि तखन विचित्र की?"

एक तँ ओहिना श्यामलाल बाबूक मन चित्र देख चितराएल रहैन तैपर सुबल लालक समर्थन देख आरो चितिर-बितिर भऽ गेलैन। मनमे घमर्थन जगलैन। घमर्थन ई जे सुबल लाल साधारण पढ़ल-लिखल गिरहस्थ छैथ, मुदा अपने तँ से नै छी, एक तँ बी.ए. पास केने छी तैपर दिनचर्यो तँ पढ़ले-लिखलक अछि, केना बाजब जे नीक जकाँ नै बुझलौं। अपनाकेँ समगम करैत श्यामलाल बजला-

"किछु तँ नजैरपर चैढ़ रहल अछि, मुदा किछु चैढ़े ने रहल अछि।"

बजैक वेगमे श्यामलालक विचार भँसियाइत जहिना कोनो वस्तु

धारामे भँसि जाइए तहिना आगू बढ़ि गेलैन मुदा लगले बाजबक प्रवाहकेँ मनक छोड़सँ खिंचलैन। छोर खिंचैक कारण भेलैन जे जँ कहीं सुबल लाल पुछि दैथ जे की सभ नजैरपर चढ़ल आ की सभ नै चढ़ल। तखन तँ आरो जड़ि-तड़ि मुसरा नेने उखैर जाएब! मनमे अबिते जेना मुँहक सुरखी विधुआ गेलैन। मुदा संयोग नीक रहलैन जे सुबल लाल से नै पुछि, बजला-

"मास्सैव, पहाड़, समुद्र, धरती, पताल, अकास सभ मिलि जे एकटा विराट सूरत बनल अछि, सएह तँ छी।"

जहिना पोखैर वा धारक अथाह पानिमे खेलाड़ी उगी-डुमी खेल खेलैए, आ जखन उगि पकड़ा जाइए आ डुमबए लगै छै तखन डुमैसँ नीक हरदा बाजि अपने चोर बनि जाइए तहिना श्यामलालक मनमे भेलैन। मुदा लगले मन कहलकैन अनेरे मनकेँ हारि मनबा रहल छी। ई विचारक दोख छी। नान्हिटा बात अछि जे सुबल लाल हमरासँ जहिना उमेरमे बेसी छैथ, तहिना जिनगियोक भिन्न आनन-कानन तँ छैन्हे। जेहेन जिनगी रहत तहने ने नन-नन्दन बोन-झाड़ हएत। जे सोभाविको अछिए। तहूमे ऐठाम कियो तेसर थोड़े अछि जे अनका देख संकोचो हएत। बजला-

"चाचाजी, हम भलेँ शिक्षक छी, वृत्तिये शिक्षा-दीक्षासँ जुड़ल छी, मुदा कहलो तँ जाइते छै जे जेतए ने जाए रवि, तेतए जाए कवि आ जेतए ने जाए कवि, तेतए जाए अनुभवी। जहिना गिरधरकेँ कथारूपमे गामक शकल-सूरत बुझा देलिऐ, तहिना एकबेर आरो दोहरा दियौ।"

श्यामलाल बाबूक जिज्ञासा देख सुबल लालक मनमे उठलैन, जे जिज्ञासा श्यामबाबूक छैन ओकरा मुहोँमुह[12] पुराएब कठिन अछि। दू

[12] उपोउप, लबालब

मुँहक बात आ दू मनक विचार छी। एके जिज्ञासाक भिन्न-भिन्न रूप होइ छइ। एक भूख ओहन होइ छै जखन जठराग्नि आत्मा जरबए लगै छै, आ दोसर एहनो तँ होइते छै जैठाम खानापुरी होइए। मुदा लगले मनमे उपकलैन जे एक-एक रेखा आ रेखासँ रेखाएल शकल-सूरतक चर्च करैत चलब, जेतए बुझैमे नै औतैन तेतए प्रश्न उठौता, जँ से नै उठौता तँ बुझब जे जिज्ञासाक अनुकूल मन मन्दिर भऽ रहल छैन।

चित्रकलाक कॉपी दुनू गोरेक बीचमे पसारि आँगुरसँ देखबैत सुबल लाल बजला-

"ई समुद्र भेल, समाज रूपी समुद्र। अथाह जलराशिक भण्डार। अहूमे जुआर उठै छै, जे हवा-पानिकेँ अपना पेटसँ निकालि अकासमे पसारैए, जइसँ बर्खाक संग तूफानो उठै छइ। जइसँ पानि आ हवासँ धरती भरि जाइ छइ।"

आगूक बात सुबल लालक पेटेमे रहैन आकि बिच्चेमे श्यामलाल बाबू दोसर रेखापर आँगुर रखैत पुछलखिन-

"ई?"

पहिने सुबल लाल रेखाक सूरत देखलैन फेर श्यामलालक सूरत मिलौलैन, अपन सूरत मिलबैत बजला-

"ई धार भेल। जेकरा जीवनो-धार कहि सकै छिऐ, जे वैदिक धार कहियो कल-कल हँसैत, प्रवाहित होइ छल ओ आब मरण भऽ गेल। तँए पानिक जगह बाउल उड़ैए।"

'पानि-बाउल' सुनि श्यामलाल बाबूक मन सुमैर-धुमैर कऽ घुमड़लैन। कॉपीपर सँ नजैर उठा सुबल लालक नजैरपर फेकलैन। विहुँसैत मन खिलैत रंगाएल चेहरा देख बजला-

"पानियेँ सँ बाउल आ बाउलेसँ ने पाइनो होइए।"

श्यामलाल बाबूक प्रश्न सुनि सुबल लालक मन एक डेग आगू बढ़लैन। बढ़िते बजला-

"यएह तँ दुनियाँक चकरचालि छी जे एक दिस वएह बाउल पानिक सतह बनि ऊपर जल बरसन करैए जइसँ धरतीक कोखि जुड़ाइ छै आ दोसर दिस धरतीकेँ मरू बना मरूआ उपजबैए।"

सुबल लालक बात सुनि श्यामलाल बाबू ठहाका लगा हँसला। जहिना कनितोकाल मन बजैए, तहिना ने हँसितोकाल बजैए। श्यामलाल बाबूक हँसी बाजल-

"ई तँ भेल धरती, समुद्र। मुदा दुनूक जे जोड़ अछि से..?"

श्यामलाल बाबूक बात पकड़ैत सुबल लाल बजला-

"जहिना अकासमे चन्द्रमुखी, सुर्जमुखी फूल फुलाइए तहिना धरतियोमे ज्वालामुखीक लावो-फूल तँ फुलाइते अछि। जेहेन फूल फुलाएत तेहने ने गामक शकल-सूरत बनत।"

जहिना पेट भरलापर ढकार बनि हवा निकलैए, श्यामलाल बाबूक मन तहिना भरि मन ढकरलैन। बजला किछु ने, सूर्यास्तक समए सेहो भऽ गेल छल। मुदा जहिना अर्द्ध-लघुक अवस्था, अर्द्ध-कथाक अवस्था आ अर्द्ध-गीतक विरह अवस्था होइए तहिना श्यामलालो बाबूकेँ भेलैन। मुदा घरोपर, परिवारोमे तँ आन दिनक अपेक्षा अनदेशा होइते हेतैन। मनमे अबिते बजला-

"अबेर भऽ गेल, दोसर दिन फेर गप-सप्प हेतइ।"

अपन मर्यादा निमाहैत सुबल लाल बजला-

"आब तँ बाट-बटोहीकेँ ठौर पकड़बा बेर भऽ गेल, तखन जाएब केना?"

मुस्की दैत श्यामलाल बाबू बजला-

“केतौ अनतए जाएब जे हराइ-भोथियाइक सम्भावना रहत। अपन घर छी, कनी अबेर-सबेर पहुँचब सएह ने।”

❍

20 अक्टुबर 2014, शब्द संख्या- 2596

जितिया पाबैन

ओछाइनपर जीतलाल बाबा पड़ले-पड़ल अपन दिन-दुनियाँक रेखागणित मने-मन बनबैत रहैथ, तखने बारह बर्खक पोता ‘भागीरथ’ जे हाई स्कूलक नअम वर्गमे पढ़ैत, देहपर दहिना हाथ रखि आस्तेसँ हिलबैत बाजल-

“बाबा! बाबा!! उठू ने, पाबैन दिन छी, किए एते अबेर तक सूतल छी!”

ननमुँह बच्चा भागीरथ नै बुझि पेने छल जे जितिया पाबैन बबोकेँ बुझल हेतैन। ओ आने बच्चा जकाँ बुझैत जे हमरेटा बुझल अछि तँए दोसरोकेँ कहि बुझा दिऐ। बिना कोनो करोट फेड़ने पड़ले-पड़ल जीतलाल बाबा बजला-

“पाबैन! कोन पाबैन छी हौ बौआ?”

जहिना गुरु पेला पछाइत गुरुआइ बढ़ै छै तहिना भागीरथोक मनमे कौल्हुके पाबैनक छुट्टी गुरुजीक मुहेँ सुनि जगल रहइ। टटके ज्ञान तँए स्वादिष्ट हेबे करत। जखने जीहपर सुआद औत तखने ने मन हरखित हएत। भलेँ तेतरीक खटमिठी सुआद पाबि मन तल-बीचल किए ने हुअए, आकि अमरा पाबि सोलहन्नी खट्टे! चाहे पाकल आम पाबि सोलहन्नी मीठे किए ने हुअए। मुदा जीतलाल बाबाक मनमे से सभ नै भेलैन, भेलैन ई जे दुधमुँह बच्चा पाबैनक खुशीमे अछि। मुदा

ई कहाँ देखियो कऽ बुझि पबैए जे पाबन दिन छी। किछु पबैक अछि। चारि-आठ अनाक दबाइ-गोटी खैरातमे बँटबारा हौउ आकि दू-चारि किलो चाउर-गहुम, आकि बाढ़िक समए सेर-आध-सेर चूड़ा आ कनमा भरि गुड़, लेबालक ढबाहि लैग जाइए, तहिना ने धर्मक पाबैनो होइए। धर्मस्थलक रूपमे गामक खेत बनत, खेतक सुअदगर अन-पानि, फल-फूल इत्यादि बनत, धर्मक विचार बिलहाएत।

जहिना भोजैत भरि मन परसत तहिना भोजी सेहो भरि मन खेबो करत किने, से दिन छी। मुदा से थोड़े बुझैए। तहूमे केना ऐ बच्चाकेँ नाकारात्मक बात कहबै। तेरह-चौदह बर्खक बच्चाकेँ केना शुभ-अशुभ दुनू बात कहबै जे बौआ बाढ़िक पनरह दिन ओहन भेल जे मनक बिसवास समापते जकाँ भऽ गेल रहए जे बाढ़िक उगरासक पछाइत परिवारक सभ जीवित बँचल रहब की नै? केना कहबै जे भुमकममे घरे देहपर खसि पड़ल रहए। अपन सोग-पीड़ा किए अनेरे पोताकेँ पाबैनक दिन कहबै।

मुदा लगले मन हूमरलैन, हूमरलैन ई जे जँ अपन सोग-पीड़ा नै कहबै, तखन ओ वंशक वंशावलीक जे सोझ रस्ता बनल आबि रहल अछि ओइमे कटारियो बनत किने! देहसँ श्रम करैबला वंश श्रमक चोरि जान-अनजानमे काइए रहल अछि जइसँ जिनगीक धारा बदैल रहल छै, तेहेन स्थितिमे ओहनो तँ असंख्य लोक छैथे जे अपन पुरुखाक जीवन-धारक बीच अपन धार मिलबैत ऐगला पीढ़ी लेल सत्यम् शिवम् सुन्दरम्-क धार फोड़ि आगू धकेले रहल छैथ। मुदा कोनो बातो विचारैक तँ जगहो होइते छै, ऐठाम दूधमुहाँ बच्चाकेँ की कहबै, केते कहबै? पोखैर-इनारक पानि जकाँ जीतलाल बाबाक मन रसे-रसे थीर हुअए लगलैन। नीक जकाँ मनकेँ थीर करैत थारी-बाटीक पानि जकाँ जखन थीर बुझि पड़लैन तखन बजला-

“बौआ, पाबैनक ओरियानक की सभ विचार करै छह?”

जहिना कोनो चोरनुकबा पिता अपना अवोध बच्चाकेँ सीखबैत जे सोर पाड़निहारकेँ बाटपर जा कहुन जे बाबू नै छैथ, आ ओ बच्चो ओहिना जा कऽ कहैत जे बाबूजी कहलैन हेँ कहुन आँगनमे नै छथिन। तखन केकर गलती भेल? के केकर गलती पकड़त? बाप पकड़त बच्चाक आकि बच्चा पकड़त बापक! मुदा से जगहे नै बनल। अबोध बच्चाकेँ सबोधैत बेवहार नै करब तँ ओकरामे सबोध-शक्तिक विचार केना उठत आ बिनु विचार उठने जिनगीक बाट भोथियेबे करत किने। ओहुना पनियाएलसँ पनियाएल लोहाक औजार माटिपर किछु दिन रहने भोथिया जाइ छै मुदा ईहो तँ होइते छै किने जे मुँह मारि खाइत-खाइत पनिगरो-धरगर भोथा जाइ छै, खाएर जे से...। बबेक प्रश्नकेँ उनटबैत भागीरथ बाजल-

“बाबा, अहाँ अखन तक ओछाइनेपर छी, अहीं ने कहब जे की सभ हेतै?”

पोताक जिज्ञासा पाबि, किछु विचार करैक समए बनबै दुआरे अपने कनी पाछू घुसकैत जीतलाल बाबा बजला-

“बौआ, अखन ओछाइनेपर छिअ, मूड फ्रेश नै भेलह हेन, उठै छी मुँह-हाथ धोइ कऽ चाह-ताह पीब पान खेबह, तखन ने चालैनमे चालल तीसी जकाँ मन चिकनेतह। जखने मन चिकनेतह तखने तोहर प्रश्नक उत्तर देबह।”

कहि, देह परहक चद्दरि उतारि दू झाड़ैन चद्दरिमे लगा अलगनीपर रखि नित्यक्रिया दिस बढ़ैक उपक्रम जीतलाल बाबा करए लगला। मुदा जहिना विपैत एलापर देह छिनगि जाइ छै तहिना मनोमे एने तँ मन छिनगिते छै, तहिना जीतलालो बाबाक मन छिनगलैन। छिनगलैन ई जे आमक मासमे आमोक ओगरवाहि आ जेठ मासक

रौदोक जरौनसँ बँचैले गाछमे मचकी लगा जहिना वृन्दावनमे गोपी-कृष्ण कदमक सघन छाहैरक गाछ, जेकर फूलो घुंघरू पहिरने रहैए आ पत्तोक नमगर-चौड़गर मुँह-कान रहै छै, तैपर झूलै छला, तहिना ने बारहो मासक बारहो बहिनियाँ गड़ाजोड़ी कऽ बरहमासा झूलि-मिलि गबै छेलौं- 'आसिन हे सखी आस लगाओल... ।'

मन ठमकलैन, एक तँ ओहिना आसिनमे कुमहरो कुम्हराए लगैत अछि, धानो कुम्हराए लगैत अछि जेकरा देख-देख अनेरो लोकोक मन कुम्हराए लगै छइ! तैपर सँ जितिया सन पाबैन? एक तँ ओहुना बाल-बोधक पिपाशु पंछीक पिपाशु मन, तैपर ओकर आँइखो तँ हमरे आँखिपर ने हेतइ। जँ एकोरत्ती ढिली-सिली करब तँ तेकरा देख बीचमे किछु बाजि ने दिअए। तँए जइ काजमे जेते समए आन दिन लगै छल तइमे तइसँ कनियोँ बेसी नै लगए। जखने घटी-बढ़ी हएत तखने कमलाएल डण्टी डोलबे करत। तँए ओही गतिये निवृत भेला। अपन क्रियासँ निवृत बाबाकेँ देख भागीरथ सेहो अपन काज-भारक गति-विधिक परीक्षा दइते अपनो बिसवासू रूप देखैत तँए मनो बुलंद। होइतो अहिना छै जे शिकारक खेतपर जहिना सभ शिकारीक बुलंद नजैर अँटकल रहैत तहिना भागीरथोक मन बुलंद। जीतलालो बाबाकेँ चाह-पान चढ़िते चेहरा चहचहेलैन। बजला-

"बौआ, पाबैनक दिन छी! पाबैनक विधि भोरहरबेसँ अँगना-घर नीपैक प्रक्रियासँ शुरू भऽ जाइ छै, तखन काजक बीच सोचै-विचारैक समए नै होइ छै, काजक अपन गति-विधि होइ छइ। जेकरा पकैड़ लोक चलैत आबि रहल अछि।"

जीतलाल बाबाकेँ आगू बजैक बात पेटेमे रहैन आकि बिच्चेमे भागीरथकेँ भेलै जे पाबैन शुरू भऽ गेल, हम तँ बाबाक बोल सुनै पाछू पछुआएल छी! सबहक पाबैन छिऐ, सभ मिलि करत, खाएत, खुशी

मनाएत, आकि एक गोरे करै पाछू बेहाल, दोसर खाइ पाछू बेहाल आ तेसर कुम्हारक चाकपर बात गढ़ैक पाछू बेहाल रहत तखन केना भेल। भागीरथक हाव-भावसँ जीतलाल बाबाकेँ बुझि पड़लैन जे अपन उपस्थिति भागीरथो दर्ज करबए चाहैए। मुदा करत की से बुझल छै? जखन बुझल नै छै तखन तँ बाल-बोध जकाँ देखौंस करैमे अनकर काजे बरदौत। मनमे नचिते रहैन आकि बिच्चेमे भागीरथ टोकलकैन-

"बाबा, गप-सरक्का छोड़ि दियौ, साँझू पहर निचेनसँ बुझा देब।"

भागीरथकेँ काजक धड़फड़ी देख बाबाकेँ बुझि पड़लैन जे गेल महींस पानिमे छोर-तोर नेने! अखन सम्हरै-सम्हारैक समए अछि, अखन जँ नै सीखत तँ जिनगी भरि अन्ट-सन्ट करिते रहत। मुदा ओकरा बौस कऽ बुझाएबो तँ कठिन अछि। अपन दादी-नानीक वौसैक गीत मन पड़लैन। मन पड़लैन दुनियाँक ओ स्वरूप जे समैक संग चलैत अपन रंगो-रूप परिमार्जित[13] करैत अछि। कहलखिन-

"बौआ, जखन उठि कऽ विदा हुअ लगिहह, तखन एकटा काजक विधि तोरो देखा देबह ओ अनिहह।"

पाबैनमे अपन सहभागता पाबि भागीरथक मन कनी ठहरल। मुदा औगुताएल रहबे करए। सोभाविको छै सभ चाहैए, नीक काजमे बेसी भागीदारी निमाही। पड़ाइक बाट पकैड़ भागीरथ बाजल-

"बाबा, अखन फूल लोढ़ै-बेर छै, अखन जे बरदाएब तँ फूले विला जाएत।"

भागीरथक विचार जेते हल्लुक तेते भारियो। हल्लुक ई जे बाबा अपने तँ जानदार दइबला देवी-देवताक फूलक रंग-रूपक अन्तर बुझै छैथ मुदा बाल-बोध 'भागीरथ' तँ से नै बुझैए सहरगंजा फूल बुझैए, जे

[13] पर-मार-जीत

मौसमी भेटै छै, लोढ़ि-बीछि कऽ आनि पूजा करए चाहैए। बाबाकेँ सुतरलैन, बजला-

"सएह ने हमहूँ कहै छिअ।"

बाबाक बातसँ, जहिना बच्चाक 'म्याँउ-म्याँउ' सुनि बिलाइयो-बच्चा लगमे आबि बैस जाइए, तहिना भागीरथो नुरसुराए लगल। बबोकेँ बौसब जरूरी बुझि पड़लैन। कहलखिन-

"दहिना हाथ लाबह।"

बाल-बोधक जेहने कानब तेहने हँसब। एक पाँती सीता विलाप दोसर राक्षसिनीक किरदानी। मुदा से तँ तुलसी बाबा ने बुझै छथिन, बाल-बोध थोड़े बूझत। हाथपर हाथ रखि जीतलाल बाबा मंत्र जकाँ चाटपर चाट झाड़ैत दादी-नानीक दुहाइ दैत बजला-

"अट्टा-पट्टा बौआकेँ सातगो बेटा। एकटा जेतै घास छीलए, एकटा जेतै भैंस चरबए, एकटा जेतै पोखैर नहबैले, एकटा जेतै खेनाइ दइले, एकटा जेतै दूध दूहए, एकटा जेतै दही पौड़ए, एतए-से चलिहो बाबा, बौआ मँहमे घुटुर-घुटुर।"

ओना बाबा भागीरथकेँ बुझबै दुआरे पढ़ि देलखिन, मुदा पछाइत अपने भेलैन जे ई पढ़ब तँ दादी-नानीक छिऐन। मुदा फेर भेलैन जे जे दादी-नानीसँ छुटि गेल होइन तेकर भरपाइ तँ पुरुखे ने करत। मुदा ई तँ बाल-बोधक बात भेल जे भागीरथ तँ मध्यमे कोटिक अछि। तँए मार-सम्हार तँ करैए पड़त। तैबीच भागीरथ दोहरबैत बाजल-

"बाबा, सिंगहारक सभटा फूल लोक बीछि नेने हएत। गुलाब आब केकरा के तोड़ए दइ छै, सभ कहै छै हजार-रूपैआ पूजी लगा तोरेले रोपने छियौ।"

जहिना बाढ़िक पानिसँ दाबल ओ धरती जे सदियोसँ पानिक

तरमे सड़ैत रहल आ संयोग पाबि ओ पानिसँ ऊपर भेल, ओहेन धरतीक फूल- कुमहरक फूल-सँ ऐ पूजाक पाबैन हएत! विहुँसैत बाबा बजला-

"औझुका जे पाबैन छी ओ कुमहरक फूलसँ हएत। तइले एते धड़फड़ किए करै छह। अपने चारपर कुमहरक लत्ती फुलाएल अछि।"

आँखि उठा भागीरथ छानिपर कुमहरक फूलो आ फुलबतियो आँगुर देखा-देखा गनि लेलक। जीतलालो बाबा देखैत रहैथ। आँगनमे दादीकेँ आँगुरसँ कुमहरक फुलबतिया देखबैत भागीरथ बाजल-

"दादी, कुमहर फड़ल!"

जहिना शुभ काजमे 'राम-राम' कहब अशुभ बुझल जाइ छै तहिना आँगुरसँ बतिया देखाएबकेँ सेहो बुझल जाइ छइ। भागीरथक बातो आ काजोकेँ देख दादी जरि कऽ कोयला-कोइली भऽ गेली मुदा बजली किछु ने। जी-दाँत-ठोर कुटि-पीसि कऽ रखि लेली। रखबो केना ने करितैथ एक तँ जितिया सन पाबैनक दिन, तैपर जागरणक समए, अपन कोखिक सन्तानकेँ जइ सीमा तक कहि-सुनि सकै छिऐ, तैबीच बेटा-बेटीक सीमानक बीच तँ किछु आड़ि पड़िये जाइ छइ।

मुदा से सभ दादीकेँ मनमे नै एलैन। एलैन एतबे जे जहिना अपने ठोराहि छी तइसँ कि कम पुतोहुओ-जनी छैथ! जँ अखन अशुभ बात मुहसँ निकालब तँ ओहो थोड़े चुपेचाप बरदाश करती। तहूमे बुड़हा सोझहेमे छथिन, दोखी बनि जाएब। दादीक संकल्प तँ ओही बेटा-पुतोहु आ पोता-पोती ले ने छैन। भलेँ तइमे भुमकमित समाजिक परिवेशमे वौआइत-ढहनाइत समाजिक-परिवारिक जिनगीक सड़लोसँ सड़ल मन कहाँ कहै छै जे हमरा पेटसँ कमल नै फूलए-फलकए। मुदा दादीक बिढ़नी सदृश चालि देख जीतलाल बाबा बुझि गेला जे हो-ने-

हो भोजेकालमे ने कहीं दियादी लड़ाइ उठि पटका-पटकी शुरू भऽ जाए आ नौतल पञ्चक चुल्हिमे पानि उझला जाए! भागीरथकेँ सोर पाड़ि जीतलाल बाबा पुछलखिन-

“बौआ, एकटा बात नै बुझि पेलियह जे की कहने छेलह जे अखन फूल नै लोढ़ि लेब तँ विला जाएत?”

नव लत्तीक मुड़ी सदृश भागीरथक मन खिलल-

“बाबा, कनी थमहू, दादीक मुहेँ सुनने रही।”

एक तँ ओहिना दादीक मन खापरिक पनिमरू बदाम जकाँ खरहर रहबे करैन तैपर पोताक मुहेँ ओ बोल सुनि छाती जुड़ि गेलैन। जे पोताक आत्मामे जीवै छी! ओना मुहाँ-मुहीं भागीरथ आ दादीक बीच संवाद नै भेल छल मुदा भागीरथक अवाज तँ दादीक कानमे पड़िये गेल रहैन, भागीरथक मधुआएल अवाजक झलक दादीक हृदए तँ पकैड़े नेने छेलैन। अँगनेसँ बजली-

“गज-गज करे गजनती फूल, नअ साए हाथी करे कबुल, तैयो ने भेटै गजनती फूल।”

जहिना दूरो-स्थानमे रामधुन भेने साधु अपन धून मिला गबैत बाट चलैत रहैए तहिना भागीरथो दादीक बोलक संग अपन बोल मिलबैत बाबाकेँ सुना देलकैन। मुदा दादियो कि दादी छैथ ओहिना रगड़ी थोड़े गामक लोक कहै छैन। अपन बात जोरसँ दादी बाजि कौआ जकाँ टोहियबैत कनसोह लैत दरबज्जा दिस बढ़ली जे हमर बात बाबा तक पहुँचल की नै? जहिना पोखैर-इनारमे पानिक सोह फुटैत तहिना ने कानोक सोह अछि। ओहीमे ने देखए पड़ै छै जे सोहक पानि केहेन अछि। नीक अछि कि अधला। एकान्त भऽ सुनब तँ दूरोक सुनब आ जँ चौचंग भऽ सुनब तँ लगोक हेरा जाइ छइ।

तैबीच जीतलाल बाबा भागीरथकेँ पुछि देलखिन-

“गजनती फूल की भेल भागीरथ जे विला जाइए?”

जहिना अपने बनौने परिवेश बनैए तहिना दादियोकेँ परिवेश बनबैक लूरि छैन्हे। चिलहोरि जकाँ झपैट बजली-

“गुलैरक फूल एहेन फड़नमा फूल अछि जे गाछमे फूल रहितो नै भँजियाइए।”

भागीरथकेँ जे बात जीतलाल बाबा कहए चाहै छेलखिन तइ बीचमे दादीक विचार बाधक बनि-बनि ठाढ़ होइ छेलैन। ओना भागीरथ लेल बाधक नै साधके छेलइ। मुदा बजनिहारकेँ रोकनिहार के, एक तँ पाबैनक दिन, तहूमे भिनसुरका जागरणक समए। बात फेकैत जीतलाल बाबा भागीरथकेँ कहलखिन-

“बौआ, दादी की ओरियान पाबैनक केलखुन हेँ।”

जीतलाल बाबाक मुहसँ खसिते सुधिया दादी अधडरेड़ेपर लपैक बजली-

“राम-धनीकेँ कोन कमी, जे पाबैन नइ हएत। मरूआ चिक्कस घरेमे अछि बाड़ीमे गेनहारी चतलरे अछि तखन पाबैन किए ने हएत? ओरियान करब आकि ऐछे!”

सुधिया दादी अपन विचारकेँ सरोवर रूपी परिवारमे पानिक ऊपर हिलकोरक उतार-चढ़ावमे दहलाइत देख सुधि-बुधि बिसैर गेल छेली। होइन जे नाचि-नाचि लोककेँ कहिऐ जे ‘जितिया पाबैन बड़ भारी, बाल-बच्चाकेँ ठोकि सुता, अपने पाबी भरि थारी।’ ई तँ अदौसँ लत्ती जकाँ बढ़ैत आबि रहल अछि!! मुदा परिवारमे जखन अपनो[14] छैथ तखन वएह ने जे कहता से करब। तैबीच बलाए टारै दुआरे जीतलाल बाबा बजला-

[14] पति

“देखू, अखन गेनहारी सागकेँ जुआनीक लहकी देने हेतै, से कनी ओकरा बेरा-बेरा काटब। जुआनीक लहकीक माने फूल-बीआ। अच्छा एकटा कहू ते साग खोंटै छिऐ आकि हँसुआसँ काटै छिऐ?”

जीतलाल बाबाक गोटी सुतरलैन। सुधिया दादी ससैर कऽ अपन काजपर आबि गेली। बजली-

“देखियौ, गेनहारीए एहेन साग अछि जे काटलो जाइए आ खोंटलो जाइए।”

दुनू बात सुनि बिच्चेमे भागीरथ टभकल-

“दादी, दुनू केना हएत? जे काज हाथेसँ हएत तइमे हँसुआ चलबैक की खगता?”

ओना जीतलाल बाबाकेँ पत्नीक समए लेब अनुचित बुझि पड़ैन। अनुचित ई जे किछु मूल बात भागीरथकेँ बुझा देने आगू नीक हेतै, तैठाम जँ उलफीए बातमे समए चैल जाए सेहो नीक नहि। मुदा अपनो मन कहैन ई तँ हमर विचार ने कहैए मुदा ओहो[15] कोन एहेन अनुचित बात बाजि रहली अछि जेकर खगता भागीरथकेँ नै छै? अखुनके संकलित संकल्प ने भागीरथक जिनगीक प्रवाहकेँ गंगा जल सदृश पवित्र बनि धार फोड़त। आकि बुढ़ाड़ीमे मरैकाल जे हाँइ-हाँइ कऽ गोदाने करा बाछी उसरैग देत आकि कण्ठमे कण्ठीए बान्हि देतै तइसँ की हेतइ। देखनिहार-सुननिहार-बजनिहार काते रहथु मुदा जे मरनासन्न छैथ हुनके आत्मा ने दर्दक पीड़ा-बीच एहेन बात कबुल कऽ सकै छैन। मुँहमे जाबी लगा जीतलाल बाबा पोता-दादीक बीचक संवाद सुनए लगला।

भागीरथक शब्दक सबाल तँ समाप्त भऽ गेल छल मुदा पूर्ण

[15] पत्नी

विराम बाँकीए छल तइ बिच्चेमे सुधिया दादी बजली-

“बौआ, तोरा अखन नेनमैत छह, तँए हँसुआ-खुरपीक बात आकि ठोकि कऽ सुतेनाइक माने कथीले सुनबह, अखन कलम-कागजक बात सुनैक समए छह।”

ओना दादीक नजैर साग काटैपर चैल गेल रहैन तँए गप-सप्पकेँ बहटारए चाहै छेली मुदा भागीरथो तँ बाले-बोध अछि। बाल-बोधकेँ बौसला पछाइते ने काज करब नीक हएत। नै तँ अनेरे ओसारपर ठुनकैत रहत। जीतलाल बाबा भागीरथक प्रश्न सुनि अपने मगन रहैथ जे बड़-बढ़ियाँ पाबैनक जागरणक समए संवाद चैल रहल अछि। सुधिया दादी कनडेरीए आँखिये जीतलाल बाबाक चेहराकेँ देखै छेली जे जँ कनियोँ सह काज करैक भेटत तँ बहाना बना निकैल जाएब। जँ पोता बड़ जोर करत तँ कहबै बौआ, साग काटि अबै छी, तखन ओसारपर बैस झाड़बो करब आ तोरा कहबो करबह। नै जँ तहूसँ बेसी जोर करत तँ कहबै जे तोहीं सगतोरा पथिया आ हँसुआ ले, मुहसँ कथीले सुनमेँ संगे चल, साग देखा देबौ, काटि लिहेँ। ओना जीतलाल बाबाक मनमे ईहो घुरियाइत रहैन जे पहिने गजनती फूलक चर्च होइ, मुदा तीन मनक बात छी। जहिना बरियाती तीन मन होइए तहिना। तहूमे दू मन एक-भगाह भऽ गेल अछि।

दादीक बात सुनि भागीरथ बाजल-

“मास्सैव काल्हिये छुट्टी दइकाल कहने रहथिन जे हँसी-खुशीसँ सभ पाबैन मनबिहह।”

पोताक गछारमे पड़ि दादी गछैर गेली जे जेहने जेकर कुल-खनदान रगड़ी रहत तेहने ने तेकर छुओ-पुओ हेतइ। मुदा दादीक मन तेहेन चौचंग भऽ गेल छैन जे अपनो होइन जे बजैमे काज एहेन ने हुअए जे केतौक पजेबा केतौ जोड़ा घरक देवाले बिगाड़ि दिअए।

मनकेँ ओरिया कऽ असथिर करैत-करैत असथिर होइत बजली-

"बौआ, बेस कहलह, पाबैनक तँ दिने वएह होइए जे चौबीसो घन्टा हँसी-खुशी मनाबी। ओना बत-बनौनक कमी अछि ओ तँ कहबे करत जे सुतैकालकेँ जे हँसी-खुशीमे बिताएब तँ नीन कखन औत। मुदा से नै, सुतैक हँसी-खुशी गाढ़ नीन भेल।"

एक तँ पाबैनक दिन, जइ दिन नियमित परिवारमे सेहो अतिरिक्त बहुत रास नव-नूतन काज आबिये जाइ छै, तैपर बाता-बातीमे समए गमौने पाबैनक विहित बाधित हएत। ओहो दिन तँ पाबैनक पूर्ण विहितक दिन छी। विचारो तँ ओही विहितक बीच अबैए। मुदा विचारक धाराक पाछू भूमिधारा सेहो फुटै छै आ भूमिधाराक बीच बहैत धाराकेँ सेहो विचारधारा अनुकूल बनबैए। दादीक दहलाइत विचारकेँ जीतलाल बाबा अपना हाथसँ पानिक धफार दैत एकवाहि करए चाहै छला, मुदा बिच्चेमे भागीरथ तेहेन खोंरनासँ खोरि दइ जे दादी अनेरे दहलाए लगथि। भागीरथकेँ इशारा करैत जीतलाल बाबा बजला-

"बौआ, दादी अखन ढेनुआर जकाँ सुधरल छथुन, मुदा पहिलुका साग कटैबला बात पछुआ गेलह।"

भागीरथ मने-मन विचारिते छल आकि बिच्चेमे दादी चिलहोरि जकाँ अकासेसँ टाँहि देलैन-

"बौआ, गेनहारी अदौक साग छी, ठरियाक पूर्वज छी। अपने धरतीपर चतैर जिनगी बितबैत ठरिया बनि ठाढ़ भेल। सभ मासक सागकेँ अपन-अपन नीक-अधलाक गुण होइते छै, मुदा जहिना गेनहारी रानी छी, तहिना मरूओ ने राजा भेल।"

जहिना धारमे भँसियाइत नाहकेँ सभ यात्री नै बुझि पबैत जे नाह भँसिया गेल, केतए डुमत तेकर ठेकान नहि। मुदा खेबिनिहार तँ

बुझिये जाइए, तहिना जीतलाल बाबा बुझलैन जे फेर दुनू भँसिया गेल। जहिना भागीरथ विचारमे दहलाए लगल तहिना दादी पोताकेँ छाती लगौने अथाह समुद्रक जुआरिमे तर-ऊपर करैत खेलए लगली। मने-मन जीतलाल बाबा सोचथि जे ई तँ बानरक करहर उखारब भेल। बानरक करहर ई जे बानर करहर उखारि माथपर रखि दोसर उखारए डुमै छै आकि बिच्चेमे पानिक धफारमे करहर भँसिया जाइ छइ। प्रश्नक नाँगैर पकैड़ पाछू मुहेँ धकेल जीतलाल बाबा बजला-

"एना जे सुग्गा जकाँ भरि दुनियाँक बात एकेबेर पोताकेँ सीखाएब तइसँ ओ थोड़े सीखत। पहिने गेनहारी रानीक सोखैर बुझा दियौ।"

पतिक बात सुनि सुधनी दादीकेँ अपनो मनमे भेलैन जे अनेरे एक ढकिया बरतन-बासन पसारि अँगना अजवारि लेलौं! गेनहारी रानीक नख-सिख पकड़बे ने केलौं आ मरूआ राजाक सिख-नख पकैड़ लेलौं। पाबैने छी जेकरा जे जुड़त से तइसँ करत। तइले केकरो कियो बान्ह-छान करै छइ। मुदा विचारेमे दादी फेरि भँसियाइत बजली-

"जेकरा जुड़तै ओ माछ-मरूआ करत जेकरा से नै जुड़तै ओ साग-मरूआ करत आ जेकरा सेहो ने जुड़तै ओ जितियाक उपास करत।"

जीतलाल बाबाक मन पाछू हटैत विचार देलकैन जे बौराएलकेँ पहिने भरि मन बड़बड़ाइए देब नीक हएत, तँए चुप भऽ गेला। मुदा भागीरथ दादीक भँसियाइत बोल पकैड़ दोहरौलक-

"दादी, पहिने सागक संविधान सम्पन्न कर तखन खट्टर कक्काक गैंचीक चर्च करिहेँ। मुदा जितिया पाबैनक महत कहनाइ नै बिसरिहेँ।"

अपन ऊँचगर आसन देख सुधनी दादी बताहि भऽ गेली। होशे

ने रहलैन जे पाबैनक मुड़ी केमहर छै आ नाँगैर केमहर छइ। ई तँ अमरलत्ती जकाँ सगतैर मुहेँ-मुँह छै, नाँगैर केतौ छइहे नहि। सुतिया कऽ साग लग पहुँच दादी बजली-

"बौआ, अखारक फुहार पड़िते गेनहारी अपने उगए लगैए, ओना प्रकृतिकेँ अथाह परकित छै, थाह नै छै, मुदा नमी पाबि गेनहारी धरतीसँ उठैए। बरसात भरिक साग छी। शुरूमे ओ ओते कोमल रहैए जे नहसँ खोंटल जाइ छै, मुदा रसे-रसे जेना-जेना रसाइए तेना-तेना ओकर डारि-पात सेहो सकताइ छै, तखन ओ नहक काजसँ भारी भऽ जाइ छै, तँए हाँसूक खगता होइ छइ।"

दादीक बात अन्तो ने भेल छेलैन, बिच्चेमे भागीरथ बाजल-

"दादी, लगले माछ-मरूआ आ लगले साग-मरूआ कहलीही..? पाबैन तँ पाबैन छी। एक-चलिया हएत किने।"

जहिना आनोकेँ होइ छै जे पचास किसिमक आमक ढेरीमे जइ आमपर जीह गरल रहल, नजैर ओहीपर जाए चाहै छइ। भलेँ ओ ढेरीक तरेमे किए ने हुअए।

तहिना सुधनियोँ दादीकेँ भेलैन। नजैरसँ साग बहैट गेलैन आ माछे आगुआ गेलैन। मुदा पैछला सालक जितिया पाबैन सेहो बीचमे आबि ठाढ़ भऽ गेलैन। आगूमे ठाढ़ होइते जीहसँ ठोर चाटए लगली कखनो माछक सुआद तँ कखनो सागक कँचका मिरचाइक कड़ू मन पड़ए लगलैन। मुँह चटपटबए लगली। मुदा भागीरथकेँ ठोर चाटब नीक नै लगल। मन तरंगलै, बाजल-

"दादी, एना जे बजैकाल ठोर चटमैँ तब तोहर बात नै सुनबौ?"

सुधनी दादीकेँ पोताक बात कनी खरछाइन जरूर लगलैन, मुदा सुतली रातिमे उठि कऽ जँ बच्चा माए-बापक मुँहमे लघीए कऽ देत तँ कि ओ माए-बाप ओकरा कण्ठ दाबि मारतै जे एना किए केलेँ। अपनो

तँ माए-बापकेँ बुझए पड़तैन जे जे बच्चा अखन थलियाएल-पनियाएल अछि, सकताएल नै अछि, तखन ओकर दोख की भेल। दादियो अपन खरछाएल मनकेँ नीक बना बजली-

"बौआ, लोक जखन एकरस भऽ काज करए लगैए तखन अहिना कखनो-कखनो मन टहलए लगै छइ। सएह भरिसक भेल।"

दादी तँ सामंजस करैत बजली मुदा बाल-बोधक उग्र मन तरँगल रहबे करै, बाजल-

"बजैकाल मुँह चटपटेमैँ आकि ठोर चटमैँ तँ बुझि जेबौ जे झूठ बजैक ओरियान करै छेँ।"

जहिना अपन अनुचित काज भेलापर मन भिन-भिनाए लगै छै तहिना दादियोकेँ भेलैन। बजली-

"बौआ, बुढ़ भेलौं, आब जे तोरा सभ जकाँ मनकेँ छान-पगहा लगाएब से पार लगत, जे लगैत-लगैत खरकैट कऽ पकैड़ लेलक, ओ अपन चालि लगले छोड़त। हँ तँ कहै छेलियह जे कातिकक गैंची! कातिकमे थाल-पानिमे जनमल गैंची अण्डाए जाइए। तँए ओकर सुआदो बदैल जाइ छै, मुदा जितियामे तँ वएह गैंची जीरियाएल रहैए, तेकर बराबरी थोड़े कातिकक करत। जखन जीर-मरीचक मसल्ला देला पछाइत सागो सागवान भऽ जाइए तखन जितियाक गैंची तँ सहजे गैंचीए भेल!"

सुधनी दादी आ भागीरथ पोताक बीचक संवादसँ जीतलाल बाबाकेँ बुझि पड़लैन जे पाबैनक दिन रीब-रीबेमे जाएत। कहू जे अखन पाबैनक समए बीता रहल छी, ने खाइक ठेकान आ ने पीबैक ठेकान अछि तखन पाबैन की भेल? अकछाइत बजला-

"बौआ, ने तोहर दादी केतौ पड़ेथुन आ ने तूँ पड़ेबह, मुदा पाबैनक दिन तँ पड़ाएल जाइए। नहाइक बेर भेल। आइ पाबैन छी,

जँ आइयो चयन स्नान नै करब, तखन पाबने की भेल?"

पतिक सूढ़मे सूढ़ मिला सुधनी दादी पुतोहुकेँ जोरसँ दरबज्जेपर सँ कहलखिन-

"कनियाँ, आब कि हम ऐ घरक घरनी बनि रहए चाहब से नीक हएत। जाउ, अपन साग काटि कऽ आनि लिअ। ताबे हम बौआकेँ वौसै छी।"

पत्नीक विचारो आ आढ़ैतोकेँ देख जीतलाला बाबाक मनमे खुशी भेलैन। खुशी ई भेलैन जे पत्नी काजुले टा नै काजक जोगाड़ियो छैथ। बजला-

"बौआकेँ राजा मरूआक चौमासा झब दे सुना दियौ।"

पतिक गुरुवचन सुनि गुरुआइ करैत सुधनी दादी बजली-

"बौआ, मरूआकेँ अन्नमे नै गनल जाइए। अन्नमे सूरा-फारा इत्यादिक सृजन शक्ति होइ छै, मुरूआकेँ से नै छै तँए मरूआमे सूरा नै फड़ै छइ।"

ऊपरका बातकेँ झमारि भागीरथ निच्चाँ आनि बाजल-

"दादी, जखन मरूआ अन्न नै भेल तखन पाबैनक पकवान केना भेल?"

दादी आँगुरक पोरपर हिसाब जोड़ैत बजली-

"बौआ, भादो-आसिन मरूआ तैयारीक समए छी, टटका कुअन्नो तँ बसिया सुअन्नसँ नीक होइते छइ। तहूमे मरूआ एक राजक राजा छीहे।"

एक राजक राजाक नाओं सुनि भागीरथक मनमे शंका भेल जे अन्न केना राजा भेल। मुदा जे दादी एते सत् बात बजै छैथ ओ बीचमे एकटा फूसि किए बजती। फेर मनमे उठलै अनेरे मने-मन घमर्थन करै

छी, दादी जखन सोझहेमे छैथ, तखन पुछिये किए ने लिऐन। पुछलक-

"दादी, मरूआ कोन राजक राजा छी?"

भागीरथक प्रश्न सुनि दादीक मन जुड़ैत-जुड़ैत जुड़ा गेलैन। हृदए हलैस गेलैन। हलसैत बजली-

"बौआ, माटिक उस्सर-खासर एक किसिम अछि। जे उपजाउ माटिक रोग छी। जेते अधिक मात्रामे रहत ओ ओते नमहर रोगी भेल। मुदा से नै, मरूआ ओही रोगाएल माटिक राजा छी। ओहनो उस्सर होइए जइमे कुशो ने उपजैए। आ ओहनो होइए जइमे कुश उपजैए। तहिना कम अंश रहने सुअन्नो उपैज जाइए मुदा बीचक एक अवस्था छै उस्सरक मात्राक हिसाबसँ जइमे आन कोनो अन्न नै लगैए, तइमे मरूआ लैग जाइए! वएह ओकर राज-पाट भेल।"

बजैत-बजैत सुधनी दादी ईहो बाजि गेली-

"आब बड़ बेर भऽ गेल। बाँकी आगू बुझल जेतइ।"

मुदा जीतलाल बाबा पाबैनकेँ हाथसँ गमबए नै चाहैथ, बजला-

"जखन सौंसे रामायण पोताकेँ पढ़ाइए देलिऐ तखन जग-जननीक चर्च किए छोड़ि देलिऐ।"

ओना जीतलाल बाबा चिक्कारीमे बाजल छला, जे भागीरथ नै बुझि पेलक। मुदा मोबाइलिक टाबर जकाँ सुधनी दादी पकैड़ लेलैन। अपनो मन गवाही देलकैन जे जखन रामायण बाचिए गेलौं तखन सीतोक दर्शन कराइए दिऐ। बजली-

"बौआ, हमर सोझ-साझ बात बुझिहह। जितिया पाबैन जहिना मनुखकेँ जीहमे शक्ति परदान करै छै जइसँ ओकरा रसक बोध होइ छै, तहिना धानमे सेहो शीशक गोभ जीह रूपमे अबै छै...।"

दादीकेँ आगू बजैले मन लुसफुसाइते रहैन आकि बिच्चेमे भागीरथ टोकलकैन-

"दादी, नीक जहानि नै बुझै छी।"

जेना तान साधैकाल कोनो ऊँच अवाज आबि टकरा जाइत तहिना दादियोकेँ भेलैन। खिसिया कऽ बजली-

"भूखलमे भजनो ने नीक लगै छइ। अखन चलह पाबैन करए साँझमे बाँकी सभ गायित्री जप कऽ लेब।"

❍

24 अक्टुबर 2014, शब्द संख्या- 3706

सुखाएल सूरत

कातिक मासक भरदुतिया दिन। नअ-दस बजेक बीचक समए। प्रोफेसर कालीचरण अपना बहिन ऐठाम नै पहुँच प्रोफेसर शिवचरणे बाबू ऐठाम पहुँचला। पहुँचते दरबज्जापर बैसल प्रोफेसर शिवचरण, पत्नी संग भरदुतियेक गप-सप्प करैत रहैथ। आगूमे आबि प्रोफेसर कालीचरण बजला-

"नमस्कार!"

'नमस्कार' सुनि शिवचरण बाबू तारतम्य करए लगला जे नमस्कारक उत्तर केहेन नमस्कारसँ दिऐन। नमस्कारोक तँ भिन्न-भिन्न रूप छइ। अपनासँ पैघक नमस्कारी, अपन बराबरीक आ अपनासँ छोटक। तैसंग ईहो तँ ऐछे जे चिन्हरबो नमस्कार होइए आ अनचिन्हरबो। शकल-सूरत ने मनुखेक छिऐन मुदा चीन्हिमे आबि नै रहला अछि। दरबज्जापर आएल अभ्यागतकेँ जँ कहिऐन जे नै चिन्हलौं, तखन ओहन घीक काजे की जे गोबरमे हराएल जाए।

कालीकरण बाबू बुझि गेलखिन जे भरिसक चीन्हिमे नै एलिऐन तँए नमस्कारक उतारा नै देलैन। दोसर कोनो बात मनमे नै उपकलैन। उपकबो केना करितैन, जे शिवचरण बाबू छोट भाए जकाँ जिनगीक तीस बर्ख संगे रहला हुनकर केहेन बेवहार रहलैन, की ओकरा झूठला देब? एहेन नै भऽ सकैए। उमेर पाबि नजैरमे चढ़ा-ऊतरी आबि गेल

होइन से सम्भव अछि। तँए बिना मान-रोख रखने कालीचरण बाबू दोहरबैत बजला-

"हम कालीचरण... ।"

'कालीचरण' सुनिते शिवचरण बाबू पत्नीकेँ कहलखिन-

"घरैया पाहुन छैथ, पहिने पएर धुआउ तखन कुशल-छेम करब!"

चौकी तरेमे लोटामे पानि राखल, उठि कऽ कुमुदिनी लोटा उठा आगू बढ़ौलकैन। कुमुदिनीक हाथसँ लोटा पकड़ैत कालीचरण बजला-

"आइ भरदुतिया छी। पुरुख-नारीक ओहन पाबैन छी जइमे भाए[16] घर औथिन आ अपने[17] घर छोड़ि बहिन ऐठाम जेता। तैबीच पएर धोइक पानियैँक कोन प्रयोजन छइ। भाइयो-बहिनक बीच असीम सम्बन्ध-सूत्र सेहो अछिए। जहिना सहोदर भाए तहिना सहोदर बहिन, जहिना पितियौत भाए तहिना पितियौत बहिन, जहिना ममियौत, पिसियौत, मसियौत भाए तहिना ममियौत, पिसियौत, मसियौत बहिनक संग समाजिक भाए-बहिन होइत अछि।"

शिवचरण बाबू मने-मन विचार करए लगला जे तेहेन तेकठ जगहमे कालीचरण प्रश्न पटकलैन जे आगन्तु-अभ्यागतक यज्ञे ढंश भऽ जाएत। भरदुतिया सन पाबैन, तहूमे कालीचरण अपना बहिन ऐठाम पहुँचबो ने केला, पहिने भैयारीए निमाहैत ऐठाम एला। बिना किछु सोचने-विचारने शिवचरण बाबू कालीचरणकेँ कहलखिन-

"जे मन फुरत से करब मुदा कुशल-छेम पछुआएल अछि।"

पुन: पत्नी दिस ताकि बजला-

[16] पत्नीक

[17] पति

"पहिने चाह-पानक ओरियान करबे ने केलौं, डाली सजेबे ने केलौं, भाउ खेलाए लगलौं।"

मुदा दुनू गोरे 'कुमुदिनियोँ आ कालीचरणो' चेतलैन। पएर तँ कालीचरण नै धोलैन मुदा मुँहक पान फेक दू बेर कुड़ी फेक लोटो भरि पानि पीब लेलैन। तैबीच आँगनमे पोती चाह बना नेने छल। बुझि गेल छल जे दरबज्जा भारी भऽ गेल तँए अपन काज अगुआ ली। छोटकी छिपलीमे चाहक गिलास नेने कुमुदिनीक संग पोती पहुँचल। दुनू गोरे चाहक घोँट घोँटिते घुटकैक ओरियान करए लगला। पहिल घुट शिवचरण बाबू घुटला-

"उमेर पेब नजैरो किछु तर-ऊपर भऽ गेल अछि, मुदा ठूठ गाछ जकाँ चेहरा बुझि पड़ैए?"

शिवचरण बाबूक बात सुनि कालीचरण बाबूक मनमे भेलैन, जाबे कौलेजमे दुनू गोरे संगे नोकरी करै छेलौं, ताबे भैयारी जकाँ हब-गब करै छेलौं। मुदा अखन तँ दू गामक दूरीक बीच छी, तहूमे अपन गाम नै कुटुमक गाममे। केना अपन समाजक हीनताइ बाजि समाजकेँ हीन बनाएब। चौताला हँसी हँसि कालीचरण बाबू बजला-

"आब जे कहबै जे जुआन छौड़ाक चेहरा भऽ जाए से थोड़े हएत। मनुख तँ चालिसे बर्खक पछाइत ने घपचालीस हुअ लगैए। तैठाम तिरसैठ बर्खमे कौलेजसँ रिटाइरो केना केते दिन भऽ गेल।"

बजैक सूढ़िमे कालीचरण बाजि गेला मुदा पछाइत अपने मन हाँटए-दबाड़ए लगलैन जे जे आदमी कौलेजमे जीविका दियौलैन, हुनके लग अपनाकेँ चोरा रहल छी, छिपा रहल छी।

शिवचरण बाबू कौलेजक फाउण्डर शिक्षक, तँए विभागाध्यक्ष सेहो रहैथ। चारि सालक पछाइत जखन कौलेज आगू मुहेँ ससरल तखन दोहरी शिक्षकक खगता भेल। बहालीक वएह प्रक्रिया रहै जे

एक सदस्य युनिवर्सिटिक, एक सदस्य स्थापित आ एक सदस्य विभागीय शिक्षक। कौलेजक पढ़ाइ-लिखाइक नीक बेवस्था भेने कौलेज आगू मुहेँ ससरल। जे सफलता संस्थापित सदस्य देख अपनो अधिकार शिक्षकेकेँ ई सोचि देलखिन जे जहिना किसानक परीक्षा उपज छी तहिना ने शिक्षकोक परीक्षा छात्रक रिजल्ट छी। जे सफल देखलैन। ओही बहालीमे शिवचरणबाबू कालीचरणकेँ संग देने रहथिन। पैछला ओ चमक दुनूक आँखिमे चमकलैन। चमैकते जेना कालीचरण बाबूक नजैर नीचाँ झूकलैन। मुदा शिवचरण बाबूक नजैर ओहिना रहलैन, ने ऊपर गेलैन आ ने नीचाँ भेलैन। बजला-

"जाबे दुनू भाँइ कौलेजमे एकठाम छेलौं ताबे जहिना मन्दिरक आगू सदैत रामधुन होइत रहैए तहिना दुनू गोरे जन्म दिन भजै छेलौं। साले-साल मासे मास। मासे-मास ई जे केते मास नोकरीमे कमल आ केते घटबी बढ़ल। मुदा आब तँ उमेरो भेल आ दस-पनरह बर्ख रिटाइरो केना भऽ गेल, बिसैर गेलौं जे दुनू गोरेमे उमेरक केते कमी-बेसी अछि।"

शिवचरण बाबूक प्रश्नक उत्तर दइमे कालीचरण थकथका गेला। थकथका ई गेला जे अपनो चेहरा जखन अपना ऐनामे देखै छी तखन ठीके पनरह-बीस बर्ख आगूक झखड़ल चेहरा बुझि पड़ैए! तैठाम जँ शिवचरण बाबू कहलैन तँ कोनो अनुचितो तँ नहियेँ कहलैन। जखन भैयारी जकाँ किछु दिन पूर्व तक एकठाम खेनाइ-पीनाइ सभ किछु संगे छल तैठाम अपन बात नुकबैक कोन प्रयोजन अछि। मुदा जीता-जी हारियो मानब नीक हएत? केना बाजी जे, जहिना कोनो गाछ डारि कटिते ठूठ भऽ जाइए तहिना भऽ गेल छी! ठूठो गाछक हिसाब फलन्ती-फुलन्तीमे हएत? फलन्ती-फुलन्ती मनमे अबिते गनगुआरि जकाँ कालीचरण गेरुली मारैक ओरियान करए लगला। गेरुली ई जे जहिना माटि परहक साँप हौउ आकि गाछ परहक गनगुआरि, गेरुली

जोड़िते नाँगैर-मुँहक दूरी कम भऽ जाइ छै, ओना जखन चलंत बेर रहै छै आकि चलंतक सूर-सार रहै छै, तखन मुँह आ नाँगैर दुनूक दू ध्रुव दू दिशामे रहै छै, मुदा साँझ-भोर हौउ आकि निसभेर राति, गायित्री मंत्र जकाँ तँ बन्धन करिते अछि!

मनमे अबिते जेना कालीचरणक मन भनभनेलैन। भनभनेलैन ई जे गाछो-बिरीछ मरै उमेरकेँ के कहए जे ठूठ सीलो जँ जीवित रहै छै तँ तहूमे मोजर निकैल फड़ि जाइ छइ! तखन ओकरा ठूठ केना कहबै? हँ! तखन बेसीसँ बेसी यएह ने कहल जाएत जे डारि-पात कियो काटि देलकै, या तँ रोग-पीड़ासँ डारि सुखि गेलै? मन ठमकलैन।

ठमकलैन ई जे हम तँ सेहो ने छी। दुनू परानी तेहेन अथबल भऽ गेल छी जे जेतबोसँ अपनो ठाढ़ रहब तेतबोमे, करै दुआरे कटौती केने छी, तैपर आगू बढ़ि परिवार आकि समाजमे डेग उठा किछु करब से पार लगत? हीय-हीन हृदैमे हिहियाइत दिआरीक इजोत जकाँ जोति निकललैन। निकललैन ई जे मनुख कि गाछो-बिरीछसँ निठल्ला भऽ सकैए? प्रश्न मनमे अबिते विचार-बिन्दुक बीच तूफान उठलैन।

एक मन कहैन जे पढ़लो-लिखल मनुख भऽ कऽ ऐ बातकेँ नै बुझि पेलौं जे मनुखक कर्तव्यक समए भगवान[18] सभकेँ एहेन शक्ति संचार करै छथिन जे धरतीक सभ सर्जक बनल रहए, मुदा से भेल कहाँ? कारणो तँ सोझहेमे अछि जे चारिटा बेटा-पुतोहु आ पाँचटा पोता-पोतीक ओहन परिवार रूपी फुलवारी रहैत जइमे बारहो मास फूल फुलाइत रहैत। तैठाम सात बेटा रामकेँ, एको ने कामकेँ भऽ गेल अछि! मनमे अबैत-अबैत विचार थकथका गेलैन।

थकथकाइते जेना थाकल बटोही भूख-पियाससँ तृषित रहितो, मुहमांगसँ परहेज रखए चाहैए मुदा शरीरक ताप मनकेँ तपा विचारोकेँ

[18] प्रकृति

मोड़ए लगै छै, तहिना कालीचरण बाबूकेँ भेलैन। मुदा लगले मन फुदकलैन, फुदकलैन ई जे बाल-बच्चाकेँ जन्मसँ पढ़बै-लिखबैसँ बिआह-दान करै तक दुनू गोरे- शिवचरण बाबू आ कालीचरण बाबू-क विचार एके रंग छल। रहबो केना ने करैत, जखन दुनू गोरेकेँ एके रंग दरमाहा भेटै छल, तखन परिवारक विचार-विनिमय नै करितौं, से केहेन होइतए? मनक सह पाबि कालीचरण बाबू बजला-

“भाय, समैयो तेहेन दुरकाल भऽ गेल अछि जे जेतबो जीब लेलौं तेकरो धन्य बुझै छी, ने अपने जीबैक मन होइए आ ने परिवारे-समाजे जीबए दिअ चाहैए!”

टुटल मनक कँप-कँपीक बीच कालीचरण बाबू पड़िते विचारक बेठेकान भऽ गेला। जे कालीचरण बाबू कौलेजक पढ़ौनीमे क्रमबद्धता रखै छला ओ अपनो बुझलैन, मुदा एक संग अनेको प्रश्न मनमे उठिते शिवचरण बाबू ओझरा गेला। कहू जे ई केहेन भेल, जे एक दिस समए दोखी, दोसर दिस अपन जिनगीक विरक्तता, तँए नै रहैक इच्छा, तेसर परिवारो आ समाजो दोखी जइसँ अपन दोख केतौ ने। दोख तँ अपन केतौ ने मुदा दोखीक दुख[19] केकरा भोगए पड़ै छइ! जेकरा हाथे-पएर ने छै ओ हमर की करत, एतबे ने करत जे जिनगी देत जिनगी जीबैक शक्ति देत? हँसैत-खेलैत जहिना संग नेने आएल तहिना पार-घाट लगबैत गंगा सागर टपा देत, तेतबे ने करत। कालीचरणक बौड़ाएल मनक वौआएल विचार सुनि शिवचरण बाबू बुझि गेला जे कालीचरण धक्कासँ धकियाइत जिनगीक फेड़मे पड़ि गेल छैथ तँए मन डोल-पत्ता कऽ रहलैन अछि। विचारकेँ सुतियबैत कहलखिन-

“कालीबाबू, आब अपना सभ केते दिन ऐ धरतीक अन-पानि खा-पी गंदा करैत रहब, तइसँ नीक..?”

[19] सजाए

कहि शिवचरण बाबू कालीचरणक विचार जानए चाहलैन जे जिनगीक भारसँ केते दबल छैथ। ओना शिवचरण बाबू अपने मुहेँ अपन बात कालीचरणक सुनए चाहै छला मुदा खसैत जिनगीक चालि गैंचियाह भाइए जाइ छइ। मुदा तैयो अपन बात-विचार सोझ करैत कालीचरण कहलकैन-

“भाय, समरथाइमे की मनोरथ छल आ केतए आबि लसैक गेलौं, से थाहे-पता ने चैल रहल अछि!”

कालीचरणक सुतियाएल मनक सूत पकैड़ शिवचरण बाबू बजला-

“जेठका बचबाकेँ तँ आब नोकरी लैगचा गेल हएत किने?”

ओना शिवचरण बाबू बातकेँ झाँपि-तोपि बजला मुदा कालीचरणक धक्का खाएल मन, परोसैकाल थारीक धक्कासँ जहिना भाते आकि दालियेक बटलोही ओंघरा, छिड़िया जाइ छै तहिना भेलैन। निधोक बजला-

“बाल-बच्चाकेँ पढ़ाएबे अनुचित भेल, जे बुढ़ाड़ीमे आहि अबैए।”

जिनगीक धकियाएल मन कालीचरणक, जखन कौलेजमे शिक्षक छला, तखन हित-अपेछितक बीच भोज-भातक एहेन चसक लैग गेल छेलैन जे पाँच किलो माछ आकि दू साए रसगुल्लाकेँ एको बेर पेटमे सगबगैयो ने दइ छेलखिन। हँसी-खुशीक जिनगी, बेटो-बेटीकेँ नीक शिक्षा देलखिन। आइ ओ सभ विदेशमे छैन। गाममे मात्र दू परानी रहि गेल छैथ। एक सम्पन्न परिवारक ई गति..!

कालीचरणक भँसियाइत विचारकेँ शिवचरण बाबू जेते सुढ़िया कऽ पकड़ए चाहै छला तइमे झोली-आगिक लुत्ती जकाँ उड़ि जाइ छेलैन। असथिरसँ कालीचरणक मनकेँ शिवचरण बाबू पकैड़ बजला-

“ऐ गाम तँ बहुत दिनक बादे एलौं हेँ?”

गामक नाओं सुनि कालीचरण बाबूक मन थीर भेलैन। थीर होइते बजला-

“बहुत दिन पिसिऔतो बहिनसँ भेँट भेना भऽ गेल छेलए, दुनू भाए-बहिन बच्चामे संगे बहुत दिन रहलौं, आ अहूँ दे जिज्ञासा छल जे केना कि चैल रहल छैथ।”

कालीचरण बाबूक बात सुनि शिवचरण बाबू, हँ हूँ किछु ने बजला। नै बजैक कारण भेलैन जे जइ दशा-दिशासँ अपने धकिया कऽ खसि पड़ल छैथ, तइ खसबक चर्च टारि विचारकेँ बहटारि रहल छैथ। ओना दू गोरेक बीच बाता-बाती सेहो होइए। बाता-बाती ई जे जेना-जेना मनमे बात उठैत गेल तेना-तेना बजैत गेलौं, जेकर ने ओर-छोर अछि आ ने ठौर-ठेकान। लगले गाम-घरक चर्च लगले देश-दुनियाँक चर्च चलए लगैए। मुदा जखन समाजक प्रबुद्ध दू गोरे एकठाम बैस विचार कऽ रहल छी तखन जँ जिनगीक सच्चाइ रूपक विचार नै करब तखन विचारक महते की? नजैर पाछू दिस ससरलैन।

ससरैत प्रोफेसरी जिनगीक शुरूक समए लग जा अँटैक गेलैन। अँटैकते मनमे उठलैन, शुरूमे जँ अपने नै चेतल रहितौं तँ आइ हिनके[20] जकाँ ने अपनो गति रहैत। जहिना जिनगीक पहिल पक्षक नीक काज, राजवेला सद्दश जहिना सघन फूल तहिना सुगंधो, पछाइत जिनगीमे महमही अनैए आ अधला काज अधला, तहिना ने दुनू गोरेक बीच भऽ गेल अछि। शिवचरण बाबू चेतल ई रहैथ जे जखन गामक किसान परिवारसँ उठि पढ़ल-लिखल समाजक बीच पहुँचला तखन परिवारक संग समाज सेहो बदललैन।

जहिना छठि पाबैनमे डाली सरोवर, झील, सरिता-समुद्रक

[20] कालीचरण

घाटपर चौमुखी-पँचमुखी दियारीक प्रकाशमे पसरल रहैए आ हाथ उठौनिहारि एका-एकी डाली उठा-उठा सुर्जक अर्घ दइ छैथ, तहिना ने नीक-अधला दुनियाँक घाटपर परसल जिनगियो अछि। जेकरा जइ रूपमे जे जेहेन अर्घ दान करैए ओ ओहेन फलो पबैए। दुनियाँ तँ दुनियाँ छी, जहिना सभ किछु नीके छै तहिना सभ किछु अधलो तँ छइहे। जँ से नै छै तँ केकरो नीक केकरो अधला किए लगै छइ। तेतबे किए, एके वस्तु एककेँ नीक दोसरकेँ अधलो तँ लैगते अछि।

नोकरीक शुरूमे शिवचरण बाबू सेहो नव समाजमे रंगि नव जिनगीक रूप-रेखा बनबए लगला, जइसँ मासो दिन केतौ-ने-केतौ भोजे-भात आकि चाहे-पार्टीमे शामिल होइत रहला। समाजो नमहर, नमहर ई जे एक दिस संगी-साथी- कौलेजक शिक्षकगण-क ऐठाम कोनो-ने-कोनो परिवारिक काज जेना मुड़न, बिआह इत्यादि-इत्यादि होइते अछि तहिना पाबैन-तिहारक संग पारम्परिक काज-उदेम सेहो होइते अछि, जइमे खाइ-पीबैक संग-संग समैयोक छैत होइते अछि। हाथसँ समए ससरने जिनगीक क्रिया-कलापमे धक्का लैगते अछि। धक्को केना ने लगत, मनुख बनैले चौदहो भुवन भ्रमण करैक अछि, जे काजेक दौरमे भ्रमित होइत अछि। जइ धक्काक अनुभव शिवचरण बाबूकेँ शुरूहेमे भऽ गेलैन आ कालीचरण बाबूकेँ नै भेलैन। कोदारिक छबे-छबे जहिना खेत बढ़ैए तहिना कोरे-कोरे पेट बढ़ैए। जे कालीचरण बाबूकेँ बेसम्हार भऽ गेलैन। ओना सम्बन्ध बनैकाल शिवचरणो बाबू नै बुझि पेला, बुझबो केना करितैथ, नव समाजक नव बेवहार तँ बनबए पड़ै छइ। दोसर, आकर्षणो होइते छइ। रंग-रंगक बोली-चालीक संग नव सम्बन्धो। तहूमे पढ़ल-लिखल समाजसँ जँ हटि कऽ रहब सेहो नीक नहियेँ भेल।

अनेरे ने मुँह फुला-फुलीक वातावरण बनैए। मुदा जखन अपना दिस पाछू उनैट कऽ तकलैन तँ बुझि पड़लैन जे अपन जिनगी तँ अपने

ठाढ़ केने ठाढ़ो हएत आ अपने गतिये चालियो चलबे करत। तखन जँ पानि जकाँ समैकें बहा देब, तखन तँ जिनगियो बहि जाएत।

जखने जिनगीक पूर्व पक्ष बहि जाएत तखने पछातिक माल गाड़ी डिब्बा जकाँ ढकर-ढकर करैत इंजिन पाछू दौगैत रहत! यएह सोचि अपन जिनगीकें शिवचरण बाबू बन्हलैथ। ओना बन्हैमे बाधा भेबे केलैन। बाधा ई भेलैन जे जँ कियो आग्रह करै छैथ तँ ओकरा छोड़बो नीक हएत? मुदा एहेन विषम परिस्थितिकें सम केना बनाएल जाए, ईहो तँ प्रश्न अछिए। युक्ति फुरलैन। युक्ति ई फुरलैन जे दिन भरि तँ घरसँ कौलेज धरिक काजमे ओझराएल रहै छी, तँए दिन खटि जाइए। मुदा रातिकें बँचा जँ अपन जिनगीक दिशा-दशा सुधारि चलब तँ जिनगीक दिशा जरूर सुधरत। यएह सोचि बहाना ठाढ़ केलैन। बहाना ई ठाढ़ केलैन जे जे कियो आग्रही आग्रह करता तँ कहबैन जे यौ भाय, डेरामे असगरे पत्नी रातिकें रहए नै चाहै छैथ। ओ कहै छैथ जे तेहेन भुताहि जगहपर डेरा रखने छी जे साँझ पड़िते भुतो-प्रेत आ चोरो-डकैत उपद्रव करैए। मुदा से सुतरलैन। सुतरलैन ई जे रसे-रसे भोज-भातक समाजसँ अपनाकें अलग कऽ लेलैन। जे अपनो किरिया-कलाप आ परिवारोक भरण-पोषणमे सहयोगी बनलैन। जे खर्च डाली-पातीमे होइ छेलैन से अपना खर्चक सहयोगी बनलैन तँए ने पाँचो किरिया-कलापसँ बिनु ऋृणक उऋीण भेला। तीन बेटा दू बेटीक पढ़ाइ-लिखाइक संग बिआह-दान नीक जकाँ मनोनुकूल पार लगलैन। ओना जीवन-संगिनी जकाँ पत्नीओं कर्तव्य निमाहलैन।

शिवचरण बाबू आ कालीचरण बेवसाइयोसँ एक छला, आ आमदनी सेहो एक छेलैन। एके रंगक पुश्तैनी परिवारक सेहो छला, मुदा जहिना शिवचरण बाबूक पत्नी जिनगीमे संयुक्त रूपे संग देलकैन तहिना कालीचरण बाबूक पत्नी सेहो देलकैन। मुदा दुनूक पत्नीक चालि-ढालि नैहरेसँ बदलल। शिवचरण बाबूक सासुरक गाममे ने

एकोटा ताड़-खजूरक गाछ आ ने तेतैर-अमराक। जँ अनेरूआ गोरे जनैमो जाइ तँ जेतए जनमै तेतै ओकरा तोड़ि देल जाइ छेलइ।

मुदा कालीचरण बाबूक सासुरक गाम से नै छल। एक तँ गाममे ताड़-खजूरक बोन तैसंग तेतैरो-अमराक गाछक कमी नहि। लोक ओकरा भोजनक विन्यास बुझि सेवा भक्ति करिते अछि। कालीचरण बाबूक पत्नी जेहने तेतैरिक प्रेमी तेहने अमराक। एके घरमे पाँचटा लोक रहने पाँच रंगक मनोवृतियो होइते छइ। कालीचरण बाबूक पत्नी 'सिनेही' जेहने पढ़ै-लिखैक सिनेही तेहने विन्यास बना ओकर रस चुसैक सिनेही। तँए जहिना तेतैर-अमराक अध्ययन नीक जकाँ केने, तहिना विन्यास बनबैक विशेषज्ञता नैहरेसँ हाँशिल केने आएल रहैन। सासुर आबि पतिकें चारिम दिनक शास्त्रार्थमे भोज-विन्यास बनबैक कलामे परास्त कऽ चुकल छेली। जहिना तेतैरिक चटनी, नोन देल बनबैमे माहिर तहिना चीनी दऽ बनबैमे सेहो। जखन की तेतैर-अमरा तरकारीकें बनबै-बिगाड़ैमे सेहो तेहने सहयोगी। कोनो वस्तुक सुआद बढ़ा दैत तँ कोनोकें घटा दैत। जहिना दहीक मटकूरमे होइत। अमौट घौरैक लूरि सेहो भरपूर रहबे करैन। तँए कि परास्त भेलो पछाइत कालीचरण बाबूक जीवन-संगिनीमे कमी थोड़बे रहलैन। अर्जुनक तीर जकाँ एके वाणमे समुद्रमे पुल बनबैक शक्तिक आभास तँ कालीचरण बाबूकें भाइए गेल रहैन। जेकर जरूरतो बुझि पड़लैन आ अपन वर्चस्व बनबैक आभास सेहो भेलैन। वर्चस्वक ई आभास जे केतौ पत्नी लगा अपने बाजि पत्नीक गवाह बनि, मुहसँ कहबा दइ छेलखिन जे तेतैरिक खट-मट्ठी नीक नै बनल।

भात-दालिक अजश तँ गाम समाजकें घिना दइ छै, मुदा चटनी-अचार तँ चटनीए-अचार भेल। जे साहित्यकारक बीच सेहो होइए। वएह आग्रह जेहने मनही पेट कालीचरणकें बनौलकैन सएह सिनेहीकें सेहो बना पैंसइठ बर्खक अवस्थामे ठाढ़ कऽ देने छैन। आब

जखन समुद्रमे विवेकानन्द स्थान पहुँच तकै छैथ तँ बुझि पाबि रहल छैथ जे भरिसक डुमनाइ छोड़ि दोसर बाट नै अछि। जइसँ बुधि-विवेक सेहो विचलित भऽ गेल छैन!

जे बात शिवचरण बाबू आँकि लेलैन। मुदा जिनगीक बाल-शखा जँ बौरा जाए तँ ओहेन शखाकें बौराइत छोड़बो तँ उचित नहियें। मुदा बौरेनिहारो तँ ओते बौरा गेल छैथ, जे सम्हारमे आबि नै पौत। मुदा दरबज्जापर ओहन शखाकें कनाएबो उचित नहियें। मुदा हँसाएबो तँ बाल-बच्चाक खेल नहियें छी। घुनी लग बैसल वस्त्रहीन बबाजी माघक जाड़कें जहिना घूर लग बैस आगिकें चुट्टासँ आ जारनिकें हाथसँ घुमा हथियार बना रणभूमिमे डटि बजैए, तहिना शिवचरण बाबू बजला-

"भाय, समए ने केकरो संग छोड़बैए आ ने संग दइए। अपन चाइले लोक समैक चालि संग चलियाइए।"

कहि कुमुदिनीकें कहलखिन-

"ओना कातिकक उतार मास छी, मुदा तेना भऽ कऽ जरकल्ला नै आएल अछि, दिनक रौद तँ तीख अछिए। कागजी नेबो देल एक गिलास मीठ आ एक गिलास नमकीन, शर्बत पिआ दियनु। बहुत दिनक गप-सप्प दुनू भैयारीक छूटल अछि। कनी निचेनसँ गप करब।"

शिवचरण बाबूक बात सुनिते, जेना माघमे नहाएब मनमे उठिते देह भुटकए लगैए तहिना कालीचरण बाबूक मन सेहो भुटकलैन! बजला-

"भाय, जखन अपनो सभ जिनगीकें नै पकैड़ सकलौं तखन दुनियाँमे के पकड़त? सुबुध-प्रबुध तँ अपने सभ ने भेलिऐ।"

कालीचरण बाबूक बात सुनि शिवचरण बाबूक मन मिसियो

भरि मलिन नै भेलैन। एको मिसिया ऐपर नजैर नै देलैन जे 'अपनो सभ' किए कहलैन। बजबोक एहेन आदैत तँ लोककें होइते छै जे अपना संग अनको लपेटि लइए। मन गवाही दैते रहैन जे पोसपूतो तँ पूते ने होइ छै जे अपना अछि हिनका छुटि गेलैन। केते सुन्नर परिवार आ जिनगी अछि जे जहिना बच्चामे अधिक समए पठने-पाठनमे लगेलौं जे फड़ैत-फुलाइत पैंतीस साल शिक्षक रूपमे जुआनी गुजरल...।

...अखनो कौलेजमे जिनगी जकाँ रेडियो सुनिते छी, अखवार पढ़िते छी। तैसंग जहिना तीन-चारि घन्टा कौलेजमे पढ़बै छेलौं तहिना कौलेजेक पोता-पोतीकें पढ़ैबतो छी। जहिना सभ दिनसँ खाइत-पीबैत एलौं, तहिना खाइतो-पीबतो छीहे, तखन..?

मुदा मन ईहो कहलकैन जे जिनगीक डारिक चुकल बानर सदृश कालीचरण भऽ गेल छैथ। जेकरा खसैकाल चारू चांगुरो समटा कऽ पेटमे सटि जाइ छै, जइसँ बिना कोनो डारिपर लसकने-फसकने धरतीपर धाँइ दे खसैए, तहिना भेल छैन। तही बीच कुमुदिनी लोटा-गिलास नेने पहुँचली।

मुदा मन तँ कालीचरण बाबूक चढ़ले रहैन, बजला-

"पहिने नोनगर नीक आकि मिठगर?"

शिवचरण बाबू बुझि गेला जे शर्बतक सिरसिरीसँ मन शान्त नै भेल छैन। हाथमे कालीचरणकें गिलास पकैड़ते शिवचरण बाबू बजला-

"भाय, शर्बत जे अहाँ पत्नीक हाथक होइ छैन, ओ लूरि हिनका[21] सभकें जिनगियो भरिमे कहाँ भेलैन, ओहेन पत्नी तँ अहीं सन

[21] अपना पत्नी दे (कुमुदिनी)

भागशाली सभकेँ हाथ लगै छैन।”

शिवचरण बाबूक बात अन्तो ने भेल छेलैन आकि बिच्चेमे कालीचरण बाबू बजला-

“भाय, आन जे भेल, मुदा पत्नी तँ पत्नीए छैथ।”

कालीचरणक मुहसँ पत्नीक बराइ सुनि शिवचरण बाबूकेँ पत्नीपर झटहा फेकैक गर भेटलैन। गर ई भेटलैन जे अपन पत्नीकेँ झटहा बना फेकब। बजला-

“भाय, से कि कोनो नै बुझल अछि जे केना तीस-तीस, चालीस-चालीस कटोरीक पथार खाइकाल लगबै छैथ। पत्नी छैथ हमर जे थारीमे साँठि कऽ नेने औती, आगूमे रखि बजती जे कनी एकटा काज उसकौने अबै छी।”

आन पत्नी जकाँ कुमुदिनीक जिनगी नै, जे बमैक उठितैथ। असथिर मने विचारए लगली। ओना किछु दिन पूर्व तक लगसँ कुमुदिनी सिनेहीकेँ देखने, मुदा जहिना निरोगो देहमे बीमारी नुकाएल रहै छै आ लोक नै बुझि पबैए, तहिना तँ ने सिनेहीकेँ सेहो भेलैन। मुदा लगले भेलैन जे जहिना बोन राखए सिंह आ सिंह राखए बोन, जे अनीति देख अपन माइयो-बाप आ धियो-पुतोसँ लड़ि या तँ अपने भगैए चाहे मरैए, तहिना ने परिवारो-समाजमे जरूरत छइ। मुदा ओ के करत?

अपने बेथे-बेथाएल कुमुदिनी मलिन भेल बगलमे बैसल कखनो पति दिस देखैथ तँ कखनो कालीचरण दिस। जहिना ऐना घुसकौने चेहराक रूपो घुसैक जाइए तहिना तीनूक तीनू चेहरा घुसक-फुसक करए लगल। कालीचरणक लटकल मुँह देख शिवचरण बाबू बजला-

“भाय, दुनियाँ दिस तकैसँ पहिने नीक हएत जे अपना दुनू गोरे उमेरक मिलानी कऽ ली। जँ से नै कए नेने रहब तँ भैंसुर-भावोक

ठेकान नै रहत।”

उतरल जिनगीक संग उतरल कालीचरणक मन, अकास-पतालक बीच बसल धरतीपर पएर रोपि बजला-

“भाय, लिखल-पढ़ल सभ किछु हेरा गेल, तखन ठेकना कऽ कहै छी। पैंतीस बर्ख पहिने एम.ए. केने रही।”

‘पैंतीस बर्ख’ सुनिते अपन मिलानी करैत शिवचरण बाबू बजला-

“हमरो मन पड़ल। चालीस बर्ख पहिने हमहूँ एम.ए. पास केने रही। हँ, भरिसक पाँच बर्खक जेठाइ-छोटाइ दुनू गोरेक भेल।”

कालीचरण बजला-

“पाँच बर्खक पछाइते ने हमरो नोकरी भेल। जइमे अपने जे संगी बनि उपकार केलौं, ओ जिनगीमे थोड़े बिसरब। मुदा भाय! बाल-बच्चाकेँ पढ़ाबैयो-लिखबैमे आ आ बिआहो-दान करैमे तँ दुनू गोरे एकेठाम विचार केने रही, तखन..?”

कालीचरणक बात सुनि शिवचरण ठमकला। ठमकला ई जे मिसियो भरि असत् नै बजला अछि। मनमे ईहो भेलैन जे भरिसक विचार जगहपर आबि गेल छैन, तँए विचारक चोर पकड़ैक अनुकूल समए अछि। मुदा कृष्णोलीला तँ लीले भेल, तहूमे जखन चित्तचोर बनि चोरि करै छैथ।

आगूमे कालीचरण बाबूक सिहरैत चेहरा देख शिवचरण बाबू बजला-

“भाय, बाल-बच्चा सबहक नजैर केहेन अछि?”

माथ ठोकि कालीचरण बजला-

“भाय, जखने प्रोफेसरक बेटा इंजीनियर भेल आकि

इंजीनियरक बेटा प्रोफेसर, तखने छोर-तोर नेने महींस पानिमे गेल!”

दलकैत कालीचरणक मन देख शिवचरण बाबू पुछलखिन-

“बेटा सभ अपना लग रखैयो नै चाहै छैथ?”

बेटाक नाओं सुनि कालीचरणकेँ झड़कल चिड़ै जकाँ मन चुनचुनेलैन। अपन बेटा-पुतोहुक खिधांस केना करब? किछु छी तँ मिथिलाक माटि-पानिपर जीबै छी। मुदा लगले मन उनटलैन। उनटलैन ई जे अपने ने ऐठामक माटिपर पएर रोपने छी, मुदा ओ तँ ऐठाम नै अछि जे लाज-संकोच हएत। ओ तँ दूर देश, पर-देशमे अछि। तखन किए ने मुँह झाड़ि बाजब। बजला-

“भाय, की कहब! अपन हारल के बजैए, मुदा अपन बेथा जे कहबो ने करब, सेहो नीक हएत। जेते ऐ धरतीपर केलिऐ आ भोगलिऐ से तँ सबहक सोझहेमे अछि। जँ सभटा खाइए-पीब गेलिऐ तँ एते ऊपर धरि परिवारकेँ पहुँचौलिऐ केना, मुदा..?”

‘मुदा’ लग अँटैकते शिवचरण बाबू बुझि गेला जे भरिसक बाटपर धारक मोइन जकाँ आगूमे किछु पड़ि गेलैन। टोकारा दैत शिवचरण बाबू बजला-

“भाय, कियो तेसर थोड़े अछि जे सुनत तँ ओंगरी बतौत। बाल-बच्चाकेँ पढ़ाइ-लिखाइसँ लऽ कऽ बिआह-दान करैत परिवार ठाढ़ केलौं, मुदा तइ परिवारमे एहेन गंजन हुअए जे पुतोहुक मुहेँ ओ बात ‘बड़ खाधुर छैथ’ सुनि मुँह दाबि जीबी। जँ ओहन परिवारक लगसँ हटले रही सएह ने नीक।”

ठमकल मन कालीचरणक ठमकले रहलैन, बजला किछु ने। चुपचाप उठि कऽ चलैक उपक्रम केलैन। मुदा लगले मन रोकलकैन। रोकलकैन ई जे अखन तक शिवचरण बाबूक परिवारक हाल-चाल तँ बुझबे ने केलौं!

पुन: दोहरा कऽ कुरसीपर बैसैत कालीचरण बजला-

“ओ बच्चियाकेँ नै चिन्ह सकलौं?”

शिवचरण बाबू कहलखिन-

“पोती छी। पोता-पोती दुनू एतै रहैए। चारि गोरेक परिवार अछि, निचेनसँ परिवारमे जहिना सभ दिन रहलौं तहिना छी।”

शिवचरण बाबूक बात सुनि कालीचरणक मन सुकपाक करए लगलैन। मुदा मन ईहो कहैन जे एना दुनू गोरेक दू-दिसिया जिनगी बनि केना गेल! बजला-

“भाय, जहियासँ बेटा-पुतोहु घर छोड़ि बहराएल तहियासँ खोजो-पुछाड़ि छोड़ि देलक। जाबे नोकरी करै छेलौं, ताबे काजक अनमेनामे लगल छेलौं, नीक दरमहो छल जइसँ ओते नै बुझि पड़ै छल, बान्हल जिनगी बन्हाएल गति छल। मुदा नोकरी छूटला पछाइत सोलहन्नी निठल्लो बनि गेल छी आ रोगो-वियाधिक घर बनि गेल छी।”

आगू बजैले कालीचरणकेँ रहबे करैन आकि बिच्चेमे कुमुदिनी टोकलकैन-

“किए ने बेटाकेँ कहै छिऐन जे जाबे जीबै छी ताबे मनुख जकाँ केना जीब?”

कुमुदिनीक बात सुनि कालीचरणक मन जेना चहैक गेलैन। जइसँ आगू बजेक साहसे ने होइन।

कालीचरणक बेथाएल मन देख शिवचरण बाबूक मनमे भेलैन, जँ आगूक जिनगीक कोनो बात उठाएब तँ आरो चिरक्का लैग-लैग टुटि-टुटि टुकड़ी-टुकड़ी भऽ छिड़िया जेता। तइसँ नीक जे ओ पन्ने उनटा दिऐन। बजला-

"भाय, आब तँ सहजे पाकल आम भेलौं। जे दिन छी से दिन छी। तइले अनेरे सोग-पीड़ा करब नीक नहि।"

शिवचरणक बातमे कालीचरणकें गर भेटलैन, गर भेटते बजला-

"भाय, अखन जाइ छी, घुमैबेर भेँट करैत जाएब।"

विदा करैत शिवचरण बाबू बजला-

"जरूर, जरूर भेँट केने जाएब।"

❍

30 अक्टुबर 2014, शब्द संख्या- 3690

भैयारी हक

आने दिन जकाँ मनमोही काकी कदीमा, पीरार, इन्द्रकमलक फूल, ओलक गोभ, अड़िकंच आ तिलकोरक पात, सतंजा दालि आ सामा चाउर ओड़िया, हाँइ-हाँइ चाह बनबए लगली जे पति जाबे कलपर सँ मुँह-हाथ धोइ औता तइसँ पहिने चाह पहुँचा देब ने अपन करतब-परायण भेल। पुतोहुक आशा केते करब, हुनका तँ अपने बेड-टी चाही।

मनमोही काकी केतलीमे चाह-पत्ती दइले डिब्बासँ निकालिते रहैथ तखने मनमे उपकलैन जे अनेरे लोक बेटा-पुतोहुक भरोसे अपनाकेँ ओंगठा दइए। कहू जे जखन जन्म लेनिहारकेँ मृत्यु अनिवार्य छै जे सभ बुझै छी। मुदा तइ बीचमे बर-बेमारी, गाड़ी एक्सिडेन्ट, आकि गाछपर सँ खसैक आकि धार-धुरमे डुमैक चर्च-बर्च कहाँ अछि। जखन से चर्च नै अछि तखन एना होइ किए छै? जँ होइए तँ बीचमे केतौ-ने-केतौ अपन दोख तँ लोकक छइहे।

केतलीक चाह उधियेलैन। हाँइ-हाँइ मुहसँ फूकि भाफ निकाललैन। भाफ निकैलते खौलल चाह असथिर भेल। चीनी गिलासमे दऽ चाह छनलैन। दुनू गिलास चाह नेने मनमोही काकी पति लग पहुँचली। दुनू गिलास चाह देख सदानन काका बजला-

"एतै बैस कऽ अहूँ चाह पीबू, एकटा विचार करब अछि।"

मनमोही काकीकेँ अपन विचार रहैन, अपन जिनगी रहैन, अपन किरिया-कलाप रहैन। ओ आन केना आ किए बूझत। गुल्ली-डण्टा जकाँ जिनगीक किरियाक एहेन मिलान जे आगू फेकल जाएत। दू गिलास चाह पतिक सोझमे आनब ऐ दुआरे कर्तव्य बुझै छैथ जे अपना हाथमे चाह जेबाकाल मनमे बिसवास जैग जानि जे जिनकर हाथ पकड़ने छी हुनको हाथ चाह जेतैन तखन ने मन मानतैन जे पति-पत्नीक प्रेमिल जिनगी भेल। हम चाह पीलौं की नै, तैबीच जँ कोनो बौस नै अछि तँ पतिक कानमे देब अछि, की समस्या हुनका छैन से तँ ओ बजता। तइले दुनू गोरे विचारि लेब जे हँ तँ हँ आ नै तँ नहि। सएह ने हएत। एते बात मनमे अबिते मनमोही काकीकेँ सुफाँटि विचार जगलैन। जगिते बजली-

"ई तँ ओहने भेल जे गाए मारि कऽ जूता दान कियो करैए।"

असीम श्रद्धा सदानन काकाकेँ मनमोही काकीपर छैन। तँए मनमे किए उठतैन जे भोरे-भोर तेहेन बात बजली जे बिना दसटा गारि पढ़ने घरसँ निकलब कठिन अछि। बजला-

"जिलेबी-अमीरती जकाँ घुरछी लगा कऽ की बाजि देलिऐ। नै बुझलौं? पेरा जकाँ चापट बनेबै तखन ने बुझबै।"

अपन गुरुत्व देख मनमोही काकीक मनमे शक्ति जगलैन। शक्ति जगिते मन सुरखुरेलैन। सुरखुराइते मुहसँ बोल फुटलैन-

"केहेन बढ़ियाँ बात बजलौं जे लगेमे बैस चाह पीबू, एकटा विचार करब अछि।"

मनमोही काकीक सोझ-साझ बात सुनि सदानन काकाकेँ केतौ भौक-भाक नै बुझि पड़लैन। नजैरमे ऐबे ने केलैन जे कोनो 'बात' हौउ आकि 'विचार' पहिने गुचियाइए, तखन कटियाइए-टुटियाइए। अह्लादित होइत बजला-

"एना किए बियौहती लाबा जकाँ छिड़िआइ छी, सोझ मुहेँ बाजू।"

पतिक राग देख मनमोही काकीकेँ पहिने अनुराग उमरलैन। अनुराग उमैरते विराग जगलैन। विराग ई जगलैन जे पति-पत्नीक बियौहती बान्ह तँ पाछू बनल, पहिने दुनू मनुख भेलौं। बजली-

"ई जे कहलिऐ जे लगेमे बैस चाह पीबू से विचार हमरा विचारकेँ तोड़त की नै? अहाँ काजक औगातइमे भलेँ बजलौं से अपनो मन गवाही दइए। मुदा कहिया सोझहामे चाह आकि पानियेँ अखन धरिक जिनगीमे बैस पीलौं? अहाँकेँ आगू बैस खुअबैमे खुशी होइए तेहीसँ ने अपनो हीय जुड़ाइए। खेबामे हमरो कोनो कोताही किए हएत। तैसंग अपन चोरूका धएल-धरल खाइक छूट सेहो तँ दाइए दइ छी।"

सदानन काकाकेँ मनमे ओहिना जगलैन जेना रस्ता–बाट चलैत राही-बटोहीकेँ केतौ योगियो सँ भेँट होइए आ केतौ भोगियोसँ। तेतबे किए तैसंग भरथरी सन रजो ने रजोरज बिलैहते छैथ।

सदानन काकाकेँ मनमे जगिते मनुआँ ओलैर कऽ पलैर गेलैन। बजला-

"तीन दिन नोकरी छोड़ि गाम एला भऽ गेल। अखन धरि जे कमेलौं, घरकेँ अपन बुझि चलेलौं। किए ने अपनो दुनू परानी पेन्शन पकैड़ ऐगला जिनगी ससारब आ जे खेत-पथार अछि आकि नोकरियेक जमा-जिगिर अछि, तीनू भाँइकेँ सुमझा दिऐ।"

मनमोही काकीकेँ जेना ठोरेपर रहैन तहिना हूँहकारी भरैत बजली-

"नीक हएत। देखै छी जे जेहने चेतन तेहने धिया-पुता, तेहेन-तेहेन ऐंठल भऽ गेल अछि जे कखनो मनकेँ थीर रहए देत? तइसँ नीक

हएत जे भने तीनू भाँइकेँ अपन-अपन परिवार सुमझा देबइ। जानए जअ जानए जत्ता।”

अपन थाह थाहैत सदानन काका बजला-

“गमैया जिनगीमे बहुत ऊपर रहब।”

पतिक बात मनमोही काकी नीक जकाँ नै बुझि पेली तँए मन कनी आगू-पाछू घुरियए लगलैन। मुदा किछु बाजि नै रहल छेली।

सदानन काका काकीकेँ नीचाँ-ऊपर देखैत रहथिन जे परिवारक थाह पेब रहली अछि की नहि।

मुदा लगले मनमोही काकीक मनमे उठलैन- केतौ आनठाम छी जे बजैमे लाज-संकोच करब। अपना परिवारमे छी। अपने दुनू परानीए छी, तखन जे धखाइ छी ओ अनेरे। मन फुरफुरेलैन, बजली-

“कनी बिलगा कऽ कहियौ ने, जे केते रूपैआ महिना भेटत। तखन ने हमहूँ घरक खर्चा-वाड़ी जोड़ब। दुनूक मिलानसँ ने आगूक गाड़ी ससरत।”

पत्नीक विचारसँ सहमैत सदानन काका बजला-

“पेन्शनक हिसाबसँ परिवारक एक विभागक खर्च पकड़ाएत मुदा दोसर-तेसर तँ तैयो छुटिये जाएत। जखन सोलहन्नी घरक भार बेटा सभकेँ देबै तखन तँ ईहो ने सुमझा देबै जे जहिया हमरा कान्हापर घरक भार आएल तहिया परिवार केहेन रहै, आ आइ केहेन अछि, अगुरबारे ईहो पुछि लेबै जे बौआ कोन मुहेँ केते दूर धरि माने केते आगू धरि परिवारकेँ ससारबह।”

बजैक बेगमे तँ काका बाजि गेला मुदा पाछू उनैट तकिते मन पड़लैन गामक एकटा दू-भैयाँ भैयारीक परिवार। जइमे पनचैती करए गेल छेलौं। भेल ई जे दुनू भाँइक उमेरक दूरी पनरह-बीस बर्खक

बीच। दोसर भाइक जन्म भेला तीन बर्खक पछाइत पिताक मृत्यु भऽ गेलैन। घरक भार जेठ भायपर चैल एलैन। अपने तँ पिताक अमलदारीमे मैट्रिके पास केलक जे घरक भार पड़ने ओतै ठमैको गेलै, मुदा पितातुल्य बनि छोट भाएकेँ बी.ए. धरि पढ़ेलक। बिआह-दान केला पछाइत जखन भिनौजी हुअ लगल तखन वएह छोट भाए जेठ भायकेँ कहलक-

“तूँ हमरा ले की केलह?”

छोट भाइक अनसोहाँत बोल जेठ भायकेँ बरदाश नै भेलै। पञ्चनमेमे बमैक कऽ बाजल-

“मुइलहा बापक बेटाकेँ जीतहा बेटा बना ठाढ़ केलिऔ, आ तोहीं हमरा कहै छेँ..?”

ले बलैया! दोसरे झगड़ा उठि गेल जे ऐठाम मुइलहा बाप की करए एला। मुदा जेठो भाइक तँ अपन कर्तव्यक शक्ति जगलै, तँए ओहो पाछू केना हटैत। तहिना जँ बेटो पुछि दिअए जे अहाँ हमरो-ले की केलौं? तइले जँ अपन तैयारी करि कऽ नै रखि लेब तँ विधान सभाक मंत्री जकाँ ने बाजए पड़त जे ‘बुझले ने अछि।’ तखन तँ यएह ने जे दुनू परानी अपन-अपन बेटाक प्रति केलहा काजक हिसाबक खतियान बना रखि ली...।

बिच्चेमे मनमोही काकी बजली-

“कोनो बेटाकेँ जे अपन हिसाब देबै से ओहो अपन हिसाब देत तखन ने! जहियासँ कमाइबला भेल अपन घरवाली आ धिया-पुता लऽ कऽ अन्तै रहैए, हमरे की करैए?”

पत्नीक विचार सुनि सदानन काका अपन पैरुखपनक परिचए दैत बजला-

“कियो नहियेँ देलक तँ हमरा खगबे की कएल। अपनो तँ

काल्हि धरि दरमाहा उठेबे केलौं, ओहीमे सँ ने तीनू भाँइकेँ पढ़ा-लिखा बिआहो-दान केलिऐ आ दुनू परानी गुजरो केलौं। सएह ने कहबै। अहाँ की कहबै से तँ अहीं ने बाजब?”

सदानन काकाकेँ मनमोही काकीसँ पुछैक कारण रहैन जे जँ दुनू परानी मिलि ठाढ़ होइ तँ परिवारकेँ के कहए जे दुनियोंकेँ अपन लीला देखा सकैए, ई तँ परिवारे भेल। मुदा पतिक विचार मनमोही काकीकेँ तीनू बेटाक बीच आनि ठाढ़ कऽ देलकैन। मनमे उठलैन माइयक सेवे की? माए तँ सहजे माइए भेली।

तीनू बेटाक बीच कएल अपन सेवाकेँ जखन काकी निहारए लगली तँ बुझि पड़लैन जे जइ हिसाबे जेठका-छोटकाकेँ छातीक दूध पिऔलिऐ तइसँ कम मझिलाकेँ नसीब भेल। मुदा ओइमे हमर कोन दोख। रोगा गेल रही, डाक्टरे मना कऽ देलैन जे बच्चाकेँ दूध पिऔलासँ बच्चो बेमरयाह भऽ जाएत। एक बीमारी भगबैमे दोसरकेँ बजाएब नीक थोड़े होइत। तहीसँ ने मझिला दूधकटू भऽ गेल।

जेकरा बच्चेमे खिदखिदैनी पकैड़ लेलकै ओकरा जोड़बो साध थोड़े छल, मुदा तैयो जान तँ बँचाइए लेलिऐ। किछु अवधात जरूर भेलै। जइसँ दूधक फूल नै अन-पानिक फूल बनि ठाढ़ भेल। जे से बुधिमे कनी-मनी कमी आबिये गेलइ। जेठका-छोटका नीक माने अधिक दरमाहाबला नोकरी करैए आ मझिला गामेक स्कूलमे मास्टरी करैए। मुदा ओहो तँ पितासँ कम नहियेँ भेल। जही स्कूलमे पिता नोकरी केलखिन तही स्कूलमे ने ओहो नोकरी करैए...।

मनमोही काकी बजली-

“परिवारकेँ जे बुझि अखन तक केलिऐ से ऊपरबला जनै छैथ।”

पत्नीक बात सुनि सदानन कक्काक मनमे भेलैन, अनेरे सप्पत खाइ छैथ। ऊपरबला तँ सभ किछु जनिते छथिन तखन फेर गवाही

रखैक कोन काज।

मुदा मनमे ईहो होइन जे जखन परिवारक सभ किछु बेटा सभकेँ सुमझा देबै, तखन तँ एहनो भऽ सकैए जे, जहिना ऑफिसक पैघसँ पैघ ऑफिसरपर सेवा-निवृतक पछाइत चोट खेलहा चपरासियो मोँछ ऐंठैत आँखि गुर्ड़ैत रहैए। जँ कहीं तहिना भेल आ उसरागा गाछ जकाँ बुझि परिवारक सभ कियो छोड़ि दिअए तखन?

मुदा जँ दुनू परानियोँ एक विचारमे नै रहब तखन तँ अनेरे बाटमे बटमारि खाइत पहपैटमे पड़ब। जइसँ डेग-डेगपर पहपैट ठाढ़ होइत रहत। से पहपैट मेटबैले संगीक काज पड़बे करत। मुदा संगियोँ तँ संगीए होइए, नीकक बेरमे चुप्पी लाधि देत आ अधला बेरमे सोलहन्नी दोख लगा देत।

मुदा लगले मनमे उठलैन जे संगियोँ तँ रंग-रंगक होइए किने, कियो गंगामे पसि संगी बनैए तँ कियो कनगुरिया आँगुरसँ खून निकालि सिनेही बनैए। ओना रस्तो-पेरा, चाहोक दोकान, गाड़ियो-सवारी आ पसीखनोमे संगी भेटते अछि। ओ तँ निर्भर करैए संगीक संगपना निमाहैक नजैरमे। मुदा से सभ बात सदानन काकाकेँ मनमे नै अँटकलैन। तेसरे विचार उठि गेलैन जे दुनू परानी-बीचक अधिक भार अपने ऊपर अछि, ओही भार बँटैले ने पत्नी सहयोगी भेली। जँ से सहयोगी नै होइतैथ तँ वंश बढ़बैयोमे एते कष्ट-पीड़ा सहि सहयोगी किए बनितैथ? तखन तँ भेल जे अपने पढ़ल-लिखल समाजमे बैस देश-दुनियाँक नीक गपो-सप्प करै छी, आ ओ घरमे असगरे घरैया काजमे सटल रहै छैथ। तखन जँ अपनो ई नै विचारब जे जेते रतिचोर अछि ओते बेसी शत्रुओ तँ पुरुखसँ बेसी नारीकेँ होइते छैन। जँ जिनगीमे किच्छो परहित नै केलौं तँ ओ जिनगीए की? तँए जँ तामस-पीड़ितमे किछु बाजिये जाइ छैथ तँ ओइपर ओतबे धियान देबा चाही

जेते दइ-जोकर अछि। मन ठमकलैन। ठमैकते सदानन काका बजला-

"एकटा बात तँ छुटले रहि गेल। जँ ईहो नै विचारि लेब, सेहो तँ नीक नहियेँ हएत?"

अपनाकेँ विचारी बुझि मनमोही काकीक मन मोहिया गेलैन। विचारी तँ असल तखने ने जे जेकर विचार करी ओकर जड़िसँ छीप धरि आकि मुहसँ नाँगैर धरिक करी। जँ से नै करब तखन तँ सूरदासक दालिक घी भऽ जाएत। तखन?

तखन तँ यएह ने नीक हएत जे विचार करैसँ पहिने विषयकेँ नीक जकाँ बुझि अपन विचार पुछि लिऐन। जँ सुफाँटि विचार छैन तँ बड़बढ़ियाँ, नै जँ उफाँटि छैन तँ ओकरा सुफाँटि बना बाजब। ओना करैबला कर्ता तँ वएह भेला। हम तँ संग पुरैबला संगी भेलिऐन। ओना काज करबाकाल तँ काज अपन नैना-जोगीनकेँ संग रखिते अछि। बजली-

"कोन एहेन बात पाछूसँ मन पड़ैए।"

मनमोही काकीक बात सुनि सदानन कक्काक मन मधुआ गेलैन। जहिना कड़ू लगलापर मुँहक ठोर-जीह सुसुआइए, खट्टा लगलापर चटपटाइए, तहिना भेलैन। खट-मधुर मुस्कान लाबा जकाँ भरभरा-भरभरा निकलए लगलैन! बजला-

"जहिना कोनो संस्थानमे पैछला पीढ़ी ऐगला पीढ़ीकेँ भार सुमझबै-काल कुरसी-टेबुलसँ लऽ कऽ खतिआन, बोही, तिजोरी तकक भार ने सुमझबए पड़ै छइ। तइ सुमझबैमे एकटा छुटि रहल अछि।"

जिज्ञासासँ जगैत मनमोही काकी बजली-

"से कथी छुटि रहल अछि?"

मनमोही काकीक जिज्ञासा देख सदानन कक्काक मन हटकलैन। हटैकते पाछू हटलैन। पाछू ई हटलैन जे परिवारक बात छी, सभ कियो- तीनू बेटो-पुतोहु आ अपनो दुनू परानी- तँ अपने भेलौं। मुदा परिवारो तँ समाजेक बीच अछि। जहिना नीक-अधलाक विचार परिवारमे होइए तहिना तँ समाजोमे होइते अछि, तखन औगुता कऽ किछु करब आकि विचारब से नीक नै हएत। तैबीच पत्नी तगेदा केलकैन-

"की कहए लगलौं आ चुप किए भऽ गेलौं?"

सदानन काका बजला-

"जे कहए लगलौं तइमे किछु विघिन-बाधा मनमे उठि रहल अछि।"

'विघिन-बाधा' सुनिते मनमोही काकी बजली-

"केहनो विघनेस हौउ, ओ ते अपन मनेसँ ने पार लगौने ने पार लगत।"

"हँ, से ते हएत। जे अपन धरिक रहत ओ ने अपने पार लगौने पार लगत मुदा जे तइसँ आगूक रहत से केना हएत?"

सदानन कक्काक गोल-मोल बात मनमोही काकी नीक जकाँ नै बुझि पेली। मुदा मनमे विचारीक सरूप तँ चमैकते रहैन। बजली-

"अखन परिवारमे दू परानी भेलौं, आ दूटा बाल-बोध पोता-पोती भेल, जेकरा विचारी नहियेँ मानल जाएत, मुदा बेटा-पुतोहु तँ चेतन ऐछे, ओकरोसँ विचारि लेब नीक हएत।"

काकीक बात काकाकेँ नीक लगलैन। नीक ई लगलैन जे जेते बेसी लोक एकमत भऽ काज करब तेते ने ओ बेसी चमकबो करत आ झलकबो करत जइसँ सिझबो करत आ पकबो करत। तहूमे जखन

जिनगीमे अपना जनैत कहियो, खेतमे काज करैबला खेतिहर जकाँ छह-पाँचक भीर नै गेलौं, भलेँ हाइ स्कूलक शिक्षक बनि जिनगी किए ने बीतेलौं, तखन साँचमे आँच की। बजला-

"अहाँक विचार मानि गेलौं। अखन तँ कृष्णानन विद्यालय जाइक तैयारीमे हएत, साँझू पहरक नाओं कहि दियौ, जे एकटा विचार करैक अछि।"

"बड़बढ़ियाँ।" कहि मनमोही काकी चुप भऽ गेली।

जिनगी भरि सदानन काका अपने पंचायतक हाइ स्कूलमे शिक्षक रहला। ओना तीस सालक विद्यालयक जिनगीमे आन-आन शिक्षक सभसँ भिन्न चालि-ढालि रहलैन। जहिना गाए-महींसक बच्चाकेँ शुरूहेसँ सिङ्हानी लैत-लैत मलकारे मरखाह बना दैत तहिना सदाननो काकाकेँ भेलैन। नमहर ग्राम पंचायतमे जहिया हाइ स्कूल खुजए लगल तहिया सदानन काका संस्कृत विद्यालयमे आचार्यक परीक्षा दऽ देने रहैथ, रिजल्ट पछुआएल रहैन। एक तँ पंचायतमे हाइ स्कूल बनि रहल अछि जइमे हमरो खगता छइ। सदाननक मनमे जगल, संस्कृत-मैथिली पढ़ाएब? उचित-उपकारक दुनू बाट मन देखलकैन। परीक्षासँ निचेन रहबे करैथ, दिन-राति एकबट्ट कऽ विद्यालय बनबैमे बलिदान[22] केलैन। नमहर पंचायत, अखुनका जकाँ दू हजरिया नै, तेरह-चौदहटा गाम मिला पंचायत। अखन ओ चारि पंचायत भऽ गेल अछि। गामोक लोक बुझैत जे सदानन शिक्षक बनै-जोकर छैथे। तहूमे गाममे एहेन तीने गोरे छैथ जे शिक्षक बनै-जोकर छैथ।

स्कूल बनल, साल भरि तँ जहिना विद्यार्थी तहिना शिक्षक रहला मुदा साल भरिक पछाइत, जहिया दूर-दराज गाममे देवस्थान बनने

[22] बल दान

देखनिहारक भीड़ लगैए तहिना विद्यालयक सेहो भेल। साल भरिक पछाइत विद्यार्थीक संख्या बढ़ल। लगमे स्कूल बनने किए कियो पएरे बेसी दूर जा कऽ पढ़त। तहूमे मैट्रिकक परीक्षा सौंसे बिहारक एकरंग होइ छइ। पढ़निहार केतौ पढ़ि सकैए। फीस बढ़ल, गौंआँक सहयोग बढ़ल, सरकारी अनुदान भेटल। वेतन निर्धारित भेल। सातटा शिक्षक भेला। सदानन काकाकेँ साल भरि दरमहे बनबैमे लैग गेलैन। संस्कृत विद्यालयक सर्टिफिकेट रहैन। मुदा जखन सरकारीए मनता भेट गेल तखन गामक विद्यालय किए ने मानत। सभ शिक्षकसँ पाछू वेतन निर्धारित भेलैन। तहूमे केते मेलक वेतन भेल। प्रधानाचार्यकेँ पढ़बैसँ आँफिस सम्हारै धरिक भार तँए आनसँ दोबर दरमाहा भेलैन। सदानन काकाकेँ सबुर ऐ दुआरे रहैन जे अपन गाम-घरक बच्चाकेँ पढ़बै छी, दोसर समाजक संस्था छी, ओकरा पढ़ल-लिखल लोक नीक जकाँ जँ नै चलौत तँ संस्था ओहिना ने उपैट जाएत जहिना गाम-गामक पुस्तकालय, वाचनालय उपैट गेल। तैसंग मनमे ईहो होइन जे डेढ़े कोस ने, मुदा आएब-जाएत तँ परिवारेसँ अछि, डेराक भाड़ा आ मेसक खर्चो तँ नहियेँ अछि। तँए सबुर रहबे करैन। मुदा तैयो मनमे कखनोकाल हेबे करैन जे आन जकाँ थोड़े पतित हएब जे दरमहो लेबै आ खानगियो फीस लेबै। घरसँ-विद्यालय जाइ-अबैमे जे घन्टा भरि समए लगैए तैबीच मुँह सीने रहै छी आकि जइ बच्चा-संग रहै छी ओकरा किछु सिखैबतो जाइ छिऐ।

अपन काज देख संतोष भेलैन। सबुरक गाछमे सबुरदाना फड़लैन। मुदा लगले एकटा असंतोष सेहो जगलैन। जगलैन ई जे जखन एके विद्यालयमे छी तखन विज्ञान आ अंग्रेजी पढ़ौनिहार किए निच्चाँ नजैरे देखैए? की ओ घटिया बुझैए आकि नीक-अधला कमाइक बुबकी छै?

फेर मनमे भेलैन जे अनेरे मन वौअबै छी। भाय, दुनियाँ बेकता-

बेकतीक छी, जे जेहेन नजैरे देखत तेकरा हमहूँ तेहने नजैरे देखब। घरसँ बाहर धरि बाल-बोध तँ पसरले अछि, काजक कमी अछि, कमी अछि केनिहारक। जखन करते नै तखन धरता केतए-सँ औत। जखन करते-धरता नै तखन दुनियाँ कुन्ज केना बनत। ओ तँ सभ दिन उजड़ले-उपटल रहत किने! सदानन काकाकेँ जिनगीक बीच कएल अपन काज इतिहासक पन्नामे उनटलैन। उनैटते देखलैन जे बाल-बच्चाक सेवामे पिताक कोन काज बाँकी रहल, मन बमैक गेलैन। बजला-

"एकटा बात कहू ते कृष्णक माए, बेटा-बेटीक सेवामे अपना जीबैत की बाँकी रखलिऐ जे बेटा-बेटीक कर्जखौक बनब।"

पतिक बात सुनि मनमोही काकीक मन बेटा दिस भँसि कऽ चैल गेलैन। दुनू परानी सोझहा-सोझही रणभूमिमे ठाढ़ भऽ गेली। बेटाक गोली पकैड़ गुलेती चढ़ा छोड़लैन-

"से अहाँकेँ के कहलक जे बेटाक कलंक जोड़ै छिऐ।"

पत्नीक विचार मनकेँ झमका देलकैन। कहली तँ नीके बात। आइ तक जखन बेटा-पुतोहु मुहेँ कोनो अवाच कथा नै सुनलौं तखन अछाहे भुकब, तँ कुत्ताक भुकब भऽ जाएत। विचार तँ सोझराएले अछि मुदा पत्नी जे अपना दिससँ ससैर बेटा दिस चैल गेली ओ केना अपना दिस औती? जँ नै औती तखन जे काज[23] करए चाहै छी से केना हएत। कखनो बेटा दिससँ तँ कखनो पुतोहु दिससँ कखनो पोता दिससँ तँ कखनो पोती दिससँ आगूमे ठाढ़ हेबे करती।

जखने से भेल तखने झंझ-मंझ हेबे करत, जखने झंझ-मंझ हएत, तखने झंझट ठाढ़ हएत, जखने झंझट ठाढ़ हएत तखने कोट-कचहरीक ममिला हएत! कोट-कचहरीकेँ एतबो होश नै छै जे जइ

[23] तीनू बेटाक बँटवारा

बच्चाकेँ काल्हि कौलेजमे फीस दिअ पड़तै, जइ उतरीधारीकेँ तेरह दिनक बीच उतरी हेट करए पड़तै, ओकरा केना तीस-तीस बरिस, चालिस-चालिस बरिस विषयकेँ बुझैएमे लैग जाइए?

पाशा बदलैत सदानन काका बजला-

"हम ते घरसँ बहार धरि, दिन-राति बच्चाकेँ छोड़ि बोनाएल रहै छेलौं, असल तँ अहींक ने लगौल फुलवाड़ी छी।"

'फुलवाड़ी' सुनि मनमोही काकीक मन मोहिया गेलैन। मोहिया कऽ ओइ पीड़ा लग पहुँच गेली, जइ दिन बच्चाकेँ जन्म देने रहथिन। मुदा थाल-कीचमे पड़ल कमलक बीआ जनैम पानिक तरे-तर आगू उठैत जहिना ऊपर आबि कमलासन्न पहुँचैत तहिना मनमोही काकीक मनमे भेलैन, बजली-

"भने साँझू पहर चारू गोरे बैस कऽ विचारि लेब। अखन काजो-उदेमक बेर अछि।"

अपन पिण्ड छुटैत देख सदानन काका बजला-

"काजकेँ काज जकाँ बुझबै, ई नै कहब जे बिसैर गेलिऐ। अखुनका कहल रहत तँ भरि दिन मने-मन विचारबो करब।"

पत्नीकेँ लगसँ हटिते सदानन कक्काक मनमे उठलैन, जेते पिता हमरा पढ़ैमे खरच केलैन, खरच की केलैन जे बच्चामे घरक काज नै करौलैन, किताबेक संग खैयो-पीबै आ रहैयोक बेवस्था विद्यालैयेमे रहए, तइसँ केते बेसी खरच बेटाक पढ़ैमे केलौं? जँ से नै केलौं तँ बिहार सरकारक उच्च कोटिक पदाधिकारी केना भेल। एकटा नै दू-दू टा। तेसरो तँ अपना लग तक पहुँचले अछि। जेठ बेटा रमानन जखन कौलेजमे पहुँचल, ओही समए हमरो दरमाहामे संशोधन भेल, जइसँ आमदनीमे उछाल आएल। अपन गमैआ जिनगी रहए, अठवारे धोती-कुर्ता-गंजी साफ करैत रहलौं, अमल-मे-अमल तमाकुल अछि, सेहो

वाड़ीमे उबजैबते छी। बच्चेसँ कृष्णानन मन्द बुधिक रहल। दूधकटू भेने अहिना होइ छइ। मुदा ओहो तँ कौलेजसँ एम.ए. पास करि कऽ ओही हाइ स्कूलमे शिक्षक अछि, जे अपने छेलौं। तेसर श्यामानन वित्त विभागमे पदाधिकारी अछि। तीनूक बीच बँटवारा करब।

जहिना परिवारमे नव काज उठने, बच्चाकेँ स्कूलक नीक रिजल्ट पेने, आगूक जिज्ञासा जगै छै तहिना कृष्णानन दुनू परानीक बीच जगल। अपन नैहरसँ सासुर धरिक अनुभव कृष्णाननक पत्नीकेँ। गामो तँ जीवन-विज्ञानक विद्यालैये छी। मुदा कृष्णाननक जिनगी बन्हौटा जकाँ, तँए बेवहारिक समतल काजक अनुभव रहैन। तहूमे माए-बापक बीच बेटा जेहेन सहलोल होइए, तहिना।

चाह-पीला पछाइत चारू गोरे- सदानन, मनमोही, कृष्णानन आ हुनक पत्नी- सुशीला- एकठाम बैस पहिल विचार केलैन जे बेटा-पुतोहुकेँ जे किछु बजैक हएत ओ माएकेँ कहथिन। पिता सुननिहार हेता। माइक विचारक पाछू अपन विचार रखता...।

सदानन बजला-

"परिवारक सभ छी, ओ दुनू भाँइ ऐठाम नै अछि, मुदा ओकरो हक-हिस्सा तँ छइहे। तँए जँ अपना चारू गोरे नै विचारि लेब तँ पाछू झंझट हएत। जँ एकरंगाह काज तीनू भाँइक बीच रहैत तँ किछु संतोखो होइतए मुदा ओ दुनू सरकारी मशीन जकाँ घटबीए हिसाब जोड़ैए। तैठाम घटाउकेँ केना बढ़ौउ बनौल जाएत?"

सुशीलाकेँ नैहर-सँ-सासुर धरिक अपन माए-बापसँ लऽ कऽ पतिक माए-बापक सेवा धरिक सेवाधर्म मनमे जगले रहैन, सासुकेँ कहलखिन-

"माए, हिनकर तीनू बेटा एक कोखिक छैन, मुदा भैयारीमे समाज माझिल-साझिल बेटाकेँ जेठ-छोटसँ किरिया-कलापमे हटा देने

छै जइसँ जेठौंस-छोठौंस केते रोग परिवारमे पकैड़ नेने अछि। मुदा तीनू भैयारीमे जे सेवा करैत रहलयैन, ओहो तँ नजैरमे रखि कऽ बजथिन किने?"

मनमोही बुझबे ने केलैन जे पुतोहु की बजली। बिनु बुझनहि बाजि उठली-

"हमरा लिऐ तीनू बेटा एकेरंग अछि।"

सदानन कक्काक मनमे जोड़क झमार लगलैन। सहैम गेला। तखन?

तखन तँ यएह ने नीक जे अखन अहिना जक-थक रही। मुदा जिनगियोक तँ ठेकान नै अछि, जँ तीनूकेँ मन-माफित विचार बना नै देबै तखन तँ पछाइत परिवार रणभूमि बनि जाएत! कृष्णाननकेँ कहलखिन-

"बौआ, जेठ-छोट भैयारी परिवारमे किए बाधा उपस्थित करत, किए ने सबहक राय-विचारसँ निर्णए कऽ ली।"

❍

4 नवम्बर 2014, शब्द संख्या- 3131

परिचय



नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○

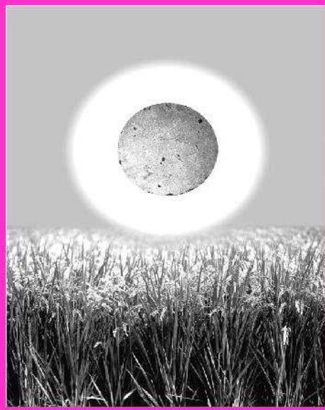
पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-93-87675-14-8

4th Edition

गुड़ा-खुद्दीक रोटी



जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

गुड़ा-खुद्दीक रोटी

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण भाव

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ

बालुक ढेरपर बैसल फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ

सादर समर्पित...

ISBN : 978-93-87675-03-2

दाम : ₹ 251/-

चारिम संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

GURA-KHUDDIK ROTI
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

कथाक सत्तैर

डकरा हाल

दिन-राति खेतीक उन्नैतक समाचार रेडियो-अखबारमे सुनि-पढ़ि अपनो मन उमकल जे जखन खेत अपने अछि तखन पथार किए ने लागत?

जखन एकटा आमक गाछ फड़ि कऽ निच्चाँमे पथार लगा दइए तखन चारि बिघा खेत कम भेल? तहूमे दू क्विन्टल-अढ़ाइ क्विन्टल कट्ठा धान उपजत।

एक तँ ओहिना पचीस-तीस रूपैए किलो माने पचीस-तीस साए रूपैए क्विन्टल चाउर बिकाइए, तैपर अस्सी कट्ठाक उपजा भेल। मने-मन हिसाब जोड़लौं जे जखन अपन देशी टेकनिकमे एते हएत, तखन जँ जपानी टेकनिकक देखसी करी तँ आरो केते बर बेसी हएत।

एक दिस खेतक सीमा दऽ उपजा जोड़ी तँ बुझि पड़ए जे जहिना नवका-नवका बैंकक एजेन्ट गुना-भाग करैत तीने बरीसमे लीखकेँ लाख आ कौड़ीकेँ करोड़ बना दइए तहिना बुझि पड़ल। मने-मन गुड़-चाउर फाँकऽ लगलौं।

पौरु साल मधुबनी गेल रही। गिरहस्ती करिते छी। बीआ-बालिक दोकानपर गेलौं, तँ रंग-बिरंगक बीआ-बाइलपर नजैर गेल तँ देखलिऐ। देखते दोकानदारकेँ पुछलिऐ-

"सभसँ नीक उपज होइबला धानक कोन बीआ अछि?"

एके-दुइए केतेको फॉर्मक बीआ देखबैत दोकानदार कहलक-

"सभसँ नीक बीआ ई अछि।"

प्लाष्टिक झोरामे किलो भरि-भरिक बीआक थैली बनल। झोरा तरमे बीआक रंगत की रहै से तँ ऊपरसँ नइ बुझि पड़ैत रहए मुदा ऊपरमे जे लिखल रहै, ओ खूब ललटगरसँ। ललटगर देख अपनो मन मानि गेल जे बीआ नीक अछि। डेढ़ साए रूपैए किलोक दरसँ एक पैकेट बीआ कीनि लेलौं।

गामक बाटमे जखन अबैत रही तखन वएह बीआ, वएह खेत, वएह गिरहस्ती मनमे घुरियए लगल तइसँ कोटक जे काज कऽ कऽ घुमल रही सेहो बिसैर गेलौं। ओना कोटोक काज केनहि आएल रही, मुदा से सभ मनमे नइ रहल, सोलहन्नी हेरा गेल।

मनमे उठल, एते दामी बीआ अछि, ओना एके किलोसँ दस कट्ठा अबाद हएत, तइ हिसाबे बहुत महग नइ भेल। मुदा ऐसँ पहिने एते महग ने कहियो सुनने छेलौं आ ने कीनने छेलौं, तइ हिसाबे तँ महग भेबे कएल। ओहुना किलोक हिसाबसँ कट्ठा धानक खेती होइते अछि। ओ चाहे बौगहा धान हुअए आकि बौगहा बीआ, दुनूक हिसाब एक्के अछि। तेतबे नइ दोकानदारोक मुहेँ आ रेडियोमे सुनिते छी संगे पत्रो-पत्रिकादिमे पढ़िते छी तँए अबिसवासक कोनो अँकुरे ने मनमे अँकुरल।

बीआक विश्वसनीयतापर मन आगू बहटल। जेना एकेठाम एके गाछीमे एकटा आमक गाछ हौउ आ दोसर कोनो आन फलक, तैठाम तँ एहेन होइते अछि जे एकटा फलक गाछ देखैत-देखैत दोसरोपर नजैर चलि जाइए, तहिना मनमे भेल जे आनो किसान सभकेँ कहिऐन आकि नइ कहिऐन?

भदवारिमे जहिना अधिक पानि रहने यत्र-कुत्र धारा बनि धार बहऽ लगैए तहिना मनमे बहऽ लगल। बहऽ ई लगल जे मर्दगानी तँ ओइठाम होएत जैठाम लोक बिनु ढोल पीटने काज करैत देखबैए। मुदा लगले भेल जे जे समाजक गति-विधि अछि तइमे तँ जाबे चुपचाप काजकेँ नइ संचालित करब ताबे तँ आने छरैप-छरैप आबि आगूमे कुदैत रहत। तखन तँ अपने पछुआएलक पछुआएले रहब?

हँ-निहँस किछु काइए ने पबैत रही। साइकिलक झमार फुटे आ मनक झमार फुटे झमारैत रहए। मन घोर भऽ गेल। मुदा कनियेँ आगू बढ़लौं कि ओही घोर मनमे घीक मट्ठा बनऽ लगल। मट्ठा बनिते भेल जे जँ आनो-आन किसानकेँ कहबैन आ कहीं ओहो बुझि कऽ करता तँ आरो बेसी नीक हएत किने? गामक उपज बढ़त, किसानक दशामे सुधारो औत। तइमे हमर नोकसाने की हएत। ऐसँ तँ गामक उपजे बढ़त किने?

किछु समए तँ निर्णये ने कऽ पेलौं जे लोकोकेँ कहिऐ आकि नइ कहिऐ। मुदा से भेल नहि, एके-दुइए बीआवान भऽ गेल। तेसरे दिन सुनलौं जे दस-बारह गोरे मधुबनीसँ बीआ मंगा लेलैन।

मनमे थोड़े आफियत भेल। आफियत ई भेल जे खेतीमे जे समचाक जरूरत होइ छै- माने दवाइ छिटैक यंत्र, पानिक यंत्र, खेत जोतैक यंत्र इत्यादि- तहूमे सुविधा हएत।

ने अपना बोरिंग अछि आ ने जइ बाधमे खेत अछि तइमे आनोकेँ छैन। मुदा लाखो बोरिंगक बोरिंग अकासे छी, जँ समधानि कऽ एक दिन बरिस जाए तँ ओते पानि पुरबैमे बोरिंगकेँ केता दिन लागत। संजोगो नीक भेल जे अगते जेठुआ बरखा भेने बीआ पाड़ैक गर लगि गेल। किलो भरि बीआ अछि जे अदहे धुरमे ने पाड़ल जाएत, भेल तँ डेढ़ डेग खेत तैयार करैक अछि, तहूमे नीक बरखा भेने खेतो

हल्लुके भऽ गेल अछि। बरखा परहक भिनसुरका समए, काजो करैमे नीक लागल। बीआ पाड़ि खुशीसँ बीआक अँकुरैक बाट तकऽ लगलौं।

बीआ तँ पाड़ि देलिऐ मुदा हालक हाल बुझले ने रहए। जे पछाइत बुझलौं। जँ एको रंग बरखा जाड़ो, गर्मियों आ बरसातोमे होइ तँ की जमीनमे एके-रंग नमी बनत? गरमीमे जरल जमीनक नमी रहै छै, जाड़मे शीताएलक नमी रहै छै आ भदवारिक नमी अलग रहै छै जइसँ तीनूमे अकास-पतालक अन्तर हेबे करत किने। खाएर जे से, बीआ-अँकुरैक बाट ताकए लगलौं।

अपन हिसाब बुझल रहए जे छबे सूइया नबे गाछ होइ छै। मुदा तइसँ दू दिन पहिने भऽ गेल! कोदारिक पाड़ल बीआ कोनो बेसी तर चलि गेल आ कोनो ऊपरेमे रहल। किछु नमीसँ मारल गेल, किछु सुखने- माने ऊपर रहने- मारल गेल। बीआ जनमल तिलौर। कहुना कऽ एक कट्ठा खेत रोपलौं। तइमे एकटा आरो भेल। भेल ई जे रोपैमे सेहो गलती भेल। एकटा गाछक जगह दूटा-तीनटा रोपा गेल। दस कट्ठा खेती एक कट्ठामे पहुँच गेल, मनमे कनी कुवाथ भेबे कएल। जहिना आन धान भेल तहिना ओहो भेल।

तीन मास पूर्व लाल भाय अपन सेवा निवृत्तिक चिट्ठी नेने गाम आबि गेला। ओना लाल भाय जिले भरिक क्षेत्रमे नोकरीक जिनगी बितौलैन, मुदा नोकरी दुआरे खेत-पथार रहितो खेती नइ कऽ पबै छला। अठबारे सभ दिन गाम अबैत रहला तैसंग छुट्टियो-छाटी गामेमे बितौलैन मुदा खेत बटाइ लगा देलैन, अपने खेती भीर नइ एला। ओना परिवारो सभ दिन गामेमे रहलैन मुदा नोकरिहाराक बेटी-पत्नी भेलखिन किने, जिनका खेती-पथारीसँ कहियो सम्बन्ध नहि रहलैन तँए सभ खेती बटाइए रहलैन।

चारि बर्ख नोकरी लाल भायकेँ आरो बँचल छेलैन, मुदा अपने विचारसँ वोलेन्ट्री रिटारमेन्ट लऽ लेलैन, ओना सेवा निवृत्ति अपन सोलहन्नी विचारसँ नइ भेल छला, अफसरक बेतुकार झिझक सुनि मनमे दुख भेलैन, जे दुख मने-मन एते बढ़ि गेलैन जे सेवा निवृत्तिक लेल संकल्पित भऽ गेला। जइसँ तेसरे दिन आवेदन दऽ अपनाकेँ छुट्टी कऽ लेलैन। गाम अबिते जहिना अपने बोरिंग गरौलैन, दमकल लेलैन तहिना गामोक केते गोरेकेँ उचाढ़ि चढ़ा दसटा बोरिंग आ चारिटा दमकल कीनबा देलखिन...।

..वएह लाल भाय तीन किलो धानक बीआबला झोरा नेने पहुँचला। दरबज्जेपर रही, आइ-काल्हि गाममे जेमहर-तेमहर लाले भाइक चर्च चलिते छैन, चर्चित छथिए। अखन दरबज्जापर सद्य: लाल भाय एकटा झोरा नेने स्वयं पहुँचल छैथ। मनमे खुशी भेल।

..देखते प्रणाम केलिऐन आ बाँहि पकड़ने चौकीपर बैसबैत पुछि देलिऐन-

"भाय, झोड़ामे कोन परसादी रखने छी?"

परसादी सुनि लाल भाय ठहाका मारलैन। हँसोर लोक सभ दिनसँ लाल भाय रहला। हँसोरेटा नइ रहला सबरसिया कहियौ कि गपरसिया कहियौ आकि बतरसिया कहियौ, सेहो रहबे केला।

सबरंगिया हँसी लाल भाय हँसैत रहैथ, मुदा अपना कोनो गरे ने लगए। जे संगे हँसब आकि किछु पुछबैन। हँसियो तँ अनलोकियो होइए आ सबलोकियो होइए वा दसलोकियो कहियौ सेहो होइए। जे सझिया होइए। मुदा ऐठाम लाल भाय परसादी बिलहऽ आएल छैथ, हम लेबाल भेलौं। लेबाल-देबाल सोझहा-सोझही ठाढ़ छी, तँए हँसब केना? मुदा लगले मनमे एकटा जुगुत फुरल। जुगुत ई जे किए ने चाह पीबैक बहाना ठाढ़ कऽ दिऐन आ अपन पैछला सालक धानक खेती

सुना दिऐन। ओहो तँ सभ दिन सरकारीए खेतीक विभागमे रहला। सएह केलौं। उठि कऽ आँगन जा चाह बनबऽ पत्नीकेँ कहलयैन।

जेना लालो भाय दरबज्जापर सँ सुनिते रहैथ, ठिकिया कऽ दरबज्जेपर सँ शब्दवाण फेकलैन-

"कनियाँ, चाहेटा नइ बनाएब, भानसो बनाएब।"

कहि चुप भऽ गेला, हम ओसारपर ठाढ़ रही। आँगन दिससँ के ओइ शब्दवाणक जवाब देतैन? हम किए बाजू, पत्नी भावोए भेलखिन। मुदा एकदिसिया गोलबाहि-बोलबाहि लाल भाय करैत दोहरा कऽ फेकलैन-

"कनियाँ, हम कोनो बड़ खाधुर लोक नइ छी, जे मांगि-चांगि खाइ छी, अपन बापक करजा अपना हाथे उतारब।"

'बापक करजा सुनि' पत्नी ऊपर-निच्चाँ ताकऽ लगली, हमरो कोनो अरथे ने लगल जे आँखियो आँखि सिखा दीतिऐन। खाली रणभूमि देख एकदिसिया लाल भाय फेर शब्दक तीर मारलैन-

"रामकिसुन छोट भाय छी, जेकर अहाँ पत्नी छिऐ। अपनासँ ऊपरका सीढ़ीक सराधक भोज आ अपनासँ नीचला सीढ़ीक बिआहक भोज लिखैमे की ब्रह्मा हमर बेइमानी केने छैथ जे बरियाती नइ जा भेल, एकर माने हमर भोज कटि गेल?"

लाल भाइक बातक छाँह-छुँह किछु बुझबो केलौं आ किछु नहियों बुझलौं। मुदा मनमे भेल जे केतेकालसँ चाहक बहाना बना आँगनमे रहब, से नइ तँ आँगनक गप सुनब छोड़ि दरबज्जापर जाय। लाल भाय मने-मन कहिते हेता ने जे रामकिसुन मौगियाह अछि। सदिकाल अँगनेमे रहैए।

जाबे आँगनसँ घुमी-घुमी कि तैबीच लाल भाय अपन शब्दवाणक बौछार छोड़ि चुकल छला। दरबज्जापर अबिते देखलयैन

जे लाल भाइक मुँहक हँसी बदैल गेल छैन। ओना मुँहक खिलमे कमी नइ भेल रहैन, मुदा जहिना एक फूल रहितो गुलाब रंग-रंगक होइए, गुलाबे किए जे आनो-आन केतेक एहेन फूल ऐछे जे रंग-रंगक होइत अछि, तहिना ने हँसियोक फूलक रंग होइए।

चौकीपर बैसते मनमे उठल- एक दिस लाल भाय आगूक लेल धानक बीआ लऽ कऽ आएल छैथ, दोसर अपना मनक उपराग अछि, तहूमे दरबज्जापर आएल छैथ, केना कहबैन?

मुदा फेर भेल जे सरकारी कारोबारमे तँ सभ दिनसँ रहला, नइ भरपाइ करता तँ बुझाइयो तँ देबे करता किने। मुदा पुछबैन की? धानक बीआ ठकि लेलक, सेहो केना कहबैन, तहीसँ ने बीओ कम भेल, आ खेती सेहो कम भेल जइसँ उपजो कम भेल। ओना एको कट्ठा जे धान केलौं, तेकरो तँ उपज होइत, सेहो तँ नहियेँ भेल। खादो कम देने रहिऐ आ ताको-हेर कम केनहि रही। सबाल ओझरा गेल।

फेर मनमे भेल जे जँ किछु नहि कहबैन तखन अपन मनक संताप केना मेटाएत आकि कमत? पुछलयैन-

"लाल भाय, पैछला सालक खेतीक गप छी, ताबे अहाँ नोकरीए रही, से एकटा बात पुछै छी...।"

'पुछै छी'मे, लाल भाय की बुझलैन से तँ ओ जानैथ मुदा जेना अपन बातक विचार करबसँ हमरे बात बुझब जरूरी बुझलैन। बजला-

"एकेटा बात किए पुछबह, एक हजार पुछह। मुदा तैबीचमे एकटा अधखड्डुआ बात रहि गेल अछि तेकरा पहिने पुरा लिअ दाए।"

चिड़ै जकाँ मुँहक बोल लाल भाय लूझि लेलैन! केना कहितिऐन जे पहिने हमरे बात सुनू। टोकारा दैत कहलयैन-

"अच्छा तँ पहिने अधखड्डुए बात पुरा लिअ भाय। कोनो कि बाढ़ि अबै छै जे दहा-भँसिया जाएब। तखन तँ कनी डर ऐछे जे बीचमे

कहीं अपन बात ने बिसैर जाइ।"

'बिसरब' सुनि लाल भाइक मन मानि गेलैन जे एहेन होइते छै। बहुत लोककेँ देखै छिऐ जे बजैकाल बजैबला बात बिसैर जाइए आ दोसरे-तेसरे बात तोपि दइ छै। नीक हएत जे अपन बात कहला पछाइत तगेदा कऽ देबै जे आब तूँ अपन बात बाजह, केतबो बिसरभोरमे वौआएत तैयो तँ भोरका समए रहै छै किने, नइ मुँह तँ नाँगैरो पकड़ेबे करत...।

लाल भाय बजला-

"बौआ रामकिसुन, तोरा मनमे जरूर तकलीफ भेल हेतह जे लालभाय बिआहमे बरियाती नइ गेला। मनमे रंग-बिरंगक बात-विचार उठैत हेतह। जेना देखै छहक जे मुँहगर-कन्हगर लोककेँ बरियाती लऽ जा बिआहकेँ भारी-भरकम बना दइए।"

लाल भाइक विचारक बहैत धारमे हमहूँ भँसि गेलौं। कहलयैन-

"भने अपना मुहेँ कहि देलौं भाय, नइ ते कहियो ने कहियो मुहेँपर बजा जाइत जइसँ आरो बेसी मरखाह भऽ जाएत?"

हमर बात लाल भाइक मनकेँ छुलकैन। छुबबो केते रंगक होइए, सकारात्मको होइए आ नकारात्मको होइए। फेर सकारात्मकोमे केते रंगक नकारात्मको आ नाकारात्मकोमे केते रंगक सकारात्मको होइए। एक 'छुबक'क माने 'घर करब' चाहे 'पकड़ब' होइत अछि, आ दोसर होइत अछि 'क्रोध ठाढ़ करब', 'झड़कब'।

मुदा एतए से नइ, लाल भाइक मनमे तरका गदगरी रहैन। माने मनक भीतरसँ नोकरीक जिनगीकेँ सोलहन्नी कात करब रहैन। ओना सोल्होअना हटौलासँ केते उपयोगी काज सेहो हटि जइतैन, मुदा से नै हटल छेलैन। मनमे खुशी ई रहैन जे मुहाँ-मुहीं कोनो बात करब आकि विचार करब बेसी नीक होइए। तँए अपना बातकेँ खोलैत बजला-

"बौआ रामकिसुन, जइ दिन तोहर बिआह रहह, तही दिन पूसामे किसान सम्मेलन सेहो रहै, मंच परहक लोक छीहे, जँ सोझहे जाएब रहितए तखन तँ कनछी मारि निकैल जइतौं मुदा से नइ भेल, तोरा बिआहसँ बेसी लाभक काज अपनो बुझि पड़ल। किएक तँ तोहर बेकतीगत काज छेलह आ ओ सार्वजनिक रहए जे समाजक भेल। तोरा बरियातीकेँ टारलो जा सकै छल मुदा ओकरा टारब उचित नइ होइत। अखने ससुरकेँ समाद पठा दहुन जे एकटा बरियाती अखैन तक नतले रहि गेल छैथ, से जहिया बीझो कराबी। पहुँच जाएब।"

लाल भाइक फर्ज व्यान सुनिते मन भरि गेल, मुदा कनछी मारबकेँ नै बुझि पुछि देलिऐन-

"की कनछी मारि कहलिऐ?

"सरकारी विभागमे दू रंगक लोक छैथ, एकटा जे काजो करै छैथ आ मंचपर चढ़ि अपन विचारक आदानो-प्रदान करै छैथ, दोसर छैथ जे ऑफिसर बनि बैसल रहै छैथ। अखन ई सभ छोड़ह पहिने धानक बीआक गप करह।"

बीआक नाओं सुनि कहलयैन-

"लाल भाय, पौरुका बीआ पाड़लौं, से जनमैमे तिलौर भऽ गेल?"

'तिलौर' सुनिते लाल भाय बजला-

"रामकिसुन, अपना सभकेँ खेती करैले माटि- माटिक गुण, पानि- पानिक गुण सभ बुझऽ पड़त। आब गाम एलौं हेन, समैनुसार बात-विचार करिते रहब। आगूओ गप-सप्प होइत रहत, मुदा अखन एतबे बुझि लएह जे खेतमे हालक दुआरे बीआ तिलौर भेलह, ओना तामो-कोरसँ एना होइए। मुदा अखन हालक बात कहै छिअ। गरमीक समैमे जमीनक हाल तेजीसँ घटै छै। जइसँ जेते नमीक जरूरत बीजकेँ

अछि, ओइमे कमी भेने बीआ कम अँकुरि ऊपर आबि पबैए।"

लाल भाइक विचार मनमे गरल। दोहरबैत पुछलयैन-

"लाल भाय, बीआक अँकुरन लेल केहेन हाल चाही?"

लाल भाय बजला-

"ओइले डकरा हाल चाही।"

पुछलयैन-

"डकरा हाल की भेल?"

कहलैन-

"डकरा हाल ओ हाल चाहे नमी भेल जे शत-प्रतिशत बीजकेँ अँकुरा ऊपर दिस बढ़ा दइए। संगे माटिमे बीआ सड़ैक सम्भावना सेहो क्षीण रहैए। ओना हर बीजक अपन-अपन अँकुरैक परिस्थिति होइ छै तेतबे नइ मौसमक हिसाबसँ डकरो हालक परिस्थिति बदलैत रहैए।"

चाह आबि गेल, दुनू भैयारी चाह पीबए लगलौं। अपना मनमे हुअए जे चाह केहेन भेल केहेन नहि..?

फेर मनमे उठल- चाहोक भोज कोनो कि आब सस्ता-सुभिस्ता थोड़े रहल। डायविटीजबला कहता चिन्नी छोड़ि कऽ पीब, कियो कहता जे चीनी कनी बेसी पीब, तँ कियो कहता जे कम पीबै छी। तहिना लीकरोक सम्बन्धमे अछिए। सभसँ नमहर बाँतर ई अछि जे कियो कहता जे हम लोहा महींसक दूधक चाह नइ पीबै छी। केना लोक चाहोक भोज करत?

मुदा गोसाँइ उगैत जहिना दिन चढ़ऽ लगैए चाहे दुधिया भाँग पीला पछाइत चाह पीलासँ बिजली-कनेक्शन जकाँ तार जोड़ाइते भुक दऽ इजोत होइए, तहिना लाल भायकेँ भेलैन। बजला-

"बौआ, जिनगीसँ बेचैनी हटा लेलौं।"

लाल भाइक उटपटाँग बात सुनि किछु अरथे ने लगल, एक दिस देखै-सुनै छी जे गाममे उचाढ़ि चढ़ा देलखिन अछि आ दोसर दिस कहै छैथ बेचैनी हटा चैनी भऽ गेलौं। एना केना भेल? पुछैत कहलयैन-

"भाय! गाममे आगियो पजारि देलिऐ हेन आ दोसर दिस निचेनियों तकै छिऐ?"

हमर बात जेना लाल भाइक छातीकेँ छुलकैन। विस्मित होइत बजला-

"बौआ रामकिसुन, गाम तेना ने सभ दिन आकर्षित केने रहल जे कहियो छोड़ैक मन नइ भेल। मुदा छुटि गेल!"

कहलयैन-

"अहाँ ते सभ दिन जिले भरिमे दौड़-बरहा करैत रहलौं, अठवारे गामो अबिते रहलौं, तखन केना गाम छुटि गेल?"

दहलाइत छातीक धार जेना लाल भायकेँ बहबऽ लगलैन। बजला-

"पत्नी दुआरे नोकरी करए पड़ल, नइ तँ हमरा कोनो नोकरीक खगता रहए, अपन खेती-पथारी छेलए, आइ अपन सखारी-पेटारीमे अपन जिनगी देखैत चलितौं।"

पत्नीकेँ दोख देख पुछलयैन-

"पत्नी दुआरे किए नोकरी करए पड़ल?"

हमर बात सुनि लाल भाय गुम भऽ गेला। एक दिस दुनू बेकतीक प्रेमकथा, दोसर दिस अपनासँ छोट लग केना बाजब? मुदा आब तँ चुपो नइ रहल जा सकैए? पाकल आम जकाँ आगूएमे सबाल खसि पड़ल अछि!

मुदा लगले जेना लाल भाइक मन उनैट गेलैन। उनैट ई गेलैन,

जे हमरा सन गल्ती आनोकेँ हएत, तँए बाजबे उचित? बजला-

"कौलेजमे जखन रही तखन बजरूआ परिवारक भाँजमे अपने गल्तीसँ पड़ि गेलौं, पिताक विचारक विपरीत अपना विचारे बिआह कऽ लेलौं।"

मुस्की दैत कहलयैन-

"आब ते सरकारो 'लव मैरिज'केँ प्रोत्साहन दइए तखन अहाँ अधले की केलिऐ?"

गम्भीर होइत लाल भाय बजला-

"पैछला शताब्दीक सातम-आठम दसकक[1] बीच, जखन कौलेजमे पढ़ैत रही, बाबू गिरहस्ती करै छला, मधुबनीसँ साकेत आ सीता धानक बीआ आनि कऽ देलिऐन। समैयो नीक पकड़ेलैन, एक क्विन्टल चालीस किलो कट्ठा धान भेल छेलैन। नव जागृति देख पिताजी खूब खुशी भेला। तहिना जँ पत्नियोँ ओहन किसान परिवारक रहितैथ, जे खेती-पथारीकेँ जीवन बुझि आएल रहितैथ तँ ओ जरूर अपन खेत-पथार देख कहितैथ ने जे सौनमे किए घर छोड़ब?"

कहि उठि कऽ ठाढ़ भऽ आगू बढ़ैत कहलैन-

"आब गाम आबिए गेलौं, निचेनसँ आरो गपो-सप्प आ खेतीओ-पथारी होइत रहत।"

◌

शब्द संख्या : 2529, तिथि : 17 जून 2015

[1] 1970-1980 इस्वीक बीच

जेतए जे हौउ

जेठुआ धारक अमार जकाँ गामे-गाम अमार चढ़ल अछि। मुदा धारक अमार आ गामक अमार एक शब्द रहितो काजे दू अछि। धारक अमारमे एक रंगक माछक अमार चढ़ै छै, जइमे जे जेहेन सचरगर से तेहेन छाइन अनैए। मुदा गाम-समाज तँ से नइ छी, गामोमे गाम अछि आ समाजोमे समाज अछिए। किछु अछि तँ अछि, मुदा अमार तँ गाममे चढ़बे कएल अछि। जँ से नइ अछि तँ एते असथल केना बढ़ि रहल अछि आ जेते असथल बढ़ि रहल अछि तेते रंगक धुजो-पताका तँ बैढ़े रहल अछि। ई दिगर भेल जे केतौ धुजाक उखड़ा-उखड़ी भऽ रहल अछि, तँ केतौ चानन-टीकाक।

मुदा एक-डँरिया टीका तीन-डँरिया होइत आब सत-डँरिया तक पहुँच रहल अछि।

गामे-गाम, टोले-टोल जातिये-जाति जखन भाइये रहल अछि तखन चुपचाप अनकर मुँह देखैत रही, सेहो नीक नइ बुझि पड़ल। नीक नइ बुझि पड़ैक कारण भेल जे गामक चारि गोरे, एकतुरिया रहने एक्के स्कूलमे नाओं लिखेलौं। चारू संगतुरिया रहने एके किलास होइत पढ़बो केलौं आ संगे चारू गोरे पासो केलौं मुदा ओकरा सबहक लहैको आ चलो-चलती देख अपनो मन सुरसुरए लगल।

ओना कहैले तँ लोक घरो बैसल बीए-एमेक डिग्री चुपेचाप

कीनि लइए मुदा हमरा चारू संगीक बीच से नइ अछि। गाममे जे मिडिल स्कूल तक पढ़ि पास केलौं से सर्टिफिकेट चारू गोरेकेँ अछि। हम मायाजालमे पड़ि गिरहस्तीक करैत सेवकाइ करै छी आ ओ तीनू गोरे बबाजी बनि महंथाइ करैए। एकतुरिया, एक इस्कुलिया रहितो चारू चारि दिसक बाट धेने छी- कहैले ओहो तीनू गोरे बबाजीए अछि मुदा तीनू तीन-दिसिया अछिए।

एक संगीक मनमे महात्मा बनैक उखमज उठलैन, तँए अपन विवाहित स्त्रीकेँ दोसर हाथे बिआह करा घर छोड़ि निकैल गेला। घरेटा नइ छोड़लैन, घरोवालीकेँ छोड़लैन आ घरेवालीटा किए कहल जेतै जे घरक अन्नो छोड़लैन! अल्हुआ, सुथनी, सजमैन, कदीमा, अल्लू उसैन-उसैन खाइत-पीबैत आइ ओ अखरोट-पिस्ता, सेव-नारंगीपर पहुँच गेल छैथ।

दोसर संगी जे छला ओ महात्मा बनैक खियालसँ नहि, पत्नीक संग छुटि गेने मजबूरीमे बबाजी भेला। केश-दाढ़ी बढ़ा रमता बनि गेला। गाम-घरक भनडारा पुरैत, देशोटन आ तीर्थोटन करए लगला।

मुदा किछुए सालक पछाइत भाग्य जगलैन। सेवकाइसँ महंथाइक प्रमोशनो भेलैन आ हेरेलहा पत्नीक बदला दोसर पत्नियोँ हाथ लगलैन। अनुकूल मौसम रहने दोसर संगीकेँ चारू दिसक उन्नैतो समतूले छैन। जेहेन नीक वक्ता तेहेन देहो-दशा, तँए मंचक महन्थ तँ छथिए। जइसँ सरकारीए अफसर जकाँ उन्नैत सेहो भाइये रहल छैन।

तेसर संगी जे छैथ, हुनका अपन मननुकूल पत्नी नहि भेने जिनगीमे खिन्नता एलैन, जइसँ ओहो बबाजी बनि सेवकाइसँ आगू बढ़ि आब महंथाइमे पहुँच गेल छैथ। चारू संगीमे चेहरा-मोहरा सेहो आन सभसँ नीक छैन्हें चलो-चलती तहिना लहटगर छैन्हें। पहिने तीन-मसुआ रमता बनला। माने सालक नअ मास खेती-पथारी करै

छला आ तीन मास रमै छला। मुदा समैक लहकीमे लहैकते गिरहस्तीक समए घटऽ लगलैन आ रमता-रमती बढ़ऽ लगलैन। तइसँ परो-परिचए आ दैछनोमे अगहनीक लड़ती-चड़ती आबिये गेल छैन। नीक आमदनी नीक जिनगी बना सूदिया महन्थ सेहो बनियेँ गेल छैथ।

एक जातिक भीतर धुजा-पताकाक स्थान पबैले जहिना मारि-पीटि, तहिना गारि-गरौबैल चलिते अछि आ तहिना गामक भीतर जातिक धुजा-पताका-ले सेहो मारि-पीटि, गारि-गरौबैल, दिन-दिनक चर्या बनि गेल अछि। केतए जाएब, केना जाएब, केना रहब इत्यादि नमहर समस्या आगूमे आबि ठाढ़ भऽ गेल अछि...।

सुपारीक टूक जकाँ कटाइत गामकेँ देख, मने-मन गुन-धुन उठैत रहए जे काल्हि दिन केना जीब? ने अक चलए आ ने बक। ने आगुए इजोत देखिऐ आ ने पाछूए। चौबगली जेना अन्हारे-अन्हार बुझि पड़ैत रहए। तहीकाल हलसैत-फुलसैत पत्नी आबि कहलैन-

“काल्हि गाममे बड़का भनडारा छी, महंथाइ बनत, बाबन मण्डलीक महंथ उतरता।”

कहि चुप भऽ गेली। मनमे उठल- पहिने दू महंथाइ छल, पछाइत तीन गमैया महंथ बढ़ने पाँच भेल। बढ़बो केना ने करत, जखन बहरवैया गामक महंथकेँ मानि नेने छैन, सेवकान सेवकाइ काइम भऽ गेल छैन, तखन जँ गाममे घराड़ियो ने रहैन सेहो तँ नीक नहियेँ कहल जाएत।

ओना ई बात गामक तीनू महंथ- गौरी दास, पार्वती दास आ जानकी दास- सेहो बुझलैन। जइसँ जहिना गौरी दास अपन दियादी परिवारमे चेला मुरि गाममे स्थान बनौलैन तहिना पार्वती दास टोलबैयाकेँ चेला मुरि स्थान बनौलैन। एहेन जानकीए दास छैथ, जे सूदिये कारोबारटा रखने छैथ।

ओना सालक एगारह मास तीनू महंथ गामसँ बाहरे रहै छैथ, एक मास गाममे रहै छैथ तहीमे अगहनुआँ मालिक जकाँ अपन-अपन कारोबार समेट सालो भरिक पुरती कऽ लइ छैथ।

मनमे भेल जे पत्नीकेँ आरो बात पुछयैन, मुदा ओ तँ केतौ कोनो आने अलगाक मुहेँ सुनने हेती। ओ जे कहती से बारह आनासँ बेसीए फुसि कहती। एकर माने ई नइ जे पत्नी बड़ फुसियाहि छैथ, फुसियाहाक बातपर बिसवास कऽ कहै छैथ, जे फुसियाह बात रहै छैन। मुदा पत्नीक बातक विचार नइ दिऐन, सेहो उचित नहि। तहूमे दिनका खेनाइ तेहेन खुऔने छेली जे ओहिना कण्ठ लग बैस मीठगर ढकार होइए।

पुछलयैन-

“देखलौं हेँ आकि कियो कहलक हेँ?”

अपन विचारकेँ मजगूतीसँ रखैत पत्नी बजली-

“अखैने मिरचाइ-हरदी बेचैबला वेपारी नइ जाइ छेलै वएह बाजल।”

पत्नीक बात सुनि नजैर ओइ वेपारीपर गेल। सभदिना बेचैबला वेपारी छी, दस गाम घुमैए, दस रंगक बात सुनैए, दसठाम दस गोरे लग बजैए। मुदा केकरा मुँहक बात ओ वेपारी बाजल, ईहो बुझब तँ कठिन अछिए। एक्केटा एजेन्ट दस-दस कम्पनीक एजेन्सी नेने अछि। तहूमे पहिलुका एजेन्ट अपन कम्पनीक प्रोडक्टक गुण-अवगुण बुझबैत प्रचार करै छल, आब सेहो बदैल गेल। बदैल ई गेल अछि जे लेबालक जरूरत बुझि अपन मालकेँ ओहने बना लइए, चीज जे हौउ मुदा तत्काल तँ गहिंकीकेँ पकैड़े लइए।

रंग-रंगक विचार मनमे उठए लगल। मुदा सभटा विचारकेँ तहिया कातमे रखैत दूटा बातपर विचार करए लगलौं। पहिल गाममे

बहरवैया महंथाइ बनत। गाम तँ हमरो छी, जेते सबहक साझी छै तेते तँ हमरो अछिए। रहल लोकक विचार। से तँ गामे छी जइमे रंग-रंगक लोक अछि, रंग-रंगक जाति अछि, रंग-रंगक मजहब-सम्प्रदायक खेनाइ-पीनाइ, सोच-विचार छै...। तैबीच अपनो विचार रखनाइ अछि। भलें दुब्बर-पातर रहने ओ तर पड़ि किए ने तरिया जाए मुदा तँए अपन कर्तव्यक निमरजन नइ करी, ईहो केहेन हएत? अनका जे तीत-मीठ, नोनगर-अनोन लगौ मुदा विचारणीय प्रश्न तँ अछिए। विचारणीय ई जे गाम समाजक छी आकि समाजक गाम छी?

ने गामक आड़ि-धुरक ठेकान छै आ ने समाजक आड़ि-धुरक। साएमे जहिना निनाबेकेँ लोक शत-प्रतिशत बुझि लइए तहिना तँ वैदिक आ अवैदिक समाजमे जँ एकोटा वैदिक रहत तँ की ओ समाजक नहि भेल आकि समाजसँ बाहर भेल सेहो केना कहल जाए?

अपन पैछला तुरक तीनू संगी- महंथ गौरीदास, पार्वती दास आ जानकी दास पर नजैर पड़ल। ओ तँ गाममे नइ छैथ, मुदा हम तँ छी, बाल-कालक सम्बन्ध तीनूक संग शिक्षो आ समाजोक रहल, जँ समए रहैत ओ सभ जनतबसँ बाहर रहैथ तँ केकर दोख लागत?

गाममे कहियौ कि सीमापर कहियौ आकि मोरचापर, अखन तँ हमहीं छी। तँए हुनका सभकेँ जानकारी देब पहिल काज अपन भेल। मुदा लगले मनमे उठल- कियो जगरनाथमे हेता तँ कियो बैजनाथमे तँ कियो केतौ, तखन केना समैपर पहुँच सकै छैथ। मुदा सीमापर एनौं बिना तँ किछु सम्भव नहियेँ अछि। तहूमे तेहेन-तेहेन महंथ सभ छैथ जे डरे कियो औता की नइ औता। असगर मोबाइलसँ जे कानमे कहबो करबैन, मुदा तेहेन-तेहेन चालि-ढालिक छैथ उन्टे वएह पछाइत इन्टरनेटपर अपन प्रतिक्रिया देबे करता जे गामक लोक मौगा अछि।

फेर मनमे उठल जे जँ ऐ दुआरे जानकारी नइ देबैन सेहो केहेन

हएत? झूठा बनि जीबैत होथि आकि सच्चा बनि मुदा छिआ तँ समाजेक। जँ हुनकोमे समाजिकता होनि?

मुदा बीचमे समैयो तँ नहियेँ अछि, तखन? तखन की लगले कोनो उनटन भऽ जेतइ। नीक हएत जे कोनो गौंआँ-समाजक बीच मोबाइलसँ हुनको तीनूकेँ जानकारी दिऐन। मन ठमैक गेल। नीचाँक नजैर ऊपर उठल तँ आगूमे पत्नीकेँ ठकुआएल ठाढ़ देखलयैन। गामक ऊधव-बाधव छी, पतिक की विचार छैन से तँ वएह ने बजता, ऐ ताकमे पत्नी ताकि रहल छेली। मुदा गाममे एहेन आयोजन भऽ रहल अछि आ अखैन तक कोनो भनक नइ लगल अछि। मुदा पत्नियोँक बीच तँ एहेन दायित्व बनिते अछि जे अपन पैरुखसँ पतिकेँ बिसवासमे रखिऐन जे पुरुखपना हमरोमे अछि, तखने ने ओहो अपन शक्तिक भक्तिसँ संगे-संग चलती। तँए मनमे गुन-धुनी उठैत रहए जे केना हिनकर जिज्ञासा रूपी भूखकेँ शान्त करबैन। मुदा एहनो तँ नहियेँ जे बड़ भुखाएल रही तँ आँकरे-पाथर खा ली।

किछु फुरबे ने करए। एक दिस आगूमे पत्नी, माथ चाटैले ठाढ़ तँ दोसर दिस अपने कोनो बाटे ने सुझैए, सुझबो केना करत, लगले पहिने वएह कहलैन तखन बुझलौं, मुदा लगले एहेन प्रश्नक उत्तरो देब कठिन तँ ऐछे...।

संजोग नीक रहल। ओना गामोमे चुलचुली आबि गेल रहए। जेरक-जेर धियो-पुता आ चेतनो-सियान टेन्ट-समेना देखऽ जेबो करैत आ घूमि-घूमि एबो करैत। सभकेँ अपन-अपन मेड़िया, अपन-अपन मेड़क संग हबो-गब करैत आ एबो-जेबो करैत। संजोग नीक ई रहल जे तहीकाल राधारमणकेँ रस्ता धेने जाइत देखलौं।

राधारमण धुरफन्दा लोक। दसठाम बैसै-उठैबला। ओना उमेरक हिसाबसँ पौरुकें भोँटर भेल जे अपन जवानीक प्रदर्शन सीना

तानि कऽ करिते अछि। विचारो नीक छै जे कोनो तरहक मंच किए ने हौउ, जैठाम ओ श्रोता बनि सुनत, तैठाम अपनो विचार रखैक अधिकार-ले उठि कऽ ठाढ़ होइते अछि। नइ मंच तँ मंचक निच्चोंमे अपन विचार रखिते अछि। तँए बिसबासू राधारमण अछिए। सोर पाड़ि कहलिऐ-

"तोरो लीला अजीव छह राधारमण, ने शिवकेँ शिवानी बनबैत देरी लगै छह आ ने महंथाइयक गाम बनबैमे।"

लगमे अबिते राधारमणक चेहरासँ बुझि पड़ल जे केतौ घन्टा-दू-घन्टा बकि आएल अछि। मुदा वको तँ वक छी, बगुला-वक छी आकि डकहर-वक? मुदा से नइ राधारमणक अपन विचार छी। बाजल-

"भाय साहैब, की कहब! गामक जे लीला देखै छी ते होइए जे गामेसँ पड़ा जाइ मुदा बाप-दादाक घराड़ियो छोड़ि केतए जाएब, फेर मिथिला सन जगह थोड़े भेटत।"

राधारमणक विचार सुनि भेल जे पत्नीकेँ ऐठाम रहब उचित नहि। पत्नीकेँ कहलयैन-

"अँगना-घरक काज देखियौ, राधारमण केतौ पड़ाएल जाइए। सभ बात बुझि अहूँकेँ निचेनमे कहि देब।"

पत्नी आँगन चलि गेली। राधारमण बाजल-

"भाय साहैब, देखै छिऐ ने गाममे दू-आना लोक पंथ बुझि[2] वैष्णव धर्म धारण करै छैथ, मुदा की देखै छिऐ जे जँ गोटे साल रौदी भेल तँ अमैया भनडारा पुरैले साए-पचास नवका बबाजी बनि जाइए।"

[2] रास्ता बुझि

राधारमणक बात सुनि बुझि पड़ल जे जेना ओकर मन रसगुल्लाक बोरमे डुमल हुअए। भाय! रसगुल्लो खाइ-काल जँ मुहसँ हँसी नइ फुटलह तँ ओ रसगुल्लाकेँ बेपाइने करब भेल किने? मुस्की भरैत पुछलिऐ-

"ई तँ भेल रौदीक बात, मुदा दाही सेहो अछिए।"

आगू एकटा बात आरो बाजए चाहै छेलौं कि बिच्चेमे राधारमण लोकैत बाजल-

"भाय साहैब, जहिना अमैया भनडारामे बबाजीक उजैहिया चढ़ैए तहिना भदवारिमे मछखौकक उजैहिया सेहो चढ़िए जाइए!"

राधारमणकेँ अपन विचारक धारमे बहैत देख मनमे उठल जे जँ एकरा बिनु खेबनिहारक नाउ जकाँ छोड़ि देब तँ ओ केतए भँसिया कऽ चलि जाएत तेकर ठेकान नइ, तँए छातीमे गुण लगबैत रहब नीक हएत...।

कहलिऐ-

"बौआ, कनी तूँ चुप रहह, पत्नीकेँ उत्कण्ठा बेसी छैन तँए हुनको सोर पाड़ि लइ छिऐन।"

कहि पत्नीकेँ हाक देलिऐन। अपनो मन मानि गेल जे जहिना ओ अनके मुहेँ सुनलैन तहिना तेकर उत्तर सेहो अनके मुहेँ भेटब नीक हएत। राधारमणो मानि गेल। ओकर मानैक कारण अपन रहै, ओकर रहै जे जँ पति-पत्नीक बीच विचारक साम्य रहत तँ काजक साम्य सेहो हेबे करत, आ जखने काजमे साम्यता औत तखने जिनगीमे साम्यता एबे करत। तँए परिवारक बेकतीकेँ नहि परिवारक समूहकेँ परिवारकेँ बुझऽ पड़त। जे अवसर राधारमणकेँ भेट गेल। बाजल-

"भौजी अहींक चर्च भऽ रहल अछि, पाछू भैयाकेँ नहि लथारबैन, तँए अपन बात सुनि लिअ।"

राधारमणक बात सुनि अपनो मनमे भेल जे राधारमण की कोनो बाँटल अछि, तहूमे समाजक बीचक काज छी, किए केकरोसँ छिपौल जेतइ। राधारमणक बात सुनि पत्नी सुनिया गेली, सोहेमे घर बाहरब छोड़ि बाढ़ैन नेनहि पहुँचली। लगमे अबिते बजलौं-

“राधारमण, सुनै छी जे बाबन मण्डलीक भनडारा काल्हि गाममे हएत?”

जहिना कोटमे नालिश डायर केला पछाइत नालिशकर्ताक मन हल्लुक होइ छै, जे से अपन भार हल्लुक होइत सुतऽ चाहैए तहिना पत्नी बजली-

“अखन अधखड्डुआ घर बाहरल अछि तँए जाइ छी।”

पत्नी चलि गेली मुदा राधारमणक बहैत मनक धार जेना भदवारि पाबि आरो उधिया गेल। अपनो मने-मन खुशी होइत रही जे पत्नीक सोझहेमे हुनकर बात तेहल्लाक कानपर देलिऐ, मनो हल्लुक भाइये गेल रहए। राधारमणकेँ आरो भँसिया सुनैले अपनाकेँ तैयार केलौं। राधारमण बाजल-

“भाय साहैब, बड़-बड़ लीला अछि ऐ मन-रंगमे।”

आगूक बात सुनैले जेना मन उताहुल भऽ गेल तहिना टोकारा भरैत कहलिऐ-

“से की, से की बौआ?”

जेना केते चोट राधारमणक छातीमे लगल होइ, तहिना बड़बड़ाएल-

“भाय साहैब, केते मुहेँ सुनलौं हेन जे काल्हि नमहर भनडारा गाममे हएत। केते महंथ शिक्षाक भार उठेता, तँ केते रोजगारक, केते रोग-वियाधिक भार उठेता आ केते खेल-कूदक! गौंआँक सेहो सहयोग

नीक जकाँ अछि!”

बजैत-बजैत जेना राधारमणक कण्ठ भरभरा गेलइ। भरभरा ई गेलै जे जखन सभ किछु महंथाइयेमे चलि जाएत तँ समाज महंथाइक भऽ जाएत आकि समाज अपन समाजिक रूपमे ठाढ़ हएत? जँ महंथाइयो एक रंगाह रहैत तँ ओ कनी ऐसँ नीक रहैत। मुदा सेहो नहियेँ अछि, कियो ईर घाट तँ कियो वीर घाट तँ कियो बेंग घाट बनौने अछि! राधारमणकेँ गम्भीर होइत देख पुछलिऐ-

“सुनै छी नवका बबाजी सभकेँ भोजनक संग विदाइयो भेटत?”

राधारमण बाजल-

“भोजनसँ पहिने पाँच हजार नगद आ शीरक-तोशकक संग वस्त्र-जात सेहो देल जेतैन पछाइत भोजन करा विदा करतैन।”

राधारमणक उमड़ल छीतीमे जेना अपनो छाती उमड़ैत जा कऽ मीलि गेल। कहलिऐ-

“बौआ, अपना दुनू गोरे की करब?”

राधारमण बाजल-

“जेतए जे हौउ तेतए से हौउ, अपना ओतए वएह हौउ जे मनक सोहंत हौउ।”

कहलिऐ-

“सएह?”

राधारमण बाजल-

“कोउ काहू मगन तँ कोउ काहू मगन।”

◌

शब्द संख्या : 2062, तिथि : 21 जून 2015

गठूलाक गारि

सुति-उठि आँखि मीड़िते कोठरीसँ निकललौं कि बाड़ी दिससँ अबैत दादी चारि लग्गा फरिक्केसँ कहलैन-

“तूँ कहियो पुरुख नइ हेमेँ।”

गरियाएल-भरियाएल आँखि मीड़ हल्लुक बनि गेल छल। दादीक कटाह बात सुनि नजैर खिड़ेलौं तँ बुझि पड़ल जे दादी तुरुछल छैथ, मुदा अपन मन खूब हल्लुक रहए, भोरुका नीन खूब गढ़गर सेहो भेल रहए। गढ़गर नीन होइक कारण छल अन्तिम जेठुआ बरखा। जेहने जरल माटि, तेहने झमझमौआ बरखा रातिमे बरिसल। जइसँ ताप-नमी[3]क बीच तेहेन लट्टा-पट्टी भेल जे ऊपरके माटिक सतहक सुगन्धटा नहि, सतहमे सजल धरतीक अनेक सतह-धरिक सुगन्ध पसैर गाढ़ चम्पा जकाँ महमहाइत रहए। ओहन महमहीमे भोरुका समए भेटने गढ़गर नीन हेबे करत किने, सहए भेल रहए।

दादीक बात सुनि मनमे भेल- जे दादी परिवार-ले अखन धरि समरपित भेल आबि रहल छैथ ओ बेजाए बात-विचार किए करती। मुदा ईहो हुअए जे दादीक कड़ुआएल बातमे कहीं अपनो बात ने कड़ुआ जाए, तइसँ नीक ने जे भरमे-सरमे अपन जे अखुनका

[3] जाड़-गरमी

नित्यकर्म अछि तइमे लगि जाइ। जाबे चाह बनत ताबे दादीसँ कनी हटले रहब आ जखन देखब जे दादी चाह पीब रहली अछि, तखन पाछूसँ आबि पैछला खोंचार सुनि चाहो पीब लेब। तँए आगू बढ़ि गेलौं।

मुदा दादियो तँ दादीए छैथ, मनक तामस झाड़ि अपन मन हल्लुक करैत गाइयक थैरमे गोबर उठबऽ लगली। दादीसँ मुँह घुमबैत अपन काज हाँइ-हाँइ ससारऽ लगलौं। जइसँ चाह पीबै बेर तक अपनाकेँ खोंचार सुनैले तैयार बना लइक अछि।

मुँह घुमा आगू तँ बढ़ि गेलौं मुदा मन पाछू उनैट-उनैट ताकऽ लगल। कनिक्के पहिने ने दादी उठल छेली, तैबीच कि कोनो अमेरिका-इंग्लैण्डसँ पएरे घुमि आएल हेती, बेसी-सँ-बेसी बाड़ी-झाड़ी घुमि आएल हेती। किए ने दतमैनक घुस्सा दैत दस डेग टहैल दादीक दुनियाँ देख ली। अइले समए बना टहलैक कोन प्रयोजन अछि। सएह केलौं।

चारि डेग आगू बढ़िते गोरहा मचान देख सहैम गेलौं। तीन मासक ओरियाएल सम्पैत जे साल भरिक कुसमैक अंग छी, ओ छिजानैत[4] भऽ गेल अछि। मेघो बदरीहनक रूप पकैड़ रहल अछि जइसँ रौदमे कटौती हेबे करत, तैपर गोरहाक जाँक जहिना ऊपर बौदै-बौदै भेल अछि तहिना निच्चाँ गोबर-गोबर सेहो भाइये गेल अछि।

मन मानि गेल जे काजक चूक भेल अछि। किए ने अपन चूकक चुकती उठा ली। मनमे एहेन उठबे ने कएल जे साल भरिक जिनगी रूपी मशीनक ईंधन छी- गोरहा। मात्र एतबे बुझि पेलौं जे भैरसक चारि गोरहाक दिनक हिसाबसँ चौदह-पनरह साए गोरहाक दाम भेल पान-सात हजार, हजार-दू-हजार आरो बढ़त। किए ने कहिऐन जे दादी दस हजार जुरमाना अखने अदा करै छी, गलती

[4] क्षतिग्रस्त

भेल। तइले ऐ उमेरमे तामस नइ बढ़ाउ, ब्लडपेसर आ डायविटीजक मौसम बनि गेल अछि...।

मनमे ईहो होइत रहए जे जखने खटाइ-मिठाइक जोग हएत कि अनेरे दादीक मन समगममे पहुँच जेतैन। जखने समगममे पहुँचतैन तखने ओ दादीए भेली आ हम पोते भेलिऐन। किए कोनो अनोन-विसनोन हुनका मनमे रहतैन आकि हमरे कोनो तीताइन-कसाइन रहत।

मनकेँ बुधि नीक जकाँ नीप-पोति लेलक। मनक निपाइ-पोताइ होइते विचारोक नीपिया-पोतिया भऽ गेल। आँखि उठा देखलौं तँ बुझि पड़ल जे पाँच मिनटमे दादी लग पहुँच जाइक अछि। जखने दादीक हाथमे चाहक गिलास औतैन आकि अनेरे ने मन कुकुएतैन। जखने कुकुएतैन तखने चाह पीबैले शोर पाड़ती। भऽ गेल, टटका तामस टटके मेटा जेतैन।

हाथमे चाहक गिलास अबिते दादी नजैर उठा हमरा दिस तकलैन तँ बुझि गेली, अबैले तैयार अछि मुदा पएर ठमैक रहल छै।

दादीक मनमे जे उठल होनि, मुदा ओ शोर पाड़ैसँ पहिने घोंट भरि चाह खींच मुहेँमे चिड़ै जकाँ ऐ सोचमे रखने रहली जे गेल्ह जहिना माइक भरल लोल देख चुनचुनाइत लगमे अबैए, तहिना हम पहुँचै छिऐन की नहि।

दादीक विचार रहैन अदहा जेठमे गठूला-घरकेँ छारि बना लेब, जइसँ साल भरिक जारैनक ओरियान भऽ गेने एकटा नमहर काज, आवश्यक काज भऽ जाएत जइसँ जिनगी थोड़े हल्लुक बनियेँ जाएत। मुदा अपना मनमे भेल जे जानि कऽ अपराध तँ नइ भेल अछि। परिवारक भीतर बेकतीगत जिनगीक आवश्यकता आ समाजक आवश्यकताक बीच तेना सटि गेल छी, जे अपनो आ समाजोक

बीचसँ परिवार हटि गेल अछि। परिवारक आवश्यकतापर सँ हाथ-पएर ससैर गेने बुधि-विचार सेहो ससैर गेल अछि। जइसँ गठूला घर छाड़ै-बनबैक काज पछुआ गेल।

एक तँ ओहुना अपन तेहेन गल्ती नइ बुझि पड़ल तैपर जखन गल्तियो मानैले आ जुरमानो भरैले तैयारे छी, तखन किए डेग ठमकत। मनमे साहस आएल। साहस अबिते दादी लग बैस चाह पीबैले विदा भेलौं।

दादियो जेना ताकेमे रहैथ तहिना डेग उठैबते देख बजली-

"बौआ, एमहर आबह। चाहो पीबह आ बातो-विचार करह।"

कनीकाल चुप भऽ फेर बजली-

"जखन गोरहा भीजिये गेल तखन आब कोन उपाए करब? गोरहा सुखैक समए आब थोड़े रहल, जँ समए नीक करबो करत तँ छोट-मोट काज थोड़े छी जे सम्हारि लेब। डेढ़-पोने दू हजार गोरहा अछि, सरकारी कारोबार नइ ने छी जे अरूणाचलसँ लऽ कऽ केरल धरिक लोककेँ भीड़ा देब। परिवारक काज छी, तोहूमे पुरुख दशा तोहीं भेलह, माए भरि दिन अँगने-घरक काज सम्हारैमे लगल रहै छथुन, बँचलौं खाली हम...।"

कहि दादी चुप भऽ गेली। आँखि उठा दादीपर देलिऐन तँ बुझि पड़ल जे हुमरैत मन उमैड़ रहल छैन। जइसँ बर्खाक सम्भवना बनियेँ रहल अछि।

ओना बरखा बरिसैक सोलहन्नी बिसवास नहियेँ कएल जा सकैए मुदा मौसम तँ मुस्की दाइए रहल अछि। प्रभात बेलक स्वच्छ चमक, जे कखनो वादलसँ छनि-छनि चमैक रहल अछि तँ कखनो घेर तोड़ि अपन रूप-लावण्यक चमकी पसाइर रहल अछि। तैसंग मन्द-मन्द पुर्बाक लहकी सेहो सातो परत धरतीक महमहीकेँ आसमानमे

पसाइर रहल अछि, तैपर सँ रौतुका बरखा नम-गम बनौनहि अछि।

दादीक उमड़ैत नजैरमे अपन नजैरकेँ सहटारि सटबैत बजलौं-

"दादी, साले-साल गामक एते सम्पैतक छिजानैत भऽ जाइए जइसँ साल भरिक ओहन समस्याक निदान समाजक भऽ सकैए जइसँ समाजक दुखक एकटा सीढ़ी टुटि सहीट भऽ जाएत। अपनेटा छति भेल अछि तेतबे ऐ बरखासँ नइ ने भेल!"

ओना अपन दोख टारैत बाजल रही, मुदा गीध जकाँ सात जोजन देखैवाली दादी तँ बुझिए गेली- जँ अही समस्यामे ओझरा जिनगीक बाटमे अवरोध ठाढ़ कऽ लेब, तखन तँ भूतक संग भविसोक नोकसान हएत!

एते बात दादीक मनमे अबिते जेना छत्तामे मधु संचयक दशापर नजैर चलि गेलैन तहिना बजली-

"बौआ, जिनगीक तीत-मीठक अनुभव जेते हमरा अछि, तेते तोरा नइ ने भेलह हेन, तँए तोरा अखन बच्चे बुझै छिअ।"

अकाससँ झहड़ैत पानिक बून जहिना धरती-अकासक बीच सुरूजक किरिण पाबि सतरंगी रंगमे रंगि चमकऽ लगैए, तहिना भेल।

मनमे उठल-

पहिने हुँहकारी तखन ने सुसकारी। जँ पहिने सुसकारी देबैन तखन भऽ सकैए जे फेर ने कहीं बगैद जाथि। तँए बजलौं-

"दादी, सरलो भुन्नेटा केँ किए कहबै, टुटलो हथिसार तँ नअ घरक सांगह।"

हमर बात जेना दादीकेँ दलदलाइत छातीमे गोड़ा रोपलक। गोड़ा रोपिते जहिना कोनो गाछ कलशऽ लगैत तहिना दादियोक मन कलशलैन। बजली-

"बौआ, मौधकेँ लोक अमृत बुझैए, वस्तुतः छीहो। मुदा जहिना मनुखो आ आनो पशु-ले अमृत छी तहिना...।"

'तहिना' कहि दादी मुँह बन्न कऽ लेली। ओना हुनका मुँहमे ऐगला बात सेहो जीह तरमे झाँपल रहैन, मुदा अपन जीहक सुआदकेँ जेना ओ हमरा सुआदसँ मिलबऽ लगली...। मुदा एहनो तँ होइते अछि जे महान वैज्ञानिक वस्तु हौउ आकि पौराणिक-आध्यात्मिक, अमरूखो आदमीकेँ सुनैक क्रममे जँ मनमे बैस जाइ छै, तँ कि ओइ धारमे ओ दू-चारि डेग हेलि किछु अपन विचार नइ रखैए? रखिते अछि। भलें ओ सुनटा हौउ कि उनटा, करोटिया हौउ चाहे चीतपटाह मुदा किछु-ने-किछु तँ मुहसँ निकैलते छै। तहिना मुहसँ निकलल-

"दादी, किछु छी तँ अहाँ दादीए छी आ रहबो करब, मुदा तँए हम अहाँक पोता नइ भेलौं, से अहाँ कटने हएत।"

जहिना मन भरने कोनो वस्तुक सुआदमे बिनु मिरचाइयो देने मिरचाइक सुआद आ बिनु नोन देनौं नूनक सुआद मनमे अबऽ लगै छै, तहिना दादीयोक मनमे एलैन। भरल पेटक आ भरल मनक जेहेन चुहचुही होइ छै तेहने दादीयोक मुँहक चुहचुही बुझि पड़ल। बाल-बोध जहिना सिरिस जनक मुँह देख मुस्की भरऽ लगैए तहिना भरलौं। मुस्कुड़ाइत देख दादी, फुलाएल धारक पानि जकाँ ऊपर-नीचा सहीट होइत बजली-

"बौआ, अपन बात चाह पीबकऽ करब, पहिने मौधक बात कहै छिअ। जहिना मौध अमृत छी, तहिना माछीक जनम-भूमि सेहो छी। अखैन काजक बेर अछि। चाहो पीबिये लेलह। अपन बात, अपन बाते नइ अपन-अपन विचारो अपनामे अनहक।"

दादी की कहलैन से बुझबे ने केलौं, जेना पियास लगल रहितो नोनछराह पानि आगूमे आबि गेल हुअए तहिना भेल। जइसँ मुँहक

रूपे विधुआ गेल। विधुआएल मुँह देख दादी बुझि गेली जे भैरसक नइ बुझलक।

पाशा पलैट मुँहक भाव-भूमि बदलैत बजली-

“बौआ, मन पारहक जे जइ दिन गोरहा मचान बनबऽ गेलह तइ दिन केहेन योजना बनौने रहह।”

पाछू उनैट तकलौं तँ बुझि पड़ल जे दादी सरिपौं सोलहन्नी सत्ते बात मन पाड़ि देलैन। बजलौं-

“दादी, अपना जनैत करैक चूक भऽ गेल। काजक व्यस्तता ओइ काज दिससँ मन घीचि लेलक तँए...।”

नजैर दौगा दादी मने-मन हियासली तँ बुझि पड़लैन जे महेशो झूठ नइ बाजल। देखते छिऐ जे भरि दिन घोड़ा जकाँ दौगैत रहैए, ने खाइक ठेकान छै आ ने पीबैक, भरि मुँह गपो करब से जखन ओ निचेन होइए तखन अपने काजमे बाझल रहै छी, आ जखन अपने निचेन होइ छी तखन ओ बोनाएल रहैए...।

जखन घर-परिवारक विचार-विमर्श घरक सभ जन बैस नहि करब तखन ओ घर केना चलत। बजली-

“बौआ, जखन बाल-बोध बच्चे विद्यालयमे रहैए तखन ओहो मनमे रोपऽ चाहैए जे हम डॉक्टर बनब, इन्जीनियर बनब, प्रोफेसर बनब, साहित्यकार बनब, वैज्ञानिक बनब।”

दादीक सहगर बात सुनि हुँहकारी भरलौं-

“दादी, एकरा के काटत।”

अपनाकेँ अखण्डित होइत दादी बजली-

“बौआ, सृजन-पालन आ संहार बेकती-परिवार आ समाज धरिक बीच चलैत रहैए। तँए जइ उपयोगी काजक विचार करी,

ओइमे जेतबे-तेतबे हाथो लगाइए दिऐ। से नइ केलह। काजकेँ गरभेमे रखि नाश कऽ देलहक।”

मुड़ी डोलबैत कहलयैन-

“हँ, से तँ भेल।”

दादी बजली-

“गोरहा घर नइ बनौने, गोरहा सन ईंधन-सम्पैत गोबर बनि गेल। गोरहा घर सम्पैतकेँ गारि देलक!”

आगू मुहेँ मुड़ी डोलबैत कहलयैन-

“हँ से तँ ठीके गारि देलक।”

अपन तामसक जड़ि मथियबैत दादी बजली-

“गोरहेटा कें नै बौआ, हमरा जिनगीकेँ सेहो गारि देलक।”

◌

शब्द संख्या : 1532, तिथि : 25 जून 2015

कनी हमरो सुनू

धुरिया अखाढ़। अदरा नक्षत्र रहितो बर्खाक कोन बात जे झीसियो-झासीक दरस नै, आ ने मेघमे केतौ मेघेक दरस अछि। ओना बुझि पड़ैए जहिना उनैस साए सरसैठ-अरसैठ इस्वीक अखाढ़केँ रंग चढ़ि गेल रहै तहिना अहूबेर अछि। मुदा ओहन तँ नहियेँ अछि।

सरसठि-अरसठिक जे अखाढ़ रहै ओ ओहन रहै जइमे पानि पड़ा कऽ पताल चलि गेल, जइसँ तीन साल बरखे ने भेल! तहिना माघक जाड़ जिद्द धऽ कऽ जे रहबो कएल तँ ओकरो कोनो दशा बाँकी नहियेँ रहलै। माने ई जे सिरक-सलगी अलगनीए आ ऊनी कपड़ा सभ बक्शे-बुक्सी धेने रहि गेल।

ऐबेरक धुरिया अखाढ़ हथियामे जे पानि पीलक ओ अखैन तक पियासले अछि। एकर माने ईहो नइ जेना पौरुकाँ चैतो बरिसल, बैशाखो बरिसल, जेठो बरिसल आ सप्ताह भरिक रौद भेने रस्ता-पेरामे धुरा सेहो उड़ऽ लगल।

वृद्धा पेंशनक फारम भरऽ ब्लौकपर जाएब। गामसँ डेढ़े कोसपर ब्लौक रहने गाड़ी-सवारीक खगतो नहियेँ अछि तँए पएरे जाएब। अहाँ कहब जे कोनो समान कीनऽ जे लोक गामोक दोकान जाइए तैयो साइकिलपर चढ़ि कऽ जाइए आ अहाँ एक तँ ब्लौक जाएब जैठाम हाकिम-हुक्काम रहै छैथ, तैसंग गमैया रस्ता टपि धुराएल बगए-बानि

लऽ कऽ केना जाएब। आ दोसर डेढ़ कोस पाँचो किलोमीटरसँ बेसीए भेल तेतौ जे पएरे आएब-जाएब तखन गाड़ी-सवारीक खगते की रहल।

मुदा एहेन शुरूहेसँ अभ्यास रहल। जखन मध्यमामे पढ़ैत रही, गामसँ अढ़ाइ कोस विद्यालय रहए, तखन पएरे सभ दिन आबी-जाय, आ...। एक तँ ओहुना देखै छी जे आमक जे आँठी होइए, शुरूमे कोइली रहैए, कोइलियोमे खिच्चा कोइली, चिड़ैक गेल्ह जकाँ, जे जुआइत-सकताइत मजगूत आँठी बनि जाइए।

तहिना विद्यार्थी जीवनमे जे पएरे चलैक अभ्यास बनल ओ अखनो अछिए। ऐसँ मनो खुशी रहैए जे अपने हाथे-पएरे अपन काज चला लइ छी। ओना, जहिना भगवान सभकेँ करैले हाथ, सोचै-विचारैले बुधि, खाइ-पीबै आ बजै-भुकैले मुँह दइ छथिन तहिना तँ चलैयोले पएर देनइ छैथ।

ब्लौकक काज सबेर-सकाल भऽ गेल, माने दस-सवा दस बजे काज भऽ गेल। बजारक कोनो दोसर काज रहए नइ तँए साढ़े दसे बजे करीब ब्लौकक हाता छोड़ि घरमुहाँ भऽ पौने बारह बजे घरपर आपस आबि गेल रही।

ओना जेबेकाल नहा नेने रही मुदा रौदो आ रस्तोक झमारसँ मनो तबैध गेल आ पियासो लैगे गेल रहए। रौदाएलमे पानि पीब नीक नहि तँए पानिक तरासकेँ दाबि देलौं। खाइयो बेर भाइये गेल, मुदा तबधलमे अन्नो रूचिगर नहियेँ जकाँ लगै छै, तहूमे पियासक जोर अछि, जँ कहीं पानियेँ बेसी पिया गेल तखन तँ अन्नक रूचि आरो मरि जाएत। तँए विचार केलौं जे पहिने नहा ली। कोनो कि माघ मास छी, गरमी मास छी। एकबेरक कोन बात जे तीनो बेर नहाएब अधला नहियेँ हएत। संगे देह भीजने पानियोंक तरास कमबे करत। जेते

पानिक तरास कमत तेते अन्नक तरास बढ़त। तँए नहा लेलौं।

नहा कऽ दरबज्जापर अबिते रही आकि अँगनाक ओसारपर पीढ़ियाक अवाज सुनलौं। नीक संजोग देख मनमे खुशी भेल। खुशियो केना ने होइत, संजोगे ने कर्मो जोग, ज्ञानो जोग आ भक्तियो जोग छी। नीक कर्मक नीक फल आ अधला कर्मक अधला फल सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि, आगूओ होइत रहत।

दरबज्जाक ढाठपर भीजल कपड़ा पसाइर सोझे ओसारक पीढ़ीपर पहुँच गेलौं। पहुँचते पत्नी परोसल थारी आगूमे रखि, कनी कात दबि कऽ ठाढ़ भऽ गेली। थारीकेँ निच्चाँ-ऊपर हियासि देखलौं तँ बुझि पड़ल जे जहिना झोराएल तीमन केराक तहिना तड़ुओ केरेक छी!

कनी नजैर घुसकेलौं तँ केरेक लटपट तरकारियो आ सन्नो केरेक देखलौं। फेर कनी नजैर दौगेलौं तँ लसुन देल केरे-खोंइचाक चटनियोँ बुझि पड़ल।

नीचाँ-ऊपर केराक विन्यास देख मन झुझुआ गेल। एक तँ जेठोसँ बेसी जुआएल गर्म समए चलि रहल अछि। काँच केराक गुण अछि जे पेटक बान्ह करैए। एक तँ ओहिना समैक चपेटमे देहक अन्नो-पानि सुखा जाइए तैपर आरो सुखबैक भोजन तँ प्राण भक्षके भऽ सकैए।

आँखि उठा पत्नी दिस बढ़ेलौं तँ बुझि पड़ल जे एकटा आँखिपर साड़ीक छोर पसारने कनडेरीए आँखिये अपन प्रशंसो सुनैक खियालसँ आ बाहरसँ कमा कऽ आएल रही सेहो खुशनामा सुनैले मुस्कुराइत देख रहली अछि। जखन कि अपने तामसे जरल रही आ ओ[5] चौअनियाँ मुस्की दऽ रहल छेली। मुस्कियो केना ने दितैथ, आने दिन जकाँ पाँच तरहक विन्याससँ सजल थारी जे पतिक सोझमे रखि

[5] पत्नी

खाइत देखती! आखिर पत्नीक सौभाग्य तँ...।

ओना दुनू परानीक बीच विचारोमे कमी-बेसी रहने खटपट-लटपट होइते रहैए। मनमे उठैत रहए- गरमक समैमे केराक विन्यास! मुदा पत्नी पाकल केरा आ काँच केराक गुणक भेदे ने बुझैत। यएह सभ सोचै-विचारैमे कनी हाथ वगा गेल। कनडेरिये आँखिये देखैत पत्नी पुछि देली-

"हाथ किए बगने छी?"

विचित्र स्थितिमे फँसि गेलौं। पत्नी अपने ताले बेताल रहैथ जे जहिया कोनो तीमन-तरकारी नहियोँ रहल तहियो मिरचाइयोक पाँच तरहक विन्यास- फोड़नाएल मिरचाइ, तड़ल मिरचाइ, निमकी मिरचाइ, काँच मिरचाइ आ नोन मिलौल काँच मिरचाइ- बना थारी साँठि अपन पाँचो विन्यासक संकल्प पुरैबते रहलौं अछि। जखन विधेमे कोनो विधान नइ रहत तखन पतिक सोझ मुँह निच्चोँ उतारब तँ उचित नहियेँ भेल।

ओना हमर कड़ुआएल मन देख पत्नियोँकेँ मन जेना कड़ुएलैन। की कड़ुएलैन से तँ ओ जानैथ मुदा चेहरासँ बुझि पड़ल जे ओ मने-मन धिक्कारि रहल छैथ-

"ईह! दू साए रूपैआ महिना वृद्धा पेंशन-ले जे रेठान केने आएल छैथ! होइ छैन जे बड़का पहाड़ ढाहि कऽ आएल छी। तीन साए रूपैआ महिना चाहक खर्च छैन आ दू साए भेट गेने सभ दिन बुढ़ाड़ीमे मुरगी अण्डा आ दूध पीता। करनी अपाहिजक आ भरनी कमासुतक!"

विचारणीय बात अछि, जे जँ हमरा हाथे काज नइ हएत, माने हमर हाथक काजे हेरा जाएत, तखन उत्पादन केना हएत। आ जखन उत्पादने ने हएत तखन समाज आगू ससरत केना। खाली बाजब 'भाषण' भेल मुदा काजक संग बाजब ने 'बाजब' भेल।

अही गुन-धुनमे थारीपर बैसल हाथ वागने रही, तही बीच थारीमे परसल केराक तड़ुआ टोकलक-

"हमर वलिदानकेँ अहाँ बुझि नइ पाबि रहल छी, तँए हाथ वागने छी।"

पुछलिऐ-

"अहाँक की वलिदान?"

जेना केरोकेँ बुझि पड़लै जे एतेटा जिनगीमे कहियो कियो एहेन बात नइ पुछने छल। जखन पुछलक तँ हमहूँ किए ने अपन छाती खोलि उघारि कहिऐ। बाजल-

"हमर दिन अदिन भऽ गेल! नइ ते हमहीं जइ गाछ सभकेँ ठाढ़ केलौं सएह बेइज्जत कऽ रहल अछि।"

मनमे उठल- मनुखकेँ इज्जत-आवरूक ठेकाने ने छै आ तीमन-तरकारी एहेन बात किए बजैए? पुछलिऐ-

"की गाछ सभकेँ ठाढ़ केलहक आ की बेइज्जत कऽ रहलह अछि?"

फनैक कऽ झोराएल केरा बाजल-

"तोहीं कहह जे फल रहैत तरकारी बनल छी, से उचित भेल?"

जेते विचारकेँ सोझरबऽ चाहै छी, तेते रंग-बिरंगक ओझरीए लगि जाइए। तखन? मनकेँ थीर करैत कहलिऐ-

"जखन तूँ थारीमे आबि गेल छह, दुनियाँ छुटि रहल छह तखन पहिने तोरे बात सुनि लेब, पछाइत खाएब।"

हमर बात सुनि थारीएमे गल-गुल हुअ लगल। निच्चासँ झोराएल केरा कहै- पहिने हम अपन दुखनामा बाजब, तँ तड़ुआ कहै- हम ऊपरमे छी, पहिने अपन दुखनामा हम बाजब। मुदा लगले लटपट

केरा कहै- हमहूँ तँ ऊपरेमे छी तखन पहिने हम किए ने बाजब।

तहिना कातसँ पीसाएल चटनी कहै- हमरासँ मेहीं के छेँ जे पहिने बजमेँ, तँए पहिने हम बजबौ। तँ बगलमे बैसल सन्ना कहै- जहिना छोट दाना भेने मरूआ कुअन भेल अछि, तहिना तोहर कोनो मद्दी नहि। देह-हाथ मोटगर-डटगर अछि हम्मर आ बजमेँ तूँ। तोरासँ पहिने हम बाजब।

दुनू हाथ उठा 'शान्त-शान्त' कहैत-कहैत सभ शान्त भेल। पुछलिऐ-

"सभ ते कोनो ने कोनो रूपे केरे भेलह किने?"

जेना कोनो झगड़ाक पछाइत आकि किछु बजला उत्तर कनी टिफीन करैक मन होइए तहिना सभ केरोकेँ भेल। सभ सबहक मुँह ताकऽ लगल जे के की बजैए। जखन सभ एके छी तखन जँ फुटा कऽ कोइ अपना-ले बाजत तखन ने कहबै- तूँ स्वार्थी छेँ, लोभी छेँ जे सबहक बात नहि बाजि, अपन बात फुटा कऽ बजै छेँ।

मुहेँ तका-तकीमे सभ चुप भऽ गेल। अपनो भूखो लगल रहए आ पियासो रहबे करए, ओना पियास तँ तरसाइत तरसा गेल रहए मुदा थारीमे पड़ल वलिवेदीकेँ रोकलो तँ नहियेँ जा सकैए। ओ तँ कण्ठे लग अँटैक कऽ गरगट मचा देत। जखन केरा दिससँ कोनो प्रश्न नहि उठल तखन कहलिऐ-

"देखह भाय, तूँ सभ एकमुहरी भऽ अपन विचार राखह।"

मुहसँ प्रश्न खसिते बीचमे एकटा टभकल-

"पहिने ई कहू जे देवस्थानमे चढ़ैबला परसाद थारीक कँचका सन्ना बनल छी, से उचित भेल?"

उचित की भेल, अनुचित की भेल ई तँ पछाइत बूझल जाएत

मुदा एना भेल किए? ऐ प्रश्नमे ओझराएले रही कि आरो प्रश्न मनमे उठि गेल- जेतए मालदह आकि पाकल बम्बै आम आगूक थारीमे रहत तेतए पाकल केराकेँ के पूछत?

मुदा आमोकेँ बलउमकी तँ नहियेँ छै। वेचाराक मास-डेढ़ मासक औरुदामे धार जकाँ उजैहिया चढ़ल छै, फेर सालो भरि हेराएल रहत। मुदा केराकेँ तँ से नै अछि। बारहो मासक औरुदा छै..!

किछु फुरबे ने करए जे की जवाब दिऐ। मुदा ओकरा सबहक जे मुँहक रोहैण देखलिऐ तइसँ बुझि पड़ल जे हाथ वागने देख जनु ओकरो सभकेँ खौंझ उठि गेलइ, तँए एना बजैए। कहलिऐ-

“भाय, तोँ सभ ते अपने बरहबट्टू भऽ गेल छह, ठौर-ठेकान छहे ने जे कोन मास बच्चा जनमाबी जे माघक जाड़ खेप सकए, सालो भरि कच्चे-बच्चे वृद्धि करैत रहै छह, जइसँ भरण-पोषणमे कोताही हेबे करतह। अखैन हमहूँ भुखाएल छी, तोरा सभसँ समए लइ छिअ, खेला-पीला पछाइत निचेनसँ गप करब।”

मुदा से सभ मानि गेल। पत्नीकेँ कहलयैन-

“तीमनक रस आ चटनी रहऽ दियौ बाँकी सभ चीज थारीसँ हटा लिअ। दालि जकाँ झोर आ तरकारी जकाँ चटनी तँ भाइये गेल।”

पत्नीक मनमे यकायक जेना कोनो झटका लगलैन तहिना झटैक बजली-

“की करितौं, बाड़ीमे जुआएल केरा देखलिऐ, आमक मास एकरा के पुछैत। अपने आम खाएब आकि केरा, तहूमे छोट-छीन घौरौ नहियेँ छल तँए ओकरे काटि कऽ आनि तीमन-तरकारी, तरूआ-चटनी सभ किछु बनेलौं।”

बजैत-बजैत पत्नीक मन चनकऽ लगलैन। चनकबो केना ने करितैन। एक दिस पतिव्रत धर्मक हनन होइत देखैथ तँ दोसर दिस

भूखल पतिकेँ थारीपरसँ उठैत...। केतए गेल दिन भरिक श्रम, जखन कोनो ओकर उपयोगे नहि!

मुदा एना भेल किए से बुझिए ने पाबि रहल छेली। बुझबो केना करितैथ। अपनो तँ कहियो मौसमक अनुकूल केराक उपयोग नहियेँ कहने छेलिऐन..?

..कहबो केना करितिऐन, कोनो कि बुझल छेलए जे एना हएत। एना भऽ आमो कहाँ कहियो फड़ल देखलिऐ। जेना 1962 इस्वीमे फड़ल छल तहिना फड़ि गेल। ओना अखैन तक जे थारीमे हाथ वागि तीमन-तरकारीसँ गप करै छेलौं से पत्नी नइ सुनली। नइ सुनैक कारण छेलैन जे मन घुरिया गेल छेलैन जे भैरसक गिरगिट-तिरगिट ने तीमनमे पड़ि गेल छैन, आकि मकड़े-तकड़ा ने तड़ुआ संगे तड़ा गेल। मुदा किम्हरो ते एके भाग ने भेल हएत, या तँ तीमनमे गिरगिट पड़ल हएत या तड़ुआमे मकड़ा, तइले बाँकी विन्यासक की दोख भेल जे हाथ बगने छैथ?

भूखल-पियासल मनुखकेँ देख केकर मन नइ चहकतै, तहूमे जे परिवारक कर्ता-धर्ता छी।

आँखिपर सँ साड़ीक कोर सरका पत्नी ओइ अपराधी जकाँ याचना करए लगली जे निर्दोष अछि। बजली-

“हमरासँ की कसूर भेल?”

यकायक जेना घरक सीकपर सँ कोनो वौस खसने छहोंछित भऽ छिड़िया जाइए तहिना मन छिड़िया गेल। बजलौं-

“सचार लागल थारी आगूमे अछि, अहाँक चूक केतौ ने अछि। अहीं की करितौं, केराकेँ जँ काटि तरकारी बना नइ खा लेब तँ ओकर जिनगी गलिये-पचिये ने जाएत।”

जेना हमर बात सुनि पत्नी साँस छोड़लैन। अपना बुझि पड़ल जे

किताबक एक पराग्राफ भैरसक पढ़ि लेली तँए किछु विचार छुलकैन अछि। आस्तेसँ सहटैत कनी आगू बढ़ि लगमे आबि अपन सुखाएल धारक रूप साजि आँखि मिरमिरेली।

बुझि पड़ल जे मोती झहैर रहल छैन। ओ मोती नोरक छिऐन आकि मतिक से तँ ओ जानैथ, मुदा अपना बुझि पड़ल जे किछु बुझैक, सुनैक आ जनैक जिज्ञासा मनमे उठि रहल छैन।

हिया कऽ चारू दिस देखलौं तँ मौसम अनुकूल बुझि पड़ल। अनुकूल ई जे एहेन गर्म समए- जइमे पतालोक पानि थस लऽ लइए, तखन साढ़े तीन हाथक मनुखक हीरकेँ सोंखब तँ अनुकूले अछि, तैठाम ब्लॉटिंग पेपर जकाँ काँच केराक विन्यास तँ अनेरे पथसँ कुपथ भेल!

किछु फुरबे ने करए। एके वस्तु एकठाम पथक काज करैए तँ दोसरठाम कुपथ भऽ जाइए।

पत्नीकेँ कहलयैन-

“ओना अखन जँ थारीमे देखाइयो-देखाइयो गुण-अवगुण कहब,से अहाँ थोड़े देखबै। तँए अखैन जे मन मानैए खाए दिअ। खेला-पीला पछाइत ओछाइनपर दुनू गोरे बतिया लेब।”

मुदा तैयो पत्नीक मन झुझुआइते रहलैन। झुझुआइत ई रहलैन जे एते हरानसँ जइ पति-ले सेवा-श्रम केलौं, तैयो जखन हुनका पइठ नइ भेलैन तखन हमर धरम की भेल?

पत्नीक मनक चढ़ा-ऊतरी देख कहलयैन-

“अहाँ अनेरे आइन-पीड़ा मनमे अनै छी, जेते थारीमे आन दिन भात साँठि कऽ अनै छेलौं, तेते ते अननहि छी किने, से जखन हम सठाइये लेब तखन भूखल केना रहलौं, तइले अनेरे मन अनोन-विसनोन केने छी।”

जेना अखाढ़मे रंग-रंगक बीआ-बाइल नैहरसँ सासुरक आबा-जाही शुरू करैए तहिना पत्नियोंक मनमे विचारक आबा-जाही शुरू भऽ गेलैन। बजली-

“अखन जे मन मानैए से खा लिअ। मुदा खेला पछाइत बिसरब नइ, बुझा देब। अखन अहाँ संग हमहूँ सभ विन्यास वागि लेब, सएह ने?”

हँसैत बजलौं-

“हँ तँ सहए ने ते और की।”

◌

शब्द संख्या : 1983, तिथि : 29 जून 2015

गामक बान्ह

करीब नअ बजे भिनसरमे झंझारपुर बजारसँ एलौं कि पत्नी कहलैन-

"बुधियार कक्काक माए मरि गेलखिन।"

ओना ओही रस्ते, माने हुनके घर लग होइत आएल रही तँ कन्ना-रोहट नइ सुनने रही, जँ सुनने रहितौं तँ अनेरे रूकि कऽ जिगेसा कऽ नेने रहितिऐन। मुदा से सुनबे ने केलौं।

तँए पत्नीक बातपर कनी-मनी बिसवास भेबो कएल आ कनी-मनी नहियोँ भेल।

ओना गामक गोटि-पँगरा जनिजातियो आ बच्चो कँ बुधियार कक्काक आँगन जाइतो आ निकैलतो देखने रही, मुदा एनाइ-गेनाइक माने मरनीए नइ होइ छै, आनो-आनो माने होइते छै, तँए किए बिसवास होइतए जे बुधियार कक्काक माइये मरि गेलैन।

रस्ता-पेरा, आनसँ भेँट भेला पछाइत कुशल-छेम तँ होइए मुदा से तँ होइए जिनगीक आन-आन काजक लेल, 'के मरल', 'के नइ मरल', से थोड़े होइए। तँए लोकक आवा-जाहीसँ किए पुछितिऐ।

जलखै नइ केने रही, तँए जलखैयक तिसना[6] लैगे गेल रहए।

[6] तृष्णा

मुदा सोझमे तेहेन बात पत्नीक मुहसँ खसल जे अग-दिगमे पड़ि गेलौं जे पहिने जलखै करी आकि देखऽ जाइ। फेर भेल जे पहिने जलखैए कऽ ली।

जलखै-खेनाइसँ पहिने मनमे उठल जे आन काज तँ छी नहि जे खा-पीब, पान-सुपारी चिबबैत जिगेसा करब। मृत्यु छी!

मुदा लगले मनमे आएल- भाय मृत्युकेँ तँ लोक चोराइओ कऽ किछुकाल रखैए। किए ने हमहूँ मनमे चोरा कऽ रखि ली आ जलखै केला पछाइत पत्नीकेँ कहिऐन जे दादीकेँ देखने अबै छी।

ओना हमर बात पत्नीकेँ नीक नइ लगलैन। किएक तँ ओहो गामक आने स्त्रीगण जकाँ खोटिकर्मा सेहो छथिए। मृत्युक नाओं सुनला पछाइत ओइ दिन संलग्न परिवारक लोक लेल अन्न तँ अन्न रहैए नइ जे मुँहमे लेत, ओ एकादशीक अन्न जकाँ अन्न नहि पील रहैए! मुदा गल्तियोकेँ नपैक की कोनो एकेटा तराजू अछि, केतौ डोमाउ तराजूसँ काज चलैए, तँ केतौ टीन-चदराक पलड़ासँ। केतौ आँखिक तराजूसँ काज चलैए, तँ केतौ राटन-कमानीदार तुलासँ।

जखने रंग-रंगक तराजू रहत तखने रंग-रंगक तौलो हएत आ रंग-रंगक ओजनो हएत किने। देखते छी जे गाममे कोनो उत्पात होइए, तँ तील ताड़पर चढ़ि जाइए आ ताड़ भार तर सठियाइत चलि जाइए। फेर मनमे भेल जे जँ दादी मरिये गेल हेती तँ किए ने तैयारे भऽ कऽ जाएब आ सभ वृतान्त निमाहनहि आएब। कनी देरीए-सँ ने पहुँचब, कहबैन जे काका कनी नून-तेल आनऽ झंझारपुर चलि गेल छेलौं, तँए अबैमे थोड़े देरी भऽ गेल। नइ जँ कहीं अपने रस्ता दिस तकने हेता आ टपैत देखने हेता तैयो तँ बुझिए गेल हेता। नइ जँ मृत्युक नाओं सुनि रूकैत नहि देखलैन तँ ओहो तँ अँगनासँ चिक्कैर नहियेँ बाजल छला। मुदा दुनियाँक देवता ने कम खाधुर छैथ, घरक

देवता तँ बेसी छथिए। बुधियार काकाकेँ कहबैन तँ मानि जेता मुदा पत्नी थोड़े मानती?

तत्खनात मनमे उठल, जखैन दुइये गोरेक बीचक बात अछि, तेसर तँ ने सुनलक आ ने कहबे करबै, तखन तँ भेल विचारकेँ मानब। से तँ खेला पछाइतो मानल जा सकैए तइले भुखले लहालोट हएब नीक नहि। मुदा से अपने विचारे थोड़े हएत? खाइले पीढ़ियापर बैसब अपन काज भेल, मुदा चिनवारपर सँ आनि कऽ तँ वएह ने देती। जँ कहीं ऑफिस जकाँ 'पेन डाउन हड़ताल' भेल तखन की अपने चिनवारपर पहुँच जाएब? भुखलमे तमसा कऽ पहुँचियो जाएब मुदा पुरुखसँ मौगी बनैमे तँ...। तखन?

हँ तखन एकटा उपाए अछि। गाइक बच्चा जकाँ, वौसैत देह परहक माछी-मच्छर भगैबते ओ विचार सुनैले तैयार भाइये जेती। अपन भार कटैत बजलौं-

"हम ने झंझारपुर गेल छेलौं, कोनो कि घर-दुआर उठा कऽ लऽ गेल छेलौं, अहाँ देख एलिऐन की नहि?"

चोर-मोट पकड़ाइते पत्नी सहमली। मनमे उठल अनेरे दोसर गप चालब अनुचित हएत। कहलयैन-

"घरसँ जलखै नेने आउ, खेबो करब आ बुझा कऽ कहबो करब।"

हमर बात पत्नीकेँ जेना मधनोनसँ मीठनोन जकाँ लगलैन। बजली-

"पुरुखक काजक कोनो ठेकान अछि, करवन आएब केतए जाएब। जँ केतौले घरसँ निकली ते नइ भात-रोटी तँ एक लोटा पानियोँ जरूर पीब निकली।"

गाए-गौड़ुक मिलान तँ ठेहुनो पानि दुहान। पत्नीक चपचपी देख

कहलयैन-

"गप-सप्प की केतौ पड़ाएल जाइए, नइ अखन गर लागत ते साँझोमे सुनाइए देब। मुदा पहिने भरि पेट जलखै करा दिअ।"

अपना मनमे भेल जे- शवोत्सर्ग साधारण काज नइ छी, कहुना-कहुना तँ पान-सात घन्टा लैगे जाइए।

जे रोगीक मन भावए से वैद फरमाबए। थारीक साँठसँ बुझि पड़ल जे मनेटा नइ भरि पोखो भोजन हएत। खेनाइओ शुरू केलौं आ गपो-सप्प शुरू केलौं। मनमे जेना खीझ उठि गेल तहिना कहलयैन-

"अहाँ देखैले किए ने गेल छेलौं?"

जही टोनमे कहलयैन तही टोनमे टोनियबैत पत्नी बजली-

"कहाँ जा भेल! तेते ने अँगनाक काज पसरल अछि जे साँसो लइक की पलखति होइए।"

सरदर गपसँ तँ बुझि पड़ल जे साँस रोकि जहिना साधक सभ साधना करै छैथ तहिना भैरसक ईहो केली! मुदा ई तँ बजैक चमत्कार भेल। असल चमत्कार तँ काजमे अछि। पुछलयैन-

"अहाँ बुझलिऐ केना जे दादी मरि गेली?"

अपन बातकेँ मजगूतीसँ सत्यापित करैत पत्नी दर्जनो गवाहीक व्यान दर्ज करौलैन। कोटे-कचहरी जकाँ तेते गवाही भऽ गेल जे जाबे सुनवाहि हएत ताबे मुदालहे मरि जाएत। तखन ओइ फैसलाक मोले की?

पुछलयैन-

"अहाँ काजमे लगल रही आ ओ सभ रस्ते-रस्ते बजैत जाइ-अबै छेली जे अहाँ एते गोरे मुँहक बात सुनलौं?"

हम जे पुछऽ चाहै छेलिऐन से ओ बुझिए ने पबै छेली। तथापि

धाँइ-दे बजली-

“सुगिया दादी तेना कानि-कानि कहली से छाती दड़कि गेल! ओहिना टक-टक दादी आँखि तकै छैथ, मुहसँ हँसी निकैल रहल छैन, जेना बुझिए ने पड़ैए जे दादी मुइली अछि।”

हाँइ-हाँइ खेबो करी आ गपोमे लाड़ैन-चालैन चलबैत रही। पुछलयैन-

“एतेखान जे एतेक गोरेसँ गप-सप्प करैमे लगा देलौं, मुदा एक लपकन अपनेसँ जा नइ देखलयैन, सएह ने?”

यकायक जेना मुँह निच्चाँ लटैक गेलैन। बजली किछु ने मुदा बुझि पड़ल जे भीतरे-भीतर गुम्हैर रहली अछि। चुपचाप हाथ-मुँह धोइ कऽ बुधियार काका ऐठाम विदा भेलौं।

रस्तामे आपस होइत ओना केते गोरेकेँ देखिऐ, मुदा किछु पूछब रस्ता रोकबो आ रूकबो हएत। माने जेते समए बुधियार काका ऐठाम जाइमे लागत, रस्तामे रूकने ओते आरो बेसी समए तँ लगबे ने करत। ओना अधिकतर महिलेकेँ आपस होइत देखिऐ। जइसँ किछु पुछब आरो उचित ने बुझि पड़ए। पुरुखसँ तँ ऐगला किरिया-कर्मक विषयमे गप-सप्प करैक प्रयोजनो पड़ैए तँए ई भेल काज निविते काज, तँए एकरा रस्ता-रोकब नइ कहबै। ओना पुरुखक आपसी नहियेँ जकाँ देखमे अबए, तँ सीटियाएल रस्ता बढ़ैत-गेलौं, बढ़ैत गेलौं।

मनमे एकटा खटका उठि गेल। पुरुख हुअए कि महिला ऐगला प्रक्रियाक जे काज अछि ओ पुरुखक भेल, भलें महिला यादस्वरूप अबैत होथि। ओना महिलाक डाह-प्रक्रियाकेँ पुरुखक सहयोगोसँ जँ महिल पुरा करैथ तँ ओ बेसी नीक।

अँगना पहुँचते बुधियार काकाकेँ माइयक आगूमे बैसल देखलयैन। प्रेमा काकी जिगेसु सबहक उसार-बैसारमे व्यस्त रहैथ।

मिसियो भरि बुधियार कक्काक मुँह मलिन नइ देखलयैन। दादीक मुँह परहक कपड़ा हटल, बाँकी सौंसे देह झाँपल। ओहिना टकटक तकैत, मुँहक रूखिसँ बुझि पड़ल जे आब बजती तब बजती मुदा बोलता पुरुख तँ मुँह मुनि नेने छेलैन।

दादीक खिलैत मुँह देख मनमे उठल- जेना पुरान वस्त्रकेँ लोक बदलैए तहिना दादी बुधियार काका सन बेटापर छोड़ि अपने धरती बदैल रहल छैथ...।

गाममे ओहन बेकती बुधियार काका छैथ जे परिवारसँ आगू बढ़ि किछु काजकेँ समाजिक बुझि, मनमे कहियो ने रखलैन जे समाजिक काजमे कियो कहत तखन जाएब, आग्रहक पछाइत काजमे हाथ बटाएब। अपन कर्तव्य-कर्म बुझि बिनु केकरो कहने एहेन-एहेन काजमे माने डाह-कर्ममे हाथ बटाएब अपन दायित्व बुझै छैथ। पचीसो परिवारक एहेन काजमे माने मृत्युक पछातिक डाह-कर्मक प्रक्रियामे बुधियार कक्काक संगे हमहूँ रहि चुकल छी। मुदा आइ बुधियार काकाकेँ सिरचढ़ काज छैन, तँ एकोटा पुरुखक लसि नइ देख रहल छी! एना किए?

ओना दादीक सिरहौनेमे बुधियार काका सेहो बैसल रहैथ आ कनियेँ हटि कऽ हमहूँ बैस दादीक यादिमे आँखि बन्न केने रही। मुदा मनमे यएह घुरियाइत रहए जे अँगनामे बुधियार कक्काक संग दोसराइत हमहींटा छी। अनेको काज अँगनामे उपस्थित अछि। बजारसँ वस्त्र आनब, बाँस काटि चचरी बनाएब, डाहैले लकड़ीक ओरियान करब, इत्यादि-इत्यादि...।

आँखि बन्न, मनमे किछु फुरबे ने करए जे आँखि खोलि बुधियार काकाकेँ पुछयैन- जारैनक ओरियान करए, बँसवाड़िसँ बाँस काटए, बजारसँ कपड़ा कीनए कियो गेल की नइ गेल, की केना काज चलि

रहल अछि...।

फेर मन कहलक- केना पुछबैन जे काजक की रूपरेखा अछि, हम हुनकर घरक गारजन तँ छी नइ जे हिसाब पुछबैन। बेसी-सँ-बेसी यएह ने कहबैन जे काका हमहूँ आबि गेलौं, काजमे बेसी देरी नइ करू।

मुदा लगले मनमे उठि गेल जे काजकेँ की बुधियारे काका देरी केने छैथ जे कहबैन? कोनो गरे ने भेटए जे आँखि खोलि बुधियार काकासँ किछु पुछयैन। हलाँकी बहन्नो रहबे करए; आँखि मुनने रही।

कनियेँकालक पछाइत मनमे उठल- बुधियार काकासँ काजक हिसाब नइ पुछबैन मुदा एते तँ पुछिये सकै छिऐन ने जे सुनील आ सुधीरकेँ आँगनमे नइ देखै छिऐ...।

सुनील-सुधीर दुनू बेटा। ओना बुधियार कक्काक बिसवास जहिना हमरापर छैन, तहिना हमरो हुनकापर अछि। जे से गामक केते गोरे बजबो तँ करिते छैथ जे एकपेटुआ दुनू छी।

ओना एकपेटुआ सहोदर भाए-बहिन होइए, मुदा अपनो बीरान आ बीरानो अपन तँ होइते अछि।

पुछलयैन-

“काका, दुनू भाँइ नजैरपर नइ आबि रहल अछि?”

सवुरदानाक फलहार कएल एकादशीक व्रतधारी जहिना टनगरसँ बजैत तहिना बुधियार काका बजला-

“एक भाँइ बजारक काज करए गेल आ दोसर असमसानक काज करए।”

सोझ-साझ जवाब तँ बुधियार काका दऽ देलैन मुदा बिच्चेमे भकचका गेलौं। भकचका ई गेलौं जे असगरे बजार गेल आकि कियो

दोसराइतो? तहिना असमसानोक सम्बन्धमे भेल। अछिया खुनब अछि, जारैन काटब अछि, तहूसँ जरूरी पहिने बाँसकेँ काटि-खोंटि, फाड़ि-चीर कऽ चचरी बनबैक अछि, तहूमे चचरियो कि कोनो बाँसेटा सँ बनत। तइले साबेक जौड़ो बाँटए पड़त किने। तहूमे साबे कि पटुआक सोन छी जे लगले हाथपर चढ़ि जाएत, ओकरा तँ पहिने पानिमे भीजैले दिअ पड़ै छै। तहूमे 2008 इस्वीक बाढ़िक प्रतापे तँ साबेक ओधियो नइ बाँचल। प्लाष्टिकक जौड़ी जे भेटबो करत तँ फेर ने कहीं तेसरे बखेड़ा ठाढ़ भऽ जाए। जहिना दरभंगाक अस्पताल बनैकाल जे अफवाह उठल आकि सिमरिया पुलक समए लकड़-सुंगहाक जहिना अफवाह भेल, तहिना ने कहीं भऽ जाए।

मनेमे अग-दिग हुअ लगल। मुदा लगले फेर भेल जे अँगनोमे तँ कम-सँ-कम दू गोरेकेँ जिगेसा केनिहारि स्त्रीगण सभ देखबो तँ करिते हेती। नइ पत्नीक रूपमे तँ अभिभावको रूपमे तँ अपन-अपन पुरुख-पात्रकेँ कहबे करतैन। मुदा लगले मन भिन-भिना गेल, समाजो कि समाज रहल! सभ लोक-लाज उठा सबहक सभ ठकदरूआ बनि गेल। विवेकाभूषणक चर्च बेइमानी छी। एक तँ मृत्युक पछातिक डाह-कर्म पहाड़ सन भारी काज अछि, आ तैठाम जँ लोकक अभाव भऽ जाएत तखन ओ पहाड़ उठत केना? किछु फुरबे ने करए।

मुदा लगले भेल जे जँ दूओटा पुरुख आँगनमे छी, तखनो जँ दादीक भजन-कीर्तन नइ हेतैन, सेहो तँ नीक नहियेँ भेल...।

कहलयैन-

“बुधियार काका, अहाँ बड़ भागशाली छी, मरितो समए दादी नीक मौसम बना मरली।”

हमर बात जेना बुधियार काकाकेँ नीक लगलैन। बजला-

“किछु छी तँ माए माइये छी किने। किएक वेचारीक मनमे

बेटाक प्रति कखनो कलुषता अबितैन।"

मुड़ी डोलबैत हुँहकारी भरैत बजलौं-

"काका, ने माघ मास सन दुरकाल समए आ ने हथियाक सतैहिया झाँट, केहेन सुन्नर चैतक मध्यमास समए अछि, जेहने दिन तेहने राति, सभ काज निचेनसँ हएत।"

मनमे ईहो रहबे करए जे तेहेन नीकसँ खा नेने छी जे पान-सात घन्टा टनाटन देह करैत रहत। तँए मनमे खुशी रहबे करए। मुदा काजक हिसाबसँ लोककेँ नहि देख मनमे हुअए जे पुछयैन- 'किए ने कियो हुलकियो मारैले आबि रहला अछि!'

बुधियार काका अनकर भागी थोड़े छैथ, जे अनकर बात कहता। जहिना ओ भागी नइ छैथ तहिना ने हमहूँ भेलौं। किए केकरो तीत-मीठ बात बुझिऐ। मुदा लगले जेना मन धिक्कारऽ लगए जे पचीसोसँ ऊपर समाजक परिवारमे दुनू गोरे संगे मृत्युक डाह प्रक्रिया पुरा केने छी, मुदा आइ जखन हिनका सिरचढ़ काज छैन तँ ऐठाम समाजक दोसराइत कियो ने। वाह रे समाज!

दुनू गोरे गप-सप्प करिते रही कि सुनील दूटा बाँस, बँसवाड़ियेसँ पाङ्गि दुनू कन्हापर कन्हेठने पहुँचल। काज लग जँ अकाज बनि रही, ईहो नीक नहि, मुदा मनमे घुरियाइत रहए जे किछु विचार तँ बुधियार कक्काक हेबे करतैन, से बाजि नहि रहला अछि। मुदा हमहीं किए पुछियौन। अपन देहक कियो मालिक अछि, जे नीक बुझि पड़त, से करब।

मनेमे झिका-तीरी हुअ लगल, एकटा कहए जे कनी गामक गमगमी कक्काक मुहसँ सुनि ली। अखन धरि तँ मानिते एलिऐन जे काका अपना विचारक अपने मालिक छैथ, आ मलिकाना केना चलैत रहतैन तही पाछू दिन-राति तवाह रहै छैथ।

दोसर मन कहए जे जखन गामोक लोक एकपेटुआ बुझिते अछि, तखन किए ने कहबै- 'जे लोरिकक भात खाएत ओ लोरिकक बरियात जाएत। भाय, बरियाती दुनू होइ छै, बिआहोक होइ छै आ मृत्युक एक प्रक्रियामे सेहो होइ छै।

मनमे अबिते बुधियार काकाकेँ पुछौ ने लगलयैन जे काका कनी काज देखै छिऐ। ओतए-सँ उठि गेलौं। टोने-टोनी चीर-फारि देबइ, जैठाम पहाड़ सन आगूमे काज पसरल अछि तैठाम करैबला गिनतीमे कम पड़ै छी, तखन तँ यएह ने हएत जे कनी बेसी समए लगत। तइले कण्ठ लग तक जलखै काइए आएल छी।

सुनीलकेँ कहलिऐ-

"बौआ, तूँ बाँसक टोन-टान करह आ हम चारि हाथ साबे खड़ैर लइ छी।"

सोबेक नाओं सुनि सुनील बाजल-

"साबे घरमे कहाँ अछि।"

दोहरबैत पुछलिऐ-

"मूजो घरमे नइ छह?"

कहलक-

"नहि।"

अपनो घरमे ने साबे अछि आ ने मूज, तखन तँ भेल समाजसँ माँगब। समाजक मनमे अनोन-विसनोन अछि से देखते छिऐ। तँए बुधियार काकासँ बिनु पुछने आगू बढ़ि किछु करब अनुचित हएत। ससैर कऽ बुधियार काका लग पहुँच कहलयैन-

"काका, साबे तँ नइए। जौड़ कथीक वाँटब जे चचरी बनत?"

तही बीच सुधीर बजारसँ कपड़ा नेने पहुँच गेल। साइकिलक

कैरियरपर मोड़ल-सोड़ल कपड़ा। बीचमे ठाढ़ चारू दिस ताकी तँ बुझि पड़ए जे केना पार लागत। बेसी-सँ-बेसी तँ हम एतबे ने करबैन जे तत्वनात जइ काजक जरूरत अछि से नजैरपर देबैन। तीनू बापूत बुधियार काका तीन घाटपर ठाढ़, एकमुहरी विचार केना हएत? परिवार-समाजक बीच तना-तनी बुझिए पड़ैए।

बुधियार काका लग पहुँच कहलयैन-

"काका, अहाँ जेहने अँखिगर छी तेहने पँखिगर सेहो छी, परिवारक काज छी तँए चारू गोरे एकठाम भऽ काजक एकराय बना करब।"

बुधियार काका हमर बात बुझि गेला। बुझिते जेना मन खिललैन। खिलबो केना ने करितैन, जइ परिवारमे दूटा समकश काज केनहार पुरुख आ तैसंग दुनूक समकश नारीकेँ जँ परिवारक मोटा उठा चलैक संकल्प मनमे आबि जानि तँ मोटा कोनो मोटा नइ रहत...। बजला-

"बौआ, बेसी-सँ-बेसी यएह ने हएत जे जेते अनिवार्य काज अछि ओतेकेँ पुरबैत काज पुड़ाएब। मुदा तोहीं कहह जे जइ मृत्यु-प्रक्रियाक जेते काज समाजमे केलिऐ, ओ केतए गेल! अढ़ाइ साङ्गि सभपर अछि। मुदा कियो समाजक दायित्व बुझि करैए आ कियो नइ करैए, तेकरा हम की करबै।"

कहि जेना आगूक विचारकेँ बुधियार काका रोकि लेलैन। मुदा बजैले मुँह लुसफुसाइते रहैन। बिच्चेमे सह दैत कहलयैन-

"से की कोनो चोराएल अछि।"

बुधियार कक्काक मनक चपचपी सौन जकाँ बढ़ऽ लगलैन। दुनू भाँइ- सुनील आ सुधीर अपन-अपन काजमे जी खोलि कऽ लागल। अपने त्रिशंकु जकाँ बीचमे लटैक गेलौं जे ने कोनो काज कऽ रहल छी

आने विचार फरिछा रहल अछि।

बुधियार काका जेना मनक बात बुझि गेला। बजला-

"बौआ, दुनियाँमे जेते काज अछि, ओइ संग ओइमे ओकर फलो निहित अछि। मुदा अखन बेसी नइ कहबह।"

आरो मन ओझरा गेल जे चारि गोटे जे चचरी उठाएब सेहो ने छी। सुनील लग जा बाँस टोनियबऽ लगलौं-

"बौआ, केना जारैनक ओरियान करबह, केना असमसान घाट जेबह?"

मुदा जेना तीनू बापूतक एके पेट। पेट ई जे अपन परिवार छी, अपने केलासँ नीक आकि अधला, परिवारक गाड़ी चलैत रहत। रहल बात समाजक, ओ तँ ताबे तक ओहिना ढहैत-ढनमनाइत रहत जाबे बेकती परिवारसँ ऊपर समाजकेँ नहि बुझत।

हुँहकारी भरैत बजलौं-

"हुँ से तँ...।"

सह पाबि बुधियार काका बजला-

"मनुख माल-जाल थोड़े छी जे ओकरा बाँस वा लकड़ीक खुट्टामे मोटगर डोरीसँ बान्हि कऽ राखल जाएत। ओ तँ बुधिक मालिक विवेकी छी। अपन कर्मक बन्धन अपने ने बना चलत। से जँ नइ चलत तँ नै चलत। अपन काज छी, नीक कि बेजए पार-घाट लगबे करत किने।"

◌

शब्द संख्या : 2437, तिथि : 03 जुलाई- 2015

गुड़ा-खुद्दीक रोटी

किरिण फुटलो ने छल कि चौकक चबूतराबला चापाकलपर हल्ला भेल। ओहन हल्ला नइ भेल जेना सात गामक लोक एक्केबेर करैए, मुदा ओहनो नइ भेल जे दू पथियासँ कम होइ।

मोहनपुरवाली अपन पड़ोस गामवाली- माने लालपुरवाली-केँ झटकी मारि कहलकैन-

“ओ बुढ़िया! खाली भभटपन लधने अछि, मरैके मन ने ते उठि-उठि आगि तपै छी।”

पड़ोसिनीक विचारमे हुँहकारी भरैत लालपुरवाली टोकारा भरलैन-

“जेकरा जे घिनाएब लिखल छै ओ कियो बाँटि लेत।”

चबूतराक निच्चाँमे सकुनी दादीक परपोती- सुदामा- दतमैन करैत टहलैत ठाढ़ रहए। पूर्ण जिनगी जीनिहारि अपन एक साए तीन बर्खक सकुनी दादीक खिदहाँस सुनि सुदामा ललैक गेल।

झटैक कऽ चबूतरापर चढ़ि मोहनपुरवालीकेँ गट्टा पकैड़ बाजल-

“अहाँ सभ जे एना केकरो अकची-दोकची जहपटार छीटने फिड़ै छी से पहिने हमरा ई बुझा दिअ जे दादीकेँ जनै केना छिऐन?”

एक तँ मोहनपुरवालीकेँ पड़ोसिनी लालपुरवालीक भर, दोसर

एके तरपानमे सात समुद्र सेहो पार करैत रहए। माने एक साए तीन बर्खक सकुनी दादीपर थाल-कादो फेकैत रहए। जे बात सुदामा बुझि गेल।

परिस्थिति विषम होइत गेल, तेकरे हल्ला भेल। अन्तमे यएह फरिछौट भेल जे सात दिनसँ सकुनी दादी बेमार छैथ, एक्केटा रट लगल छैन जे गुड़ा-खुद्दीक रोटी खाएब तखन प्राण छुटत। सएह चरचा गाममे पसैर गेल। जेकरा व्याख्याकार सभ अपना-अपना ढंगे कियो हाथीक नाँगैर छुबि हाथी बुझैए तँ कियो सूढ़ छुबि...। मुदा बात से नइ अछि। बात अछि भरल-पुरल परिवारमे सकुनी दादीक पति पचासे बर्खक अवस्थामे मरि गेलखिन, पचास बर्खसँ ऊपरसँ घरक भार उठौने सकुनी दादी आइ एक साए तीन बर्खक अवस्थामे ओछाइन धेने खाली ओतबे बात बजै छैथ, दोसर कोनो बात नहि बजै छैथ। अन्तो-अन्त सभ चुप होइत गेली।

जखन हल्ला भेल तखन अपनो नीन टुटि गेल रहए, मुदा ओछाइन नइ छोड़ने रही। नइ छोड़ैक कारण छल जे बिनु बुझने केना जाएब। ओना बुझैयोक केते रस्ता अछि। जहिना एक कानब ओहन होइए जे मृत्युक सूचना दइए तँ दोसर हँसैक सूचना सेहो दइते अछि। तहिना ने हल्लोक अछि, केतौ चोर-चोरक हल्ला होइए, तँ केतौ अगिलग्गीक हल्ला, केतौ झगड़ा-झंझटक हल्ला होइए तँ केतौ नाच-तमाशाक। मुदा से हल्लाक अकान नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं तँए अनकासँ पुछब जरूरी भाइये गेल।

ओछाइन छोड़ि चौक दिसक रस्ता पकड़लौं। चौको तँ चौके छी। ने गामक ठेकान आ ने चौकक ठेकान। केतौ साहित्यिक चौक, तँ केतौ राजनीतिक, केतौ संगीतक तँ केतौ सिनेमा-सर्कसक, केतौ ताड़ी दोकानक महराइ तँ केतौ दारू दोकानक बुबकी।

लोक चौकपर किए बैसत? जँ नइ बैसब तँ दस गोरेक विचारक आदान-प्रदान केना हएत, आ जँ से नइ हएत तँ अपन-अपन गाम भेल, जेना मन फुरए तेना राखू।

दरबज्जापर सँ कनियेँ आगू बढ़लौं कि झबड़ी दीदीकेँ अबैत देखलयैन। मनमे खुशी उपकल, खुशी ई उपकल जे लोको तँ लोके छी, केकरो फुटल लोटा जकाँ पेन फुटल छै तँ केकरो दहीक तौला जकाँ कान ओदरल छै...। मुदा से नइ झबड़ी दीदी गामक बेटी छैथ। दुरागमनक मासे दिनक पछाइत पीसा मरि गेलखिन। तहियेसँ वैधव्य धारण केने पिताक परिवारमे आबि बसली। गामक बेटी झबड़ी दीदी, तँए गामक केकरोसँ अनोन-विसनोन किए हेतैन।

सबहक ऐठाम आएब-जाएब काज-उदेममे अदौड़ी-बरी खोंटब इत्यादि समाजिक काजसँ जुड़ि समाजी रूपमे रहि रहली अछि। एकटा पैघ गुण ईहो छैन जे जेही नजैरसँ समाजकेँ भाए-बोन बुझै छैथ, तहिना विचारोक मिलानी रखने छैथ जइसँ शत-प्रतिशत बात सत् लग तक पहुँचल रहै छैन । तँए दीदीक भेँटकेँ शुभ मुहूर्त बुझि पुछलयैन-

“दीदी, केम्हर हल्ला भेल छेलइ?”

जेना दीदी ओइ झगड़ाक पनचैतिये केने अबैत होथि तहिना बजैक सुर-सार मुँहपर चमकैत रहैन। होइतो अहिना छै, पञ्च जँ अपन पनचैती लोककेँ जना नइ देलक आ पेटे-पेट रखि लेलक तँ गोल-माल नइ किए हएत। दीदी बजली-

“बौआ, गामक ते तोहीं सभ ने पुरुख-पातर भेलहक, सोल्होअना गलती मोहनपुरवालीक छेलइ, मुदा समाजो तँ समाज छी, एहेन तँ नइ ने जे समाजिक बन्हने टुटि जाए।”

दीदीक सहगर विचार सुनि आरो बुझैक विचार भेल, विचार ई

भेल जे ठाँहि-पठाँहि केकरो दोखी कहि देब आ बात बुझले ने रहत, तखन तँ अनेरे तेसर बखेड़ा बखारी बनौत। पुछलयैन-

“दीदी, कनी फरिछा कऽ कहियौ।”

जेना एकतोर महराइ गाबि महरैया साँस छोड़ैए आ मरसिया एकटा खतम करैत एके धुनमे दोसर शुरू करैए तहिना झबड़ी दीदी बजली-

“बौआ, तूँ सभ बेटा-भातिज भेलह, तोरा लग नइ बाजब तँ केकरा कहबै।”

दीदी जेना अपन पनचैतीक भारक कान्ह बदलैत होथि तहिना बुझि पड़ल। कान्ह बदलब दुनू होइए। एक कान्हपर सँ दोसर कान्हपर लेब आ दोसरकेँ कान्हपर देब सेहो होइए, से बुझि पड़ल। कहलयैन-

“कनी तखन जैड़ेसँ कहियौ, दीदी?”

झबड़ी दीदी बजली-

“सकुनी दादी ओझाइन पकैड़ लेलैन जे दिन छैथ से छैथ। हुनके-ले लोक सभ रसगुल्ला, लालमोहन, अमीरती सभ लऽ जाइ छैन तँ देखते कहै छथिन- ‘गुड़ा-खुद्दीक रोटी खाएब।’ तही बातक झगड़ा भेल।”

दीदीक गपसँ बुझि पड़ल जे सभ बातक भाँज नइ लगत। तहूमे जँ पुछि दैथ जे एकर की हेबा चाही, तखन तँ तेहेन गरगट ने गरगोटिया देत जे आरो बेसी पहपैट हएत। तइसँ नीक जे ऐठामसँ आगू ससैर ओतइ चलि जाइ। मनमे ईहो उठल जे भने भोरे-भोर दादीक दर्शनो हएत आ कौल्हुका भोरक भेँटक असीरवाद सेहो माँगि लेब। कहलयैन-

“दीदी, अहूँ अँगना-घरक काज देखियौ आ हमहूँ कनी आगू

बढ़ि देखै छिऐ।"

दीदी मानि तँ गेली मुदा मानितो-मानितो बजली-

"एहेन होइ जे एकटा नव-नौतारि कनियाँ गामक सीरे चाटए? कियो अपना बौहकेँ सम्हारि किए ने रखैए!"

दीदीकेँ तरडैत देख निकैले जाएब नीक बुझलौं। विदा होइत कहलयैन-

"घूमि कऽ अबै छी तखन सब गप फरिछा कऽ करब।"

हमर गप झबड़ियो दीदीकेँ नीक लगलैन। बजली-

"ओम्हरसँ एला पछाइत हमरो सब बात कहिहह।"

प्रश्नसँ बुझि पड़ल जे भैरसक दीदीक मन जेना भीतरे-भीतर जरि रहल छैन । कहलयैन-

"चाहक ओरियान कऽ कऽ राखब। अपना गामपर जाइसँ पहिने अहाँक भेँट कऽ लेब।"

सकुनी दादी बीस बर्खक अवस्थामे निरोग कनियाँक रूपमे अपना गाम एली। शरीरेसँ निरोग नहि, लुइर-बुइधसँ सेहो। निरोगक एक अर्थ होइए डॉक्टरी जाँच-परख केला पछातिक निरोग आ दोसर होइए रोगसँ लड़ैक उर्जवान निरोग। ऐठाम दोसर तरहक निरोग दादी सभ दिन रहली। गाम अबिते गामक समाज कियो पुतोहु, कियो काकी आ कियो भौजी मानि अपना-अपनीकेँ सभ हथिया लेलकैन।

ओना सकुनी दादीक पिताक परिवार आ ससुरक कहियौ आकि पतिक परिवारमे एक जाति रहितो स्पष्ट दूरी बनल छेलैन, अर्थक नजरिये। मुदा दुनूक दूरी मेटा गेल, जातिक बीच सम्बन्ध स्थापित करैमे। बेटा-बेटीक बिआह तँ लोक जातियेमे करैए।

श्रमशील परिवारसँ निकैल दादी निम्नवर्गीय किसान परिवारमे

आबि गेली। नैहरमे अपन खेत-पथार नइ रहने सकुनी दादी अनका खेतमे चौदहमे बर्खक अवस्थासँ माता-पिताक संग काज करैत आबि रहल छेली। जइसँ खेती-पथारीक सभ लूरि सीखि नेने छेली। अगहन-पूसक धानक लड़ती-चड़ती- माने धान काटब, तैयार करब, नार-पात समटब इत्यादि- निमाहला पछाइत धानक कुट्टी सेहो अपना ढेकीमे करै छेली, जेकर निर्धारित बोइन तँ भेटते रहैन जे तैसंग गुड़ो-खुद्दी सोल्होअना भेट जाइ छेलैन। ओही महिक्का गुड़ाकेँ खुद्दीक चिक्कसमे मिला रोटी बनबै छेली जे अपनो आ परिवारोक लोक खाइ छेलैन।

सकुनी दादीक सासुरक परिवार निम्न वर्गक किसान परिवार। ओहन परिवार जे रूढ़िवादी सोचसँ जकैड़ अपन बाड़ी-झाड़ीसँ लऽ कऽ चर-चास धरि बटाइ लगा, परश्रमावलंबी बनि चुकल छल। अपन मूल पूजीमे ह्रास हएब सोभाविके छै। मूल पूजीक माने भेल अपन श्रमक संग अपन अर्थो। जँ से नइ तँ ओ मूल पूजीसँ इतर भेल। ओना महाजनो आ बैंकोसँ लोक कर्ज लऽ पूजी निरबैत अछि, मुदा ओ अलग भेल।

सासुर परिवारमे अबिते सकुनी दादीक अपन लूरि चीज[7] देख मनमे औढ़ मारऽ लगलैन। औढ़ ई जे अपने सभ पुरुख-पात्र बैस गप-सप्पमे दिवस गूदस कऽ रहला अछि मुदा जिनगीक ठेकाने ने छैन। अपने दरबज्जापर पाहुन-परक जकाँ पुरुखकेँ बैसैक आदत आ महिलाकेँ अँगनाक भीतर बान्हि कऽ राखब। अधिकांश काजकेँ निषेध कहि निषेध केने छैथ। आँगनसँ बाड़ी घुमै-देखैक विचार ससुरक सोझ सकुनी दादी रखलैन। विचारेटा नइ रखलैन ईहो कहि देलखिन जे ऐ घरमे हमरो साझी अछि तँए अपना घरकेँ अपना लूरिये-बुधिये चलाएब। पाछू हटैत ससुर निर्णए देलखिन-

---

[7] सम्पैत

"जेहने बास तेहने अगवास, किए ने घुमब-फिरब। कोनो कि अनकर छिऐ अपन छी, अपने नइ देखब तँ आनक आशा केतेकाल।"

तीन बर्ख धरि बाड़ी-चौमास घूमि-फिरि सकुनी दादी देखैत रहली। मने-मन समैनुकूल विचारैत रहली। मन कड़कैत रहलैन, तरसैत रहलैन, दहलैत रहलैन...।

..चौमास सन खेत जइमे फल-फलहरी, तीमन-तरकारीक धनमण्डल लगबैक शक्ति अछि ओ कुरथी-तेवखा, भाँग-धथूरक बोन-झाड़ बनि घरक अगवास बनल अछि!

तीन बर्खक पछाइत सकुनी दादी आँगनसँ छलांग लगा बाड़ीमे कुदली। अखन धरि जे परिवार अपना हाथे भूमि छेदनकेँ वर्जित केने छल ओइमे झमार पड़ल।

सकुनी दादीकेँ खेतमे पदार्पण भेने परिवारमे भूचाल उठल। भाँग-बथुआ उपजैबला खेत फल-फलहरीसँ भरि गेल। मुदा से विचारोक क्षेत्रमे परिवारमे उठबे कएल। श्रमहीन आ श्रमशीलक परीक्षा आँखिक सोझ हुअ लगल। सकुनी दादीक बगावत परिवारमे आगि पजारि देलक। अन्तो-अन्त ससुर अपन निर्णए सुनबैत सकुनी दादीकेँ कहलखिन-

"कनियाँ, हम चौथापनमे आबि गेल छी, ऐगला जिनगीक कोनो ठेकान नइ अछि, मुदा तँए अहाँक विचारक कदर नइ करब सेहो नीक नहि, तहूमे अहाँ अपन बाँहि-बलक परिचए दऽ देने छी।"

कहि ससुर चुप भऽ गेलखिन, मुदा सकुनी दादी खरिआरि कऽ पुछलखिन-

"इतिहास बुझू आकि वंश ओ एक क्रम अछि, चलैत रहत, मुदा समैनुकूल विचारो आ काजो तँ बदलबे करत। तइले काज केनिहारो ने चाही।"

सकुनी दादीक विचार सुनि ससुरक मन वौआ गेलैन। मनमे रंग-रंगक विचार उठऽ लगलैन। अपन सबहक सात्विक जिनगीमे जबरदस धक्का लगल। वैचारिक क्षेत्रमे सात्विक्ता बनल रहल मुदा बेवहारिक क्षेत्रमे- माने कर्मक क्षेत्रमे- ओकर ह्रास भेल। जइसँ जिनगीक दूरी बनैत गेल। ओ बनैत-बनैत एते दूर भऽ गेल जे एक दिस सात परदाक संग नारीक बास भूमि बनल तँ दोसर दिस विभत्सता बढ़ल। खेत-पथारक बीच किसान-जमीनदारक बीच झीका-झीकी चलैत रहल खेतक उपज-सम्पैत नष्ट होइत रहल, गरीबी बढ़ैत रहल, पेट पोसैले- माने पेटक पोस खातिर लोक- पड़ाइत रहला। अन्तो अन्त निर्णएपर पहुँच ससुर कहलखिन-

"जाबे धिया-पुता बाल-बोध छल सेवा करैत परिवारक गाड़ीकेँ चलबैत रहलौं, मुदा आबक परिवारक गाड़ी तँ अहीं सभपर ने चलत।"

पिताक विचारक प्रभाव बेटोपर आ पुतोहुओपर पड़लैन। दुनूकेँ जिनगीक महान संगी बनैक अवसर भेटलैन।

पचास बर्खक अवस्थामे सकुनी दादीक पति मरि गेलखिन। सासु-ससुर पहिनहि मरि गेल रहैन। पाँच सन्तान- चारि बेटी एक बेटा-क संग सकुनी दादी परिवारक रंगमंचपर आबि गेली। पतिक बेमारीक इलाजमे परिवार खिलैच गेलैन, तैपर पतिक मृत्यु सकुनी दादीक आँखिक सोझ- माने जिनगीक सोझ-मे अमवसियाक अन्हार जकाँ दुनियाँ अन्हार भऽ पसैर गेलैन। एक दिस पतिक मृत्युक पछाइत विधवाक कलंक देखैथ जे देखौआ, चोरौआ दुनू होइए, आ दोसर दिस छअ आदमीक ओहन परिवार अछि जइमे चारि बेटीक बिआह-दानक संग पाँचम अपन बेटाक परिवार ठाढ़ करब अछि।

पाँचो बेटा-बेटीक परिवार बसबैत दादी तेसर पीढ़ीक परिवारमे

पहुँच गेली। अपना संग अपन पुतोहु, पीठपोहू भेलैन। पीठपोहुओ केना ने होनि, जे काज एक नारी कऽ सकैए ओ दोसरो तँ काइए सकैए। तेतबे किए जे समैक संग बहुत आगूओ कऽ सकैए।

तीन सीढ़ीक निच्चाँ परिवारक जे अचार-विचार रहलैन ओ एकपुरखियाह रहलैन। एकपुरखियाह भेनौं आगू ससैरते रहलैन। ससरबो केना ने करितैन, सभ घरमे ओते काज तँ ऐछे जेते लोक अछि। अपन-अपन खाड़ी बनल काज, सभ अपन-अपन जिनगी ओइमे रमौने रहल...।

आइ चारिम पीढ़ीमे चारिटा पोता सकुनी दादीकेँ छैन, जे तीन भाँइ अपन-अपन परिवारक संग एक भाँइ गौहाटी, दोसर बंगलौर, तेसर दिल्लीमे रहै छैन। एक भाँइ- माने जेठका बेटा- अपन टेक धेने छैन। टेक ई जे चारि पीढ़ीक बीचक परिवार अछि, माए-बाबू, दादी, तैपर सँ सकुनी दादी। वंशक जेठ सन्तान हमहीं छिऐ तँए नइ सेवा केने सभसँ बेसी पाप हमरे लागत। मुदा एकसंग जँ सभ मिलि रहब नीक-अधलामे संगे रहब, तखने ने ओइ पापसँ मुक्ति पाबि सकै छी।

सकुनी दादी ऐठाम पहुँचते देखलौं जे दादी टहैल रहली अछि। मुदा बिनु पएर छूने असीरवादो केना माँगब? तइ बीचक जे रस्ताक दूरी अछि तइमे मुहोँ केना चुप रहत। ई बात बुझल अछि जे दादी सभ दिन जहिना काजमे टनाटन रहली तहिना बोलो टनाटन रहलैन, मुदा आब तँ अन्तिम अवस्थामे पहुँच गेल छैथ, केना बोलीमे टनटनी औतैन। आ जँ से टनटनी नइ औतैन तँ केना बुझब जे असली चानी छैथ आकि नकली? तँए झटहा फेकैत बजलौं-

"दादी, आबो अहाँकेँ कठीए लाड़ैन नीक लगैए?"

'कठिया लाड़नि' केते रंगक होइए, ऐ फरिछबैमे दादीकेँ ओते देरी लगलैन, जाबे हम लगमे पहुँच पएर छुबि नेने छेलिऐन। पएर

छुबि संकल्प करबैत पुछलयैन-

"दादी, काल्हियो अहिना गप-सप्प करब किने?"

केना हमर मन दादी तोड़ितैथ तँए जोड़ैत बजली-

"हँ-हँ काल्हिये किए परसुओ गप-सप्प करब।"

ओना दादी अँगनेमे घुमैत-फिरैत रहैथ, मुदा हुनक घुमब-फिरब देख अपने मनमे भेल जे रोगाएल-बुढ़ाएलक तँ थरमे-मीटर छी चलब-फिरब, से किए ने दादियोक बोखार अही थरमा-मीटरसँ नापि ली। चुप देख दादीकेँ चुपी नीक नइ लगलैन, बजली-

"बौआ गोबर गणेश, आब कखनो-के अपनो मन कहैए जे बड़ बुढ़ भऽ गेलौं।"

मनमे भेल जे जँ दादियो अपन परिवारक धारी आ अपना जन्मक बर्ख मन रखने हेती तँ अपनो बुझिए पड़ैत हेतैन जे हम केतए छी। मुदा लगले मनमे भेल जे छौड़ा-माड़रि हम सभ छी तखन एते गपक खोंट-खाँट करै छी आ जोजन[8] भरि देखनिहारि ओहिना थोड़े बाजल हेती?

विचारैमे देरी भऽ गेल। दोहरबैत दादी बजली-

"बौआ, किछ बजलह नहि?"

मने-मन किछु निर्णए काइए ने पेने रही। भाय जखन बुझले अछि, जहिना इन्टरभ्यूमे प्रश्नोत्तरी नइ होइए, मात्र प्रश्न-उत्तरक बीचक गतिक दूरीक जाँच होइए तहिना तगेदा सुनि हमहूँ ओही सूदिया जकाँ महाजनक आगू अपनाकेँ उपस्थित करैत कहलयैन-

"दादी, जे बात अहाँ बजै छी, से अपना सन भेल?"

हमर बात सुनिते दादीक मन जेना नीचाँ उतरलैन। बजली-

[8] साए बर्खक जोजन

"से की, बौआ?"

कहलयैन-

"दादी, अखन अहाँक एक जिनगी पछुआएले अछि आ कहै छिऐ बड़ बुढ़ भऽ गेलौं?"

चौंकैत दादी बजली-

"से की बौआ?"

दादीक चौंकब देख मन नाचि उठल। बिजलोका खसैकाल जहिना चमकी अबैए तँ कियो चौंक जाइए आ कियो चौक मारि लइए। मुदा दादीक चौंकब से नइ छी, फेर मन भेल जे जँ चुप रहब तँ चौंकल दादी फेर तगेदा करती। तइसँ नीक जे जहिना ओ बजली तहिना कहिऐन, कहलयैन-

"दादी, अखन अहाँ झुनकुट बुढ़क आड़ियोपर ने पहुँचलौं हेन आ कहै छी बड़ बुढ़ भऽ गेलौं।"

एकटा पछुएलहा जिनगी दादीकेँ ओइ नोकरिहारा जकाँ धएल भेटलैन जिनका कोनो हेरेलहा-पछुएलहा एरियर एक-ने-एक दिन भेट जाइए। लपकि कऽ दादी बजली-

"बौआ, जखैन बजबे करै छह तँ मुँह झाड़िकऽ किए ने बजै छह, हम कोनो आन छिअह जे तूँ हमर अधला करबह।"

जिनगीक सिनेह दादीक देख कहलयैन-

"दादी, अखन अहाँ झुनकुट बुढ़ कहाँ भेलौं हेन?"

विस्मित होइत दादी बजली-

"झुनकुट बुढ़ केकरा कहै छै?"

आश भरल दादीक जिनगी देख आस भरैत कहलयैन-

"दादी, जेना धानक सीस पूर्ण जिनगी पाबि रेहे-रेहे टुटि-टुटि,

टूर बनि-बनि धरतीपर खसैए, से तँ अखन पछुआएले अछि।"

दादी बजली-

"से तूँ केना बुझै छहक?"

कहलयैन-

"अखनो देखै छी जे बोलीमे टनकी अछिए। चानी छी कि रंगा से बुझैले हाथक औंठामे टनटनी रखनहि छी।"

मनमे भेल जे जँ कहीं दादीक जिनगीक धारमे बोहिया गेलौं तखन तँ अपन काज तरे पड़ि जाएत...।

गाममे झगड़ा बझि गेल अछि...।

मुदा से भेल। 'हाथक औंठामे रखनहि छी' सुनि दादी एते मगन भऽ गेली जे बोल्तीए बन्न भऽ गेलैन। गाछी-बिरछी जकाँ सौंसे रस्ते बुझि पड़ल।

कहलयैन-

"दादी, जइ काजे आएल छेलौं से तँ बिसरिये गेल रही।"

चौंकैत दादी बजली-

"बिसरैबला गपकेँ पहिने बाजि लएह, तखन जे बिसैरो जेबह ते बिसैर जइहह।"

कहलयैन-

"दादी, गुड़ा-खुद्दीक रोटी केना बनै छै?"

चारि पीढ़ीक जिनगीक ऊपर ससरैत-छलकैत दादीक नजैर अपन नैहरक बीसम बर्खमे पहुँच गेलैन। बजली-

"बौआ, ओही गुड़ा-खुद्दीक पोस खा सासुर एलौं। मुदा आब ने ओ देवी आ ने ओ कराह रहल। मुदा हीक ओही सीकपर टाँगल

अछि।”

दादीक बात सुनि मनमे उठल- आब ते लोक पंजबिया छाँटल अरबा चाउर खाइए तैठाम दादीक गुड़ाक ओरियान केना हेतैन?

मुदा फेर भेल जे गछि लइ छिऐन, दस बीस बर्खे कोटो-कचहरीक गप फरिआइए, हम तँ सहजे ओइसँ बाहर छी।

कहलयैन-

“अहीले अहाँक हीक लटकल अछि। अखन जाइ छी, जोगाड़ केने आएब।”

◌

शब्द संख्या : 2443, तिथि : 08 जुलाई- 2015

सीरक गाछ

जेठ मास। भिनसुरका उखड़ाहाक दू घन्टाक काज पुरबैत रही कि सुर्ज दिस तकलौं। दू घन्टाक माने खेतक काजक दू घन्टा, नइ कि दिनक दू घन्टा।

रौदाएल हवा झँटियबैत-झड़कबैत रहए। अन्दाजमे आएल जे एगारह बजि गेल हएत। दू घन्टाक हिसाबसँ काजक समए पुरैत रहए। काज उसारि खुरपी-हँसुआ समेट जखन गमछा तरक मोबाइल उठेलौं कि एगारह बजैमे पाँच मिनट पछुआएल देखलिऐ। काजक समए नष्ट केना करब मुदा उसारल काजकेँ पसारबोमे तँ पाँच मिनट समए लैगे जाएत। अग-दिगमे पड़ि गेलौं।

मनमे उठल- काजोक की कमी छै जे एकटा उसैर गेल तँ दोसर नइए। दुनियाँमे ने खेतक कमी छै आ ने बाड़ीक, ने बाड़ीक कमी छै आ ने फुलवाड़ीक, ने फुलवाड़ीक कमी छै आ ने फलवाड़ीक, तहूमे फलवाड़ियो कि कोनो एके रंगक अछि, तीन-मसुआसँ बरह-बरखा धरि अछि।

की करी की नइ करी, बिच्चेमे त्रिशंकु जकाँ मन लसैक गेल। काजक पतराइत विचार समए दिस देखैक जोर मनमे मारलक। जेठ मास। केहेन जेठ? जेठो तँ जेठ होइत-होइत जहिना जठिया जाइए तहिना ने छोट होइत-होइत छोटियाइत माटि-बालुमे दबैत दबिया

जाइए? जेठो कि कोनो एके रंगक होइए, पाछूसँ अबैत गाड़ी सवार जकाँ तेहेन रूप बना रंगमंचपर नचैत आबि रहल अछि, जेकरा परेखब बाल-बोधक खेल नहि।

पाछूसँ जँ रौदियाएल समए अबैत रहल तँ आरो बेसी रौदिया जाएत, आ जँ से नै कहीं पाछू बढ़ियाएल पानि जेहेन पीने रहल तेहेन हरियाएल रहबे करत किने। मुदा जँ ने बाढ़िक पानि पीने हुअए आ ने रौदियाएल हवा पीने हुअए, तेहनो जेठ तँ होइते अछि। सएह जेठ।

ओना काजक हिसाबसँ जेठ घटियाएल रहए मुदा लम्बाइ-चौड़ाइक हिसाबसँ मिसियो भरि कमी नहि। काजक समए काजक दौड़मे ठेकान-बेठेकान भऽ जाइ छै, मुदा अकाजक समए तँ विरहाएल जकाँ बेर-बेर घड़ीक सुइआ दिस तकबे करैए। सएह भेल।

फेर मोबाइल उठा समए देखलौं तँ दू मिनट बढ़ल, तीन मिनट बाँकी अछि। माने नहाइक बेर अबैमे तीन मिनट बाँकी अछि। आगूक रस्ता बाड़ीक बीचे-बीच अछि, जेतए काज करैत रही तेतए-सँ आगूक बाड़ीमे वामा भाग पाँच गाछ लताम आ दहिना भाग सात गाछ नेबो पड़ैत अछि।

नहेबोक कि कोनो समए अछि, जेकरा जखन गर लगै छै से अपना गरे नहाइक समए बना अपन काज चलबैए। तखन तँ भेल अपन जिनगीक संकल्पित बान्हकेँ निमाहब।

मुदा ओहो तँ कोसिकन्हाक बहुआहा बाध जकाँ मनुखो आ समाजोमे तँ अछिए। जेकरामे ने कोनो आड़ि-मेड़ छै आ ने खेतक शकल-सूरत, जेम्हरे मन फुरए तेम्हरे हिया कऽ देख लिअ आ सोझहे विदा भऽ जाउ। मुदा से थोड़े अछि, तीन बजे भोरसँ नहाइक घाट शुरू होइए आ तीन बजे राति तक चलैत रहैए। बीचमे केतौ आड़ि छै जे बुझब कखन उसरैए आ कखन शुरू होइए?

वामा भाग दिस लतामक गाछ फड़सँ लदल, जेठ रहितो जेहने हरिअर पात तेहने हरिअर फड़सँ सजल-धजल अछि। तरकारीवाड़ीसँ आगू एक दिस फलक झाड़ी तँ दोसर दिस फलक तरूवाड़ी। दुनू फल जहिना नेबोक झड़झाड़ी तहिना लतामक तरूवाड़ी। दुनू दिस दुनू अपन मस्ती भरल जुआनीसँ लदल।

आगू डेग उठिते दुनू फल- माने झाड़ीक नेबो आ तरूवरक लताम- पर नजैर गेल। एकटा मीठ दोसर खट्टा, एकटा गुदगर दोसर रसगर, तहूमे दुनूक पेटमे बीआ सेहो अछिए। किछु छी तैयो तँ छी दुनू जिनगीक सिरसजमनियेँ।

ने लताम दिस डेग उठए आ ने नेबो दिस। केकरा कहबै जेठुआ जेठ आ केकरा कहबै तहूसँ जेठ। खिस्सा जकाँ नइ ने होइए जे एकटा रहबे करै, एकटा पहिनेसँ रहै आ एकटा तबेसँ रहै आ एकटा सभदिने रहै...।

मुदा से भेल नहि, सीरबला गाछक एकटा लताम अपन पूर्ण जिनगी जीब पूर्ण स्वस्थता पाबि अन्तिम भेँट चढ़ैले अकास तियागि धरतीक कोरामे आबि खसल, जीव-जन्तुक रक्षा लेल अपन वलिवेदीपर पहुँच गेल।

धरतीपर खसल फलक अवाज सुनि हमरो नजैर ओम्हरे बढ़ल। फरिक्केसँ फल देख मन मोहिया मोहित हुअ लगल। आगू बढ़ि हाथसँ उठा अंत-प्रत्यंग निहारए लगलौं, ने केतौ कोदवाक दाग आ ने केतौ तिलबा। सजल-धजल गुण-सम्पन्न गुदासँ भरल सिनुराएल लताम।

लतामकेँ नीक जकाँ निहारियो ने पेने रही कि झाड़ीमे झड़झड़ाइत एकटा पाकल नेबो सेहो खसल। नेबो खसैसँ पहिने- माने जा नेबो नइ खसल छल- मनमे उठल रहए जे लतामक हाल-चाल, समए-सालक समाचार पुछि लेब। मुदा से भेल नइ, जेना दू गोरेक

बीच अपन लीला देखबैक उपरौंज हुअ लगैए तहिना बुझि पड़ल। जखन नेबोओ अपन वलिदानक लेल वलिवेदीपर आबिए गेल तखन किए ने दुनूकेँ एकेठाम परीक्षा करी।

लतामकेँ हाथमे नेने नेबो लग जाइ आकि हँसुआ-खुरपी-मोबाइल आ गमछाकेँ गाछक जड़िमे रखि नेबोएकेँ उठा आनी? सएह केलौं- गाछ तरसँ नेबोकेँ उठा हाथमे लइते रही कि ओ चहैक गेल। रससँ भरल रूप मुदा चहकलो पछाइत आँखिक नोर अपन ठौर धेने! एको बून नोरक दरस नहि! अही टराटकमे रही कि चहकैत नेबो बाजल-

"दू रूपैआ दामक हम छी, मधुबनीक टीसन-कातक होटलमे दस टुकड़ी कटि दस गोरेक भोजनकेँ सुवादिष्ट करै छी मुदा तैयो लोक हमरा दुसिते रहैए जे तूँ काँटक फड़ छेँ तोहर कोन मोजर!"

एक तँ ओहुना नेबो, दारीम, बेल कँटाएल गाछक फल छी, तहूमे बेल तँ ऊपर उठि झाड़ीसँ निकैल जाइए, जँ अपनामे झाड़ी बनबितो अछि तँ जेना-जेना अकास दिस उठैत गेल तेना-तेना झाड़ीकेँ झड़ियबैत डारिकेँ सुमझबैत आगू बढ़ि बढ़ैत जाइए, मुदा नेबो तँ से नइ छी! ओकरा कँटाएल वंशक कहि बगूरो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। जँ कोनो फल-फूलमे अमृत वरिसबैक शक्ति अछि तँ ओ नेबोओमे अछिए।

गाछक जड़िमे नेबोकेँ खसल रहने, ओरिया कऽ देह समटैत हाथ बढ़ा जड़ि लगसँ नेबो निकालने रही। काँटक झाड़ीक फल हाथमे अबिते मनमे खुशी जगले रहए। मुदा चहकल दू फाँक जकाँ भेल नेबोकेँ देख मनमे भेल जे जँ फटबो कएल अछि तँ ओकरा ओरिया कऽ उपयोग केलासँ कोनो फरक नै, किएक तँ ऊपरसँ खोंइचा ने फटलै, रसक बखारी तँ ओहिना समटल छै।

अपन विचारमे विचरण करैत विचारैत रही तँए नेबोक चहकबपर धियान नइ अँटैक ओकर गुणक उपयोगक विचारमे पहुँच गेल। मुदा तँए कि नेबोक तमतमी कमल रहै, मने-मन तमतमाइते रहए। ओना मनमे ईहो बात उठैत रहए जे दू-चारि ठोप रस जँ अमृते रहत तइसँ की लोकक दिन गुदस जेतै? असल अमृत तँ अन-पानि होइए। मुदा किछु बाजी नै चुपे रही, तमतमियोँ तँ तखन तमतमाइ छै जखन ओकरा संग खट-समाद होइ छै।

नेबोकेँ नेने लतामक गाछक छाहरिमे बैस लतामक संग सजबए लगलौं कि बिच्चेमे नेबो टभकि गेल-

"हम आगूमे बैसब, नइ तँ ऐगलाक गप-सप्प सुनैमे समए ससैर नहाइबेर भऽ जाएत आ हमरा बेरमे खेले उसैर जाएत।"

अखन धरि लताम अपन मुँह समेटने सभ किछु देख-सुनि रहल छल। ओना नेबोक फटफटी सुनि लतामकेँ तामसो उठै मुदा अपन दरबज्जापर देख बरदास करैत रहए। खाली मंचपर वक्ता जहिना भरि पोख बजै छैथ, आ श्रोता भरि कान सुनै छैथ तहिना एकतर्फा नेबो अपन भाषण-पर-भाषण ठाढ़ करैत रहए। मुँह करखनो सापुट नै लइ, खाली मंच देख नेबो फेर बाजल-

"भाय साहैब, अमरीत बरसा करैबला फल हम छी, अपन दियादवाद झाड़ीक फड़ कहि हमरा बोकियबैत रहैए आ आन-आन अपनाकेँ तरवर कहि मोजरे ने दइए।"

लतामक नजैरसँ बुझि पड़ल जे तामसे जरल जाइए मुदा बीचमे हमरा देख अपन मुँह बने केने छल। ओना तरे-तरे ओकर टीक तामसे ठाढ़ भेल जाइत रहै, मुदा लाजक पछे दरबज्जापर किछु ने बजैत रहए। कोनो कि औझुका दरबज्जा छी, सभ दिनसँ एहेन होइत आबि रहल अछि जे कोनो दरबज्जापर अमृत-पान भेटैए तँ कोनोपर विष-

पान। मुदा अमृत-विषक सीमेपर ने नेबो सेहो ठाढ़ अछि।

आँखि उठा लतामपर देलिऐ तँ बुझि पड़ल जे किछु बाजए चाहैए। आँखिक टुसकी देलिऐ। टुसकी पबिते बमछैत नेबोकेँ कहलक-

"तखैनसँ तोरा देखै छियौ जे बड़े फट-फट बजै छेँ जे हमरा मोजरे ने दइए।"

लतामक बातकेँ बिच्चेमे रोकि, जहिना एक सेना दोसर सेनाकेँ अकास-पताल धरिक सभ रस्ताकेँ रोकि बजैए तहिना नेबो बाजल-

"कोन बेजए बात बजलौं जे तोरा एना तामस उठै छह? तोहीं मोजर दइ छह?"

लतामक भक्क जेना खुजि गेल रहै तहिना कनी पाछू हटैत नेबोकेँ कहलक-

"हम तरूवरक फल छी से ते मोजरे ने अछि आ तूँ ते सहजे झाड़ीक फड़ छिएँ।"

'झाड़ीक फड़' सुनि नेबोकेँ मने-मन होइ जे मरि जाएब तँ मरि जाएब मुदा एहेन बातकेँ आगू नइ बढ़ऽ देब। बाजल-

"पहिने तूँ अपन अधखड़ुआ बात पुरा करह, पछाइत जँ कोनो बात छुटि जाएत तखन हम बजबह।"

नेबोक मनमे होइ जे गाछक फल रहनौं लताम देखैमे तँ हमरे जकाँ अछि। साइजक हिसाबे एके रंगक छी, मुदा लताम तँ गुदगर होइए, अपने रसगर छी। संगे ओकर बीआ मात्र सृष्टिकर्तेटा नहि, अमृत वरसक सेहो अछि, तैठाम अपने तँ कनाहे छी। तेतबे किए, ओकरा लोक हबैक कऽ चाहैए आ जँ हमरा हबकत तँ से हेतइ! नेबो सहैम गेल।

नेबोकेँ समहल देख लताम कहलकै-

"भाय नेबो, तोरा कि कोनो हम आन बुझै छिअ जे कानमे झड़ पड़ेबह, कहै छहक जे हमरा मोजरे ने अए। हमरे कोन मोजर अछि। जहिना तोहूँ फूलेसँ फड़ै छह तहिना हमहूँ फूलेसँ ने फड़ै छी, तूँ फड़ भेलह हम फल भेलौं सहए ने। आम जकाँ थोड़े मोजरै छी अपना सभ जे मोजर हेतह।"

बैसल-बैसल दुनूक बकठाँइ सुनि किछु फुरबे ने करए। कनी कम कि कनी बेसी कहै तँ दुनू नीके बात। यएह ने होइ जे खटाएल मुहेँ नेबो कनी बेसी खटगर बजइ।

दुनूकेँ बीच बँचाउ करैत कहलिऐ-

"भाय जेहने लताम भेलह तेहने नेबो भेलह। दुनूक मुहोँ-कान आ रंगो-रूप मिलै छह, तँए 'आगू बैसब कि पाछू बैसब' एकरा छोड़ह। दुनू अमृत छिअ, तँए अपन-अपन अमृतत्वक गुणकेँ बुझह।"

मुड़ी डोला नेबो मानि गेल जे खाइकाल सभ अगुआएल बनल रहैए हम पछुआएल बनै छी सएह ने, मुदा पहिल कौरमे तँ हमहूँ साझी रहबे करै छी किने।

सुनि कऽ मानि तँ दुनू लेलक मुदा बजैसँ परहेज करैत मुहेँ बन्न कऽ लेलक। अपन मन रहए जे किए ने दुनू अपन विचारकेँ अपनेमे समेट लिअए। मुदा आगू बढ़ि बजैले कियो तैयारे ने अछि! जखैन कि अखने दुनू रक्का-टोकी करै छल!

फेर मनमे उठल, तामसे ठोर बन्न केने ने मुँह बन्न छै, मुदा मनमे तँ ओहिना तामस पजरले हेतै...। तँए कनी खोंरना चला दिऐ। खोरियबैत बजलौं-

"भाय नेबो-लताम, दुनू भैयारी भेलह मुदा अपन-अपन वंश तँ दुनूक अलग-अलग छह, से पहिने फरिया लाए।"

राम दरबारमे जहिना छोट-छोट बानर किछु सुनि एक-दोसरक मुँह ताकऽ लगै छल तहिना लतामो आ नेबोओ एक-दोसरक मुँह ताकऽ लगल। मुहोँ केना ने तकैत, कोनो कि ओकरा टिपैन माए-बाप देने रहइ। बानर जकाँ करहर उखाड़ि माथपर रखैत गेल, डुमैत गेल, भँसियाइत गेलइ..!

दुनू दुनूक मुँह तकैत मुदा बजैत कियो ने किछु। फेर दोसर खोरनि चलेलौं-

“भाय, घरक चारमे खोंसल टिपैन नइ छह तँ नइ छह, मुदा ई तँ बुझल छह किने जे धरतीपर केना एलौं?”

लतामक चुपी देख नेबोकेँ तामस उठल, बाजल-

“हम पनियाह छी मुदा तूँ ते थलियाह छह किने, तखन पहिने तूँ ने बजबह। हमरा ते पानियेँमे घोरि कऽ लोक पीब जाएत मगर तोरा जँ पानि सेने कियो पीतह, तेकरा तूँ बिना कफ-ठेँर, सरदी-बोखार उतारने छोड़बहक, बाजह।”

नोवोक बोकिएलो पछाइत जेना लतामकेँ सस नइ ससरइ। हिया कऽ देखै तँ बुझि पड़ै जे बोनो-झाड़क नेबो हमरासँ छोट कहाँ अछि। देखै छिऐ जे कनियेँ ठरिया कऽ गछिया टाभ नेबो तेहेन होइए जे हमरा वंशमे अखैन तक ओहन भेबो ने कएल हेन।

लतामक चुप्पी देख नेबोकेँ बुझि पड़लै जे भैरसक हमर विचारक असैर लतामोकेँ भेल।

असैर पाबि नेबोक मनमे भेल जे जखने केकरो आइन-पीड़ा, दुख-बेथाक असैर होइ छै तखने ने ओकर मुँह खुलै छै। तँए आब देखिऐ जे लताम की बजैए।

मुदा जेना लतामकेँ किछु फुरबे ने करइ। दुनूमे देखिऐ जे नेबो तँ किछु बजितो अछि मुदा लताम तँ सोलहन्नी गुमकी लाधि देलक।

कहलिऐ-

“भाय, एना नइ हेतह पहिने ई कहह जे तूँ ऐ धरतीपर केना एलह?”

सातो गाछ नेबो एकठाम बैस अपन परिचए-पात कऽ नेने रहए, तँए सबहक बात सभकेँ बुझल रहइ। सीरक गाछक सिरगर फल दइबला सीरजन फल जहिना लताम तहिना नेबोओ। दुनू अपन बुढ़ाड़ीक रंगमे रमल-रंगल। जिनगीक सभ तीत-मीठक अनुभवी दुनू...।

नेबो बाजल-

“हमर तीन वंश अछि, बीआसँ गाछ होइ छी, डारिमे कलम लगौलासँ होइ छी आ गाछक सीर कटलासँ सेहो होइ छी। हम अही वंशक सीरक गाछ छी।”

नेबोक सुगंध भरल रस पीबिते मन वौआ गेल। मुहसँ खसि पड़ल-

“आमकेँ मोजर होइए, तँए कि तोरा फूलक मोजर नइ भेल, से तँ भेबे कएल, तइले अनेरे ने तामसे फटै छह।”

‘अनेरे तामसे फटै छह’ सुनि आकि की, जहाँ मुँह बन भेल कि नेबो झपाटा मारलक-

“जहिना आम अपनाकेँ मोजर दइए तहिना हमहूँ अपन फूलकेँ मोजर बुझै छी, ककोड़बो बिआन ओकरो छै जे घोदा घोदे फड़ैए आ हमरो तँ से अछिए। तखन जे आम बढ़ि-चढ़ि कऽ बाजत से मानबै।”

अपना ताले-वेताल भेल नेबो। की बजैए नइ बजैए से किछु बुझबे ने करिऐ। एतबे अन्दाज आबए जे रसिया कऽ कसिया गेल अछि। कहलिऐ-

“सुनै जाह, एना जे एकहरफी तामस झाड़ै जेबह से नीक नइ हेतह। तँए फुटा-फुटा कऽ बाजह। तोराले हम किए झूठ बाजी।”

‘झूठ किए बाजी’ सुनि नेबोक मन शान्त भेल। मुदा तैयो मन उझैक गेलै। आम दिस इशारा करैत बाजल-

“भाय साहैब, हम सीर-वंशक छी, ओ बिनु सीरक अछि। बीआसँ कहियौ आकि आँठीसँ से होइए, चाहे कलम लगा कऽ होइए जे दुनू तँ हमरो होइते अछि। मुदा तेसर रंगक जे सीरसँ गाछ होइ छै जे हमरा तँ होइए मुदा आमकेँ से कहाँ होइ छइ?”

नेबोक विचारमे तेना बोहिया गेलौं जे बजा गेल-

“हूँ, से तँ होइते अछि।”

शतरंजक सह जकाँ नेबोकेँ सह भेटल। एके-बेर तीन घर टपि बाजल-

“आमकेँ हम बिनु सीरक गाछ बुझै छी, तँए ओ बिनु माथक भेल, जखन माथे ने छै तखन ओ समाजक तीत-मीठ केना बुझत।”

नेबोक सन-सनीसँ बुझि पड़ए जेना भोजनक सभ विन्यासमे सनाएल हुअए! कहलिऐ-

“देखह भाय नेबो, एकटा तोरे फटफटेने तँ नइ ने हएत, लतामोक वंश ने बुझबहक?”

मने-मने लताम सेहो अपन वंश-वृक्ष गुनि नेने रहए। अत्मामे बिसवास बनि बसि गेल रहै जे हमरो वंश तीनपुरिया तँ अछिए। जहिना नेबो बीओसँ, डारियोसँ आ सीरोसँ वंश सिरजैए तहिना तँ हमरो वंश अछि। आमकेँ छै कि नइ छै से ओ अपन बुझत, तइले हमर छाती किए फटत..?

डँटैत नेबोकेँ लताम कहलक-

“तोरा ढेरीए छौ तइसँ अनका की, ओ अपन बाँहिक बुते कमा खाइए आकि तोरे ढेरीए जीबैए। तइले तोहर छाती किए चहकै छौ?”

लतामक बात सुनि बुझि पड़ल जे नेबो किछु बजैले लुसफुसा रहल अछि। एकरा सबहक लपौड़ीमे अपन नहाइयोक बेर उनैह रहल अछि। मुदा एकरा सभकेँ छोड़ि नहाइयो-खाइले केना जाएब। दुनू दुनूपर तमसाएल अछि। बीचसँ उठि कऽ चलि जाएब आ जँ कहीं दुनू अपनामे पटका-पटकी करए लगए तखन ते खेनाइयो ने गरगट हएत। तइसँ नीक जे कनी नीक आकि कनी अधला, टटके फरिछौट कऽ दिऐ। टटका फरिछौट बेसी नीक होइतो अछि।

कहलिऐ-

“दुनू भैयारी सुनह, दुनू गोरे शिवलिंग जकाँ बीचमे आड़ि दऽ दहक जे अपन-अपन दुनूक सीमा भेलह आ ओइ सीमाक भीतर अपन दुनियाँ भेलह।”

बिच्चेमे नेबो बाजि उठल-

“हमरा दिससँ कोनो इतराज नइ मुदा लतामोसँ से पुछि लियौ।”

हाथक इशारा दैत नेबोकेँ कहलिऐ-

“भाय नेबो, जखन दुनू गोरेकेँ एक्के आँगनक धरतीपर रहि दिवस गुदस करैक छह तखन अनेरे लड़ैत-झगड़ैत किए रहबह, मेले-मिलानसँ किए ने रहबह।”

नेबोकेँ जेना अपन जिनगीक किछु कटु अनुभव रहै तहिना मनमे धकमकाइत रहइ। ओना धकमकीक दोसरो कारण रहै जे सीमा कातमे- माने जैठामसँ एक दिस नेबोक बगान रहै आ दोसर दिस लतामक, तैठाम आड़िक कातमे लतामक गाछ नेबो गाछकेँ कोनो कर्म बाँकी नइ रहऽ देने रहइ- से देखल-भोगल रहबे करइ।

नेबोक मनक गम्भीरता आ लतामक चुप्पी देख मनमे उठल- नहाइयो-खाइक बेर हूसल जा रहल अछि आ कोनो काज ससरिये ने रहल अछि, अनेरे समए उनैह जाएत...।

ओह! अनेरे सभ दम तोड़ै छी। नेबोकेँ कहलिऐ-

“नेबो भाय, एना रग्गर केने नइ हेतह, सभकेँ सभपर बिसवास करए पड़तह, तखन ने काल्हि दिन निचेनसँ रहबह।”

नेबोक मनक तामस दोसरे रंगक रहइ। जेना होइ जे जखन सभ जाने मारै आ जिनगीए लइ पाछू लगल अछि तखन किए ने हमहूँ मुहेँपर कहिऐ...।

नेबो बाजल-

“भाय साहैब, अहाँ पुरुख भेलौं आ हम जड़ि भेलौं। अहाँ हमरा जिनगीसँ प्रेम करै छी तँए हमहूँ जिनगी देने छी। मुदा जहाँ-धरि बिसवास करैक बात अछि तइमे हम मनुखेपर नइ बिसवास करै छी।”

नेबोक बात सुनि मनमे भेल जे जाबे एहेन विचार दुनूक नइ रहत ताबे दुनूकेँ दुनूपर सँ अबिसवास नइ हटतै आ जाबे एक-दोसरपर बिसवास नइ जगतै ताबे नेबोक मन असथिर नइ हेतइ। एकरा के नकारि सकैए जे मिथि-मालिनीक सेवा कएल वन-उपवन झाड़ी-फुलवाड़ीक देश हमर मिथिला छी।

जैठाम एक दिस धारक कटानसँ फल-फलहरीक खेती उपैट रहल अछि आ दोसर दिस तइसँ कनियोँ कम गामसँ उपटनिहारक कमी सेहो नइ छैन..!

सामंजस्य करैत लताम-नेबो दुनूकेँ कहलिऐ-

“जे दिन बीत गेल ओ धरतीसँ उड़ि मनाकासमे बसि गेल मुदा काल्हि दिन-ले तँ सभकेँ अपना-अपनी सोचए पड़तह किने?”

नेबोक मन जेना समटा कऽ गाढ़ रस बनि गेल होइ तहिना बुझि पड़ल। ओना बुझि पड़ल जे खटरसमे मीठरसक प्रवेश भऽ रहल छै। तैसंग ईहो बुझि पड़ल जे जँ मुहसँ किछु खसि पड़ल तँ नेबो जहिना कटाएलपर छनछना कऽ लगैए तहिना फेर ने कहीं लगि जाए। मुदा जाबे नजैर-नजैरक मिलानी नइ हएत ताबे प्रेमसँ काल्हि दिन चलब तँ कठिन ऐछे...। कनडेरीए आँखिसँ नेबोओ दिस ताकी आ लतामो दिस।

नेबोक मन जेना-जेना शान्त होइत जाइत देखिऐ तेना-तेना लतामक मन संताप दिस बढ़ल जाइत देखिऐ। असथिरसँ जखन नजैर उठा लतामपर देलिऐ कि नजैर मीलिते लताम बोम फाड़ि कानए लगल। ठोर बिजका-बिजका तेना ने कानि-कानि अपन बेथा-कथा कहए लगल जे किछु-किछु बुझबो करिऐ आ किछु नहियोँ बुझिऐ।

तैबीच नेबोक मुँह बजैले लुसफुसए लगलै। नेबोकेँ लुसफुसाइत बजैक मुँह देख मनमे खुशी उपकल। खुशी ई उपकल जे भने प्रति-उत्तरमे लतामो किछु बजबे करत, तहूमे कनैए। जँ हँसैत रहैत तँ पहाड़ो तोड़ैक झगड़ा होइत मुदा कननीमे तँ अपनो जान भौर भेल रहै छै।

नेबो बाजल-

“भाय, जहिना तूँ तहिना तँ हमहूँ छीहे, तखन तूँ कनै किए छह?”

मनमे भेल जे भने एक जिनगी जीनिहार दुनू अछि आ दोसर संगजीवी वा सहजीवी जीनिहार सेहो ऐछे तँए ओकर दोस्ती बेसी गाढ़ हेतइ। तही बीच हुचकैत-हुचकैत लताम बाजल-

“देव, दानव, मानव सब बेपीरित भऽ गेल! रहब केतऽ!”

लतामक बात नेबोकेँ जँचल मुदा उत्तर फुराइते ने रहइ। नीक

जकाँ बेथाक कथा बुझबे ने करइ। पाछू हटैत नेबो बाजल-

“भाय, एना नइ बुझबह, जखन तोरे जकाँ हमहूँ छी तखन केतऽ गड़बड़ छह से फरिछा कऽ बाजह?”

लताम बाजल-

“भाय, पहिल आफत तँ ई आएल अछि जे कोसी-कमला धारक बाढ़ि जेमहर जाइए तेमहर खाइए, दोसर बसबैबला अपने बहरवास भेल जा रहल अछि तखन तोहीं कहह जे अदौसँ आएल बाप-दादक वंश केना बँचत?”

बिच्चेमे नेबो बाजल-

“ई सभ ते हमरो भाइये रहल अछि तइले तूँ कनै किए छह? जँ औरुदा लऽ कऽ आएल हएब तँ केकरो मेटेने मेटेबै।”

लताम बाजल-

“भाय, तूँ ऊपरे- घारे मुँह तकै छह, तइसँ नइ ने काज चलतह।”

‘ऊपरे-घारे’ सुनि नेबोक मन कनी पिनपिनेबो कएल मुदा लगले भेलै जे जखन परिवारोमे रंग-रंगक समस्या अबै छै, तैठाम तँ हम दोसर समाजक भेलौं, भऽ सकैए जे ओकर बात नइ बुझल हुअए। बाजल-

“भाय, कनी फरिछा कऽ बाजह। नजैर ओमहर नइ जाइए।”

लताम बाजल-

“जहिना मिथिलांचलक फल लताम छी सेव नहि! मुदा?”

लतामक प्रश्न सुनि मन ठमैक गेल। नजैर उठा जखन नेबो दिस देलौं तँ बुझि पड़ल जे भैरसक ओहो अपन जिनगीक रागमे विराग भऽ रहल अछि।

नेबो दिससँ नजैर उठा जखन लतामपर देलिऐ तखन बुझि पड़ल जे लतामक धौना जेना टुटि गेल होइ तहिना मुँहक बिजकी देखै छी। मुदा एहनो तँ दुनियाँमे ऐछे जे लोक अपन शीलक गुणे धो-पोछि कऽ चाटि लइए।

लताम अपन बेथा ऐ दुआरे ने बजै जे मनुख लग बाजी आ ओ आरो विसविसा कऽ धऽ लिअए। तखन तँ जेहो दू-चारि साल जीबै छी जीबै छी। अनेरे किए परान गमाएब। मुदा लतामक मन कलैप-कलैप विवेककेँ कहै-

“पुश्तैनी फल सभ गुण-सम्पन्न छी, मुदा परदेशी सेव केना हमरा समदिया बौहु जकाँ धकेल कऽ निकालि रहल अछि। संस्कार कहिया अण्डा देत।”

◌

शब्द संख्या : 3071, तिथि : 13 जुलाई- 2015

हरदीक हरदा

भिनसरे करीब साढ़े सात पौने आठ बजेक बीच, बाध-बोन देख-सुनि घरपर एलौं कि बुझि पड़ल जे पत्नी घरक केबाड़ बन्न कऽ केतौ गेल छैथ। ओना रस्तेमे जखन अबैत रही तँ जेरक-जेर लोककेँ टेम्पूमे सवार धड़फड़ाएल जाइत देखने रहिऐ। मुदा सभकेँ अपन-अपन जिनगी छै, अपन-अपन परिवार छै अपन-अपन कुटुम-समाज छै, सभ अपना-अपना काजे बेहाल अछि। तँए उपकैर कऽ केकरो किए कियो किछु पुछत।

लोकक धड़फड़ी देख अपनो अन्दाज करैत रही जे भैरसक केतौ किछु भेल अछि। जँ से नइ तँ कोलकाता-मुम्बइ जकाँ सड़क भाड़ी किए अछि? गाम-गामक टेम्पू, गाम-गामक यात्रीकेँ लऽ लऽ उत्तरे मुहेँ जा रहल अछि। एना काल्हि-परसू कहाँ छल?

दरबज्जापर सँ आँगन दिस नहि जा सोझहे गाइक थैर दिस बढ़लौं। दुनू गाए डिरियाइत रहए। बुझि पड़ल जेना गाइक बोली बदलल अछि। होइतो अहिना छै, सोझक डिरियाएब आ परोछक डिरियाएब बदैल जाइ छै। बुझि पड़ल जे पत्नीक अनुपस्थितिक सूचना दऽ रहल अछि। नादिमे घास दैत चोटे घूमि कऽ दरबज्जापर एलौं। आब तँ घरपर छी, मात्र दुनू गाएकेँ आ अपन मन-पेटकेँ शान्त करब अछि। समटले काज भेल। से नइ तँ पहिने गाम दिस टहैल देखिऐ जे

की बात छी, एना आन गामक लोक हलचलाएल केतए जा रहल अछि?

गामक हलचल तँ आरो बेसी। धिया-पुतासँ लऽ कऽ नव-नौतारि, बुढ़-पुरान अधिकांश स्त्रीगण पएरो आ टेम्पूओसँ उत्तर मुहेँ जाइत। मनमे भेल जे सौंसे पोखैर जँ टहलबे करब आ नियमसँ घाटपर नइ नहाएब तँ ओ अनेरे ने देहकेँ कठुआएब भेल। तखन तँ भेल जे ओहन कियो भेटैथ जे अपना ढंगे विचारैत होथि।

फेर भेल जे गामो तँ गामे छी, कोनो गाम आन गामक मेह छी तँ कोनो..?

मुदा तइमे गुलाव कक्काक अपन ढंगक विचार छैन जे समैसाध अछि।

आगू बढ़ि गुलाव काका ऐठाम विदा भेलौं। दरबज्जेपर गुलाव काका ठेहुनियाँ गरे दुनू बाँहिकेँ मोड़ि सिरमा बना मुड़ी लटकौने बैसल रहैथ।

फरिकेसँ नजैर पड़िते मनमे उठल जे भैरसक गुलावो काका ने तँ हमरे रोगे पीड़ित छैथ। एक दुखक दुखताह जे दोसरक डॉक्टर बनि जाइ, तँ ओ अपने केना दुखताह भेल। से नइ तँ घूमि जाइ। मुदा जँ कहीं ठेहुनक दोग देने काका देख नेने होथि आ घुमैत देखता तँ की ओ पाछूसँ टोकारा नइ देता जे हमरा देखिये कऽ डर होइ छह!

कहबो तँ उचिते करता, अपन रोग अपने ने बुझै छी। ओ किऔँने गेला, ओ तँ अपनेटा बेथा ने बुझैत हेता।

आगू बढ़लौं, जखन लग्गा भरि पाछूए रही कि मुँह उठा तकलैन। नजैर मिलिते कहलयैन-

“काका, गोड़ लगै छी?”

असीरवाद दैत काका अपने सोझ होइत बजला-

“लगेमे बैसह। आब की जोरसँ बजैक समए रहल। दुनू गोरे मुँह-मे-मुँह मिला फुसफुसा कऽ गपो कऽ लेब आ कानमे कान सटा सुनियों लेब। भऽ तँ गेल जे मुँह-कान जँ नीक बनौने रहब तँ केहनो हवा-बिहाड़ि औतै तैयो नीके रहत। सभ जब अपने मने बताह अछि तखन सभ अपन-अपन बतहपनी देखबैत रहह।”

एकसुरे गुलाव काका बाजि गेला। हूँ-हूँ तँ करैत गेलिऐन मुदा नीकसँ सभ बात बुझि नइ रहल छेलौं। मनमे ईहो कछमछी रहए जे लऽ दऽ कऽ दू परानी भेलौं तहूमे घरवाली बोनाएले छैथ। भानसो तँ अपने करए पड़त। मुदा जखन टटका समस्या बुझैले समए नइ लगाएब तखन तँ...। जखन कि गाम-समाज डुमि रहल अछि, भँसि रहल अछि।

फेर ईहो हुअए जे घर-अँगना, दुआर-दरबज्जा सूने अछि आ जँ कहीं सून देख कुत्ते-बिलाइ आकि साढ़े-पाड़ा आबि उपद्रव करत तखन तँ खुट्टापर दूटा जे लछमीधन अछि, ओ डोरी तोड़ि पड़ाइयो सकैए किने?

विचित्र स्थिति मनमे ठाढ़ भऽ गेल। एक दिस मनरोग दबने रहए दोसर दिस धनरोग। मुदा जी-जाँति, ई सोचि मनकेँ असथिर केलौं जे अधहा-छीदहा बुझि कहबैन जे काका असगरे छी। भानसो करए पड़त आ मालो-जालक सभ नेकरम अपने करऽ पड़त। कहलयैन-

“काका, आइ अपने बेथे बेथाएल छी तँए दुनियाँ-दारीक बेथा सुनैक साहस नै भऽ रहल अछि। ओते दमे ने पाबि रहल छी जे सुनब। तखन तँ भेल जे परोपट्टाक हाल-चाल कनी सुनि ली। से कनी..?”

‘से कनी’ सुनि गुलाव काका बुझि गेला जे भैरसक अपन हाथ-

पएर झड़कबै दुआरे अगुताएल अछि। मुदा विचारोकेँ तँ समुद्री जुआर उठै छै, कखनो धरतीपर होइत बहैए तँ कखनो बहैत अकासमे उठि अन्हर-तूफान, पानि-पाथर सभ बहबैए। ओना अस्सी बर्खक अवस्थामे गुलाव काका ऐगला बीस बर्ख बिसवासक संग जीब रहला अछि। बिसवास ई जे अखन धरि जखन अपना लुरिये-बुधिये जीब लेलौं, कोनो बेमारीकेँ सटि कऽ नइ आबए देलिऐ, तखन ऐगला बीस-बर्खक लेल तँ दवाइयो-दारू सुन्दर-सुन्दर आ बिसवासू-सँ-बिसवासू उपयोगी बनि-बनि ठाढ़े अछि, तखन किए ने बीस बर्ख ओहू बले खेप लेब। गुलाव काका बजला-

“एना झाँपि-तोपि बजने औझुका समैमे जीब हेतह? जे बात करी से सोझ-साझ करी। भानसक चिन्ता छह, सएह ने, हाथो-पएर झड़कौने भरि मन ते खेबे करबह किने?”

गुलाव कक्काक बात सुनि मनमे भेल जे गुलाव काका ई बात फाजिल बजला। फाजिल ई जे सभ दिन की अधपेटे खाइ छी। मुदा मुहाँ-मुहीं ई कहबो नीक नहि, तँए से नइ कहि ई कहलयैन-

“काका, गुलाबक फूल जकाँ कखन सुगंधक सट्टी-पट्टी दइ छिऐ आ कखन ओकर रंगक आ कखन ओकर चालि मारि दइ छिऐ से बुझिए ने पबै छी?”

हमर बात गुलाव काकाकेँ कठाइन नहि, मीठाइन लगलैन। मीठाइन लगिते मिसरी कहियौ आकि सोहागा जकाँ बतीसी छिटकबैत बजला-

“बौआ, अखन तूँ पचीस बर्खक जवान छह, बाल-बच्चाक बोझ माथपर नइ पड़लह हेन, गामे-समाज, कुटुमे-परिवार ने छी दुनियाँक जाल। अही जालमे रहि जिनगी जीबैक छह। साठि बर्खक अवस्थामे पत्नी मुइला पछाइतो अपन दिन भैरगर कहाँ बुझि पड़ैए। समैकेँ

सुभिहस्त भेने आब जिनगी जीबैमे सेहो सुभिस्ता आएल अछि किने।”

नजैर उठा किरिण दिस देखी तँ बुझि पड़ए जे भानसोक बेर उनहल जाइए तैपर सँ मालो-जाल अछि, एम्हर काका तेहेन जालमे ओझरा देलैन जे समैक कोनो पुछे ने रहल! धड़फड़ाइत कहलयैन-

“काका, अखन एतबे कहू जे लोक सभ केतए भेड़िया-धसान भेल जा रहल अछि?”

मुदा गुलाव काकाकेँ सुतरलैन। सुतरलैन ई जे अपन बेथाक बात काकाकेँ कहि देने छेलिऐन। बजला-

“बोआ, पहिने अपन बात सुनि लएह। कहलियऽ जे भरि मन खेबह। भऽ सकैए जे तोहर मन पत्नीक सिनेहे सिहैर गेल हेतह मुदा काजक जे सीमा अछि ओइ सीमापर बैस जखन खेनाइ बनेबह तखन अपन मननुकूल वस्तुक उपयोग मननुकूल विचारानुसार करबह, जखने मननुकूल वस्तुक मननुकूल उपयोग हएत तखने मन अनुकूल हएत आ जखन अनुकूल मनमे अनुकूल विचार अनुकूल काजमे प्रेरित करतह, तखन अपनाकेँ अनुकूलता बुझबहक।”

गुलाव कक्काक बात सुनि जेना मन भरि गेल। मुदा जे विचार बुझए ऐलौं से रहि गेल बाँकीए! आब की हएत? मनमे ईहो हुअए जे कहीं मरसियाक सुर पकैड़ काका दोसरोकेँ नाँगैर पकड़नहि आगू बढ़ि गेला, तखन तँ आरो भाड़ी पहपैट हएत। अपने भुख लागत तँ हिनकोसँ मांगि कऽ खा लेब मुदा खुट्टापर गाए डिरियाइत हएत। धड़फड़बैत कहलयैन-

“काका, ओते-कालक छुट्टी दिअ जेते-कालमे अपन खेनाइ-पीनाइक संग मालो-जालकेँ खुआ-पीआ दिऐ। फेर ऐगला बात कहब। मुदा जइ काजे एलौं से तँ बाँकीए रहि जाएत तखन तँ मनमे

कछमछी लगले रहत।”

गुलाव काकाकेँ फेर सुतरलैन, बजला-

“ने रहैले कछमछी छोड़ै छह आ ने जाइले, तखन तोरे विचारे-विचार।”

मने मन भेल जे एक फाँस बुझए एलौं दोसर महाफाँस चारू दिससँ लगि गेल! मुदा तैयो जी-जाँति बजलौं-

“केतए लोक भेड़िया-धसानमे जा रहल अछि, काका?”

अकाससँ खसैत तीर गुलाव कक्काक मगजकेँ जेना बेधि देलकैन तहिना बेथाएल बोलिये बजला-

“बौआ, दुनियाँमे केकरो कियो ने!”

आगू बजैले कक्काक मन लुसफुसाइते रहैन मुदा ठनका जकाँ अपनो मनमे खसल। माने ई जे गुलाव काका ई की बजला- ‘दुनियाँमे केकरो कियो ने?’ परोपट्टाक लोक जे उमैड़ कऽ जा रहल अछि से तँ चाहे अपने-ले जा रहल अछि चाहे अपन परिवार-ले आकि समाजेक कल्याण-ले ने। ओहिना थोड़े सभ अपसियाँत अछि। फेर एना किए काका बजला?

मुदा गुलावो काका सात जोजन तक देखनिहार, मुहेँक बीज[9]सँ बुझि गेला। तुष्टियाएल मुस्की दैत कहलैन-

“बौआ, बीस बर्ख पत्नीकेँ परोछ भेना भऽ गेल अछि, परिवारमे चारिटा पुतोहु आ पोता-पोती ढेरी अछि, खेनाइ तँ सहरगंजा बनबे करैए माने सभले बनैए, ओतबे आसा परिवारक अछि। अपन जिनगी अछि। अपन काज अछि, अपना हाथे-पएरे अपन जिनगीक गाड़ीकेँ ससारि रहल छी।”

[9] हँसी आ रूदनक बीचक रूप

जहिना कुसमए एने रोग-पर-रोग आ बोखार-पर-बोखार रोगियाहो आ बोखरियाहोकेँ गति दइए तहिना मने-मन होइत रहए। ठीके काका कहलैन, दुनियाँमे केकरो कियो ने!

एक तरफ अपन परिवार दिस देखी तँ अपनो पेटक पूजा आ मालो-जालक पूजा पछुआइत जाइत देखिऐ आ दोसर दिस तेसर पूजा गुलाव काका पसाइर देलैन। ओह! अपने गल्ती भेल जे अनेरे ऐठाम आबि गेलौं। ने जइतौं ओइ टोल ने सुनितौं ओकर बोल। हरल-मरल बटोही जकाँ कहलयैन-

“काका, भऽ गेल! तीनटा विचारकेँ ललका रोशनाइसँ छेकि दियौ। पहिल भेल ‘अहाँक अपन बेथा’, दोसर भेल ‘हमर कथा’ आ तेसर भेल ‘भेड़िया धसानक जथा।’ फेर काल्हि-परसू कौल्हुका-परसुका घटना-घुटनीक घण्टी बजा पूजा करब।”

अपनाकेँ सीमांकित होइत देख गुलाव काका गायित्री बन्धन जकाँ अपन विचारकेँ समटैत बजला-

“बौआ, अपन एकटा बात अछि ओ पहिने कहि दइ छिअ। भोरे सुति उठि टहलैले गेल रही तखने परिवारक स्त्रीगणक संग धियो-पुता घरसँ निकैल गेल छेली। आँगन खाली देख जखन पड़ोसी सभकेँ पुछलिऐ तँ भाँज लगल जे सभ हरदियाही गेल छैथ।”

कहिते कहैत गुलाव काका ठमैक गेला। ठमकैत देख टोकलयैन-

“काका, एना अँगने-अँगने अँटकब तखन गामसँ निकलल हएत? देखै नइ छिऐ इचना कोनो कि माछ नइ छी मुदा ओकर अँगना-घर रहु-भाकुरक अँगना-घर जकाँ थोड़े हएत।”

हृदय खोलि गुलाव काका बजला-

“बौआ, परिवारमे हम बुढ़ छी, एकोटा चेतन आ अर्ध-चेतनक

मनमे ई चेतना कहाँ उठल जे अपने जेतए जाइत हौउ, मुदा जे आश्रित छैथ, हुनको मनमे ने रहब अछि। से किनको मनमे एलिऐन? जँ मन नइ तँ तन फुसि।”

गुलाव कक्काक बेथा सुनि जेना अपन बेथा हल्लुक बुझि पड़ल। मुदा भेड़िया-धसानक मूल तँ छुटले रहि गेल। कहलयैन-

“काका, जाए दियौ, समुद्रक लहैरमे नाह डगमगाइते छै। पोखरि-झाँखरिमे ने असथिरसँ चलैए।”

हमर बात जेना गुलाव काकाकेँ कण्ठसँ निच्चाँ भेलैन। जखने कण्ठसँ निच्चाँ भेलैन कि बुझि गेलौं जे मुँहक दवाइ पैरक घाओकेँ ठीक करिते अछि। असथिर होइत गुलाव काका बजला-

“ऐ भेड़िया-धसानक पाछू केते रंगक मीडिया काज कऽ रहल अछि। अन्तर्राष्ट्रीयसँ लऽ कऽ राष्ट्रीय समाज धरि। खएर अखैन ओ सभ नहि।”

जखने काका बजला जे ‘अखन ओ सभ नहि’ आकि अपनो मन फुल-फुलाएल। हुँहकारी भरैत कहलयैन-

“हँ-हँ अनेरे आलतू-फालतू बोन-झाड़मे लटकैत चलब तँ गामोक सीमा नइ टपि सकब।”

गुलाव काका बजला-

“हरदियाहीमे एकटा पचीस बर्खक विधवाकेँ सपनौती भेल जे हुनकर डीहक माटिमे ओहन शक्ति छैन जे जेकरा देहमे भीरत आकि सटत तँ ओकर सभटा कष्ट दूर भऽ जेतइ। सवारीबला सभ भिन्ने प्रचार केलक, वेपारी सभ भिन्ने केलक, अपन क्षेत्रक आमदनी देख अपना-अपनीकेँ तेना ने सभ प्रचार कऽ देलक जे लाखक-लाख आदमी अबै-जाइए। बात की? हएत की तेकर कोनो ठेकान नहि। मुदा पाइयोक बरखा तँ भाइये रहल अछि। समैयोक लूट भाइये रहल

अछि।"

अपनो भूख जगल, कहलयैन-

"काका, अखैन जाइ छी, ओना एकठाम दुनू गोरे बैस किछु विचार करितौं तँ बेसी नीक होइत, मुदा जिनगियो तँ जिनगी छी जेकर भार अपनो अछिए। ओ भार तँ सभकेँ लाइए कऽ चलए पड़ैत अछि। माल-जाल डिरियाइत हएत...।"

ओना गुलाव कक्काक परिवार सोलहन्नी नोकरिया परिवार जकाँ नइ, जे ताला लगा दियौ, हेण्ड-बैग हाथमे लिअ आ गाड़ी कि बस पकैड़ टहैल जाउ!

किसान परिवारसँ जुड़ल परिवार रहने हजारो रंगक काज परिवारक सभ अपने कन्हेठ जिनगीक गाड़ीकेँ कखनो आगूक मुँहरा पकैड़ तँ कखनो पाछूसँ पछूआ पकैड़ ठेलैत चलिते अछि। ओना गुलावो कक्काक परिवारमे किछु एहेन काज छेलैन जे करब अनिवार्य रहैन। मुदा एकबोलिया लोक गुलाव काका, एके बोले निर्णए कऽ नेने रहैथ जे जएह गति हमर सएह गति सबहक हेतइ। तँए काजे छोड़ि खिसिया कऽ दरबज्जापर बैस अनसन लधने छैथ।

मुदा अपना तँ से नै अछि, अप्पन जुतिक काज अछि, जँ कोनो बाधा उपस्थित हएत तँ ओकरा देखब अपन भार भेल किने। तखन खेनाइ बनाएब काज बढ़ल। तँए समैकेँ पकैड़ नइ दौगब तँ काज छुटि जाएत। पेट नइ भरब, से नइ बनत। जखन पेट खाली रहत तखन ओइ काजक भार केना उठा सकै छी..?

विचारक ऐ सीमापर आबि अँटैक गेलौं, मालो-जालकेँ आ अपन भानसो-भात सम्हारब अछि।

भानसक बेर लहैस रहल छल। गाम-घरक भानस एक उखड़ाहाक होइए। तहूमे नमहर परिवार रहह आकि छोट, ओते विध-

बेवहार तँ पुरबै पड़त...।

झटकल घरपर आबि चुल्हिक ओरियानमे लगि गेलौं। सभ समान चुल्हि लग रखि मसल्लाक चङेरी आनए गेलौं कि हरदीकेँ भाषण करैत सुनलौं। मन ठमैक गेल। एक मन हुअए जे चङेरीए उठा चुल्हि लग रखि दिऐ, जे चुल्हिक काजो करब आ हरदीक भाषणो सुनब।

फेर भेल जे जँ कहीं चङेरी छूअब आ गनगुआरि जकाँ मुँह-नाँगैर सभ एकबट्ट कऽ लेत, तखन की सुनब? मन अग-दिगमे पड़ि गेल। अन्तिम विचार यएह भेल जे हरदी केतेकाल भाषणे देत। ओना चङेरीमे हरदीक संग मिरचाइ, धनियाँ, तेजपात आ नून सेहो छल। पाँचोक बीच हरदी बाजल-

"भाय, आब ऐ दुनियाँमे जीब कठिन भऽ गेल अछि। हमरेटा नइ तोरो सभकेँ।"

हरदीक उदारवादी विचार सुनि मिरचाइ कहलकै-

"हरदी भाय, अनकर ठेकान तँ नइ बुझै छी, समए पाबि धनियाँ धनिको भऽ जाइए मुदा अहाँ भेलौं कि हम आकि नून भेल, तीनू गोटे तँ सभ दिनसँ एकठाम छी।"

मिरचाइक बात सुनि हरदी मने-मन सोचलक जे मिरचाइ बुधियारी मारए चाहैए। कहू जे हम अपन जन्मभूमिपर छी, जन्मस्थानपर छी, ओना मिरचाइयो अछि मुदा नूनकेँ किए सानि लेलक? दुनूक चलाकी छी, दुनू मिलि मरूआ रोटीक संग चलि जाएत हमरा छोड़ि देत।

फेर हरदीक मनमे उठल- एना जे एकटाकेँ दुसब आ दोसरकेँ पुछब से नीक नहि हएत। तँए सबहक बीच किए ने एक राय बना विचारि लेब।

डिब्बाक भीतरसँ धनियाँ बाजल-

"भाय हरदी, पहिने अपन बात बाजह जे आगू दिन-ले की दुख भऽ रहल छह।"

धनियाँक बात सुनि हरदीक मनमे ओहन आस जगल जे बेटी बिआहक देल सहयोगक तगेदा ई कहि करैत जे हुअए तँ देब नइ तँ नहि देब। सोल्होअना कहब जे नइ देब। रीन लादब भेल। ओ देनिहार–माने आपस केनिहार–समैनुकूल निर्णए करता। लोको तँ लोक छी, धन देख धनमन्त कहि असीरवाद दइए जे पाँच पुरुखा तकक लेल अरजि देलिऐ, ने घरक दुख आ ने खाइ-पीबै आ ऐश-मौज करैक दुख बाल-बच्चाकेँ हुअ देब। मुदा ई थोड़े ओही मुहेँ कहत जे पैछला पुरुखाक जे ढेरीपर बैसल छी, से भेल केना। अहाँले अहाँक पिता आकि बाबा की सभ आ केना केलैन।

मने-मन हरदी गमलक जे बाते-बातमे विवाद भऽ जाएत, काजो रहि जाएत कातेमे आ जिनगियो चलि जाएत खत्तेमे। से नै तँ पहिने अपन बेथा कहि देब नीक रहत। जँ कियो दुख देख-सुनि दुखी भेल आ दुर्दिन-ले दोस भेल सेहो बड़बढ़ियाँ नइ तँ अढ़ाइ हाथ सभपर छै, अपन-अपन बुझि लेत। बाजल-

"भाय-बन्धु, जे जनमभूमि सभ दिनसँ अपन रहल, बाप-दादाक तपोभूमि रहलैन, जे अपन देह गला-गला बलिवेदीपर चढ़ि एक दिस पुन-परताप करैत आएल छैथ तँ दोसर दिस जनमभूमिमे नव सृजनक सहयोगी माँ जननीक रहलैन, तैठाम 'पेटेन्ट' कहि पट्ठा बनबए चाहैए?"

हरदीक बात सुनि बिच्चेमे खड़खड़ाइत तेजपात बाजल-

"ऐ भाय! एहेन अन्हेर?"

तेजपातक प्रवाहमे बहैत हरदी बाजल-

"भाय, अन्हेरे किए कहै छहक, इन्होर आ अन्हार किए ने कहै छहक?"

मिरचाइ टोनियबैत बाजल-

"भाय, जखन अपन दुखनामा बजै छह ते एकहरफी बजैत चलह। बीचमे भौक-भाक हेतह ते महाभारतक सयम श्लोक जकाँ भऽ जेतह।"

मिरचाइक बात सुनि हरदीक मनमे बिसवास जगल जे सभसँ लगमे सुनिनिहार मिरचाइ अछि। वेचारा सजमैन सन तरकारीमे बिनु तेलोक संग पुरैए। एहेन संगीकेँ संगे लऽ चलब नीक हएत। मुदा संगी जे संगबे हएत तइले ते नीक-सँ-नीक आ अधला-सँ-अधला बात-विचारक सम्बन्ध नइ राखब तँ ओ रस्तेमे थुसकुनियाँ मारि देत किने...।

बाजल-

"भाय मिरचाइ, भलेँ तोहर गुण लोक ओहन बुझौथ जे अधिकतर संगी सभसँ फुट छह, माने सुआदक नजरिये, मुदा संगी नइ छहक सेहो बात नहियेँ अछि। लाल मिरचाइक संग कारी मिरचाइ सेहो अछिए। भलेँ तूँ अपना पएरे धरतीपर ठाढ़ भऽ फुलाइत-फड़ैत अपन कल्याण करै छह आ करिया मिरचाइ अनका पएरे अनका सिरपर चढ़ि कऽ कल्याण करैए। सएह ने?"

अपन परिवार दिस बातकेँ अबैत देख मिरचाइ बाजल-

"भाय हरदी, सभ अपना-अपना मुहेँ अपन-अपन बात बाजह, नइ तँ गड़बड़ भऽ जेतह। मोटका चाउरमे महिक्का जेना नुका रहैए तहिना हेतह।"

अह्लादित होइत हरदी बाजल-

"भाय मिरचाइ, की अपन बात कहबह, बहरबैया जे सेखी उतारैले उताहुल अछि से तँ ऐछे, घरबैयो सभ कम खचड़ै नइ ने करैए।"

'खचड़ै' सुनि तेजपातक मनमे उठल, भाय घरबैयाक जखन एहेन दुर्दसा छै तखन हम तँ सहजे बहरबैया भेलौं। मुदा केतबो बहरबैया छी, तँ लोक अपना छातीपर हाथ रखि बाजह जे पुश्त-पुश्ताइनसँ संगे सभ मिलि-जुलि रहैत एलौं हेन की नहि? बाजल-

"भाय, की खचड़ै कहलहक?"

जहिना केकरो बेथा सुनिनिहार भेटने मनमे सुआस जगै छै तहिना हरदियोकेँ जगलै। बेथित होइत तेजपातकेँ कहलक-

"भाय तेजू, की कहबह अपन मनक हाल, तेहेन खच्चड़क शिरोमणि सभ भऽ गेल अछि जे अधपक्कू ईटाकेँ पीस लइए तइमे कनी केमिकल मिलौल पीअरका रंग फेंट कऽ बीच बजारमे पटैक हमरा बेइज्जत करैए।"

दुनू हाथसँ धनियाँ सभकेँ शान्त करैत बाजल-

"भाय, हमहूँ जनमडीही छी, एकर माने ई नइ जे ओ आन भेला। जँ बहरबैयो छैथ आ गंगा-सागर जाइले संगी छैथ, तखन जँ कोनो मनमे कुवाथ अनै छी से नीक नहि। सभ संगी छी, सभ दिन जहिना बाप-दादाक अमलदारीसँ रहलौं तहिना आगूओ रहब।"

मिरचाइ अपन विचार देलकै-

"देखह भाय हरदी, केतबो कियो तोरा आगूसँ आकि पाछूसँ धकलै छह तँ की तूँ धकिया जाइ छह, तइले अपन दिन-दुनियाँ ने देखए पड़तह। अखन बस एतबे करह जे सभ अपन-अपन चिन्हा-परिचए, गुण-अवगुण अपना मुहेँ कहि कऽ आइए अपन-अपन छान-बान दुरुस कऽ लएह। पछाइत सब संगी भेलौं, संगे चलब, बस

एतबेसँ सबहक काज चलैत रहत।"

पाछू घुसकैत नून बाजल-

"भाय, सभकेँ बाप-दादाक ठेकान, खाता-खेसरा आ जमीन छै, हमरा ते किछु ने अछि। कखनो समुद्रक पानिमे दहा जाइ छी, तँ कखनो सिंध नदी होइत सिंध पहाड़मे घोंसिया जाइ छी। कखनो उस्सर-खासरक टोपी बनि माटिमे फुला जाइ छी। के एते मुइलहा बाप-दादाक खतियान ताकत। लूटि लाउ कूटि खाउ भिनसर भने फेर जाउ। भाय, हमरा विषयमे जे जेते जनै छह, हम एतबे कहबह।"

नूनक दुखनामा सुनि तेजपात बाजल-

"भाय, हमहूँ सभ मिथिले-वासी छी। तखन तँ सभ दिनसँ पहाड़पर बसैत एलौं, तँए अखनो बसै छी, मुदा पहड़नियौं बनि तोरा सबहक संग कहियो छोड़लियह हेन।"

मसल्लाक चँगेरी उठा चुल्हि लग एलौं कि तीने कोसक जतरा; पत्नियोँ आबि गेली। अबिते धड़फड़ाइत बजली-

"आइ बुढ़ियाक मनोरथ पूर भऽ गेलै।"

पत्नीक बातक कोनो अरथे ने लगल, एक तँ ओहुना लोक किछु नव चीज देख-सुनि अबैए तँ बजैक हुल्लास रहिते छै, पत्नियोंकेँ तहिना रहैन। टोनि देलिऐन-

"कोन बुढ़ियाक मनोरथ पूर भेलैन।"

अह्लादित होइत पत्नी बजली-

"अपने दुनू गोरेले दादी समाद पठौने छेली जे नीर लऽ जाइ-जाउ।"

बाजि कऽ नोराएल आँखिकेँ पोछए लगली। भानसक बेर उन्हैत देख मनमे भेल, अनेरे कोन लपौड़ीमे पड़ल रहब, चड़ियबैत पत्नीकेँ

कहलयैन-

"अहाँक पेट ने नीरे भरत मुदा हमर तँ भरत क्षीरे किने। होउ झब-दे भानस करू, नहेने अबै छी।"

◌

शब्द संख्या : 2924, तिथि : 19 जुलाई- 2015

परिचय



नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ◌ ◌ ◌

पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-93-87675-03-2